ISSN ૨૨૨૯-૫૪૭X વિદેહ

વિદેહ ૩૬૪ મ અંક ૧૫ ફરવરી ૨૦૨૩ (વર્ષ ૧૬ માસ ૧૮૨ અંક ૩૬૪)

(વિદેહ ૌવિદેહાયોનિ_)



વિદેહ મૈથિલી સાહિત્ય આન્દોલન: માનુષીમિહ સંસ્કૃતામ્



વિદેહ- પ્રથમ મૈથિલી પાક્ષિક ઈ-પત્રિકા

સમ્પાદક: ગજેન્દ્ર ઠાકુર


Videha
e-Learning
Gajendra Thakur

ऐ पोथीक सर्वाधिकार सुरक्षित अछि कॉपीराइट (©) धारकक लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छाया प्रति एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ, अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नै कएल जा सकैत अछि।

(c) २०००- २०२३ सर्वाधिकार सुरक्षित। भाषासम्पदा गाछ जे सन २००० सँ याहूसाइटपर छल http://www.geocities.com/videha/ Videha, http://www.geocities.com/ggajendra आदि लिंकपर आ अखनो ५ जुलाइ २००४ क पोस्ट http://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html केर रूपमे इन्टरनेटपर मैथिलीक प्राचीनतम उपस्थितिक रूपमे विद्यमान अछि (किछु दिन ओ http://videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html लिंकपर, स्रोत वायवाक मायहमिन http://www.blogtimesnow.com ... वैदेह २५८ यापुर(स) जनवरी २००४ सँ २०१६- http://videha.com भाषासम्पदा गाछ प्रथम मैथिली ब्लॉग / मैथिली ब्लॉगक एग्रीगेटर)।

ई मैथिलीक पहिल इंटरनेट पत्रिका थिक जकर नाम बादमे १ जनवरी २००८ सँ 'विदेह' पड़ल। इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका धरि पहुँचल अछि, जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब "भालसरिक गाछ" जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि।

(c) २०००- २०२३ विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA (ISSN २००४) सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर। Editor: Gajendra Thakur. In respect of Videha - published in videha, the Editor, videha holds the right to print the contents in its own form - print/ electronic - both in print and electronic form in any language - subject to the condition that the author/ copyright holder of the original work retains the right to republish and translate; and the right to re-publish and translate - both print- and electronic- holds the rights of the original author and the original publisher. रचनाकार संग्रहकर्त्ता अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना संग्रह (संपूर्ण उत्तरदायित्व रचनाकार संग्रहकर्त्ता मध्य) ggajendra@videha.com/ggajendra@videha.co.in कैं मेल अटैचमेण्टक रूपमें पठा सकैत छथि, संगमे अपन संक्षिप्त परिचय आ अपन स्कैन कएल गेल फोटो सेहो पठाबथि। एतऽ प्रकाशित रचना संग्रह सभक कॉपीराइट रचनाकार संग्रहकर्त्ताक लगमे छन्हि आ जतऽ रचनाकार संग्रहकर्त्ताक नाम नै अछि ततऽ ई संपादकाधीन अछि। सम्पादक: विदेह ई-प्रकाशित रचनाक वेब-आर्काइव थीम-आधारित वेब-आर्काइवक नियामक अधिकार, ऐ सभ आर्काइवक अनुवाद आ लिप्यंतरण आ तकर वेब-आर्काइवक नियामक अधिकार; आ ऐ सभ आर्काइवक ई-प्रकाशन प्रिंट-प्रकाशनक अधिकार रखैत छथि। ऐ सभ लेल कोनो रॉयल्टी पारिश्रमिकक प्रावधान नै छै, से रॉयल्टी पारिश्रमिक इच्छुक रचनाकार संग्रहकर्त्ता विदेहसँ नै जुड़थु। विदेह ई पत्रिकाक मासमे दू टा अंक निकलैत अछि जे मासक ०१ आ १५ तिथिकेँ http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित कएल जाइत अछि।

विदेह (लिंक http://www.videha.co.in/) is a fortnightly e-magazine in Maithili, published on the 1st and 15th of every month. Videha is an e-Magazine which publishes Maithili, Mithila, Mithilakshar, Mithila Paintings and other Maithili-related material in Tirhuta, Devanagari and Braille script. Videha e-Magazine is a unique e-journal as it publishes Maithili in Tirhuta, Devanagari and Braille Scripts and International Phonetic Alphabet, etc. Apart from publishing in Maithili in various forms, it also publishes translations and Non-Maithili material also, e.g. English, Sanskrit, and Hindi papers etc. Non-Maithili material is published in separate archive in Videha, but for publication it has to be from Maithili.

विदेह - ISSN: २२२९-५४७X http://www.videha.co.in/

समानान्तर परम्पराक विद्यापति- *यात्री विदेह सम्मानसँ सम्मानित श्री पनकलाल मण्डल द्वारा*

मैथिली भाषा जगज्जननी सीतायाः भाषा आसीत्। हनुमन्तः उक्तवान- मानुषीमिह संस्कृताम्।

<u>अक्खर खम्भा (आखर खाम्ह)</u>

तिहुअन खेत्तहि काञि तसु कित्तिवल्लि पसरेइ। अक्खर खम्भारम्भ जउ मञ्चो बन्धि न देइ॥ *(कीर्तिलता प्रथमः पल्लवः पहिल दोहा)*

माने आखर रूपी खाम्ह निर्माण कऽ ओकरा (*गद्य- पद्य रूपी*) मंच जँ नै बान्हल जाय तँ ऐ त्रिभुवनरूपी क्षेत्रमे ओकर कीर्तिरूपी लत्ती केना पसरत।

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant. - Robert Louis Stevenson

.

Videha: Maithili Literature Movement

અનુક્રમ

ઐ અંકમે અછિ:-

३. पद्य खण्ड

३.१. राज किशोर मिश्र- गजल

३.२. जगदानन्द झा 'मनु'- पच्चीस टा रुबाइ

३.३. आशीष अनचिन्हार- २ टा गजल

३.४. आचार्य रामानंद मंडल- २ टा पद्य

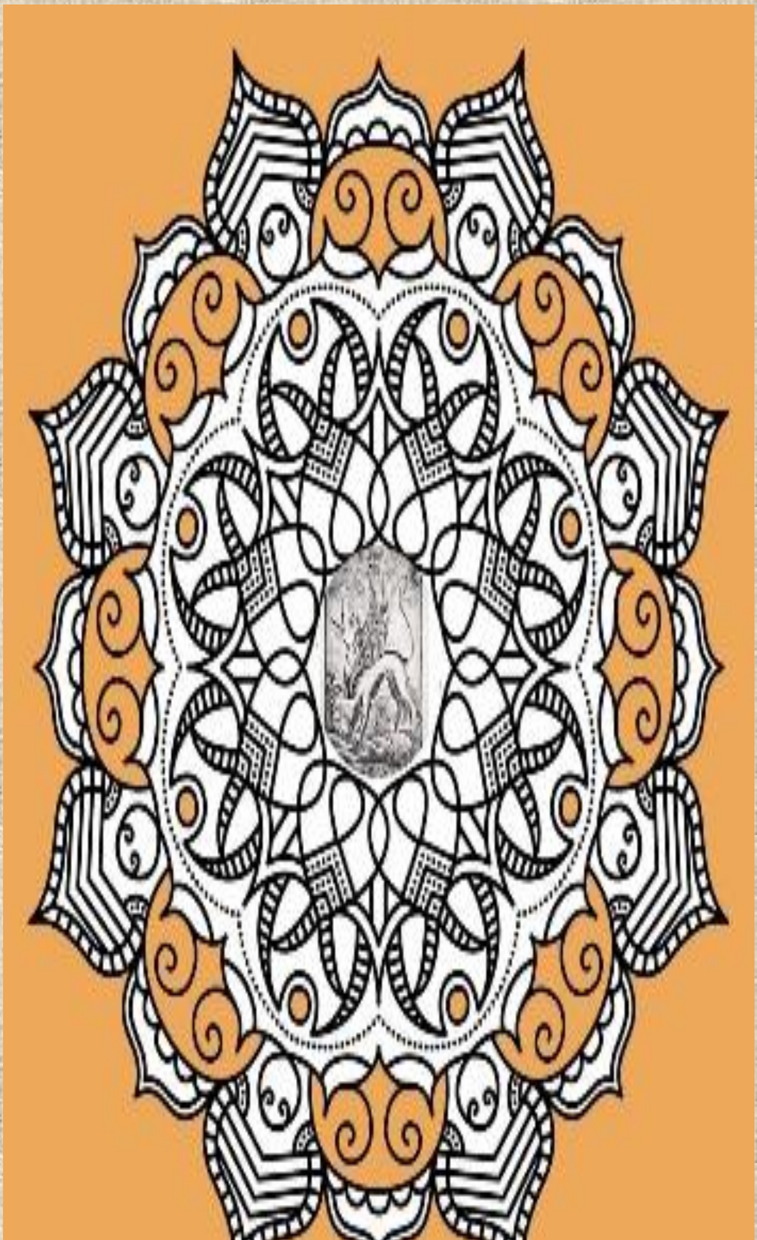
अनुलग्नक १: मैथिलीमे छन्द समीक्षा आ कमलानन्द झा (प्रसंग- योग लेखक पंकज झा प्रकाशक नूतन साहित्यिक योगक खुलासापर पाठकीय टिप्पणी)

अनुलग्नक २: मैथिलीमे छन्द समीक्षा आ कमलानन्द झा (प्रसंग- योग लेखक पंकज झा प्रकाशक पुरान साहित्यिक योगक खुलासापर पाठकीय टिप्पणी आ किछु प्रमाण)

४. विदेह सूचना संपर्क अन्वेषण

अनुलग्नक ३: मैथिलीमे छन्द समीक्षा श्री कमलानन्द झा (प्रसंग- योर लेखक पंकज झा प्रकाशक पुरान साहित्यिक योरकि धुलासापर कछि प्रमाण)





𑓑𑓑.𑒑𑒖𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩- 𑒢𑒴𑒞𑒢 𑒁𑓀𑒏 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒰𑒠𑒏𑒲𑒨

𑓑𑓒.𑒁𑓀𑒏 𑓓𑓖𑓓 𑒣𑒩 𑒙𑒱𑒣𑓂𑒣𑒝𑒲

११गजेन्द्र ठाकुर- नूतन अंक सम्पादकीय

१

ऋग्वेदक पुरोहित होता, सामवेदक उद्गात□, यजुर्वेदक अध्वर्यु आ अथर्ववेदक ब्राह्मण; आ तकर सहयोगी पुरोहित सभ, पुरा-पुरी सत्रह तरहक पुरोहित वैदिक कालमे रहथि। आ आब एक्केटा ब्राह्मण पुरोहित केना भऽ गेल? ओडिसामे अपनो 'होता' टाइटिल होइ छै आ ओतुक्का ऋग्वेदी, सामवेदी आ यजुर्वेदी ब्राह्मण हसिक (!) पिप्पलाद संहिताक अथर्ववेदी ब्राह्मणमे विवाह-दान नै करै छथि। दक्षिण भारतमे कतेक आदिवासी समाजक पुरोहित ब्राह्मण बनि गेल। कालीबन्दीक सेवा, भगैत, सुलहासकिरैल पुरोहित अबै छथि, गएर ब्राह्मण वा ब्राह्मणो, कियो भऽ सकै छथि। जे श्रील्ठवरक बनि केने बजता से कहता ब्राह्मण केना गहवर आ भगता बनत, मुदा ग्राम-रुद्रपुर (भाया तुलापतगंज, जिला मधुबनी) मे गहवरक सेवा ब्राह्मण भगैत करै छथि। मिथिलामे पसरल सतार (संथाल) समुदायमे मुर्मु पाण्डित लयमे सिन्धु नदी घाटी सभ्यताक कालक ग्रन्थक बिनती पढ़ैत छथि, से संथाल समुदायक लोक अहाँकेँ बतेता। दलित विमर्शमे वाल्मीकि रामायणक उत्तरकाण्डक शम्बूक वधक चर्चा होइत रहैए, तप करबाक कारण शम्बूकक शिकाइत जे ओ आगाँ नै बढ़ि जाय, आ तइ शिकाइतक निवारणार्थ भगवान राम द्वारा शम्बूक वध। पुरुष-परीक्षामे विद्यापति कथा कहैत-कहैत लम्पकीय वक्तव्य दै छथि जे राजपूतनी चरित्रहीन होइए। ई दुनू ओहिना भेल जेना अथर्ववेदमे शूद्रक पत्नीकेँ बिना स्वीक□तिकि कियो हाथ पकड़ि लऽ जा सकैत अछि बला वक्तव्य, जे सोशल मीडियामे आ अन्तर्जालपर अहाँकेँ भेटत, जकर कोनो सन्दर्भ मूल अथर्ववेदमे ताकैत रहू नै भेटत, बजनहार लुत्ती लगा कऽ निपत्ता, कोनो सन्दर्भ नै देता आ अहाँ अपस्याँत रहू, वरुण ऑस्थ पूरस्थ आरोप लगौनिहारपर नै, अहाँपर। अहाँक ऊर्जाक क्षय भेल मुदा स्थेर अन्तर्जाल ठीक कऽ लेलक, पाइ

વ઼કિ□ત નૈ જેઉ। પહિને આઉ પુરુષ પરીક્ષાપર, સંસ્ક□ત આ અવ઼હટ્ઠવઉ વ઼દ્યાપતિ ખૂર નાળાક દરવાની રહથિ તકર ખાતિ સ્ત્રીક વ઼ષયમે એહેન ઉપ્વિાક હુનકા સાર્વાંશ હેતનિ? કોની કઉષતિ માનસિકતાક પરવ઼રતી ઉપિકાર અપન ભાવ઼નાક અનુસાર હેરફેર ખઁ કs દેઉકૈ તઁ આરૂક ટપ્પિણીકાર આ અનુવ઼ાદકકેં ટપ્પિણી દs કs સ્થતિ સ્પષ્ટ કs દેવાક ચાહી। રામ શમ્બૂકકેં મારઉનિ વા શમ્બૂકક શકિારત કેનહિર કઉષતિ ઉપિકાર શમ્બૂકકેં મારઉનિ? આવ આઉ અથર્વવ઼ેદપર। અથર્વવ઼ેદમે ઉપ્વિઉ છૈ હે નારી, હમ સામવ઼ેદ છી આ અહાઁ ઋગ્વ઼ેદ, હે વ઼ધુ, અહાઁક હાથ હમ સમ□દ્ધિ ઉઉ ગ્રહણ કs રહઉ છી। આ ઓહુની વ઼રાત્ય પરમ્પરાક અથર્વવ઼ેદ આ સાંખ્ય અછિ, વ઼રાત્ય ખે ગાયત્રી મંત્ર નૈ પઢ઼ઉથિ તીન પ્રાઢ઼ી આ તૈં વનિ ગેઉ વ઼નચર, વનવ઼ીહર। આ અપ્પુનકા ઘર વ઼ાપસી સન વ઼ધિ છઉ 'વ઼રાત્યસ્તોમ' વ઼ધિ, સમારાત્ર ચારાક વ઼રાત્યકેં ઘુમેવા ઉઉ। કતૌ હુનકા શારીરિક આ ઉૈગિક હસિક, નશિાંમે રહૈવઉ સન વ઼વ઼િરણ જેટત મુદા અથર્વવ઼ેદમે હુનકા યોગીક રૂપમે દેખ્વ। અન્યત્ર ઓ સત્યક રક્ષક આ શવ઼િજક્ત વ઼ૈદ્ય સન સેહો વ઼ર્ણતિ છથિ। મુદા અથર્વવ઼ેદી વ઼્રાહ્મણકેં સેહો હસિક કહઉ ગેઉ। કઉષતિ ઉપિકાર વ઼ેદોમે ક્ષેપકક પ્રવ઼ેશ કેઉન્હિ ખે ભાષા વ઼ખ્તિગાની આવ પકડ઼િ રહઉ છથિ। મહ્ત્રાર્થમે મહર્ષિ પતંજલિ વ઼ૈજ્ઞાનિક મહત્વ઼્ય "યચ્છવ્દ આહ તદસ્માકં પ્રમાણમ્" અર્થાત્ ખે શવ્દ આકિ મંત્રક પદ કહૈએ, સએહ હમરા હેતુ પ્રમાણ અછિ- એકર અર્થ વાદમે ખા કs વ઼ેદે પ્રમાણ અછિ- સે કોના જેઉ સે નૈ ખાની। વ઼ેદમે સામાન્ય ખન ઉપયોગી આ નિરપેક્ષ સાહિત્ય છઉ। સભ વ઼્રાહ્મણ, ક્ષત્રયિ, વ઼ૈશ્ય આ શૂદ્રમે દીપ્તિ ભરિ દિયૌ આ ઓહિ દીપ્તસિં હમરો ભરિ દિઅ। - ૬ યજુર્વ઼ેદમે છૈ।

સીતા અવૈ છથિ, કમઉ ચાર પાર કરs ચાહૈ છથિ। મુદા મઉહ કહૈ છન્હિ ખે હમરા સ્નાન ચાહી, આ સ્નાનો કી તઁ સીતાક નનદિ। સીતા કહૈ છથિન્હ, દેઉી, ભોગ કર, યુગ-યુગ ચરિ। સીતાક નૈહર મથિલિ છયિન્હિ, મઉહ એતવો હઁસી ઠટ્ઠા નૈ કરત। આ સે મથિલિક દૂર્વ઼ાંશી સમ્પ્રદાય ગવૈત છથિ, કોનૈઉ આ વ઼ુધનક માયસઁ હમર સુનઉ અછિ।

ગદિ૧માનાક અઈગ ભાષા હેર છૈ હૌ, ઊક સભ ઓકના સભકેં ગદિ૧માના આ મગહિયા ડીમ કહૈ છૈ મુદા ઓ સભ અપનાકેં વંળાના કહૈએ, અપન ભાષાકેં વંળાના ભાષા કહૈએ। મુઁહપ૧ ગદિ૧માના કહિ કિS દેખ્યિયૌ, હ્ગડ઼ે કS ઊિ। વંળાના સભ ઐ વ઼શ્વિ઼કેં નીક આ ખનાપ દ્વાના સંયાઊતિ માનૈ છથિ।

નગ઼ન સભમે કંગઊ- ભખ્મિંગાક મોહ્ઊા વસિ ગેઊ છૈ, ઐ મોહ્ઊામે ળાતિ-પાતિ નૈ છૈ। સમિના ઊગ વડ઼કા ટેમ્ટવઊા વસ્તી છૈ વંળાના સભક, સુપ્પેતમે। વનૈએ ૩ળનૈએ। સતાન સભ મયેપુ૧સઁ પૂવ દક્ષિમિ દુઆઊકક દક્ખિનિ કાન્હામે આ ટઢ઼િયામે નૈએ। તીન- ચનુષમે માહિનિ સંથાઊ સભ।

સુભાષ યન્દ્ર યાદવ઼ મૈથિલિ ઊકકથા ' એકટા યનિમા ખેઊરિ નઓ ભરયા' કેન સમ્વન્યમે ઊખ્પૈ છથિ - "મનુસ્મ□તિ મે કહઊ ગેઊ છૈક ળે યુપયાપ કકનો શૂઊ તોડ઼ ઊિવ યોની નિહિ હેરિત છૈક। ; તહિના કકનો એકટા યીન ખા ઊવ કોનો અપનાય નહિ ભેઊ। ૨૯૬ કથાક આત્મવ઼ાયન થકિ। કથા ૬ પ્રાતિમિન ૩પસ્થિતિ કનૈત અછિ ળે સભક ળીવ઼ક મોઊ વનાવન હેરિત છૈક । અસહાય આ નિ્યનો કેં ળીવાક અયકિાન છૈક। એહિ સંસાન મે ઓકનો ઊઊ એકટા સ્પેસ (ળગહ) હેવાક યાહી। " ૬ મનુસ્મ□તિ એક ડામ એહેન સહિષ્મિુ અછિ, એકન પાઠ આયુનકિ વ઼ચિ શિવદાવ઼ઊીસઁ યુક્ત અછિ, ઊગૈએ ળેન વ઼યિકિ દ□ષ્ટિસઁ કોનો ગૈપ નૈ છૈ, મુદા ઓત્તૈ કછિુ ક્નૂન ગપ સેહો ઘોસિયા દેઊ ગેઊ।

વ઼ેદક વ઼દિશી ભાષા અનુવ઼ાદ સભમે ઋષકિ નામ હ્ટા દેઊ ગેઊ, મુદા મૂઊમે અપ્પનો ભેટ ળાયત। વ઼ૈદકિ દ્નષ્ટા તઁ સ્ત્ની આ શૂદ્ન ઋષિ સેહો છથિ, તખ્ન શૂદ્ન આ સ્ત્નીક વ઼નિ્દ્ય નયના કે ઘોસયિઊક? ળે શૂદ્ન ઋષિ કવ઼ષ ઐઊૂષ વ઼ૈદકિ ઋચ્યાક દ્નષ્ટા છથિ, ળે મહિલિ અપાઊ વ઼ૈદકિ ઋચ્યાક દ્નષ્ટા છથિ, સે કાત-કનોટમે કહિ ડાઢ઼ નહિતિથિ? મુદા વ઼ેદમે ઋષિ, દેવ઼તા આ છન્દ યએહ તીનટા શવ્દ સભ સૂક્ત ક્નમાંકક સંગ ભેટત, દ્નષ્ટા હમ અહઁ કહૈ છયિન્હિ, મુદા તકનો દુનુપયોગક પ્નયાસ ભેઊ। વ઼ૈદકિ ઋષિ સ્વ઼યંકેં આ દેવ઼તાકેં સેહો કવ઼િ કહૈ છથિ। સમ્પૂન્મિ વ઼ૈદકિ સાહિત્ય઼ ઐ કવ઼િ યેતનાક વ઼ાઙ્મય઼ મૂન્તિ અછિ। ઓતS આધ્યાત્મ યેતના, આયદિવ઼ત્વ઼મે ૩ત્તીન્મિ ભેઊ અછિ, એવ઼મ્ ઓકના

आधिभौतिक भाषामे रूप देल गेल अछि। ओना ओहि समयमे सेहो सम्मिलित रूपेँ साल भरि ऋच्या पाठ करैवलाकेँ पार्जन्यक स्वागतमे टर्र-टर्र करैवला बेङ-माण्डूक सन विशिष्ट अथर्ववेदमे देल गेल छै। माने गायनमे असहमतिक स्वरक स्वीकृति छल। ऋग्वेदमे सेहो माण्डूक गान छै। मन्त्रार्थमे महर्षि पतंजलिक वैज्ञानिक मन्तव्य 'यच्छब्द आह तदस्माकं प्रमाणम्' अर्थात् जे शब्द आकि मंत्रक पद कहैए, सएह हमरा हेतु प्रमाण अछि- एकर अर्थ वादमे जा कऽ वेदे प्रमाण अछि- से कोना भेल से नै जानी। हमरा लेल नँ मंत्रक ऋषि, छथि, देवता छथि, दुनू कवि छथि सूक्तक लेखक, आ सएह हमरा लेल प्रमाण अछि। जनक सहस्र गाय केर शर्त पर शास्त्रार्थ रखलन्हि। याज्ञवल्क्य गाय सभकेँ रोमि विदा होइपर छल आकि गार्गीक प्रश्न शुरू। याज्ञवल्क्यक उत्तरपर ओ प्रतिप्रश्न पूछऽ लगली। याज्ञवल्क्य बजला- अहाँक माथ ने भंगा जाय, माथक कटएक आँक ने भऽ जाय प्रश्न पूछि-पूछि। मुदा गार्गी तइयो पुछलन्हि- समय काल ककर अधीन। याज्ञवल्क्य बजला- अक्षरक।

जखन साहित्य अकादेमी द्वारा मान्यताप्राप्त कथित लिटरेरी एशोसियेशन चेतना समितिक पत्रिकाक सम्पादक आइयो लेखमे ब्राह्मणवादी संस्कारक अन्तर्गत जोड़-घटाव करै छथि। "पचपनिया मैथिली" मे सुभाष चन्द्र यादव ऐ सम्पादक महोदयक विषयमे लिखै छथि- "डॉ॰ रमानन्द झा 'रमण' अपन नोटबुक मे टिपने छलाह- 'ब्राह्मण कहैत छथि सोझा छी, सोल्हकन कहैत अछि बाभन छी। हम की कही जे की छी?' एहि टीप मे सोल्हकन लेल जे निरादर व्यक्त भेल अछि, से आर किछु नहि; जातीय विद्वेष आ घृणाक भाषिक अभिव्यक्ति थिक।" एहि विषय हम महेन्द्र मलंगियाक नाटक सभमे प्रयुक्त अहि तरहक शब्दावली पर उठैत रहल छी, मुदा हुनकर जातिवादी रंगमंच कोनो नशिंमे मातल अछि आ दोसरक भावनासँ ओकरा कोनो मतलब नै छै। मुदा जखन बीसम शताब्दीमे साहित्य अकादेमीक पोथीमे लोरिकपर मैथिली आलेखमे एकटा सज्जन लिखै छथि जे ब्राह्मणपर कएल शूद्रक अत्याचारक विरुद्ध लोरिक ठाढ़ भेलाह, रमानन्द झा 'रमण'

आ मलंगियाक हाल देखबे केलौं तखन हुनिकर सभक मनसँ- पूर्वज अकबरकालीन तुलसीकेँ की दोष देल जाय! जेना विष्णु शर्मा पंचतन्त्रक कथा कहैत- कहैत स्त्री आ शूद्रक पाछाँ अकारण क्रूर भऽ जाइ छथि सएह हाल रामचरितमानसक अछि। पंचतन्त्रमे खिस्सा सभ ठीक छै मुदा स्त्री आ शूद्रक पाछाँ विष्णु शर्मा पड़ि जाइ छथि, से एकर पुनर्लेखन नारायण पण्डित केलनि, ओहि सभ खिस्साकेँ, हितोपदेश नामसँ। आ हितोपदेश वेसी व्यावहारिक अछि, तँ की रमानन्द झा 'रमण' आ महेन्द्र मलंगिया माफी मंगताह आ अपन रचना सभक पुनर्लेखन करता? पुरुष परीक्षाक अनुवादक उपयुक्त स्थलपर ई टिप्पणी करता जे संस्कृ□त आ अवहट्ट वला विद्यापतिक जखन राजाक प्रशस्ति- पाठमे पुनः- प्रात भेल छन्हि तखन की हुनकर ई साचांश छन्हि जे ओ राजपूतीक चारित्रिक विषयमे गलत बात लिखिता आ ई समस्त काल जातिवादी लिपिकारक करिदानी अछि? पुनः हितोपदेशमे नारायण पण्डित कहै छथि:

आहार निद्रा भय मैथुनं च सामान्यमेतत् पशुभिर्नराणाम् ।

धर्मो हि तेषामधिको विशेषः धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः ॥

आहार, निद्रा, भय आ मैथुन ई मनुक्ख आ माल- जालमे एक्के रङ होइए। मनुक्खमे विशेष खाली धर्म अछि जे तँ ऐ सँ विहीन ओहो माल- जाल सन अछि।

२

अन्तर्जाल भेल साइबर स्पेस।

मुदा खतरा ओतौ अछि, वाइरस, स्पैम, मालवेयर, स्पाइवेयर, ट्रोजन ह□र्स आ व□र्मक खतरा।

वाइरस अछि निक्तवोजी, अपने ई एकसँ दोसर प्रोग्राम वहार करैए, ओना

ईहो अपने अछि प्रोग्राम। सिस्टम, स्टील्थ, [illegible] आ पोलीमॉर्फिक वायरस एकर प्रकार भेल।

वॉर्म सेहो वायरस सन प्रोग्राम अछि जे नेटवर्कसँ पसरैए।

ट्रोजन हॉर्स बड़ कलामी, लगत जे करत ई घातक काज मुदा करऽ देत बीर घातक काज। स्पाइवेयर अछि जासूस जे व्यक्ति वा संगठनक जासूसी करैए। मालवेयर अछि ऐ सभक माने वायरस, वॉर्म, स्पाइवेयर आ ट्रोजन हॉर्सक सम्मिलित जे नेटवर्कक कम्प्यूटरकेँ नुकसान पहुँचाबैए। कोनो ठीक चीजकेँ किनबाक- बेसाहबाक लेल अज्ञात लोककेँ पठाओल बेहिसाब ई- पत्र भेल स्पैम।

एन्टी वायरस ऐ सभपर लगाम लगबैए। फायरवाल हैकर वा क्रैकर सभकेँ अहाँक कंप्यूटर वा नेटवर्कक पर आक्रमण वा अधिकारकेँ रोकबाला कठिन देबार अछि।

आ अन्तमे हमर एथिकल हैकर, जे अछि हैकर वा क्रैकर सभक बाप, जे अहाँक [illegible] लेल अहाँक एन्टीवायरस आ फायरवालकेँ तोड़बाक प्रयास करैए, आ जँ से भऽ गेलै तँ एन्टीवायरस आ फायरवालकेँ आर मजगूत करैए नीक प्रोग्रामिंगसँ आ तखन फेर अटैक करैए। बुझियौ मॉकड्रिल करैए।

एकटा अपन छवि बनाउ, जकरासँ नीक लोक प्रेम करैए आ जे योग्य अछि कर्मठ अछि।

मुदा जेना जेना अहाँ आगाँ बढ़ब, समय बीतत हमरा सभमेसँ बहुतक अपन मोनक छवि दूषित होबऽ लगै छन्हि आ से होइए ओइ गप सभपर ध्यान देलासँ जे दोसर हमरा विषयमे की सोचैए वा बाजैए। मुदा ओ अपन छद्म ज्ञान वा कहियो काल नीको ज्ञान वा कहू जानकारी तँ दऽ सकै छथि मुदा की ओ हमर अपन छवि वा योग्यता हमरा दऽ सकै छथि, नै वरन् ओ बेसीकाल तकर

उनटा करै छथि। माता-पिता आ शिक्षक सेहो बच्चाक काज अनायास ऐमे सम्मिलित भऽ जाइ छथि। संगी-साथी, सर-समाज आ सम्बन्धी सेहो। ओ कम वा बेसी सुन्दर अछि, ओकर गामक ओर बच्चासँ नीक-अधला छै, ओर तेज वा बुड़बककेँ दोस्त बनाउ वा नै बनाउ, ओकरा दुआरे हम सभ जितैत वा हारैत। हुनकर क्रियाकलाप आ बात ई सभ करैए, मुदा से बच्चे हुनक ने जानन अहाँ तरपर कान-बात देबै।

सफलता जे वास्तवमे सफलता होइ, बनि कम्प्रोमाइजवला सफलता, तकरसँ अहाँक आत्मविश्वास आगाँ बढ़त। असफलता लोककेँ हतोत्साहित बच्चे करत जखन ओ वास्तवमे असफलता होइ। जेना भेलाक विभिन्नताक कतेक साहित्यकेँ नीचाँसँ ऊपर लऽ गेल आ कतेक केँ ऊपरसँ नीचाँ। त चीजी कऽ कय रचनात्मक साहित्य लिखब आ तरपर सभिल शोषक लेखिकानी इंस्टीट्यूशन सभासँ

पुरस्कार लेब मूल्य लेब सफलता भेल आकि असफलता? आ सुभाष चन्द्र यादव सन सुशील सन जनिती भरि अड़नाइ आ तकर मूल्य चुकेनाइ भेल सफलता आकि असफलता?

त अपन आत्मविश्वास बनेने रहू, अनुशासन अहिंग राखू। योग्यतामे सभदिन व□द्धि करैत रहू, जे एक दिन एहेन बीतय जे अहाँक योग्यतामे कोनो व□द्धि नै भेल त बुझू ओ दिन बरबाद भऽ गेल। आ स्थितिप्रज्ञ बनू, आत्मविश्वास राखू। आ जँ अहाँमे ई सभ गुण अछि त अहाँ समानान्तर धाराक लोक छी, अहाँक स्वागत अछि।

भोरे सकाल उठू, घरक काज सेहो करू, ऐसँ अहाँ जवाबदेह आ आत्मनिर्भर भऽ सकब। समस्या एलापर सहायता माँगैसँ लाज नै करू आ दोसराक समस्यामे दोसराकेँ सेहो सहायता करू। शक्तिशाली दुश्मनक सोझाँ ठाढ़ भेनाइ कठिन अछि, ऐ लेल चाही साहस, नीक-अधलाक अन्तर्दृष्टि द□ष्टि आ सत्य, आ अन्यायक प्रतिरोध करबाक हथियार नै राखू। चरित्रवानसँ कहियो नै

𑒮𑒳𑒢𑒞, 𑒏𑓄 𑒏𑒨 𑒠𑒹𑒐𑒰𑒅, 𑒏𑒢𑓂𑒢𑒰𑒢𑒼𑒯𑒙 𑒂 𑒅𑒣𑒩𑒰𑒑𑒰- 𑒅𑒣𑒩𑒰𑒑𑒲𑒮𑒿 𑒏𑒯𑒱𑒨𑒼 𑒢𑒻 𑒯𑒋𑒞,
𑒏𑓄 𑒏𑒨 𑒠𑒹𑒐𑒰𑒅, 𑒖𑒹 𑒦𑒰𑒭𑒝 𑒠𑒻 𑒕𑒲 𑒮𑒹 𑒏𑒩𑒥𑒼 𑒏𑒩𑒴।

𑒁𑒢𑓂𑒞𑒩𑓂𑒖𑒰𑒪𑒣𑒩 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒩𑒰𑒮 𑒐𑒩𑒰 𑒕𑒻, 𑒢𑒹 𑒤𑒹𑒏 𑒢𑓂𑒨𑒴 𑒥𑒢𑒰𑒅 𑒢𑒯𑒱𑒨𑒹𑒿 𑒣𑒮𑒰𑒩𑒴,
𑒁𑒢𑓂𑒞𑒩𑓂𑒖𑒰𑒪𑒏 𑒁𑒣𑒩𑒰𑒔𑒲 𑒮𑒦𑒮𑒿 𑒥𑒔𑒴।

𑒁𑒣𑒢𑒰𑒮𑒿 𑒏𑒧𑒖𑒼𑒩 𑒂 𑒕𑒼𑒙𑒏𑒹𑒿 𑒛𑒩𑒰𑒅 𑒢𑒻, 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒰𑒩𑒱𑒞 𑒢𑒻 𑒏𑒩𑒴, 𑒖𑒹 𑒏𑒱𑒨𑒼
𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒮𑓀𑒑 𑒄 𑒏𑒩𑒻𑒋 𑒞𑒏𑒩 𑒐𑒱𑒪𑒰𑒤 𑒬𑒱𑒏𑒰𑒃𑒞 𑒏𑒩𑒴।

𑒖𑒨𑒣𑒳𑒩- 𑒤𑒳𑒙 (𑒢𑒏𑒪𑒲 𑒣𑒋𑒩), 𑒏𑒧 𑒡𑒳𑒿𑒂 𑒥𑒪𑒰 𑒔𑒳𑒪𑓂𑒯𑒰 𑒮𑒢 𑒮𑒧𑒰𑒢𑒰𑒢𑓂𑒞𑒩 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨
𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒁𑒢𑓂𑒫𑒹𑒭𑒝, 𑒢𑒱𑒭𑓂𑒏𑒰𑒧 𑒏𑒩𑓂𑒧 𑒂 𑒥𑒱𑒢𑒳 𑒣𑒰𑒃 𑒣𑒳𑒩𑒮𑓂𑒏𑒰𑒩𑒏 𑒪𑒰𑒪𑒔𑒏 𑒏𑒋𑒪 𑒖𑒰
𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒃𑒮𑒿 𑒯𑒧 𑒮𑒦 𑒢𑒲𑒏 𑒮𑒧𑒰𑒖 𑒥𑒢𑒰𑒥𑒲 𑒂𑒑𑒰𑒿 𑒥𑒜𑓃𑒰𑒥𑒲।

𑒮𑒦𑒧𑒹 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒠𑒼𑒭 𑒯𑒼𑒃 𑒕𑒻, 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒣𑒣𑒱𑒯𑒲 𑒥𑒖𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒠𑒼𑒭। 𑒖𑒿 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒰𑒮 𑒢𑒻 𑒯𑒳𑒁𑒨
𑒞𑒿 𑒍𑒃𑒧𑒹 𑒬𑒳𑒩𑒴 𑒏𑓄 𑒠𑒹𑒐𑒱𑒨𑒾। 𑒍𑒃𑒪𑒪 𑒏𑒋𑒏 𑒥𑒩𑓂𑒐𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒝𑒏
𑒂𑒫𑒬𑓂𑒨𑒏𑒞𑒰 𑒯𑒼𑒃 𑒕𑒻। 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒪𑒼𑒏 𑒢□𑒞𑓂𑒨, 𑒢𑒰𑒔𑒧𑒹 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒕𑒻 𑒂 𑒪𑒏𑒛𑓃𑒲 𑒂 𑒧𑒰𑒙𑒱
𑒮𑒧𑓂𑒥𑒢𑓂𑒡𑒲 𑒠𑒼𑒭 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒕𑒻। 𑒍𑒃 𑒏𑒪𑒰𑒏 𑒮𑒧𑓂𑒧𑒰𑒢 𑒏𑒩𑒴।

𑒍𑒯𑒱 𑒫𑒱𑒏𑒰𑒮𑒏 𑒮𑓂𑒫𑒰𑒑𑒞 𑒏𑒩𑒴 𑒖𑒃𑒮𑒿 𑒣𑒩𑓂𑒨𑒰𑒫𑒩𑒝 𑒢𑒭𑓂𑒙 𑒢𑒻 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱, 𑒖𑒞𑒹𑒏
𑒑𑒰𑒕 𑒏𑒰𑒙𑒻 𑒕𑒲 𑒞𑒃𑒮𑒿 𑒠𑒮 𑒑𑒳𑒝𑒰 𑒑𑒰𑒕 𑒩𑒼𑒣𑒴।

𑒁𑒮𑒑𑒩 𑒏𑒰𑒖 𑒏𑒩𑒻𑒧𑒹 𑒛𑒩 𑒪𑒰𑒑𑒻𑒋, 𑒕𑒼𑒙𑒼𑒮𑒿 𑒕𑒼𑒙𑒼 𑒏𑒰𑒖? 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑒹 𑒮𑒦 𑒏𑒰𑒪 𑒢𑒻
𑒦𑒹𑒙𑒞, 𑒮𑒦 𑒏𑒰𑒪 𑒢𑒹 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒦𑒹𑒙𑒞 𑒢𑒹 𑒮𑒧𑒩𑓂𑒟𑒢𑒹।

𑒦𑒴𑒞 𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒱𑒮𑒩𑒱 𑒖𑒰𑒅, 𑒄 𑒢𑒲𑒏 𑒯𑒳𑒁𑒨 𑒞𑒐𑒢𑒼, 𑒫𑒰 𑒁𑒡𑒪𑒰 𑒯𑒳𑒁𑒨 𑒞𑒐𑒢𑒼।

𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒮𑓀𑒑𑒲 𑒮𑒰𑒟𑒲 𑒂 𑒮𑓀𑒑𑒚𑒢 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏𑒹𑒿 𑒠𑒳𑒐𑒲 𑒏𑒩𑒻 𑒕𑒟𑒱, 𑒞𑒰𑒧𑒮 𑒅𑒚𑒥𑒻 𑒕𑒟𑒱,
𑒯𑒞𑒼𑒞𑓂𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞 𑒏𑒩𑒻 𑒕𑒟𑒱, 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒥𑒱𑒠𑒰 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒮𑒧𑒨 𑒂𑒥𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒢𑒲𑒏 𑒠𑒱𑒢
𑒁𑒐𑒢𑒼 𑒂𑒥𑒻𑒥𑒪 𑒁𑒕𑒱, 𑒁𑒡𑒪𑒰 𑒮𑒧𑒨 𑒏𑒯𑒱𑒨𑒰𑒡𑒩𑒱 𑒔𑒪𑒞। 𑒁𑒡𑒪𑒰 𑒮𑒧𑒨𑒧𑒹 𑒮𑒲𑒐𑒪
𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒠𑒴𑒩𑒑𑒰𑒧𑒲 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒃𑒮𑒿 𑒯𑒧 𑒁𑒣𑒢 𑒑𑒪𑒞𑒲 𑒢𑒻 𑒠𑒼𑒯𑒩𑒰𑒥𑒲। 𑒏𑒰𑒖𑒏 𑒥𑒲𑒔

વ઼િભિામ દs યિણ઼િ઼ન કનવ સેહો શ્રાવ઼શ્યક, ગામ, સન-કુટુમ, દોસ-મહીમ શ્રોરડામ એનાર-ગેનાર સેહો શ્રાવ઼શ્યક।

વહિાનકિ વાદ પનસિોપ્પા દેખ્ખવા ઉઠ તૈયાન નહૂ। સત્ર દનિ હએત ળાદૂ। શ્રા સે હએત ળખ્ખન શ્રહાઁ સત્ર દનિ કોનો ને કોનો એક્કો ગોટેક સહાય઼તા કનો। સદા શ્રપન વ઼યિાનકેઁ ઉપ્પિ કિs ળમા કનૈત નહૂ। ળઉપૈ વણ઼િુ નાગા કેને કનૂ, સાત-શ્રાડ ઘામ્ટા સૂતૂ, ભોળન એહેન કનૂ ળે શનીન ઉઠ સ્વ઼ાસ્થ્યકાની હુશ્રય઼। મોન તૈયો ઉચટs ઊાગય઼ તઁ ધ્ય઼ાન ઊગાઉ, યત્નિ વનાઉ, પઢૂ, સંગીસઁ ગપ કનૂ, ઘૂમૂ શ્રૂિ, સંગીતપન નાચૂ।

ળીવ઼ન શ્રમૂઉ્ય઼ શ્રછિ, એકન સત્ર ક્ષમાક પ્નતિ સમ્માન નાખૂ। વણ઼િુ શકિારાત્ક મેહનતિ કનૂ શ્રા સે તખ્ખન તઁ શ્રાનો કનૂ ળખ્ખન ઐસઁ શ્રસસ્ઠળતા પ્નાપ્ત હુશ્રય઼। દેખ્ખઉ સપના માને ઉક્ષ્ય઼ દસિ સત્ર દનિ એક ડેગ, શ્રા શ્રો ળઁ મનોનંળક ઊાગય઼ તઁ વૂ઼દૂ ળે શ્રહાઁ સમાનાન્તન યાનાક ઊક છી, શ્રહાઁક સ્વ઼ાગત શ્રછિ।

કહહઁસી, શ્રાઁપ્પિ યિનતિ ગૈ ગેઉ, તામસકેઁ ગુકેવા ઉઠ, ઈ ખુશી ગૈ દેખ્ખેઉક, ઈ હાસ્ય઼કમ્મકિા સુનઊાક વાદક હાસ્ય઼ હઁસી ગૈ છઉ, ઈ દોસનાકેઁ સંગી વનાવૈવઊ શ્રોકના વ઼શ્િવ઼ાસ દશ્રિાવૈવઊ ળે શ્રો હમના ઉઠ ખાતના ગૈ શ્રછિ સે હઁસી ગૈ છઉ। વ઼□દ્ય શ્રા વેમાનક સહાય઼તા કનવાક યાહી, યુદ્ય શ્રા પ્નાક□તકિ શ્રાપદાસઁ પ્નભાવ઼તિ ઊક શ્રા દેશક મદતિ કિનવાક યાહી, ઈ કહયિો નનિ્થક ગૈ હએત। શ્રહાઁક સોહાઁ સ્પષ્ટ ઊક્ષ્ય઼ હેવાક યાહી, પનશ્િનમ શ્રા ઊગનસઁ શ્રો પ્નાપ્ત સેહો હએત। શ્રન્યાયી શ્રા કષ્ટ પહુઁયેનહિાનક પ્નતિ વિળનાર સીખૂ, માનવ઼તાક પ્નતિ નષ્િકામ ભાવ઼સઁ સેવા કેનહિાનક પ્નતિ કિ□તળ્ઞ હૌ। દવ્િય઼ાંગ ઊકક પ્નતિ હમના સત્રકેઁ ધ્ય઼ાન નાખ્ખવાક યાહી, હુનકા પ્નતિ સંવ઼ેદનશીઊ નહવાક યાહી। દવ્િય઼ાંક ઊક દવ્િય઼ાંગતાક શ્રઊાવે સેહો વહુત નાસ ગુમ્મસઁ વ઼ભૂિષતિ છથિ, હમના સે દેખ્ખવાક યાહી, શ્રા હુનકા શ્રપન શ્રધકિાન ભેટનિ તઁશ્ર્મે સંગ દેવાક યાહી। વ઼શ્િવ઼ સ્વ઼ાસ્થ્ય઼ સંગઠનક શ્રનુસાન વ઼શ્િવ઼મે પન્દ્નહ પ્નતશિત ઊક દવ્િય઼ાંગ છથિ। ભાનતમે પહિઊ વેન ૨૦૦૧ મે દવ્િય઼ાંગ ઊકક ગામ્મના ભેઊ

ળે માત્ર ર૧ પ્રાતશિત શ્રછિ, ૬ પ્રાતશિત વશ્વિાસ યોગ્ય નૈ શ્રછિ। સહ્કન્મી, સંગી સાથી સન વનવાક દ્વાવ શ્રહાઁપ૧ સદષ્પિન ૧હત, મુદા શ્રહાઁ શ્રોર દવ્ાવમે નૈ શ્રાઉ। શ્રપન વ્યક્તિત્વ વકિસતિ કરૂ।

હૅસી- ઽટ્ઠા ઉ૭ શ્રપન ળાન ગમેનાર નીક ગપ નૈ।

ખેતમે ૧સાયનકિ પદાર્થ વાતાવ૧ણમેં દૂષતિ કરૈત શ્રછિ। ળૈવકિ પદાર્થક ઉપળા વનિુ ૧સાયનકિ પદાર્થક હોરત શ્રછિ, ૬ વેશી સ્વસ્થ્યકા૧ી શ્રા યહ્ટા૧ હોરત શ્રછિ।

ળનિકામે શ્રાત્મ- સમ્માનક ભાવ કમ છન્હિ શ્રો નીક શ્રનુભવ કરૈ ઉ૭ દોસ૧ાક માન્યતાક શ્રાવશ્યકતા પડૈત શ્રછિ। ફેસવુકપ૧ પોસ્ટ કઽ કય ૭ાર્ક ગાનૈવ૭ ઉ૭ ૬ ગપ શ્રછિ। કતોક ઘટના ઘટતિ ભે૭ શ્રછિ ળિરમે સે૭શ્રી ઉ કાઉ વ્યક્તિ ખિયારમે ખસિ પડ઼૭થિ, છાતસઁ ખસિ પડ઼૭થિ શ્રા મ□ત્યુ ભઽ ગેઉન્હિ। હૅ મુદા સે૭શ્રી કેર પ્રયોગ શ્રહાઁ નીક ઉદ્દેશ્ય ળેના વેટી સંગ સે૭શ્રી શ્રાદકિ રૂપમે કઽ સકૈ છી।

સમયક મહત્વ વુઝૂ, શ્રાઉરૂ સભ સમતિિ, ખાસ કઽ પ્રાતક્રિયાિવાદી સમતિિ- સંસ્થા શ્રહાઁક વહુત સમય ખ૧ાપ કઽ સકૈત શ્રછિ। કખનો નયિત સમયસઁ નૈ પહુઁચયિ સકી તઁ દુખ વ્યક્ત કેનાર નૈ વસિરૂ। પાર હમ૧ા સભકેઁ પ્ર૧ક□તસિઁ દૂ૧ કઽ દેને શ્રછિ। કનાડાક મૂઉ રમ્યુડયિન શ્રવેનાકો કવીઉ ળે હુનકા સભ ઉ૭ શ્રાકર્ષતિ ૧ખિત્વ શ્રોડાનાકમે ૧હૈ૯ પર્યાવ૧ણક ઉ૭ કતોક સુન્દ૧ સુન્દ૧ ઉકોક્તિ વનેને શ્રછિ ' તખન ળખન શ્રાખિ૧ી ગાછ કટિ ળાયત, શ્રા સભ ચા૧મે માહુ૧ દઽ દેઉ ળાયત, તખન ળખન ગોટ-ગોટ માઁછ શ્રહાઁ મા૧િ દેવ, તખને શ્રહાઁ વૂઝિ સકવ ળે શ્રહાઁ પાર નૈ ખા સકૈ છી।'

સામાન્ય ળીવન ળીવૂ ળરસઁ પર્યાવ૧ણકેઁ નુકસાન નૈ હોર, પ્ર૧ક□તસિઁ ળુડ઼િ કઽ ૧હૂ।

એક દોસનાસઁ મણિ ઝિણકિs નહૂ, મનુક્ખે ટા નૈ, માઝ- બાઝ, ચડ઼િ ચુનમુની, સબાસઁ, પ્નાક□નસિં ચાનસઁ।

શ્રા સે બઁ શ્રછિ નઁ વુદૂ બે શ્રહઁ સમાનાન્નન ચાનાક ઝેક છી, શ્રહઁક સ્વાગત શ્રછિ।

કયિો સમ્પૂન્નમ નૈ હોશ્ય મુદા નીક વનવાક પ્નયાસ નઁ કૈયે સકૈ છી। હમના સબકૈં સત્યવાદી, શ્માનદાન શ્રા દયાલુ વનઝ નહવાક પ્નયાસ કનવાક ચાહી। ઈ સંસાન નહવા યોગ્ય એકટા નીક સ્થાન વનઝ નહય તકન પ્નયાસ સબકૈં કનવાક ચાહી।

હમના સબકૈં ખૂવ પઢ઼વાક ચાહી, નવ નવ ચીબ સખૈત નહવાક ચાહી।

૩

શ્રાનાઙ્ઙ ડ઼િનાતુને નિ માનિહણિ ાનદ વ઼દિહ માનિહણિ ડ઼િનાતુને મોવ઼મેનત

શ્રસુદો- ચનાતિચિસિમ નિ માનિહણિ ાનદ તહે ચાસે ોડ ખામાઝાનાનદા હ્ઙા

થહે તનિઝ ોડ ખામાઝાનાનદ હ્ઙા' સ વોક "માનિહણિ મ્રોવ઼ઝઃ થમિ, ષોચેનિય઼ ાનદ ઙુસનોનિસ" (૨૦૨૧) સિ મસિઝાદનિગ઼ા શ્ન સિ । ચોઝઝચનોનિ ોડ સોમે સયનદચિોનેદ સો- ચાઝઝદ ચનાનિચિોઝ ાનતચિઝસ ોન સોમે ોડ હસિ ચાસતે નોવ઼ઝસિતસ઼ થહે ૨૬૩- પાગે વોક ચાન ોનઝય઼ વે સોઝદ નિ હાનદવોનદ તો ઝવિનાનેસિ ોહેને નિોઝિઝ નોત઼ હેને સિ । ચોનનેચનોનિ, ।નોન- ચાસતે ોનનિન' સ ોનક, ।િ, ષુવહાસહ છહાનદનો ાદાવ઼' સ નોવ઼ઝ ' ઘુઝ' , હાસ વેન દોઝત ોનિહ વય઼ હમિ નિ તો ઝનિસ, ોડ ચુનસે ોનિહુત નાદનિગ઼ા નિ ૨ ામ પનેસેનતનિગ઼ા તહોસે તો ઝનિસ હેને ડોન યુોને નતેનતાનિમેનતૌ મુસત હાવ઼ે નાદ ઘુઝ, ડિ યુો હાવ઼ેન' ત ાઝોનાદય઼, નાદ નિ ડનિસત વેયુાસે તહેન યુો ોનિઝ હાવ઼ે । મોને નતેનતાનિનિગ઼ો શ્રપેનોનિયે ઘુઝ સિ ાવ઼ાઝિવઝ ોન વ઼દિહ શ્રનચહવિોનિહ તહે પેનમસિસોનિ ોડ ષુવહાસહ છહાનદના ોદાવ઼ ાત તહસિ

ભનિક <u>હાનપ:વ્દિેહાયોનિ્પોનહેલિમ્</u>

"થહે ૌકનેસસ ોડ નહે નોવેલ સિ નહે ુનહેલ' સ પોભનિયિાભ વાસિ્ થહે પાનનસિાનસહેપિ નૌાનદસ। પાનનયિુભાન પોભનિયિસ દોસ નોન દો ળુસનયિ નો નહેૌનક"

૨ન। નોવેલૌહેન પોભનિયિસ સિ નોન ગેમોનેભય્ નિવોભેદ, નહેન સિ નો ટુસનૌનિ ોડ ' પોભનિયિાભ વાસિ ાનદ પાનનસિાનસહેપિ ોડ। પાનનયિુભાન પોભનિયિસ'. યહુમકેનુ ાનદૈ ાનનુ સેદ પોભનિયિાભ વાસિ ોન પાનનસિાનસહેપિ્ ષુવહાસહ છહાનદનૌ ાદાવ' સ ' વ્ોને' ૈહેયિહ યામેુન નિ ૨૦૨૨ ાનદ સિ ાવ્ાભિવભેૈનિહ પેનમસિસૌનિ ોડ ષુવહાસહ છહાનદનૈ ાદાવ ોન વ્દિેહા શ્નયહવિે ાન નહસિ ભનિક <u>હાનપ:વ્દિેહાયોનિ્પોનહેલિમ્</u>, સિ ોન પોભનિયિસ વુન ેવેન નહેન ષુવહાસહળ' સે નયહાનનનિગા સનયભેોવવ્ાનેસ નહે નેદ ોડ ાનય્ પોભનિયિાભ વાસિ્ ઢ઼ાદ મય્ વૌક ' મનિ મનાવ્ાભ ષુવહાસહ છહાનદનૈ ાદાવ' ૈહેયિહ સિ ાવ્ાભિવભે ાન નહસિ ભનિક <u>હાનપ:વ્દિેહાયોનિ્પોનહેલિમ્</u> શ્નોન નહે ોનહેન હાનદ, મન પ્યામભાનાનદ હ્હા સ્નુદસ ભકિ। સપોકેસપેનસોન ોડ સોમે પોભનિયિાભ પાનનય્ોન। યાસનેસિન ોનગાનસિાનૌનિ નાનહેન નહાન। ભનિાનાનય્ યનનિયિ્ પ્યામભાનાનદા હ્હા' સ જનાહમનિસિનયિ વાસિ ાગાનિસન ષુવહાસહ છહાનદનૌ ાદાવ સિ ાન ાભાનમ વેભભ થહે પાનાભભભ સનેનમ સિ યોનસયૌાસિ ોડ હૌ પ્યામભાનાનદા હ્હા નાકેસ નહે ભેડનસિન સનાનયે નો પનોમોને જનાહમનિસિમ ાનદ ૌાનનસ નો સાયનડિયિ સોયાભિ ળુસનયિ્ ૨ન હસિ વૌદાના, હે પનુદભય્ મેનનૌનિસ નહે માનિહભિ નિનાનસભાનૌનિ ાસસગિનમેનન વેસનૌદ ોન હમિ વય્ નહે ષાહનિયા શ્કાદેમિ, ાનદ નહસિ ાસસગિનમેનનૌાસ ાભભાનેદ નો હમિ નોન ોન ાયયુોનન ોડ મેનનિ વુન સોભભય્ ોન નહે ગનુનદ ોડ હસિ યાસને નનિભ ાનદ નિ ભુૌડ નહેસે દેદસ્ ઢોન પોપભ ભકિ હમિ, માનિહભિ- ગભાનેદ ૌનક સિ મેગભય્। ભનિ નિ નહેનિ *યુનનયિુભમ વ્ાની,* વુન નિ સિ। ટુસનૌનિ ોડ ભડિ ાનદ દાનહ ડોન નહે પોપભ ોડ નહે પાનાભભભ સનેનમ્ શ્નોહય્ દદિ ૨ યાભભ પ્યામભાનાનદા હ્હા। પસુદો- યનનિયિ? જેયુાસે હે સિ। પસુદો-

યનાિયિ હૈનાિસઃ "શ્રડોના નોનાઉય઼ । હુનદનેદ યોનસોાડ ળુાનેય઼, ઘાુનાિનાિહ સિ યનેદાિદ ાિહૈનાિનિગ । દગિનડિદિ નોવ઼ેઉાન નહે દનોમસ, સનાુગાગઉસ ાનદ મિોનેસિાડ નિાેના- યાસનેિ માનનાિગ઼ે ષો, દદિ પ્યામાઉનાનદા હુહા નાકે ાોય઼ નહસિ યનેદાિ ડનોમ ષુસહઉિ? ૨સ નહસિ નહે યુઉમનિાાનાિનાડ નહે ાનનોગાનયે ાડ હસિ જનાહ્મનિસિનાયિ પવનાિગાનિગ ("થહ્નુગાહ મય઼ ાહમિસ ાનદ ડાનયોસિ ૨ યાન પઉાયે સોમે ઉનાિનાુને ાન નાપ ાનદ યાન દૌનગાનાદે સોમે નો નહે વોનાોમ") ાન સિ નહસિ નહે વ઼દિનયે ાડ હસિ ઉાયક ાડ સનુદય઼? ડ઼ન મે નાકે યુો ાોય઼ ડનોમ નહે સેઉડસિહૌનઉદ ાડ પ્યામાઉનાનદા હુહા, ાોય઼ ડનોમ દેયેપનાિન ાનદ દસિગુસિ નો નહે સનિયેને ાનઉદ ાડ ષુસહઉિ' સ માગાયિાઉ ઉનાિનાુને઼ શ્રૌઉયોમે નો નહેૌનઉદ ાડ ષુસહઉિ' સ ઉનાિનાુને઼ હેને સિ ષુસહઉિ' સ ' ઘામવાઉિ' (૧૯૮૨) ાહયિહ સિ નૌ ાવાિઉિવઉ નિ નહે વ઼દિહા શ્રનયહવિ઼ ાન નહે ઉનિક હાનાપ઼વ઼દિહ઼ાયોનિ્પોનહ઼હિનમ઼ ૨ન નહે ડનિસન ઉનિ ાડ નહસિ નોવ઼ેઉ, ેવ઼ેન વેડોને નહે નોવ઼ેઉ વેગાનિસ, ષુસહઉિ ાનાિસ ાવુોન નહે નોવ઼ેઉ ' ઘામવાઉિ' : "૨ન સુપપોનાન ાડૌદિૌ માનનાિગ઼ે ાનદ નિાેના- યાસનેિ માનનાિગ઼ે" ાનદ હેને વેગાનિસ નહે નોવ઼ેઉ થહે દાનહ ાડ । વઉિઉાગે ાોમાન ાનદ નહેન નહે નાુોવઉ ેનસુેસ, ાહિ ાઉિઉ યનેમાને નહસિ વ઼ઉિઉાગે ાોમાન? જનાહ્મનિ યોમમુનાિય઼ ાન ૈાદાવ઼ યોમમુનાિય઼ ાડ નહે વ઼ઉિઉાગે? યનિસહ પ્યુમાન મસિહ્ના' સ ' યુ શ્ચાિનાન પ્યે જાયિહ મે' સિ । હસિનોનાયિાઉ વાિગાનાપહ્ય઼ ાડ નહે પ્યોસાિ ઢ઼વિ઼ન઼ હે હાસ ાઉસો ાનાિનેન હસિનોનાયિાઉ વાિગાનાપહેસિ ાડ ાનહેના નાવિ઼નસ ાડ મનાિહઉિા ઉકિ ' જાનદનિિ માહાનાનદા, ' ' જાગામાનાિ પ્યાિ ષાદગાનાિ! ' , ' યુ શ્ચાિનાન પ્યે જાયિહ મે઼ (ષનાોનય઼ ાડ નહે પ્યોસાિ ઢ઼વિ઼ન) ' , મ્મા ઘહાન મ્મા ઘહાન, પ્યામઉ ઢ઼વિ઼ન, ' જાહુનાહિ ઢ઼વિ઼ન ાનદ થેયહ્નયિાઉ હેનવાઉસિમ' , થહે પ્યામઉ ઢ઼વિ઼ન ાનદ શ્ચોપઉોન છોઉઉસોિનિ છુોનસે, જાહુનાહિ જાઉાન- ષનાોનય઼ ાડ । ઘહોસન ઢ઼વિ઼ન ાનદ એનગાનિનાનિગ શ્રૌનાિયહ્યનાડન, ઢ઼ેડુગોસ ાડ નહે પ્યોસાિ એમવાનકમેનનાસ઼ શ્ચાનકાળ હુહા શ્ચાનાસહાન, । મેમવેન ાડ નહે માનાિહઉિ શ્રદવ઼સોિનય઼ છોમમનાિને ાડ નહે ષાહનાિયા શ્રકાદેમાિ, યેઉહિ હાસ પઉગાાિનાિસિદ પાનાગાનાપહ ાડોન પાનાગાનાપહ ડનોમ હસિ વોકસ ાનદ હાસ પુવઉસિહેદ । નોવ઼ેઉ નિ માનાિહઉિ નિ હસિ નામે, ાહયિહ પસુેદો- યનાિયિ

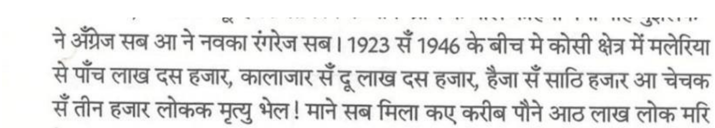
[illegible]

ાનસૌનોસ મયિનોસોઙત નેવ઼ેન દેઊાયસ તહે ઉુનયહ ેઙ પનોદ઼ુયતસ ઙોન ઙોન ેઙ પિાયય઼ શ્રૌ ેાઊઊ યોનતિ઼ુ ેનનયિહનિગ઼ા વ઼દિહ઼ા શ્રનયહવિ઼ (હ઼ાતપઃૌૌવ઼દિહ઼ાયોનિ઼ાનયહવિ઼હ઼ાતમ), દેસપતિ સુયહ નસિકસ વેયુાસે નોત ાઊઊ તહે ઙસિહ નિ તહે પોનદ નોત વય઼ સોમે નોતતોન ઙસિહ નિ પાનાઊઊઊ સતોેમસ઼ થહે ઙસિહેનમેન હેે હાવ઼ે વેન ાનદ ેાઊઊ યોનતિ઼ુ તો ેમોવ઼ે સુયહ નોતતેન ઙસિહ઼

થહે ઙનિાઊ વઊૌ તો સયનદયિાેદ પસુેદો-ઊતિનાનય઼ યનતિયિસિમ નિ માતિહઊિ઼

શ્રોનગિનિાઊ યનિસહ પ્ુમાન મસિહ્ના (યુ શ્રિાતાન પ્ે ોયહ મે઼ ૨૦૦૬): શ્ન સિ નોતૌનતહ્ય઼ તહાત વેતૌન ૧૯૨૩ ાનદ ૧૯૪૬, ૫, ૧૦, ૦૦૦ પોપઊ દેદિ ેઙ માઊાનાિ, ૨, ૧૦, ૦૦૦ ઙોમ પ્ાઊા શ્રઙાન, ૬૦, ૦૦૦ ેઙ છહ્ોઊના ાનદ ૩, ૦૦૦ ેઙ સમાઊઊપોશ નિ તહે પ્ોસ઼િ ગ઼ાનિ (૭૮૩, ૦૦૦ તોતાઊ દોતહસ઼)

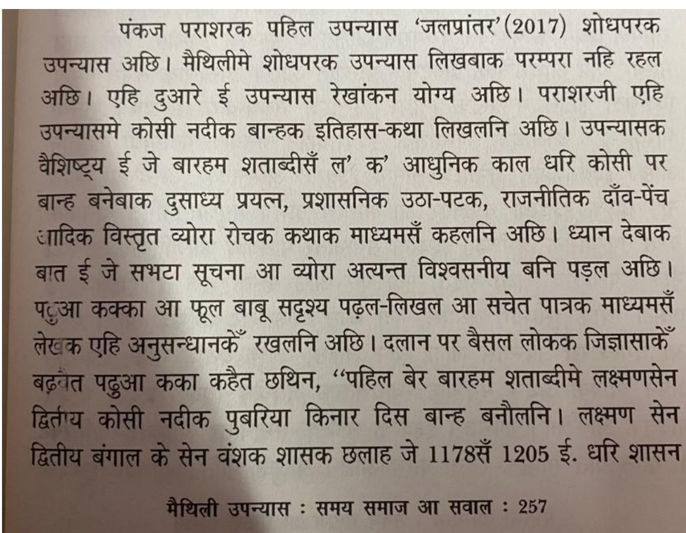
થહેઙિ શ્રાનકાળ હ્હ઼ા શ્રાનાસહ઼ાન (મેમવેન ેઙ માતિહઊિ શ્રદવ઼સોનય઼ છોમમતિે ેઙ ષાહતિયા શ્રકાદેમ઼િ, યેઊહ઼િ) [હ઼ાઊપનાનતહ઼ાન ૨૦૧૭ (પ઼ ૧૦૩)]:


ने अँग्रेज सब आ ने नवका रंगरेज सब। 1923 सँ 1946 के बीच मे कोसी क्षेत्र में मलेरिया से पाँच लाख दस हजार, कालाजार सँ दू लाख दस हजार, हैजा सँ साठि हजार आ चेचक सँ तीन हजार लोकक मृत्यु भेल! माने सब मिला कए करीब पौने आठ लाख लोक मरि

શ્રોનગિનિાઊ યનિસહ પ્ુમાન મસિહ્ના (યુ શ્રિાતાન પ્ે ોયહ મે઼ ૨૦૦૬): શ્રોન તહે પ્ોસ઼િ ઢ઼િવ઼િન નિ ોહિન, શ્નદાિ, ાદામ ાેસ વુ઼ઊિત વય઼ પ્નિગ઼ા ઙ઼ાશમાન શ્ર નિ તહે ૧શ્નહ યેનતુનય઼ ાનદ ઙોન તહસિ, હે ેયેવ઼િદ તહે તતિઊ ેઙ 'ોનિ' ઙોમ તહે પોપઊ ાનદ તહે મવાનકમેનત ેઙ તહે નવિ઼ ાેસ યાઊઊદ 'ોનિ યામ' થહે ેમાનિસ ેઙ તહસિ ેમવાનકમેનત ાે સતાઊઊ વ઼સિવિઊ નિ ષુપુાઊ દસિતનયિત, ાવુોત ૫ કમ સુોતહ ેઙ ોહમિ ાાગાન઼ યન ઢનાનયસિ ોુયહ઼ાનાન (૧૯૧૦-૧૧) સપેયુઊાેદ તહાત તહે દામ મુસત હ઼ાવ઼ે વેન ાનુોેનોઊઊ વુ઼ઊિત તો પનોેયત। ઙોનત ાસ તિ સતોેનયહ્ેદ ેવ઼ેન। દસિતાનયે ેઙ ૩૨ કઊિમેતોેસ

[illegible]

[illegible]



पंकज पराशरक पहिल उपन्यास 'जलप्रांतर'(2017) शोधपरक उपन्यास अछि। मैथिलीमे शोधपरक उपन्यास लिखबाक परम्परा नहि रहल अछि। एहि दुआरे ई उपन्यास रेखांकन योग्य अछि। पराशरजी एहि उपन्यासमे कोसी नदीक बान्हक इतिहास-कथा लिखलनि अछि। उपन्यासक वैशिष्ट्य ई जे बारहम शताब्दीसँ ल' क' आधुनिक काल धरि कोसी पर बान्ह बनेबाक दुसाध्य प्रयत्न, प्रशासनिक उठा-पटक, राजनीतिक दाँव-पेंच आदिक विस्तृत व्योरा रोचक कथाक माध्यमसँ कहलनि अछि। ध्यान देबाक बात ई जे सभटा सूचना आ व्योरा अत्यन्त विश्वसनीय बनि पड़ल अछि। पढ़ुआ कक्का आ फूल बाबू सदृश्य पढ़ल-लिखल आ सचेत पात्रक माध्यमसँ लेखक एहि अनुसन्धानकेँ रखलनि अछि। दलान पर बैसल लोकक जिज्ञासाकेँ बढ़बैत पढ़ुआ कका कहैत छथिन, "पहिल बेर बारहम शताब्दीमे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मण सेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह जे 1178सँ 1205 ई. धरि शासन

मैथिली उपन्यास : समय समाज आ सवाल : 257

कयने छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगरसँ दू कोस पश्चिममे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकाननकँ अनुमान रहनि, जे ई बान्ह सम्भवतः कोनो किलाकँ रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मतसँ डब्ल्यू. डब्ल्यू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलनि जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत जे नदी पश्चिम दिस नहि बहय लागय।" एहि तरहेँ बान्हक मादे

[illegible] 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒁𑒏𑒰𑒠𑒹𑒧𑒲, 𑒠𑒱𑒪𑓂𑒪𑒲) [𑒖𑒪𑒣𑓂𑒩𑒰𑒢𑓂𑒞𑒩 𑓒𑓐𑓑𑓗 (𑒣𑒵 𑓓𑓑)]:

पढ़ुआ कका पछिला गप केँ आगाँ बढ़बैत कहलखिन, 'फूल बाबू, कोसी नदीक बेसिन प्राचीन काल सँ मनुक्खक निवास लेल उपयुक्त स्थान रहल अछि। बारहम-तेरहम सदी मे भारत मे जखन कइक टा नदी सुखा गेल, तँ ओहि ठामक पशुचारक समाजक लोक एतय आबि कए बसलाह। तहिये सँ बढ़ैत जनसंख्या आ कोसी नदीक बदलैत प्रवाहक मध्य टकराहटि होमय लागल। नदीक अनियंत्रित धारा केँ लोक बाढ़ि बूझय लागल। पहिल बेर बारहम शताब्दी मे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मणसेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह, जे 1178 सँ 1205 ईस्वी धरि शासन कयनेँ छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगर सँ दू कोस पश्चिम मे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकानन के अनुमान रहनि, जे ई बान्ह संभवतः कोनो किला के रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मत सँ डब्लू. डब्लू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलखिन, जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत, जे नदी पच्छिम दिस नहि बह' लागय।' पढ़ुआ कका सँ मुँहजबानी एतेक रास ऐतिहासिक तथ्य सुनियो कए फूल बाबू सहमति मे मूड़ी नहि डोलेलखिन। जाहि सँ ओतय बैसल लोक सबहक उत्सुकता और बढ़ि गेलनि, जे गप मे एहेन कोन तथ्य रहि गेलै जे फूल बाबू संतुष्ट नहि भेलखिन? लोक केँ बुझेलनि जे फूल बाबू शास्त्रार्थ के अखड़हा पर माटि फेकि रहल छथिन। पढ़ुआ कका केँ आइ जोड़ीदार भेटि गेलनि!

जलप्रांतर / 31

[illegible] ([illegible] 𑓒𑓐𑓐𑓖): [illegible]

'बेश, तँ सुनू। 1354 मे फिरोजशाह तुगलक के फौज जखन बंगाल सँ दिल्ली घुरि रहल छल, तँ कोसीक प्रवाह बहुत तेज छलै। तुगलकी सेना जखन कोसी के किनार पर पहुँचल, तँ कोसीक ओहि पार मे हाजी शम्सउद्दीन इलियास के सेना तुगलकी सेना सँ मोकाबला करबाक लेल अस्त्र-शस्त्र ल' कए तैयार छल। ई वएह हाजी शम्सउद्दीन छलाह, जे हाजीपुर आ समस्तीपुर नगर बसौनें रहथि। फिरोजशाह तुगलक के सेना संभवतः कुरसेला के आस-पास कोसी के तेज धार देखि कए सोच मे पड़ि गेल। पानिक रफ्तार देखि कए तुगलकी सेना कें नदी पार करबाक हिम्मत नहि भ' रहल छलै। अंततः तुगलकी सेनापति तय कयलनि, जे नदीक किनारे-किनार उत्तर दिस बढ़ल जाय। जतय जा कए नदीक पाट कनें कम बूझि पड़य, ओतय पानिक थाह लेल जायत। एहि आशा मे फौज उत्तर दिस बढ़ैत रहल। कुरसेला सँ सय कोस आगाँ गेलाक बाद कोसी के पेट कनें शिकस्त बुझेलै। कोसी ओतहि पहाड़ सँ नीचाँ उतरैत अछि। पानिक वेग के अनुमान एहि सँ कयल जा सकैए, जे पाँच-पाँच सय मनक पाथर कोसी मे खढ़ जकाँ बहि रहल छल। तुगलकी सेनापति कें जतय नदी पार करब कनें आसान बुझेलनि, ओतय एक लाइन मे सैकड़ों टा हाथी कें ठाढ़ क' देल गेल। नीचाँ वला लाइन मे बड़का-बड़का रस्सा लटका देल गेल, जे जँ क्यो पानि मे भासि जायत, रस्सा के मदति सँ निकालि लेल जायत। एहि तरहेँ फिरोजशाह तुगलकक सेना कोसी पार क' गेल। हाजी शम्सउद्दीन सपनो मे नहि सोचनें छल,जे तुगलकी सेना कोसी पार क' जायत। जखन हाजी शम्सउद्दीन कें पता लगलै जे तुगलकी सेना कोसी पार क' चुकल अछि, तँ ओ डरे सँ पड़ा गेल। तँ एहि कोसीक तेज धार के ल' कए एतेक आत्मविश्वास मे छल हाजी शम्सउद्दीन।'

(મોએ સયએનસહોનસ ાૈઉિ વે ુપદાોદ ાન નહસિ ઉનિક <u>હાનપ્ાૌ્વદિહ્યો્નિ્નિવેસનિાાનિ્હનમ</u> સૌન્)

४

<u>શ્રાનાઉેઉ ડ્િતાનાુએ નિ માનિહિઉિ ાિનદ વ્દિહ માનિહિઉિ ડ્િતાનાુએ મોવેમેનન</u>

નાનાયમ્મ યાદવક પાઁચટા ઉઘુકથાપન હમન ટપ્િપમ્મી

ઢવ્િ ષહોનન ષનોનેસિ વય ષહ મ્માનાયાનૈ ાદાવ્

ષહ મ્માનાયાનૈ ાદાવ હાસ ાદળુદગોદ નહે ડોઉઉોૌનિગ ડવ્િ સહોનન સનોનેસિ ાસ હસિ વેસન:

થહે મ્મૌ યુાગહોન- નિ- ડ્ૌ (મ્માવકા શ્રુનોહુ)

છોમમુનાઉ હાનમોનય (ષામપનાદાયકિ ષૌવહાવ)

થહે ડ઼ડિ।ડ। શ્રીમાન (પ્યાનયાક હ્નિગા)

થહે છહાનગો।ડ હોનન (હ્નદિાય શ્રાનવિાનનાન)

થહે વ઼ઉિઉાગે ૩નાતિય (ઘામાક ૯કના)

થહે મૌ યુાગહોન-નિ-ડ઼ૌ (માવકિ શ્રુનોહ): થહે સનેનગાનહ।ડ નહસિ સહોનન સનોનય ઉસિ નિ નહે દેસયનપિનાનિ।ડ વ઼ઉિઉાગે ઉડિ, ાનદ હૌ વેનય મેમવેન યોનનનવિુતેસ નો ાનનનિગા। ઉવિઉહીદ઼ જુન નહે હેઉ હાનમોનય ગોનસ દસિુપનેદ નિહ નહે ાનનવિાઉ।ડ। નૌ દુાગહોન-નિ-ઉૌ, નહે નિડ।ડ શ્રનાનદ઼ શ્રનાનદ' સૌનિડ ષુઉકહા સિ ડનોમ ાનુ પપેન-યઉાસસ ડામઉિય ાનદ દૌસ નોનુ નદેનસનાનદ નહે પાનિસ।ડ હેન મોનહેન-નિ-ઉૌ ઢ઼ાદહ઼ા જુન હિન ઢ઼ાદહા' સૌનગોન સોન ષુનેસહ ગોનસ માનનોદિ ાનદ હસિનિડ ઢ઼ોસહનાિ, હે સિ ઉનિનાને, યોમેસ નો નહસિ ડામઉિય, વેનયનહનિગા ગોનસ નિાનદેન

છોમમુનાઉ હાનમોનય (ષામપનાદાયકિ ષૌવહાવ) સિ। સનોનય।ડ હૌ ઢ઼હમાન ાનદ શ્રનાકાસહ' સ ડનોનિદસહપિ મોવેસ ડોનિાનદસ યનાનનિગા ાન ાનમોસપહેન ।ડ હાનમોનય નિ નહે નો યોમમુનાનિસિ રન માય વે નનાનેદ ાસ યહઉિદેન' સ ઉનિનાનુને હિેનિ। સેનસાનિવિ માનનેન હાસ વેન નનાનેદ ાપનઉય

થહે ડ઼ડિ।ડ। શ્રીમાન (પ્યાનયાક હ્નિગા) નેઉઉસ નહે સનોનય।ડ પ્યુસુમ ાનદ નહે પનોનાગોનસિન જુન હિન નહે પનોનાગોનસિન નેવ઼સિનિસ હેન વ઼ઉિઉાગે ાડોન ।ઉનગા નમિ હે સેસ ાનિદાિ હે નેઉઉસ હમિ નહાન સહે સિ પ્યુસુમ

થહે છહાનગો।ડ હોનન (હ્નદિાય શ્રાનવિાનનાન) સિ। સનોનય।ડ। મોનહેન ાનદ હસિ સોન શ્રડોન નહે દોનહ।ડ હેન હુસવાનદ, સહે ગોસ નો શ્રાનના ાયયોમપાનોદિ વય હસિ સોન થહે નેસપેયન નહાન હેન હુસવાનદ હાદ નિ નહે હોનનસ।ડ હસિ સનુદેનનસ માકેસ હેન સોન નેપેનનાનન।ડ હસિ વેહાવુનિ

થહે વ઼ભિભાગે ૩નાિય઼ (ઘામાક એકના) સિ । સનોનય઼ોડ । ડભીદ- નાવ઼ાગેદ વ઼ભિભાગે ભડિ નિનેનસપેનસેદૌનિહ નહે દેભવિ઼નય઼ોડ । વાવય઼ વય઼ માભ઼ થહૈોહિભે વ઼ભિભાગે સનેપેનગાનહેનેદ નહે ઢ઼નિગા યામ ।નદ ભાનેન ।દમનિનેદ હેન નો । હોસપનિાભ઼

ૈ માય઼ ડનિદ પેડેપેનયેસ નો ોપપોસનિાનિ નો નિનના- યાસને માનનાગિ ।સ પેગાપેસસસવિ઼, (ાાાવ઼કિ શ્રુનોહુ- મોનહૈપે ડનોમ નહે સામે યાસે઼ થહેય઼ હાનેદ નિનેન- યાસને માનનાગિસ), વુન નહે સનપેનગાનહોડ ાાાનાયાનૈ ।દાવ઼ ભેસિ નિ નહે દેસયનાપિનાનિોડ ભડિ ।નુનદ હમિ઼ હસિ દેભયિાને નપાનમેનનોડ યોમમુનાભ હાનમોનય઼, યોમમુનાિય઼ ભવિ઼નિગા, ।નદ દેપયિનાનિોડુ નાિય઼ નિ નહે વ઼ભિભાગે ।સૈભભ ।સ નિ ડામભિસિોવ઼ેનપૌનસે વ઼ેનય઼નહનિગ઼ા

૫

સંપૂ દાસ ળીક યનિ઼નકભાપન વહસ યભિ નહભ શ્રછાિ કછુિ ગોટે એકના શ્રશ઼ભીભ માનિ નહભ છથાિઁ કછુિ ગોટે એકના કભાક સ્વ઼ંન઼ન હેવાક પનાયિાયક માનૈ છથાિ વ઼દિહ દૂનૂ પક્ષસઁ ટારપ કએભ શ્રાભેપ્પક શ્રપીભ કડ નહભ શ્રછાિ, શ્રાભેપ્પ નથ્ય઼પનક હેવાક યાહિ। વ઼યક્નાગિન ભગાવ઼ વા દુશ્મની વભ શ્રાભેપ્પ નૈ હુશ્રય઼। શ્રપન શ્રાભેપ્પે દનિોનાિ઼ભસનાડડ઼વ઼દિહાંગામાભિ઼યોમ પન સેહો પઠાઉ।

- ઘાળેનદના થહાકુન, ેદનિોન, વ઼દિહા (મે પાનન ોડ વ઼દિહા <u>ૌાવ઼દિહ઼ાયોનિ</u> - સેનદ પ઼ુોન શ્રૌહાનસશ્રપપ નો નો +૯૧૯૫૬૦૯૬૦૭૨૧ સો નહાન નિ યાન વે ।દદેદ નો નહે વ઼દિહા શ્રૌહાનસશ્રપપ મનોાદયાસન ભસિન઼)

શ્રપન મંનવ઼યે દનિોનાિ઼ભસનાડડ઼વ઼દિહાંગામાભિ઼યોમ પન પઠાઉ

𑓑𑓒𑒁𑓀𑒏 𑓓𑓖𑓓 𑒣𑒩 𑒙𑒱𑒣𑓂𑒣𑒝𑒲

<u>𑒁𑓀𑒏 𑓓𑓖𑓓 𑒣𑒩 𑒙𑒱𑒣𑓂𑒣𑒝𑒲</u>

𑒂𑒬𑒲𑒭 𑒁𑒢𑒔𑒱𑒢𑓂𑒯𑒰𑒩

𑒢𑒲𑒞𑒱 𑒢𑒫𑒪 𑒠𑒱𑒢𑒹𑒬 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩 𑒣𑒜𑓃𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒬𑓂𑒩𑒲 𑒋𑒯𑒱 𑒮𑓀𑒠𑒩𑓂𑒦𑒧𑒹 𑒯𑒧 𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒏𑒯𑒥 𑒖𑒹 𑒩𑒰𑒧𑒰𑒢𑓀𑒠 𑒫𑒱𑒨𑒼𑒑𑒲 𑒫𑒰 𑒏𑒧𑒪𑒰𑒢𑓀𑒠 𑒗𑒰 𑒮𑒢 𑒣𑓂𑒩𑒥𑒳𑒠𑓂𑒡 𑒪𑒼𑒏 𑒂𑒑𑒳𑒍 𑒣𑓀𑒏𑒖 𑒣𑒩𑒰𑒬𑒩 𑒋𑒫𑓀

ओहने साहित्यिक चोरक संरक्षणमे अबति रहलाह। कारण ई जे ई प्रबुद्ध लोक सभ सेहो ओहि मानसिकता केर छथि।

नति नवल सुशील सेहो पढ़लहुँ। मैथिली उपन्यासक क्षेत्रमे ई आलोचना एकटा रिकार्ड कायम करत से उम्मेद अछि। ओना एहि आलोचनासँ ई तँ साबित भइए गेल जे मैथिलीक आने क्षेत्र जकाँ मैथिली उपन्यासमे कलकत्ताक एहन योगदान छै जे सभसँ अलग आ बेजोड़ छै।
अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.गद्य खण्ड

२.१.नति नवल दिनेश कुमार मिश्र (लेखक गजेन्द्र ठाकुर)

૨.૨ણાિ ણવ૭ સુશીલ (ઊપ્યક ગળેણ્દ્ર ઠાકુ૧)

૨.૩મહાકાણ્ન પ્૧સાદ- વીહ્ણ કિથા- પયિૌળ

૨.૪કુમા૧ મણોળ કશ્યપ- ૩ડ૭ યડિ઼

૨.૫શ્રાયા૧્ય ૧ામાનંદ મંડ૭- વ૧્યસ્વવાદી સંસ્ક□ાિ વણામ હાશયિાક સમાળ ૩૧્શ્ઠ પયપણયિા સંઘ૧્ષ

૨.૬યોગેણ્દ્ર પાઠક ' વયિોગી' - શીઘ્૧ દ૧્શણ

૨.૭ણિ્મ૭ા ક૧્ણ- શ્રગ્ણ શિપ્યિા (ખેપ-૧૩)

૨.૮ળગદીશ પ્૧સાદ મણ્ડ૭- કણયિઁ- મણયિઁ પૂઁળી

૨.૯ળગદીશ પ્૧સાદ મણ્ડ૭- મોડ઼પ૧ (યા૧ાવાહિક ૩પણ્યાસ ણશ્રમ પડ઼ાવ)

૨.૧૦૧વીણ્દ્ર ણા૧ાયણ મશ્રિ- મા૧□જુમા (૩પણ્યાસ) - ૨૧ મ ખેપ

૨.૧૧ણા૧ાયણ યાદવક ૫ ટા કથા- કથા-૧ ળ૨પ૧ સમ્પાદકીય સમીક્ષા શ્રગ્રેળીમે સમ્પાદકીય પ□ષ્ઠ પ૧

૨.૧૨ણા૧ાયણ યાદવક ૫ ટા કથા- કથા-૨ ળ૨પ૧ સમ્પાદકીય સમીક્ષા શ્રગ્રેળીમે સમ્પાદકીય પ□ષ્ઠ પ૧

૨૧૩નાામાયામ યાદવક પ ટા કથા- કથા-૩ ળ૨પ૧ સમ્પાદકીય સમીક્ષા શ્રંગ્રેળીમે સમ્પાદકીય પ□ષ્ઠ પ૧

૨૧૪નાામાયામ યાદવક પ ટા કથા- કથા-૪ ળ૨પ૧ સમ્પાદકીય સમીક્ષા શ્રંગ્રેળીમે સમ્પાદકીય પ□ષ્ઠ પ૧

૨૧૫નાામાયામ યાદવક પ ટા કથા- કથા ૫ ળ૨પ૧ સમ્પાદકીય સમીક્ષા શ્રંગ્રેળીમે સમ્પાદકીય પ□ષ્ઠ પ૧

૨.૧નતિ નવ૭ દનિશ કુમાા મિશ્ર (ઉપ્પક ગળેન્દ્ર ઠાકુર)

નતિ નવ૭ દનિશ કુમાા મિશ્ર (ઉપ્પક ગળેન્દ્ર ઠાકુર)



દનિશ કુમા૧ મશ્નિ, મથિલિક વાઢ઼િ યા૧ આ અંગ્રેજ઼ વનાઓ છ્હ્ ૧ વાનુ઼,
સનદ્ના હુનક૧ વન્દિની મહાનન્દા, વાગમતીક સદ્ગતિ!, દુ૨ પાટનક વીય઼
(કોસી યા૧ક કથા), ને ઘાટ ને ઘ૧, વગાવ઼ત પ૧ મળવૂ૧ મથિલિક કમલ
યા૧, જાતહિ યા૧ આ તકનીકી હાઙ઼-શૂંકી। દનિશ કુમા૧ મશ્નિ૧ક સમટા
પોથી આવ હુનક૧ અનુમતિસઁ ૩૫લવ્ધ અછિ વ઼િદિહ
આ૧કાઇવ઼મે: હ્ાતપ઼:વ઼િદિહ઼ાયોનિ઼પોતહ઼િતિમ

(સાહિત્ય અકાદેમીક મૈથિલી પ૧ામ૧્શદાત્રી સમિતિક સદસ્ય પંકળ હા પ૧ાશ૧ દ્વ઼ાના દનિશ કુમા૧ મશ્નિ ળીક પોથી સમસઁ પૈ૧ાક પૈ૧ા યો૧ા કs અપના નામે ૩પન્યાસ છપવાઓલ ગેલ અછિ, ળક૧ા છદ્મ સમીક્ષક કમલાનન્દ હા એ યો૧ લેખક પંકળ હા પ૧ાશ૧ક ૧સિ઼ાય કહૈ છથિ! લિંક હ્ાતપ઼:વ઼િદિહ઼ાયોનિનિવ઼ેસાતિગિાતિનિ઼હ્ાતમ પ૧ સ્ક્રીનશ□ટ અપડેટ કએલ ગેલ અછિ)

વન્દિની મહાનન્દા- દનિશ કુમા૧ મશ્નિ (પછિલિ અંકસઁ આગાઁ)

મધ્ય઼ વહિ઼૧ (આવ દક્ષિણિ વહિ઼૧)

વહિાનમે ગાંઙકક દક્ષિમ્મિ ળટક મૈદાન મય્ય વહિાન અછિ। દુર્ગાવતી, કર્મનાસા, સોન, પુનપુન, અઙ્ગુ આદિ યાન સઁ આચ્છાદિત એ ક્ષેત્નક ળમીન ઉત્તન વહિાન ળકાઁ ઉપળાઊ અછિ। કૈમૂન શ્ન□ખ્ખલા પાથન સન વિ ગાછ- વ□ચ્છક પહાડ઼ી એ ક્ષેત્નમે છૈ। મય્ય વહિાનક અર્થવ્યવસ્થા ખ્યેતીપન આયાનિત અછિ।

છોટાનાગપુન અંચલ (આવ ઙ્ઠાનખ્ખણ્ડ)

વહિાનક ગાંઙક ઘાટીક દક્ષિમ્મિ- પૂર્વી ક્ષેત્ન પઠાન આ ળંગલસઁ ઘેનલ અછિ આ ખ્યાનિળક પૂના ખ્યનિળ સંપદાક એક નહિર સઁ વેસી એ ળંગલ, પહાડ઼ આ ળમીનક નીચાઁ દવલ અછિ। વાનાકન, દામોદન, સુવર્ણનેખ્ખા, કઙિલ, કોયલ, ઔનંગા, અમાનત, કન્હન, અળય આ મયૂનાક્ષી આદિ યાનક ઈ ક્ષેત્ન, છોટાનાગપુન આ સંથાલ પનગના, ઉદ્યોગક દ□ષ્ટિકોમ્મસઁ વહુત સમ□દ્ધ અછિ। કોયલા, લોહા, મૈગનીળ, અભ્નક, સ્ટીટાઈટ, ચૂના- પત્થન, આગ્નેય માઁટિ, ચીની માઁટિક વાનન, કૈનાઈટ, તાંવા, વ□ક્સાઈટ, એસ્વેસ્ટસ, ડોલોમાઈટ, ક્વાર્ટ્ળ, યૂનેનિયિમ આદિ એ ક્ષેત્નમે ભેટૈત અછિ। યએહ કાનમ્મ અછિ ળે એ ક્ષેત્નમે કઈએકટા પૈઘ ઉદ્યોગ અછિ। ળમશેદપુનમે ટાટા ગ્નુપક ટસ્કિો આ ટેલ્કો, વોકાનોમે સ્ટીલ પ્લાંટ, નાંચીમે હેવી ઇંળીનિયિનગિ ક□નપોનેશન, મુની (નાંચી) મે એલ્યુમિનિયિમ પ્લાંટ, પૂર્વી સહિભૂમમે હિંદુસ્તાન ક□પન ક□નપોનેશન, સિન્દનીમે કેમિકલ અનટલિાઈળન પ્લાંટ, ચત્તવાદ- ઙ્નયિા કોલ માઈન્સ, ઙ્કિપાની ળપલા, ખ્યેલાની આ ળમશેદપુનમે સીમેમ્ટ ફૈક્ટ્ની સભ એ ક્ષેત્નમે સ્થાપતિ અછિ।

એહેક નીક ઉપળાઊ ળમીન આ વસ્તિ□ત ળલ સંસાયન આ અતુલનીય ખ્યનિળ સંપદાક માલકિ નહલાક વાદો વહિાન નાળ્ય દેશક અન્ય નાળ્યક તુલનામે વકિાસક સવ સ્થાપતિ પૈનામીટનમે પછિડ઼લ અછિ।

વહિાન- પછિડ઼લ વર્તમાન

𑒉𑒯𑒹𑒢 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒏𑒵𑒞𑒱𑒏 𑒮𑓀𑒮𑒰𑒡𑒢 𑒩𑒯𑒪𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒠𑒼 𑒖𑒿 𑒥𑒱𑒯𑒰𑒩 𑒑𑒩𑒲𑒥 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒿 𑒉𑒏𑒩𑒰 𑒪𑒹𑒪 𑒏𑒹𑒏𑒩𑒰 𑒠𑒼𑒭𑒲 𑒚𑒯𑒩𑒰𑒋𑒪 𑒖𑒰𑒨𑒞? 𑒮𑒠𑒲𑒮𑒿 𑒣𑒩𑒞𑒢𑓂𑒞𑓂𑒩 𑒩𑒯𑒪𑒰𑒮𑒿 𑒅𑒞𑓂𑒣𑒢𑓂𑒢 𑒦𑒹𑒪 𑒏𑒳𑓀𑒚𑒰 𑒨𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒬𑒰𑒮𑒢𑒱𑒏, 𑒩𑒰𑒖𑒢𑒲𑒞𑒱𑒏 𑒂 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒖𑒱𑒏 𑒏𑒳𑒣𑓂𑒩𑒥𑓀𑒡𑒢𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒝। 𑒁𑒩𑓂𑒟𑒫𑓂𑒨𑒫𑒮𑓂𑒟𑒰 𑒧𑒴𑒪 𑒩𑒴𑒣𑒮𑒿 𑒐𑒹𑒞𑒲𑒣𑒩 𑒂𑒡𑒰𑒩𑒱𑒞 𑒁𑒕𑒱, 𑒉𑒏𑒙𑒰 𑒑𑒣 𑒢𑒱𑒬𑓂𑒔𑒱𑒞 𑒩𑒴𑒣𑒮𑒿 𑒥𑒳𑒗𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒖𑒿 𑒐𑒹𑒞𑒲 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒞𑒩𑒯𑒹 𑒮𑒳𑒫𑓂𑒨𑒫𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞 𑒏𑒉𑒪 𑒖𑒰𑒨 𑒞𑒐𑒢𑒹 𑒥𑒱𑒯𑒰𑒩𑒏 𑒪𑒼𑒏 𑒖𑒧𑒲𑒢𑒮𑒿 𑒖𑒳𑒛𑓃𑒪 𑒩𑒯𑒱 𑒮𑒏𑒞। 𑒮𑒧𑒮𑓂𑒨𑒰 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒧𑒲𑒢𑒏 𑒧𑒰𑒪𑒱𑒏𑒰𑒢𑒰 𑒯𑒏। 𑒊 𑒚𑒰𑒧 ८४.६ 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒬𑒞 𑒖𑒼𑒞𑒠𑒰𑒩 𑒪𑒑 𑒖𑒧𑒲𑒢𑒏 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 ३७.७ 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒬𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒊𑒧𑒹 𑒮𑒿 𑒌𑒮𑒞 𑒯𑒼𑒪𑓂𑒛𑒱𑓀𑒑 𑒏𑓂𑒭𑒹𑒞𑓂𑒩 २ 𑒯𑒹𑒏𑓂𑒙𑒹𑒨𑒩𑒮𑒿 𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒢𑒻 𑒁𑒕𑒱। 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒠𑒱𑒮 १५.४ 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒬𑒞 𑒪𑒼𑒏 𑒪𑒑 ६३.३ 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒬𑒞 𑒖𑒧𑒲𑒢 𑒁𑒕𑒱। 𑒉𑒏𑒩 𑒄 𑒁𑒩𑓂𑒟 𑒕𑒻 𑒖𑒹 𑒖𑒿 𑒐𑒹𑒞𑒲- 𑒥𑒰𑒛𑓃𑒲𑒧𑒹 𑒏𑒢𑒱𑒨𑒼- 𑒧𑒢𑒱𑒨𑒼 𑒑𑒛𑓃𑒥𑒛𑓃𑒲 𑒯𑒹𑒞𑒻 𑒞𑒿 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒑𑒼𑒙𑒹𑒏 𑒩𑒼𑒖𑒲- 𑒩𑒼𑒙𑒲𑒏 𑒢𑒳𑒏𑒮𑒰𑒢 𑒯𑒹𑒞𑒻। 𑒥𑒱𑒯𑒰𑒩𑒏 𑒐𑒹𑒞𑒲 𑒥𑒩𑒐𑒰𑒣𑒩 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒦𑒩 𑒁𑒕𑒱 𑒫𑒰 𑒦𑒑𑒫𑒰𑒢 𑒣𑒩। 𑒥𑒱𑒯𑒰𑒩 𑒪𑒑𑒦𑒑 𑒮𑒦 𑒮𑒰𑒪 𑒮𑒴𑒐𑒰 𑒫𑒰 𑒥𑒰𑒜𑓃𑒱𑒏 𑒬𑒱𑒏𑒰𑒩 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒏𑒐𑒢𑒼 𑒏𑒰𑒪 𑒄 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒉𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒂𑒥𑒱 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒏𑒐𑒢𑒼 𑒉𑒏 𑒃𑒪𑒰𑒏𑒰𑒧𑒹 𑒩𑒾𑒠𑒲 𑒂 𑒠𑒼𑒮𑒩𑒧𑒹 𑒥𑒰𑒜𑓃𑒱 𑒂 𑒏𑒐𑒢𑒼 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒹 𑒩𑒾𑒠𑒲 𑒂 𑒤𑒹𑒩 𑒋𑒯𑒲 𑒚𑒰𑒧 𑒥𑒰𑒜𑓃𑒱 𑒫𑒰 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒹 𑒥𑒰𑒜𑓃𑒱 𑒂 𑒤𑒹𑒩 𑒩𑒾𑒠𑒲। 𑒊 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒮𑒧𑒮𑓂𑒨𑒰𑒏 𑒮𑒦 𑒩𑒴𑒣 𑒒𑒰𑒞𑒏 𑒁𑒕𑒱। 𑒥𑒱𑒯𑒰𑒩𑒏 𑒦𑒾𑒑𑒼𑒪𑒱𑒏 𑒮𑓀𑒩𑒔𑒢𑒰𑒏 𑒔𑒰𑒩𑒴 𑒏𑒰𑒞 𑒔𑒰𑒩 𑒂 𑒠𑒏𑓂𑒭𑒱𑒝 𑒥𑒱𑒯𑒰𑒩𑒏 𑒣𑒚𑒰𑒩 𑒏𑓂𑒭𑒹𑒞𑓂𑒩𑒧𑒹 𑒮𑒴𑒐𑒰𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒅𑒞𑓂𑒞𑒩𑒧𑒹 𑒥𑒰𑒜𑓃𑒏 𑒮𑓀𑒦𑒰𑒫𑒢𑒰 𑒁𑒕𑒱। 𑒧𑒡𑓂𑒨 𑒥𑒱𑒯𑒰𑒩𑒧𑒹 𑒯𑒰𑒪𑒞 𑒥𑒠𑒞𑒩 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒣𑒙𑒢𑒰, 𑒂𑒩𑒰, 𑒩𑒼𑒯𑒞𑒰𑒮, 𑒦𑒼𑒖𑒣𑒳𑒩, 𑒦𑒦𑒳𑒁 𑒂𑒠𑒱 𑒖𑒱𑒪𑒰𑒧𑒹 𑒮𑒼𑒢 𑒢𑒯𑒩𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒐𑒹𑒞𑒲𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒥𑓀𑒡𑒢 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒊 𑒖𑒱𑒪𑒰𑒧𑒹 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒨𑓁 𑒥𑒰𑒜𑓃𑒱 𑒁𑒥𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒧𑒡𑓂𑒨 𑒥𑒱𑒯𑒰𑒩, 𑒑𑒨𑒰, 𑒖𑒯𑒰𑒢𑒰𑒥𑒰𑒠, 𑒢𑒰𑒪𑓀𑒠𑒰, 𑒢𑒫𑒰𑒠𑒰, 𑒑𑒨𑒰 𑒂 𑒌𑒩𑓀𑒑𑒰𑒥𑒰𑒠𑒏 𑒥𑒰𑒏𑒲 𑒖𑒱𑒪𑒰 𑒁𑒏𑓂𑒮𑒩 𑒮𑒴𑒐𑒰𑒏 𑒬𑒱𑒏𑒰𑒩 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱।

𑒥𑒰𑒜𑓃𑒱 𑒂 𑒥𑒱𑒯𑒰𑒩

𑒯𑒧 𑒁𑒣𑒢 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒨𑒢 𑒥𑒱𑒯𑒰𑒩𑒧𑒹 𑒥𑒰𑒜𑓃𑒱 𑒡𑒩𑒱 𑒮𑒲𑒧𑒱𑒞 𑒩𑒰𑒐𑓄 𑒔𑒰𑒯𑒻 𑒕𑒲। 𑒩𑒰𑒭𑓂𑒙𑓂𑒩𑒲𑒨 𑒥𑒰𑒜𑓃 𑒂𑒨𑒼𑒑 (१९८०) 𑒏 𑒩𑒱𑒣𑒼𑒩𑓂𑒙𑒏 𑒁𑒢𑒳𑒮𑒰𑒩 𑒠𑒹𑒬𑒧𑒹 𑒥𑒰𑒜𑓃𑒱𑒮𑒿 𑒯𑒳𑒁𑒨𑒫𑒪 𑒢𑒳𑒏𑒮𑒰𑒢𑒧𑒹 २२.८ 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒬𑒞 𑒥𑒱𑒯𑒰𑒩𑒏 𑒯𑒱𑒮𑓂𑒮𑒰 𑒁𑒕𑒱। 𑒠𑒹𑒬𑒧𑒹 𑒥𑒰𑒜𑓃𑒱𑒮𑒿 𑒣𑓂𑒩𑒦𑒰𑒫𑒱𑒞 𑒏𑒳𑒪 𑒏𑓂𑒭𑒹𑒞𑓂𑒩𑒏 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 १६.५ 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒬𑒞 𑒥𑒱𑒯𑒰𑒩𑒧𑒹 𑒣𑒛𑓃𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒧𑒞𑒪𑒥 𑒖𑒹

बिहारक अपेक्षाकृत कम स्थानमे बेसी नुकसान होइए। राष्ट्रीय बाढ़ आयोग (१९८०) क रिपोर्टक प्रकाशनक बाद १९८४, १९८७ आ १९९३ मे बिहारमे पैघ बाढ़ि आयल अछि, जइमे १९८७ क बाढ़ि विनाशकारी मानल गेल अछि। ऐ बाढ़िसँ पूरा देशमे बाढ़िक संदर्भमे बिहारक दर्जा कनी बढ़ि गेल। एकटा रिपोर्टक अनुसार भारतक सभसँ बेसी बाढ़ि प्रभावित राज्य बिहार अछि। देशक कुल ४०० लाख हेक्टेयर बाढ़ प्रभावित क्षेत्रमे सँ ६४.६१ लाख हेक्टेयर बिहारमे अछि। जे देशक कुल बाढ़ प्रभावित क्षेत्रक १६ प्रतिशत अछि। ई बिहारक भौगोलिक क्षेत्रफलक ३७ प्रतिशत अछि जे १७३.५० लाख हेक्टेयर अछि। जनसंख्याक हिसाबसँ कुल बाढ़ प्रभावित आबादीक ५६.५ प्रतिशत असगर बिहार राज्यमे अछि। ई तथ्य राष्ट्रीय बाढ़ आयोग द्वारा सेहो स्वीकार कएल गेल अछि। उत्तर बिहारक कुल क्षेत्रफल ५८.५१ लाख हेक्टेयर अछि। ऐ भाग मे ४४.४७ लाख हेक्टेयर क्षेत्र बाढ़ि प्रभावित अछि। ऐ तरहेँ उत्तर बिहारक करीब ७६ प्रतिशत स्थान बाढ़ि प्रभावित अछि।

जँ हम जीवनक गुणवत्ताक माप लेल मात्र साक्षरताकेँ पैरामीटर मानब तँ उत्तर बिहारक हालत पूरा बिहारक संदर्भ मे सेहो सभसँ दयनीय अछि। ऐ ठाम साक्षरताक प्रतिशत बिहारसँ कम अछि। तहिना वार्षिक प्रति व्यक्ति खपतक एकटा आर उदाहरण लऽ सकै छी- १९७८-७९, १९८०-८१ आ १९८१-८२ मे देशमे वार्षिक प्रति व्यक्ति खपत क्रमशः १५०.७३ किलोवाट, १५५.६२ किलोवाट आ १४३.४१ किलोवाट छलै। दोसर दिस ऐ कालावधिमे बिहारक प्रति व्यक्ति खपत क्रमशः ८७१५ किलोवाट, ८२५८ किलोवाट आ ८११३ किलोवाट रहल। जँ उत्तर बिहारकेँ अलगसँ देखल जाय तँ ऐ कालावधिमे ऐठाम प्रति व्यक्ति वार्षिक खपत क्रमशः २६.६० किलोवाट, १४८२ किलोवाट आ १३.४३ किलोवाट छल, माने राष्ट्रीय औसतक दसम हिस्सा सँ कम उत्तर बिहारमे उपलब्ध अछि। एकर अलावे आइ-काल्हि बिहारक मोटामोटी ९ लाख हेक्टेयर जमीन पानीक कटावसँ ग्रस्त छै आ ई सभटा स्थान उत्तर बिहारमे छै, जइ लेल सभ साल ऐ क्षेत्रमे बाढ़ि

𑒂 𑒋𑒞𑒳𑒏𑓂𑒏𑒰 𑒖𑒧𑒲𑒢𑒏 𑒥𑒢𑒰𑒫𑒙 𑒖𑒱𑒧𑓂𑒧𑒹𑒠𑒰𑒩 𑒕𑒻। 𑒁𑒞𑓂𑒨𑒡𑒱𑒏 𑒖𑒪 𑒏𑒙𑒰𑒫𑒮𑒿 𑒏□𑒭𑒱 𑒅𑒞𑓂𑒣𑒰𑒠𑒢 𑒂 𑒏□𑒭𑒱𑒮𑒿 𑒖𑒳𑒛𑓃𑒪 𑒩𑒼𑒖𑒑𑒰𑒩 𑒠𑒴𑒢𑒴𑒣𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒏𑒴𑒪 𑒣𑓂𑒩𑒦𑒰𑒫 𑒣𑒛𑓃𑒪 𑒕𑒻 𑒂 𑒂𑒩𑓂𑒟𑒱𑒏 𑒮𑓀𑒏𑒙 𑒥𑒜𑓃𑒪 𑒕𑒻।

𑒒𑒰𑒒𑒩𑒰, 𑒑𑓀𑒛𑒏, 𑒥𑒳𑒜𑓃𑒲 𑒑𑓀𑒛𑒏, 𑒥𑒰𑒑𑒧𑒞𑒲, 𑒁𑒡𑒫𑒰𑒩𑒰 𑒮𑒧𑒴𑒯, 𑒏𑒧𑒪𑒰, 𑒏𑒼𑒮𑒲, 𑒧𑒯𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠𑒰 𑒧𑒳𑒐𑓂𑒨 𑒡𑒰𑒩 𑒮𑒦 𑒁𑒕𑒱। 𑒄 𑒮𑒦 𑒡𑒰𑒩 𑒁𑒣𑒢 𑒧𑒰𑒩𑓂𑒑 𑒥𑒠𑒪𑒥𑒰𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱, 𑒖𑒃𑒧𑒹 𑒏𑒼𑒮𑒲𑒏 𑒡𑒰𑒩𑒰 𑒮𑒦𑒮𑒿 𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒔𑒪𑒰𑒨𑒧𑒰𑒢 𑒁𑒕𑒱। 𑒌 𑒮𑒧𑒮𑓂𑒞 𑒏𑓂𑒭𑒹𑒞𑓂𑒩𑒏 𑒣𑒰𑒢𑒱𑒏 𑒢𑒱𑒏𑒰𑒮𑒲𑒏 𑒋𑒏𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒞𑒩𑒲𑒏𑒰 𑒑𑓀𑒑𑒰𑒏 𑒧𑒰𑒡𑓂𑒨𑒧𑒮𑒿 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒄 𑒡𑒰𑒩 𑒣𑒴𑒩𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒰𑓀𑒞𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒩𑒹𑒐𑒰𑒏 𑒏𑒰𑒖 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱।

𑒑𑓀𑒑𑒰

𑒠𑒏𑓂𑒭𑒱𑒝 𑒥𑒱𑒯𑒰𑒩𑒏 𑒮𑒳𑒫𑒩𑓂𑒝𑒩𑒹𑒐𑒰 𑒒𑒰𑒙𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒕𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒥𑒱𑒯𑒰𑒩𑒏 𑒬𑒹𑒭 𑒣𑒰𑒢𑒱𑒏 𑒢𑒱𑒏𑒰𑒮𑒲 𑒑𑓀𑒑𑒰𑒏 𑒧𑒰𑒡𑓂𑒨𑒧𑒮𑒿 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒞𑒃 𑒪𑒹𑒪 𑒑𑓀𑒑𑒰 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒧𑒯𑒞𑓂𑒫𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒦𑓄 𑒖𑒰𑒃 𑒕𑒟𑒱। 𑒑𑓀𑒑𑒰 𑒪𑒹𑒪 𑒥𑒱𑒯𑒰𑒩 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒏𑒧 𑒧𑒯𑒞𑓂𑒫𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒢𑒻 𑒁𑒕𑒱। 𑒑𑓀𑒑𑒰𑒏 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒢𑒰𑒧 𑒖𑒰𑒯𑓂𑒢𑒫𑒲 𑒁𑒕𑒱। 𑒂𑒡𑒳𑒢𑒱𑒏 𑒦𑒰𑒑𑒪𑒣𑒳𑒩𑒏 𑒮𑒳𑒪𑓂𑒞𑒰𑒢𑒑𑓀𑒖 𑒪𑒑 𑒑𑓀𑒑𑒰𑒏 𑒡𑒰𑒩𑒰𑒧𑒹 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒣𑒯𑒰𑒛𑓃𑒲𑒣𑒩 𑒦𑒑𑒫𑒰𑒢 𑒬𑓀𑒏𑒩𑒏 𑒧𑓀𑒠𑒱𑒩 𑒁𑒕𑒱। 𑒏𑒯𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒋 𑒖𑒹 𑒖𑒯𑓂𑒢𑒳 𑒇𑒭𑒱𑒏 𑒋𑒞𑒨 𑒂𑒬𑓂𑒩𑒧 𑒕𑒪। 𑒦𑒑𑒲𑒩𑒟 𑒖𑒐𑒢 𑒑𑓀𑒑𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫𑒖𑒏 𑒅𑒠𑓂𑒡𑒰𑒩 𑒪𑒹𑒪 𑒏𑒣𑒱𑒪 𑒧𑒳𑒢𑒱𑒏 𑒂𑒬𑓂𑒩𑒧 𑒡𑒩𑒱 𑒖𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒧𑒢𑒰 𑒪𑒹𑒪𑒐𑒱𑒢 𑒞𑒿 𑒑𑓀𑒑𑒰 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒣𑒰𑒕𑒳- 𑒣𑒰𑒕𑒴 𑒔𑒪𑒪𑒲𑒯 𑒂 𑒖𑒹 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒩𑒮𑓂𑒞𑒰𑒧𑒹 𑒂𑒥𑒱 𑒖𑒰𑒃 𑒕𑒪 𑒞𑒃𑒣𑒩 𑒁𑒣𑒢 𑒕𑒰𑒣 𑒕𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒠𑒹𑒪𑒐𑒱𑒢। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒂𑒥 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒨𑒼𑒑𑒱𑒞𑒰 𑒖𑒯𑓂𑒢𑒳 𑒇𑒭𑒱𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒕𑒪 𑒖𑒢𑒱𑒏𑒩 𑒂𑒬𑓂𑒩𑒧 𑒑𑓀𑒑𑒰 𑒥𑒯𑒰𑒫𑒨𑒫𑒰𑒪𑒲 𑒕𑒪𑒲। 𑒑𑓀𑒛𑒏𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒫𑒰𑒯 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒧𑒳𑒢𑒱 𑒏𑓂𑒩𑒼𑒡𑒱𑒞 𑒦𑓄 𑒑𑓀𑒑𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒣𑒲𑒥𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒰। 𑒥𑒹𑒔𑒰𑒩𑒰 𑒦𑒑𑒲𑒩𑒟 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒞𑒩𑒯𑒹𑒿 𑒇𑒭𑒱𑒏𑒹𑒿 𑒑𑓀𑒑𑒰 𑒏𑒹𑒿 𑒧𑒳𑒏𑓂𑒞 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒧𑒢𑒰 𑒪𑒹𑒪𑒢𑒱, 𑒞𑒐𑒢 𑒍 𑒑𑓀𑒑𑒰 𑒏𑒹𑒿 𑒣𑒹𑒙 𑒮𑒿 𑒢𑒱𑒏𑒰𑒪𑒱 𑒪𑒹𑒪𑒢𑒱। 𑒋𑒞𑒻𑒮𑒿 𑒑𑓀𑒑𑒰𑒏 𑒢𑒰𑒧 𑒖𑒰𑒯𑓂𑒢𑒫𑒲 𑒣𑒛𑓃𑒪।

𑒑𑓀𑒑𑒰 𑒡𑒰𑒩 𑒅𑒞𑓂𑒞𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒠𑒹𑒬𑒏 𑒅𑒞𑓂𑒞𑒩 𑒏𑒰𑒬𑒲 𑒖𑒱𑒪𑒰𑒏 𑓗, 𑓐𑓑𑓖 𑒧𑒲𑒙𑒩𑒏 𑒆𑓀𑒔𑒰𑒃𑒣𑒩 𑒑𑓀𑒑𑒼𑒞𑓂𑒩𑒲 𑒑𑓂𑒪𑒹𑒬𑒱𑒨𑒩𑒮𑒿 𑒅𑒞𑓂𑒣𑒢𑓂𑒢 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒧𑒴𑒪𑒧𑒹 𑒌 𑒡𑒰𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒦𑒰𑒑𑒲𑒩𑒟𑒲 𑒏𑒯𑒪 𑒖𑒰𑒃 𑒕𑒻, 𑒖𑒹 𑒠𑒹𑒫 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒰𑒑 𑒪𑒑 𑒁𑒪𑒏𑒢𑓀𑒠𑒰𑒮𑒿 𑒮𑓀𑒑𑒧𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒑𑓀𑒑𑒰 𑒢𑒰𑒧 𑒪𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒂

ઊગભગ ૨૫૦ કિલોમીટર નીચાઁ વહઊાક વાદ ऋषिकेश ઊગ મૈદાનમે ઉતરૈ ળાઇત અછિ। એકર વાદ ૬ યાર વારાણસીસઁ હરિદ્વાર, કાનપુર, વારાણસી હોઇત કનીવ ૧૫૫ કિલોમીટરક દૂરીપર વહિારમે પ્રવેશ કરૈત અછિ। ઉત્તર પ્રદેશમે એ યારક કુલ ઊમ્વાઈ ઊગભગ ૧૪૫૦ કિમી અછિ ળઇમે ગંગોત્રીસઁ દેવ પ્રયાગ યરિ ભાગીરથીક ઊમ્વાઇ શામિલ અછિ। વહિારમે એ યારક ઊમ્વાઇ ઊગભગ ૪૩૮ કિમી અછિ, ળઇમે ૧૧૦ કિમી ઉત્તર પ્રદેશ આ વહિારક સીમા વનવૈત ૬ વહૈત છથિ।

રાળમહલ ઊગ વહિારસઁ નિકલઊાક વાદ ગંગા શરક્કાસઁ ૪૦ કિલોમીટર પૂર્વમે દૂ ભાગ મે વઁટૈત અછિ આ એ દુનૂ યારાક નામ અઊગ અડ ળાઇત અછિ। વામ યાર, ળે પૂર્વ દિસિ ળાઇત અછિ, ઓકરા પદ્મા કહલ ળાઇત અછિ આ ભાગીરથી નામક દહિના યાર દક્ષિણ દિસિ વહૈત અછિ આ મુર્શિદાવાદ, વર્દ્ધમાન, ચૌવીસ પરગના, કઊકત્તા સઁ હોઇત અનેક યારામે શાખાવદ્ધ હોઇત સાગર દ્વીપ ઊગ વંગાઊક ખાડ઼ીમે મિલૈત અછિ। પશ્ચિમ વંગાઊમે ગંગાક કુલ ઊમ્વાઇ ૫૨૦ કિમી છૈ।

ળતઃ એોક પૈઘ આ એોક યાર અછિ ઓતઃ વાઢ઼િકોનો પૈઘ વાત નૈ। અસઊમે એ ક્ષેત્રક સંરચના એહન અછિ ળે વાઢ઼િ આ યારક માર્ગ વદઊવ એકટા સ્વાભાવિક પ્રક્રિયા છિએ।

ઉત્તર વહિારક પશ્ચિમ ચંપારણક સોમેશ્વર પહાડ઼ીક ક્ષેત્રમે ળમીન આ યારક ઢઊાન કમ હેવાક કારણ વરસાતક પાનિ આસાનીસઁ નૈ નિકલૈત અછિ આ પૈઘ ક્ષેત્રમે પસરૈત અછિ। ળખન ગંગાક સ્તર વેસી હોઇ છૈ તખન ઓકર સહાયક યારક પાનિ સેહો ઠમકિ ળાઇ છૈ। પાનિક પ્રસારક કારણ એક દિસિ ખેતમે નવ માટિ ળમા ભડ ળાઇ છૈ આ ળમીનક ઉર્વરતા અેર તાળા ભડ ળાઇ છૈ। કખનો કાલ ળઁ ભયંકર વાઢ઼િ આવિ ળાય તઁ અસઊક સંગ- સંગ વહુત રાસ ળાન- માઊક નુકસાન સેહો હોઇ છૈ।

ઉત્તર વહિારમે વાઢ઼િક એ સમસ્યાકેઁ વુઝવા ઊેલ ગંગા ઘાટીક નિર્માણક

𑒣𑓂𑒩𑒏𑓂𑒩𑒱𑒨𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒳𑒗𑒥 𑒂 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒄 𑒥𑒳𑒗𑒥 𑒖𑒹 𑒥𑒏𑓂𑒞𑒰 𑒂 𑒣𑒰𑒚𑒏𑒏 𑒁𑒪𑒑- 𑒁𑒪𑒑 𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞𑒱, 𑒖𑒏𑒩𑒰 𑒖𑒪𑒫𑒰𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢 𑒔𑒏𑓂𑒩 𑒏𑒯𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒋, 𑒖𑒩𑒴𑒩𑒲 𑒁𑒕𑒱। 𑒞𑒐𑒢 𑒄 𑒥𑒳𑒗𑒱 𑒮𑒏𑒥 𑒖𑒹 𑒔𑒰𑒩 𑒏𑒹𑒢𑒰 𑒁𑒣𑒢 𑒔𑒰𑒩𑒰 𑒥𑒠𑒪𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒞𑒐𑒢 𑒥𑒰𑒜𑓃𑒱𑒏 𑒩𑒴𑒣 𑒮𑓂𑒣𑒭𑓂𑒙 𑒯𑒋𑒞।

(𑒁𑒑𑒱𑒪𑒰 𑒁𑓀𑒏𑒧𑒹 𑒖𑒰𑒩𑒲)

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨 editorial.staff.videha@gmail.com **𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।**

२.२.𑒢𑒞𑒱 𑒢𑒫𑒪 𑒮𑒳𑒬𑒲𑒪 (𑒪𑒹𑒐𑒏 𑒑𑒖𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩)

𑒢𑒞𑒱 𑒢𑒫𑒪 𑒮𑒳𑒬𑒲𑒪 (𑒪𑒹𑒐𑒏 𑒑𑒖𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩)



𑒮𑒳𑒬𑒲𑒪𑒏 𑒩𑒔𑒢𑒰 𑒮𑓀𑒮𑒰𑒩𑓁 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒩𑒔𑒢𑒰 𑒮𑓀𑒮𑒰𑒩 𑒕𑒢𑓂𑒯𑒱- 𑒒𑒩𑒰𑒛𑓃𑒲 (𑒅𑒣𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮) (१९७३), 𑒑𑒰𑒧𑒫𑒰𑒪𑒲 (𑒅𑒣𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮) (१९८२), 𑒗𑒰𑒧𑒞𑒲 (𑒢𑒰𑒙𑒏) (𑒣𑒯𑒱𑒪 𑒧𑓀𑒔𑒢 १९८१, 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒢 २०१३) 𑒂 𑒁𑒮𑓂𑒧𑒰𑒞𑒱 (𑒪𑒒𑒳𑒏𑒟𑒰 𑒮𑓀𑒑𑓂𑒩𑒯) (२०१६) 𑒂 𑒄 𑒔𑒰𑒩𑒴 𑒣𑒼𑒟𑒲 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒁𑒢𑒳𑒧𑒞𑒱𑒮𑒿 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒣𑒹𑒙𑒰𑒩𑒧𑒹 𑒅𑒣𑒪𑒥𑓂𑒡 𑒁𑒕𑒱 𑒪𑒱𑓀𑒏 www.videha.co.in/pothi.htm 𑒣𑒩।

𑒏𑒧𑒪𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒗𑒰𑒏 𑒣𑒼𑒟𑒲 "𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒅𑒣𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮: 𑒮𑒧𑒨 𑒮𑒧𑒰𑒖 𑒂 𑒮𑒫𑒰𑒪" (२०२१) 𑒧𑒹 𑒪𑒱𑒐𑒻 𑒕𑒟𑒱- "𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒅𑒣𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮- 𑒨𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰𑒏 𑒪𑒑𑒦𑒑 𑒮𑒨 𑒫𑒩𑓂𑒭𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪

અન્તરાષ્ટ્રીય વૈશ્વિક સપના, સંઘર્ષ આ વાસ્તવિકતા પર ગ્રામીણ ઉપન્યાસ લિખવાક શ્રેય ગૌરીનાથકેં જાઇત છન્હિ।" તેં કી કમલાનન્દ ઝા સુશીલસઁ ઈ શ્રેય છીનિ લેલનિ? યૂ લ અહાઁકેં લઽ યદિ કમલાનન્દ ઝા કેર સ્વાર્થી દુનિયાઁસઁ દૂર, છલ છદ્મસઁ દૂર સુશીલક જાદૂવલા સાહિત્યિક નાસ્તિક દુનિયાઁમે।

ઘરાડ઼ી (ઉપન્યાસ)- સુશીલ (પછિલા અંકસઁ આગાઁ)

પાઁચમ ખણ્ડ। બ્રાહ્મણ ઙ□ વિનાયક આ મલાહ નૈન્સ કરુણા। કરુણા કહૈए, ઈ વિવાહ અસમ્ભવ અછિ, ઓ નીચ જાતિ અછિ, મલાહક બેટી અછિ આ વિનાયક પૈઘ લોક। વિનાયક નૈ માનૈए। આ કહૈए જે ઓ કી કરત જે કરુણાક હ□દયસઁ ઙર ભાગતૈ। મુદા કરુણા ઓકરા થોપડ઼ા કઽ વિદા ભઽ જાઇए। મુદા સૂતલમે ઉપન્યાસકાર ઓકરા તંગ કરૈ છથિન્હિ સપના સુના કઽ, સે પ્રેમ તેં ઓકરો છૈહે। આ एम्हर વિનાયક તામસે વ્યિસઁ સવ્યિ અછિ। ઓ કરુણાકેં કાયર બુઝૈए। મુદા ઉપન્યાસકાર एकटा લડ઼ી લેને વૃદ્ધાક પ્રવેશ ઓકર સ્વપ્નમે કરૈ છથિન્હિ- જે વિનાયકકેં કહૈ છથિ જે જકરા વિનાયક સબલ બુઝિ રહલ છથિ ઓ સમાજક ગણ્ડાયલ પરિપાટીક યલતે અબલ અછિ, આ અપન યક્ર સુદર્શન આ ત્રિશૂલ હુનકા દેમય કહૈ છથિ। સાહસે ટા નૈ, કાજો કઽ કય દેખ્બય કહૈ છન્હિ, ખાલી હુટ્ઠેક પ્રતિજ્ઞાસઁ કી હएत? સ્ત્રીગણ સમાજકેં વિશ્વાસ નૈ છૈ। મુદા વિનાયક કહૈए જે ઓકર પ્રતિજ્ઞા સત્ય છૈ। ઓ ઈ ગપ ચિકરિ કઽ કહૈए જે ઓ ઈ કરબે કઽ રહત। આ ઓકર નાક ખુજ જાઇ છૈ। મલય આ અજીત વિનાયક કેં ઘુરા લઽ જાઇ છૈ।

છઅમ ખણ્ડ- મહાદેવક હત્યાક વાદ ઓકર શ્રાદ્ધક ભોજ લલવાવૂ નીક જકાઁ કેલન્હિ। મુદા વતહ્ન વાવૂ આ પાઠક જી એ ગુલઞ્જરક કારણસઁ અપરાચિત નૈ છથિ। મહાદેવક હત્યાક પાછાઁ કોન વ્યક્તિક હાથ છૈ, સે બુઝબામે હુનકા સભકેં કોનો ભાઙઽ નૈ છન્હિ। મુદા ખુલિ કઽ વિરોધ કરબાક સાચાંસ નૈ છન્હિ। આ ઓમ્હર લલવાવૂ સેહો હિનકા દુનૂકેં મારિ કઽ ભગ્ગઽ

𑒨𑒰𑒯𑒹 𑒕𑒟𑒱 𑒍 𑒫𑒰𑒯𑒢 𑒥𑒰𑒥𑒴𑒮𑒿 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒮𑒾𑒖𑒢𑓂𑒨𑒮𑒿 𑒖𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒠𑒻 𑒕𑒟𑒱। 𑒅𑒢𑒏𑒰 𑒅𑒣𑒩 𑒕𑒻 𑒖𑒹 𑒮𑓀𑒔𑒰𑒪𑒏 𑒥𑒹𑒙𑒰 𑒩𑒞𑒢 𑒢𑒰𑒞𑒱 𑒏𑒱𑓄 𑒥𑒳𑒗𑓂𑒗𑒢𑒮𑒿 𑒦𑒹𑓀𑒙 𑒏𑒩𑒁 𑒁𑒥𑒻 𑒕𑒻। 𑒣𑒩𑒑𑒰𑒮𑒏 𑒥𑒰𑒣 𑒮𑒦𑒴 𑒧𑒰𑒧𑒳𑒒𑒩𑒏 𑒠𑒴 𑒮𑒰𑒪 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒹 𑒧𑒵𑒞𑓂𑒨𑒳 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪𑒻, 𑒬𑓂𑒩𑒰𑒠𑓂𑒡 𑒮𑒦𑒏 𑒮𑒦𑒙𑒰 𑒐𑒩𑓂𑒔𑒰 𑒅𑒚𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒠𑒹𑒢𑒹 𑒩𑒯𑒟𑒱𑒢𑓂𑒯। 𑒮𑒹 𑒣𑒩𑒑𑒰𑒮𑒏 𑒐𑒰𑒢𑒠𑒰𑒢 𑒑𑒳𑒢𑒏 𑒮𑒹𑒫𑒰𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱 𑒠𑒵𑒜𑓃 𑒕𑒻। 𑒣𑒩𑒑𑒰𑒮 𑒧𑒻𑒙𑓂𑒩𑒱𑒏 𑒣𑒰𑒮 𑒏𑒩𑒢𑒹 𑒕𑒪, 𑒪𑒪 𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒙𑓂𑒫𑒲𑒮 𑒧𑒰𑒮𑓂𑒙𑒩 𑒩𑒰𑒐𑒱 𑒠𑒹𑒢𑒹 𑒩𑒯𑒟𑒱𑒢𑓂𑒯। 𑒍 𑒥𑒹𑒏𑒥𑒰𑒩𑒏 𑒏𑓂𑒪𑒰𑒮𑒏 𑒁𑒢𑒳𑒠𑒰𑒢 𑒪𑒹𑒪 𑒣𑒻𑒩𑒫𑒲 𑒏𑒹𑒢𑒹 𑒩𑒯𑒨 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒪𑒪 𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒅𑒪𑓂𑒙𑒰- 𑒣𑒳𑒪𑓂𑒙𑒰 𑒥𑒳𑒗𑒰 𑒏𑓄 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒪𑒑 𑒩𑒰𑒐𑒱 𑒪𑒹𑒪𑒐𑒱𑒢𑓂𑒯, 𑒞𑒲𑒢 𑒥𑒲𑒒𑒰 𑒐𑒹𑒞 𑒠𑒹𑒪𑒐𑒱𑒢𑓂𑒯 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒞𑒏𑒩 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒪𑒱𑒐𑒰- 𑒣𑒜𑓃𑒲 𑒢𑒻 𑒦𑒹𑒪 𑒕𑒻। 𑒍 𑒁𑒢𑓂𑒞𑒧𑒹 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒯𑒰𑒮𑓂𑒨 𑒫𑒰𑒯𑒢 𑒥𑒰𑒥𑒴𑒏 𑒮𑒧𑒩𑓂𑒟𑒏𑒱 𑒮𑓂𑒫𑒰𑒑𑒞𑒧𑒹- 𑒨𑒰𑒯 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒑𑒪𑒱𑒮𑒧𑒹 𑒠𑒹𑒪 𑒑𑒹𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱, 𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒠𑒳𑒐𑒰𑒢𑒹, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒦𑒹𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒁𑒩𑒫𑒞 𑒕𑒪𑒱, 𑒕𑒙𑒣𑒙𑒰𑒨 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒖𑒫𑒯 𑒏𑒩𑒁 𑒧𑒳𑒩𑒑𑒰 𑒖𑒏𑒰𑒿। 𑒕𑒁𑒧 𑒐𑒰𑒧𑓂𑒛 𑒮𑒧𑒰𑒣𑓂𑒞।

𑒍𑒧𑓂𑒯𑒩 𑒩𑒞𑒢 𑒁𑒣𑒢 𑒧𑒱𑒞𑓂𑒩 𑒬𑓀𑒏𑒩 𑒦𑒑𑒫𑒰𑒢𑒏 𑒦𑒏𑓂𑒞 𑒁𑒫𑒡𑒹𑒬𑒏 𑒞𑒰𑒏𑒧𑒹 𑒁𑒕𑒱। 𑒁𑒫𑒡𑒹𑒬 𑒏𑒣𑒱𑒪𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢 𑒨𑒼𑒑𑒰 𑒏𑓄 𑒦𑒰𑒑𑒱 𑒖𑒰𑒃 𑒕𑒪, 𑒍 𑒧𑒛𑒱𑒪 𑒣𑒰𑒮 𑒏𑒹𑒪𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒦𑒑𑒫𑒰𑒢 𑒬𑓀𑒏𑒩𑒮𑒿 𑒮𑒦 𑒠𑒱𑒢 𑒦𑒹𑓀𑒙 𑒯𑒼𑒨 𑒞𑒿𑒨 𑒏𑒣𑒱𑒪𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩 𑒯𑒰𑒃 𑒮𑓂𑒏𑒴𑒪𑒧𑒹 𑒢𑒰𑒍 𑒪𑒱𑒐𑒹𑒢𑒹 𑒕𑒪। 𑒩𑒞𑒢 𑒢𑒧𑒱𑒞𑒪𑒰 𑒒𑒰𑒙𑒧𑒹 𑒖𑒴𑒞𑒢𑒰𑒟 𑒧𑒢𑓂𑒠𑒱𑒩𑒧𑒹 𑒬𑓀𑒏𑒩 𑒦𑒑𑒫𑒰𑒢𑒏 𑒬𑒩𑒝𑒧𑒹 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒍 𑒁𑒫𑒡𑒹𑒬 𑒦𑒹𑒙 𑒖𑒰𑒃 𑒕𑒻, 𑒖𑒴𑒣𑒹𑒢 𑒔𑒼𑒬 𑒋𑒫𑒹𑒢𑓂𑒨𑒴𑒧𑒹 𑒍 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲 𑒮𑒳𑒢𑒲𑒞𑒰 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒩𑒯𑒻𑒋। 𑒏𑓀𑒑𑒰𑒪 𑒫𑒹𑒬𑒧𑒹 𑒩𑒞𑒢! 𑒣𑒻𑒒 𑒁𑒤𑒮𑒩 𑒁𑒫𑒡𑒹𑒬 𑒏𑒓𑓂𑒑𑒰𑒪𑒏𑒹𑒿 𑒣𑒏𑒛𑓃𑒢𑒹 𑒮𑒲𑒜𑓃𑒲𑒣𑒩 𑒚𑒰𑒜𑓃 𑒁𑒕𑒱। 𑒮𑒰𑒞𑒧 𑒐𑒰𑒧𑓂𑒛 𑒮𑒧𑒰𑒣𑓂𑒞।

𑒧𑒼𑒞𑒲 𑒏𑒳𑒏𑒳𑒛𑓃 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒐𑒜𑓃𑒍𑒏 𑒬𑒏𑒱𑒞𑒩 𑒩𑒞𑒢 𑒍 𑒁𑒫𑒡𑒹𑒬 𑒧𑒪𑒱 𑒏𑓄 𑒏𑒩𑒨। 𑒩𑒞𑒢𑒣𑒩 𑒔𑒰𑓀𑒙 𑒕𑒻। 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒖𑒧𑒰𑒢𑒞 𑒔𑒰𑒯𑒲। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒔𑒱𑒙𑓂𑒚𑒲 𑒁𑒥𑒻 𑒕𑒻, 𑒁𑒫𑒡𑒹𑒬𑒏 𑒦𑒰𑒨𑒏। 𑒛□ 𑒥𑒢𑒲𑒨𑒏𑒏 𑒥𑒱𑒨𑒰𑒯 𑒍 𑒮𑒦 𑒁𑒣𑒢 𑒥𑒯𑒲𑒢 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒰𑒮𑒿 𑒏𑒩𑒰𑒥𑒨 𑒔𑒰𑒯𑒻 𑒕𑒪, 𑒪𑒪 𑒥𑒰𑒥𑒴𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒣𑒮𑒢𑓂𑒢𑒱 𑒕𑒢𑓂𑒯𑒱। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒂𑒥 𑒁𑒫𑒡𑒹𑒬𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒼𑒔𑒨 𑒣𑒛𑓃𑒞𑒻। 𑒥𑒢𑒲𑒨𑒏 𑒞𑒿 𑒥𑒢𑒲𑒨𑒏𑒹 𑒁𑒕𑒱, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒪𑒪𑒥𑒰𑒥𑒴? 𑒩𑒞𑒢 𑒏𑒯𑒻𑒋 𑒖𑒹 𑒥𑒱𑒨𑒰𑒯 𑒞𑒿 𑒪𑒛𑓃𑒏𑒰𑒮𑒿 𑒢𑒹 𑒯𑒹𑒞𑒻। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒼 𑒠𑒹𑒐𑓄 𑒣𑒛𑓃𑒻 𑒕𑒻। 𑒔𑒱𑒙𑓂𑒚𑒲𑒧𑒹 𑒪𑒱𑒐𑒪 𑒕𑒻 𑒖𑒹 𑒪𑒪𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒖𑒪𑒠𑒲𑒮𑒿 𑒏𑒰𑒖 𑒦𑓄 𑒖𑒰𑒨 𑒮𑒹 𑒔𑒰𑒯𑒻 𑒕𑒟𑒱। 𑒮𑒹 𑒬𑓀𑒏𑒰 𑒅𑒞𑓂𑒣𑒢𑓂𑒢 𑒏𑒩𑒻𑒋। 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒹 𑒞𑒿 𑒍 𑒣𑒳𑒭𑓂𑒣𑒹𑒨𑒰𑒏 𑒪𑒹𑒪𑒧𑒹 𑒏𑒯𑒱𑒨𑒼 𑒐𑒳𑒪𑒹 𑒏𑓄 𑒑𑒣𑓂𑒣 𑒢𑒻 𑒏𑒹𑒪𑒢𑒲। 𑒂𑒚𑒧 𑒐𑒰𑒧𑓂𑒛

𑒮𑒧𑒰𑒣𑓂𑒞।

𑒏𑒳𑒧𑒏𑒳𑒧𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒏𑒩𑒳𑒝𑒰 𑒣𑒰𑒚𑒏 𑒖𑒲𑒏 𑒂𑓀𑒑𑒢 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒥𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒻𑒋, 𑒯𑒹𑒧- 𑒕𑒹𑒧 𑒥𑒜𑓃𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒻। 𑒪𑒰𑒪𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒏𑒩𑒳𑒝𑒰𑒮𑒿 𑒥𑒠𑒪𑒲 𑒦𑓄 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒚𑒰𑒧 𑒖𑒹𑒥𑒰 𑒪𑒹𑒪 𑒏𑒯𑒻 𑒕𑒟𑒱, 𑒍 𑒠𑒩𑓂𑒐𑒰𑒮𑓂𑒞𑒣𑒩 𑒯𑒮𑓂𑒞𑒰𑒏𑓂𑒭𑒩 𑒏𑓄 𑒠𑒃𑒋। 𑒪𑒰𑒪𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒖𑒰𑒃 𑒕𑒟𑒱। 𑒏𑒩𑒳𑒝𑒰 𑒏𑒢𑒻𑒋, 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒏𑒳𑒧𑒏𑒳𑒧 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒏𑒰𑒢𑒻𑒋। 𑒣𑒰𑒚𑒏 𑒖𑒲 𑒁𑒥𑒻 𑒕𑒟𑒱। 𑒏𑒳𑒧𑒏𑒳𑒧𑒮𑒿 𑒏𑒢𑒥𑒰𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒣𑒳𑒕𑒻 𑒕𑒟𑒱 𑒂 𑒍 𑒦𑒹𑒠 𑒐𑒼𑒪𑒻𑒋, 𑒪𑒰𑒪𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒏𑒩𑒳𑒝𑒰𑒣𑒩 𑒞𑒧𑒮𑒰𑒨𑒪 𑒕𑒪𑒐𑒱𑒢𑓂𑒯, 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒏𑒰𑒑𑒔𑒣𑒩 𑒯𑒮𑓂𑒞𑒰𑒏𑓂𑒭𑒩 𑒪𑒹𑒪𑒐𑒱𑒢𑓂𑒯। 𑒐𑒝𑓂𑒛 𑒢𑒾 𑒮𑒧𑒰𑒣𑓂𑒞।

𑒏𑒩𑒳𑒝𑒰 𑒂 𑒥𑒱𑒢𑒰𑒨𑒏𑒏 𑒑𑒣𑒬𑒣। 𑒏𑒩𑒳𑒝𑒰𑒏 𑒢𑒖𑒩𑒱 𑒪𑒰𑒪𑒥𑒰𑒥𑒴𑒏 𑒍𑒙𑒼 𑒠𑒱𑒮𑒱 𑒖𑒰𑒃𑒋। 𑒥𑒱𑒢𑒰𑒨𑒏 𑒠□𑒜𑓃 𑒁𑒕𑒱। 𑒠𑒮𑒧 𑒐𑒝𑓂𑒛 𑒮𑒧𑒰𑒣𑓂𑒞।

𑒣𑒰𑒚𑒏𑒖𑒲 𑒂 𑒥𑒞𑒯𑒢 𑒥𑒰𑒥𑒴𑒏 𑒑𑒣𑒬𑒣। 𑒣𑒰𑒚𑒏𑒖𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒑𑒣 𑒥𑒳𑒗𑒪 𑒕𑒢𑓂𑒯𑒱। 𑒪𑒰𑒪𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒏𑒩𑒳𑒝𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒢𑒼𑒏𑒩𑒲 𑒠𑒱𑒋𑒥𑒰𑒮𑒿 𑒣𑒯𑒱𑒢 𑒧𑒪𑒯𑒰𑒮𑒿 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒁𑒢𑓂𑒞 𑒧𑓀𑒖𑒴𑒩𑒲𑒏 𑒑𑒣 𑒏𑒩𑒻 𑒕𑒪। 𑒣𑒳𑒕𑒪𑒰𑒣𑒩 𑒢𑒃 𑒑𑒹𑒪, 𑒛𑒱𑒑𑒩𑒮𑒰𑒩𑒰 𑒣𑒼𑒐𑒩𑒱𑒧𑒹 𑒖𑒲𑒩𑒰 𑒠𑒹𑒧𑒨 𑒔𑒰𑒯𑒻𑒋 𑒮𑒹 𑒏𑒯𑒱 𑒠𑒹𑒪𑒢𑒱। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒣𑒼𑒐𑒩𑒰 𑒖𑒲𑒩𑒰 𑒪𑒹𑒪 𑒢𑒻 𑒠𑒹𑒢𑒹 𑒕𑒪𑒐𑒱𑒢 𑒧𑒪𑒯𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒪𑒰𑒪𑒥𑒰𑒥𑒴। 𑒞𑒐𑒢 𑒏𑒼𑒢 𑒋𑒯𑒹𑒢 𑒑𑒣 𑒕𑒻 𑒖𑒹 𑒧𑒪𑒯𑒰 𑒂 𑒪𑒰𑒪𑒥𑒰𑒥𑒴𑒋 𑒙𑒰 𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒴𑒗𑒪 𑒕𑒢𑓂𑒯𑒱। 𑒏𑒩𑒳𑒝𑒰𑒏 𑒣𑒜𑓃𑒰𑒃 𑒧𑒳𑒖𑒤𑓂𑒤𑒩𑒣𑒳𑒩𑒧𑒹 ' 𑒏𑒻𑒟𑒼𑒪𑒱𑒏 𑒔𑒩𑓂𑒔 𑒮𑓂𑒏𑒴𑒪' 𑒂 ' 𑒔𑒻𑒣𑒧𑒹𑒢 𑒑𑒩𑓂𑒪𑓂𑒮 𑒮𑓂𑒏𑒴𑒪' 𑒮𑒿 𑒦𑒹𑒪𑒻। 𑒣𑒰𑒚𑒏𑒖𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒳𑒧𑒏𑒳𑒧 𑒣𑒳𑒕𑒢𑒹 𑒕𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒖𑒹 𑒏𑒩𑒳𑒝𑒰 𑒠𑒲𑒠𑒲 𑒏𑒏𑒩 𑒥𑒹𑒙𑒲 𑒕𑒟𑒱𑒢, 𑒠𑒲𑒠𑒲 𑒥𑒰𑒥𑒴𑒏𑒹𑒿 𑒍 𑒏𑒯𑒻 𑒕𑒪𑒐𑒱𑒢 𑒖𑒹 𑒍 𑒞𑒼𑒯𑒪 𑒥𑒹𑒙𑒲 𑒕𑒱𑒨𑒾 𑒂 𑒩𑒳𑒣𑒻𑒨𑓂𑒨𑒰 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒠𑒹𑒪𑒐𑒱𑒢। 𑒏𑒩𑒳𑒝𑒰 𑒏𑒟𑒲𑒣𑒩 𑒯𑒮𑓂𑒞𑒰𑒏𑓂𑒭𑒩 𑒏𑒹𑒪𑒏? 𑒏𑒳𑒧𑒏𑒳𑒧𑒮𑒿 𑒣𑒰𑒚𑒏 𑒖𑒲 𑒥𑒱𑒢𑒰𑒨𑒏𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒯𑒥𑒰 𑒠𑒹𑒟𑒱𑒢𑓂𑒯। 𑒥𑒱𑒢𑒰𑒨𑒏 𑒏𑒩𑒳𑒝𑒰𑒮𑒿 𑒣𑒴𑒕𑒞 𑒂 𑒍 𑒧𑒢𑒰 𑒢𑒻 𑒏𑓄 𑒮𑒏𑒞। 𑒂 𑒤𑒹𑒩 𑒥𑒱𑒢𑒰𑒨𑒏 𑒂 𑒏𑒩𑒳𑒝𑒰𑒏 𑒑𑒣𑒬𑒣, 𑒥𑒱𑒢𑒰𑒨𑒏 𑒮𑒧𑒰𑒚𑒏 𑒔𑒼𑒙 𑒏𑒩𑒳𑒝𑒰𑒣𑒩 𑒢𑒻 𑒥𑒖𑒩𑓄 𑒠𑒹𑒞। 𑒋𑒑𑒰𑒩𑒯𑒧 𑒐𑒝𑓂𑒛 𑒮𑒧𑒰𑒣𑓂𑒞।

𑒁𑒫𑒡𑒹𑒬𑒏 𑒣𑒻𑒩𑒫𑒲𑒣𑒩 𑒩𑒞𑒢 𑒏𑒪𑒏𑒞𑓂𑒞𑒰𑒧𑒹 𑒮𑒹𑒏𑓂𑒨𑒳𑒩𑒱𑒙𑒲 𑒋𑒛𑒫𑒰𑒃𑒖𑒩 𑒁𑒕𑒱। 𑒧𑒰𑒧𑒪𑒱𑒏 𑒞𑒰𑒩𑒲𑒐𑒣𑒩 𑒧𑒳𑒖𑒤𑓂𑒤𑒩𑒣𑒳𑒩 𑒖𑒰𑒃𑒋 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒑𑒰𑒧 𑒢𑒻 𑒖𑒰𑒃𑒋। 𑒁𑒫𑒡𑒹𑒬 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒬𑒹𑒤𑒰𑒪𑒲𑒮𑒿 𑒦𑒹𑒿𑒙 𑒯𑒼𑒃 𑒕𑒻। 𑒑𑒣𑒏 𑒏𑓂𑒩𑒧𑒧𑒹 𑒬𑒹𑒤𑒰𑒪𑒲 𑒏𑒯𑒻 𑒕𑒟𑒱 𑒖𑒹 𑒁𑒫𑒡𑒹𑒬 𑒏𑒩𑒼𑒏 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪 𑒮𑒦𑒏𑒹𑒿 𑒢𑒼𑒏𑒩𑒲 𑒠𑒱𑒨𑒪𑒟𑒱𑒢 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒫𑒋𑒯 𑒮𑒦 𑒯𑒱𑒢𑒏𑒩 𑒢𑒱𑒢𑓂𑒠𑒰 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒻 𑒕𑒢𑓂𑒯𑒱।

શેસ્થાળી કહૈ છથિન જે શેસ્થાળીક મામા વકીલ છથિન્હ, ઓ કહૈ છથિન્હ જે નનકક જીત હેતૈ મુદા અસલી હત્યારાક પતા સેહો લગાવ્ડ પડ઼ત। નનકકેં વિશ્વાસ છૈ જે અસલી હત્યારા લલ્વાબૂક જમિનિયા પરાગા છૈ। અવધેશ એકટા આન ચટિ઼ડીક ગપ નનકકેં કહૈ છૈ, વિનાયકકેં કનુપ્રિયા સંગ લગ્ન ભડ ગેલ છૈ, ઓ ઓકરાસઁ વિયાહ કરડ ચાહૈ૫। શેસ્થાળીક પતિ નનકક સેક્યુરિટી ઑફિસર, શેસ્થાળીક મામા કમલ સરકાર છથિ વકીલ। શેસ્થાળીક પતિ નાય જી મૈથિલ આ માતા બંગાળી। શેસ્થાળી મૈથિલીમે કરેકટા પોથી સેહો લિખને છથિ। શેસ્થાળી આ નનકક ઘટકૈતી! ખણ્ડ બારહ સમાપ્ત।

લલ્વાબૂ કનુપ્રિયાક બદલીક ચટિ઼ડી પડ્બા દર છથિ, મુદા વિનાયક કનુપ્રિયાકેં છુટ્ટીપર પડ્બા દર છથિન્હ આ પોસ્ટમૈન ન□ટ *અવલેવલ* લિખિ કડ ચટિ઼ડી ઘુરા દરેપ। પોસ્ટમેન નવયુવક અછિ આ વિનાયક ઓકરા નોકરી લગોવામે બહુત પ્રયાસ કેને રહથિ। લલ્વાબૂ પરાગાસક માધ્યમસઁ કનુપ્રિયાકેં નિપિત્તા કરવા દેત મુદા હુનકર પત્નીકેં સુનલ દૂટા શબ્દ ' દેખહિ બચાકડ ' ઉદ્વેલિત કડ દર છન્હી। ગાત્મી તાતિમે મલય આ અજીત ગામેપર અછિ। પરાગાસ ચાનગીટેસઁ ગેલ મુદા કનુપ્રિયા દાઁત કાટિ કડ અપનાકેં છોડ઼ા લેલક। આ ઓકર ચચિયિવ સુનિ મલય, અજીત આ ઙ્રેસર સીનીયરામ આવિ ગેલૈ। કનુપ્રિયા ઓર ચાનૂમે સઁ પરાગાસકેં ચીન્હિ ગેલૈ। ખણ્ડ તેરહ સમાપ્ત।

કનુપ્રિયાક બદલીક ચટિ઼ડી એકબેર ને ઘુરલૈ, આબ સેર લલ્વાબૂ કોનો વ્યૌત લગા રહલ છથિ, દેખૈ છથિ ઓર છુતહરિયાકેં આબ કે રખૈ। નતન બરી જડ જેતૈ, સે વકીલ કહલકન્હી। કનુપ્રિયા આ પરાગાસક વિયાહ કરા દેત આ મામલિ ખતમ। ઘર ઘુરૈ છથિ। પત્ની વિનાયકક વિયાહમે દેરી હુનકા દ્વારા માંગલ જાયબલ પ્રેસૂર તીસ હજાર નુપૈયા આ ઊપરસઁ મોટરકેં માનૈ છથિ। ખણ્ડ ચૌદહ સમાપ્ત।

મસ્ટિર નાય સજક બદૌલત નનકકેં નોકરીયો ભેટલૈ આ જમાનતો। લલ્વાબૂક પત્નીકેં જનક લાગિ ગેલન્હિ જે કનુપ્રિયા નનકક બહિન છરિ મુનિયાઁ, ઓકરા પહુઁચીપર ચિન્હ છૈ જરપર ઓ ઘડ઼ી બાન્હૈત અછિ, પરાગાસક માયસઁ કછિુ બજા

𑒑𑒹𑒪 𑒢𑒯𑒱। 𑒪𑒰𑒪𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒣𑒕𑒞𑒰𑒃 𑒕𑒟𑒱 𑒖𑒹 𑒏𑒯𑒱 𑒣𑒰𑒃 𑒪𑒹𑒪 𑒁𑒛𑓃𑒱 𑒑𑒹𑒪, 𑒦𑒢𑒹 𑒁𑒫𑒡𑒹𑒬𑒏 𑒥𑒯𑒱𑒢𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒫𑒱𑒢𑒰𑒨𑒏𑒏 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯 𑒏𑒩𑒰 𑒠𑒻𑒞𑒟𑒱। 𑒥𑒰𑒞𑒰𑒥𑒰𑒞𑒲 𑒯𑒼𑒃𑒋, 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲 𑒫𑒱𑒢𑒰𑒨𑒏 𑒂 𑒏𑒩𑒳𑒝𑒰𑒏 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯 𑒦𑓄 𑒏𑓄 𑒩𑒯𑒞 𑒮𑒹 𑒏𑒯𑒻 𑒕𑒟𑒱, 𑒪𑒰𑒪𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒡𑒏𑒹𑒪 𑒠𑒃 𑒕𑒟𑒱𑒢𑓂𑒯, 𑒫𑒱𑒢𑒰𑒨𑒏 𑒥𑒲𑒔𑒧𑒹 𑒂𑒥𑒱 𑒖𑒰𑒃𑒋, 𑒪𑒰𑒪 𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒞𑒲𑒞𑒪 𑒥𑒱𑒪𑒰𑒛𑓃𑒱 𑒮𑒢 𑒣𑒰𑒕𑒴 𑒯𑒙𑒱 𑒖𑒰𑒃 𑒕𑒟𑒱। 𑒠𑒵𑒬𑓂𑒨 𑒣𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩𑒯 𑒮𑒧𑒰𑒣𑓂𑒞।

𑒫𑒱𑒢𑒰𑒨𑒏 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒧𑒰𑒨 𑒮𑓂𑒙𑒰𑒤 𑒏𑓂𑒫𑒰𑒩𑓂𑒙𑒩 𑒔𑒪𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒥𑒞𑒯𑒢 𑒥𑒰𑒥𑒴, 𑒣𑒰𑒚𑒏 𑒖𑒲 𑒂 𑒧𑒢𑒮𑒴𑒩 𑒢𑒠𑒰𑒤 𑒪𑒰𑒪𑒥𑒰𑒥𑒴𑒏𑒹𑒿 𑒧𑒢𑒥𑒻 𑒪𑒹𑒪 𑒑𑒹𑒪। 𑒣𑒩𑒑𑒰𑒮 𑒥𑒳𑒔𑓂𑒔𑒢𑒏 𑒏𑒯𑒱𑒨𑒼 𑒔𑒹𑒪 𑒕𑒪, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒂𑒥 𑒏𑒯𑒰𑒿 𑒖𑒰𑒃𑒋। 𑒏𑒩𑒳𑒝𑒰𑒏 𑒥𑒠𑒪𑒲𑒏 𑒔𑒱𑒙𑓂𑒚𑒲 𑒤𑒹𑒩 𑒂𑒥𑒻 𑒕𑒻, 𑒮𑓂𑒣𑒹𑒬𑒪 𑒧𑒹𑒮𑒹𑒖𑒩 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰। 𑒏𑒩𑒳𑒝𑒰 𑒔𑒱𑒙𑓂𑒚𑒲 𑒩𑒱𑒮𑒲𑒫 𑒏𑓄 𑒪𑒹𑒪𑒏। 𑒫𑒱𑒢𑒰𑒨𑒏 𑒞𑒧𑒮𑒰 𑒖𑒰𑒃𑒋, 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒔𑒼𑒩, 𑒥𑒠𑒧𑒰𑒬 𑒏𑒯𑒻𑒋, 𑒏𑒯𑒻𑒋 𑒖𑒹 𑒖𑒰𑒞𑒱 𑒡𑒩𑓂𑒧 𑒏𑒞𑓄 𑒖𑒹𑒞𑒻! 𑒏𑒯𑒻𑒋 𑒖𑒹 𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒲 𑒔𑒼𑒩 𑒯𑒼𑒃𑒞𑒹 𑒁𑒕𑒱। 𑒏𑒯𑒻𑒋 𑒔𑒼𑒩! 𑒏𑒳𑒪𑒙𑒰! 𑒧𑒳𑒠𑒰 '𑒣𑓂𑒩𑒰𑒧𑒱𑒮' 𑒬𑒥𑓂𑒠 𑒮𑒳𑒢𑒱𑒞𑒹 𑒫𑒱𑒢𑒰𑒨𑒏 𑒣𑒱𑒒𑒪𑒱 𑒖𑒰𑒃𑒋। 𑒏𑒩𑒳𑒝𑒰 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒧𑒼𑒛𑓃𑒪 𑒏𑒰𑒑𑒖 𑒫𑒱𑒢𑒰𑒨𑒏𑒏 𑒯𑒰𑒟𑒧𑒹 𑒠𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒫𑒱𑒢𑒰𑒨𑒏 𑒍 𑒣𑒜𑓃𑒱 𑒪𑒖𑓂𑒖𑒱𑒞 𑒦𑓄 𑒖𑒰𑒃𑒋, 𑒏𑓂𑒭𑒧𑒰 𑒧𑒰𑒿𑒑𑒻𑒋। 𑒏𑒩𑒳𑒝𑒰 𑒩𑒱𑒖𑒰𑒃𑒢 𑒏𑓄 𑒠𑒹𑒪𑒏 𑒄 𑒑𑒣 𑒮𑒾𑓀𑒮𑒹 𑒣𑒮𑒩𑒱 𑒖𑒰𑒃𑒋। 𑒪𑒰𑒪𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒐𑒹𑒢𑒰𑒃- 𑒣𑒱𑒢𑒰𑒃 𑒬𑒳𑒩𑒴 𑒏𑓄 𑒠𑒹𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱, 𑒖𑒿 𑒫𑒱𑒢𑒰𑒨𑒏 𑒒𑒩 𑒂𑒍𑒞 𑒞𑒿 𑒍 𑒒𑒩 𑒕𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒠𑒹𑒞𑒰, 𑒋𑒞𑒹 𑒡𑒩𑒱 𑒪𑒰𑒪𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒂𑓀𑒙 𑒏𑓄 𑒠𑒹𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱। 𑒣𑒩𑒑𑒰𑒮𑒏𑒹𑒿 𑒪𑒰𑒪𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒁𑒢𑓂𑒞𑒱𑒧 𑒢𑒰𑒙𑒏 𑒐𑒹𑒪𑒥𑒰 𑒪𑒹𑒪 𑒏𑒯𑒻 𑒕𑒟𑒱𑒢𑓂𑒯। 𑒠𑒵𑒬𑓂𑒨 𑒮𑒼𑒪𑒯 𑒮𑒧𑒰𑒣𑓂𑒞।

𑒁𑒢𑓂𑒞𑒱𑒧 𑒠𑒵𑒬𑓂𑒨 𑒁𑒕𑒱 𑒠𑒵𑒬𑓂𑒨 𑒮𑒞𑓂𑒩𑒯। 𑒠𑒳𑒩𑓂𑒑𑒰 𑒦𑒮𑒰𑒢𑒏 𑒠𑒱𑒢। 𑒠𑒳𑒩𑓂𑒑𑒰𑒣𑒴𑒖𑒰𑒧𑒹 𑒞𑒲𑒢𑒙𑒰 𑒢𑒰𑒙𑒏 𑒧𑓀𑒔𑒮𑓂𑒟 𑒏𑒩𑒋𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒋, 𑒠𑒴𑒙𑒰 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒂 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒯𑒱𑒢𑓂𑒠𑒲। 𑒂𑒩 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒢𑒰𑒙𑒏 𑒕𑒻- '𑒏𑒳𑒯𑒹𑒮', 𑒫𑒱𑒢𑒰𑒨𑒏 𑒩𑒰𑒧𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩𑒏 𑒣𑒰𑒩𑓂𑒙 𑒁𑒮𑓂𑒫𑒲𑒏𑒰𑒩 𑒏𑒹𑒪𑒏, 𑒍 𑒛𑒰𑒏𑓂𑒙𑒩𑒏 𑒣𑒰𑒩𑓂𑒙 𑒐𑒹𑒪𑒞। 𑒁𑒖𑒱𑒞 𑒩𑒰𑒧𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩𑒏 𑒂 𑒧𑒪𑒨 𑒅𑒔𑓂𑒔 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒱𑒞 𑒨𑒳𑒫𑒏 𑒬𑓀𑒏𑒩𑒏 𑒣𑒰𑒩𑓂𑒙 𑒐𑒹𑒪𑒞। 𑒥𑒳𑒔𑓂𑒔𑒢 𑒥𑒩𑒏 𑒥𑒰𑒣 𑒮𑒳𑒫𑓀𑒬 𑒥𑒢𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒣𑒰𑒩𑓂𑒙 𑒐𑒹𑒪𑒥𑒰𑒮𑒿 𑒚𑒲𑒏 𑒍𑒯𑒢𑒹 𑒢𑒻 𑒦𑓄 𑒖𑒰𑒃𑒋, 𑒥𑒳𑒔𑓂𑒔𑒢 𑒮𑒦𑒏𑒹𑒿 𑒩𑒥𑒰𑒛𑓃𑒱 𑒠𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒧𑒰𑒧𑒪𑒱𑒏 𑒞𑒰𑒩𑒲𑒤𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒩𑒞𑒢 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒁𑒫𑒡𑒹𑒬 𑒂 𑒥𑒳𑒔𑓂𑒔𑒢𑒏 𑒂𑒑𑓂𑒩𑒯𑒣𑒩 𑒠𑒳𑒩𑓂𑒑𑒰𑒣𑒴𑒖𑒰 𑒠𑒹𑒐𑒻 𑒪𑒹𑒪 𑒑𑒰𑒧 𑒂𑒨𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒑𑒰𑒧𑒧𑒹 𑒑𑒳𑓀𑒖𑒢 𑒕𑒻 𑒖𑒹 𑒏𑒩𑒳𑒝𑒰 𑒧𑒪𑒰𑒯𑒏 𑒥𑒹𑒙𑒲 𑒢𑒻 𑒕𑒱𑒋, 𑒩𑒞𑒢 𑒏𑒩𑒳𑒝𑒰𑒮𑒿 𑒠𑒴- 𑒞𑒲𑒢 𑒥𑒹𑒩 𑒑𑒣 𑒏𑒹𑒪𑒏, 𑒍 𑒁𑒢𑓂𑒠𑒰𑒖 𑒏𑒩𑒻𑒋 𑒖𑒹 𑒯𑒼 𑒢 𑒯𑒼 𑒏𑒩𑒳𑒝𑒰 𑒍𑒏𑒩𑒹

वहिन मुनियेँ ने हुअय। स्त्रीगामक गप ओकरा मोन पड़ै छै जे रतने सन एतमेन छै ई छौड़ी। रतन बुच्चन ओइठाम रहैए। यातना विजैवला छै, नाटक समाप्त होइवला छै, जसानक कारना देरी जेबै। कनुमा अपन पतिकेँ सजा साल वजा बैत अछि, ओ अपनो मोने आवि जाइ छथि, अहू बेर आयल छथिन्हि। परगास रतनक पछोर येने अछि। नवागछुलीक अन्तमे यूर छै, गाछक पाछाँ ओ चपायल अछि। मुदा छह येप्पामे लालबाबूपर पड़ल, रतन पाछुए छल। ऊरीछ जड गेलै, लालबाबू अस्पताल एला। आ ऊेर रहस्योद्घाटन आ पश्चाताप। आ वजियादशमीक नाटक समाप्त।

(आगाँ अंकमे जारी)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२३महाकान्त प्रसाद- बीहनि कथा- पयोज



महाकान्त प्रसाद
बीहनि कथा- पयोज

-𑒋𑒧𑒣𑒲 𑒯𑒾, 𑒏𑒲 𑒯𑒰𑒪 𑒮𑒴𑒩𑒞𑒱 𑒕𑒻𑒯?
-𑒑𑒼𑒩 𑒪𑒑𑒻 𑒕𑒲 𑒏𑒏𑓂𑒏𑒰, 𑒢𑒲𑒏𑒹 𑒕𑒲। 𑒂𑒋 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒠𑒩𑓂𑒬𑒢 𑒠𑒹𑒪𑒱𑒨𑒻𑒏?
-𑒯𑒾 𑒣𑓂𑒩𑒡𑒰𑒢𑒧𑓀𑒞𑓂𑒩𑒲 𑒏𑒯𑒢𑒹 𑒩𑒯𑒟𑒱𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒖𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒐𑒰𑒋𑒥 𑒂𑒩 𑒢𑒯𑒱 𑒐𑒰𑒋 𑒠𑒹𑒥𑒻𑒏। 𑒞𑒼𑒯𑒩 𑒏𑒲 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒕𑒯? 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒞𑓄 𑒥𑒳𑒗𑒰𑒋 𑒨𑓄 𑒖𑒹!
-𑒏𑒏𑓂𑒏𑒰 𑒍 𑒐𑒰𑒋𑒥-𑒐𑒼𑒂𑒋𑒥 𑒧𑒢𑒰 𑒏𑒋𑒢𑒹 𑒕𑒪𑒟𑒱𑒢𑓂𑒯𑒱। 𑒣𑒰𑒩𑒮 𑒂 𑒧𑒼𑒙𑒩𑒲 𑒥𑒰𑒢𑓂𑒯𑒥 𑒟𑒼𑒛𑓃𑒹 𑒥𑒢𑓂𑒢 𑒏𑒋𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱?!
-𑒢𑒾 𑒥𑒩𑓂𑒯, 𑒄 𑒞𑓄 𑒥𑒛𑓃𑒏𑒰 𑒣𑒱𑒨𑒾𑒖 𑒢𑒱𑒏𑒪𑒪, 𑒖𑒞𑒹𑒏 𑒮𑒼𑒯𑒱𑒨𑒾 𑒍𑒞𑒹𑒏 𑒕𑒼𑒙।
-𑒯𑒿 𑒮𑒹 𑒮𑒻𑒯।
𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨 editorial.staff.videha@gmail.com **𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।**

𑓒.𑓔.𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒧𑒢𑒼𑒖 𑒏𑒬𑓂𑒨𑒣- 𑒅𑒛𑓃𑒪 𑒔𑒱𑒛𑓃𑒻



𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒧𑒢𑒼𑒖 𑒏𑒬𑓂𑒨𑒣

૧૮ટા ઉઘુકથા

૩૬૭ યડિ

ભૈયાકાકા કે કાન મે બનક nડ પડ્ઉ છઉનિ મુદા પનિયાયઉ નહિ નેહથિ ળે ભૈયાવ઼ન કે સુડ્ડાહ કડ શ્રોnડ ળૂnા કે કાનપ્પાના ઉગૌ। ભૈયાવ઼ન સડ ભૈયાકાકા કે એહૂ હેતુ વ઼શિષ ઉગાવ઼ છઉનિ ળે શ્રોકન એક-એક ટા ગાછ શ્રો શ્રપને હાથ સડ ઉગોને છઉહ્ પટેને છઉહ્ વેઢને છઉહ્ શ્રોગાનને છઉહ્ શ્રા નાnિ શ્રોકન વઢ઼વ, શ્રૂઉવ, શ્રુડ઼વ કે શ્રપ્પયિાસને છઉહ। ળnેક પાઉન-પોષાm ઉોક શ્રપન સંnાન કે કૌn શ્રછિ શ્રોહિ સડ કમ્મ nડ નહિ઼ કહૂ nડ વેસાયિ઼ દેપ્પબાઉ ભૈયાકાકા ભૈયાવ઼ન કે એક-એક ટા ગાછ કે કેને છઉહ। શ્રા nકને કાનm સડ શ્રો ગાછી ભૈયાવ઼ન કે નૂપે ળાનઉ ળાય઼ ઉગાઉ।

શ્રાઈ બોને સડ સૌસે ગામ દઉમઉnિ છઉૈ। ભૈયાવ઼ન કે ગાછ સબ કે મોટનવ઼ઉા શ્રાડ઼ા મશીન સડ યડ઼ાયડ઼ કાટઉ ળા નહઉ છૈ઼ ઈ સુનnિ ભૈયાકાકા કે હ્દાંસ ૩ડ઼િ ગેઉનિ। nડ કી સnnે બોઉ ભૈયાવ઼ન કે વેયિ ઉિઉાહ શ્રા હ્મના ળnnવ nક નહિ! ભૈયાકાકા કે સૌસે દેહ મે ળેના શ્રાગિ પળનિ ગેઉનિ। nામસ સડ વુહ્વા મે નહિ શ્રાવિ નહઉ છઉનિ ળે એકન પ્નnકિાન કોના કનથિ। વ઼ૃદ્ય શ્રસક્ક વ઼છિાન યેને દઉાન પન પડ઼ઉ ટુકુન-ટુકુન nકૈn નહૈn છઉહ। શ્રાઈ શ્રોહિ શ્રસક્ક ળીnm કાયા મે નહિ ળાનિ શ્રોnક વઉ કોના શ્રાવિ ગેઉનિ ળે એક્કે હ્નોક મે વછિાન સડ ૩nનિ ગેઉાહ। મુદા પૈન મે ડાઢ઼ હ્વોક સક્ક શ્રાવ વાઁયઉ કહ્ઁ છઉનિ nઉમઉ કડ પ્પસિ પડ઼ઉાહ। મુઁહ સડ વસ શ્રસ્ફુટ 'બ઼' વહ્નેઉનિ શ્રા ઈહઉોક ઉીઉા સમાપ્n કડ ગેઉાહ। ઉોક વુહ્યિો ને પૌઉક ળે શ્રો કહડ કયિાહૈn છઉહ -- 'બોઉ કિ ભૈયાવ઼ન!'

નફ઼ાન મે બને શ્રૂnક છઉૈ મુદા ગાછ દુહૂ દસિ કટિ નહઉ છઉ -- એક દસિ ભૈયાવ઼ન મે શ્રા દોસન દસિ બૂnહી ગાછી મે। બોઉ યનિ એપ્પનો નિ઼વ઼કિાન છઉાહ।

-**कुमार मनोज कश्यप, सम्प्रति:** भारत सरकार के उप-सचिव, **संपर्क:** सी-११, टावर-४, टाइप-५, किदवई नगर पूर्व (दिल्ली हाट के सामने), नई दिल्ली-११००२३ मो ९८१०८११८५०, ८१७८२१६२३९ ई-मेल : [illegible]@gmail.com

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२५आचार्य रामानंद मंडल- वर्णव्यवस्थावादी संस्कृति बनाम शासितशोषित समाज उत्कर्ष परिवर्तनक संघर्ष



आचार्य रामानंद मंडल

वर्णव्यवस्थावादी संस्कृ□ति बनाम श्रमशील समाज उत्कृष्ट परम्परा संघर्ष

मिथिला मे वर्णव्यवस्थावादी समाज यानि ब्राह्मणवादी समाज, श्रमशील समाज यानि वंचित समाज अर्थात् राम,सोहरक (ई नामांकरण ब्राह्मणवादी संस्कृ□ति के देन अछि) वा आदिवासी पर वर्तमान मे भी सांस्कृ□तिक सामाजिक स्तर पर वर्णव्यवस्था बनल अछि। मिथिलाक संस्कृ□ति उच्च नीच पर आधारित अछि। जनकवि वैद्यनाथ मिश्रक अनुसार सुच्चा मैथिल-मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थ अछि। ई दूनू मिल कै ८०८ वर्ष मिथिला पर राज कैलन अछि। बाजल जाला से मिलिके मैथिली के शोषक के भाषा बनैलन आ ई शोषित वंचित के भाषा न बन पायल। साथै सत्ता, साहित्य आ सांस्कृ□तिक प्रतिष्ठान पर आइ तक वर्णव्यवस्था बनल अछि।

हिस्टोरिकल सर्वे आफ इंडिया मे मिथिला पर गियर्सन अपन विचार प्रकट कैलन हिम्मत अछि कि मिथिला एकटा प्राचीन इतिहास वाला देश अछि जे अपन परम्परा के आइ तक बरकरार राखने अछि। अपनौ ई भूमि ब्राह्मण एकटा वर्गक अधीन आ वर्णव्यवस्था मे अछि। जे असाधारण रूप सं सत्ता आ कायदा कै बरकरार राखै के दर्प स चूर अछि।

સૈકડ઼ો સાલ સં મટિ્ટીક ૬ ટુકડ઼ા પર વહ્ણ ગામ્વ઼ કરૈત રહલ અછી। આ ઉત્ત્ર,પૂર્વ આ પશ્ચિમિ સં લગાતાર આક્રમણ કૈ દ્દેલૈત ૬ અપન પારંપરિક વ઼શિષતા વનૌને રખ્ખને અછી। વ઼ અન્ય઼ રાષ્ટ્રીય઼તાક લોક સભ કે સમાન ભાવ઼ સં નૈ અપનાવ઼ૈત અછી।

કેદારનાથ ચૌધરી આવાના નહિન મે લિખ્વૈત અછિ જે એમ્હુ જી અપ્પન એકટા ભેંટ મે હમરા વતલૈલન કિ મૈથિલિ ભાષાક ક્ષેત્ર સંકુચલ,સમટલ આ એકટા વ઼શિષ જાતિ એકાધિકાર મે અછી।

રાજનીતિશાસ્ત્રીક વ઼ચાર અનુસાર મિથિલા મે દૂ તરહક સંસ્ક□તિ અછી। એકટા વાભન કાય઼થક સંસ્ક□તિ આ દોસર ગૈર વાભન કાય઼થક સંસ્ક□તિ અછી। ઉદાહરણ કે લેલ જનેઉ, શાદી વ્યાહ આ અન્ય઼ શુભ અવ઼સર પર પાગ પહનનાઇ, મધુશ્રાવણી,કોજગરા,નવ઼ વધુકૈ ટેમી સે દાગક પ્રથા, વ઼ધિવ઼ા વ઼િવ઼ાહ નિષેધ પ્રથા ,શુભ અવ઼સર પર માંસાહાર ભોજન શામિલ અછી। જૌ કિ ૨ સભ પ્રથા ગૈર વાભન કાય઼થક સંસ્ક□તિ મે નૈ અછી।

પં ગોવ઼િન્દ ઝા લિખ્વૈત છથિ જે મિથિલા મે દૂટા સમાજ અછી। જે એક દોસર સે અપરિચિત આ અંજાન છથિ।

વોલી આ ભાષા સાહિત્ય઼ કૈ પ્રશ્ન અછી। વિક્રુલ અલગ અછી। વાભન આ કાય઼થ અપન મૈથિલિ કે શુદ્ધ આ માનક માનૈત અછી। જે પાણિનિ કે વ્યાકરણ જેના કઠિન અછી।

આ વંચિત સમાજ કે મૈથિલિ કૈ પશ્ચિમી મૈથિલિ યાની વજ્જિકા, દક્ષિણી મૈથિલિ યાની અંગિકા,પુરવી મૈથિલિ યાની ઠેઠી આ રાર ભાષા માનૈત અછી। જ્યોકિ વજ્જિકા આ અંગિકા મે ભાષા સાહિત્ય઼ કે રચના ભો ગેલ અછી। વજ્જિકા,અંગિકા કે સદ્દિય કવિજન કે પદો કે પ્રયોગ વર્ણરત્નાકરમે જ્યોતિરિવ઼ર □૧૩૨૪□કૈલ અછી। વાવજૂદ વ઼ે વજ્જિકા, અંગિકા કે મૈથિલિ કૈ ભાષા નૈ, વોલી માનકે છાંટિ દેલ જાઇત અછી। એકટા

વળ્ળકિા સાહિત્યિકાર અપન ન્યઙ પોથી ઙેકે મૈથિઙિ સાહિત્ય ,અકાદમી ગેઙ પરંચ ન્યના કે મૈથિઙિ ને માનકે ઙેટા દેઙ ગેઙ।

વાજનવાદી વ્યસ્વ મથિઙિ કે વંચતિ સમાળ કે વૌદ્ય તથા કવીન સાહિત્ય સે અપનાચિતિ નાપ્રે મે કોનો કસન ને છોડેત અછિ। તે વંચતિ સમાળ ગૈન વ્નાહ્મણ સાહિત્ય આ સંસ્ક□તિ સં અનળાન છથિ। વ્નાહ્મણ વ્ગ અપન સાહિત્ય આ સંસ્ક□તિ કે વઙ પન વંચતિ સમાળ કે માનસકિ ગુઙામ વનૈઙ અછિ। શાસ્ત્ન પુનાણ ળેકા મૈથિઙિ સાહિત્ય જી વ્નાહ્મણક મહિમા સે જનઙ અછિ। સ્નકન સાહિત્ય મે વંચતિ સમાળ કે અપના ળમાને કે પ્નસદ્ધિ મૈથિઙિ ગાયક પં માંગેન ખ્વાસ, સાહિત્યકાન સ્વામીશ્વનનાથ નાથ ગેણુ, મથિઙિ કે સ્વતંત્ન્ય પ્નથમ શહીદ નામસ્વઙ મંડઙ , સાહિત્યકાન અનૂપ મંડઙ શહીદ ળુવ્વા સહની, શહીદ પૂનણ મંડઙ આ શહીદ મથુના મંડઙ કે કોઈ ચન્યા ને અછિ।

ઙેખક સહ પત્નકાન અનવિંદ દાસ અપના એકટા આઙેખ મે ઙખૈત છથિ કિ સ્કકસવી સદી કે દોસન દશક મે જી મૈથિઙિ જાષા સાહિત્ય મે વાજન આ કાયસ્થ કે હી ઉપસ્થતિ દખાિઈ દેત અછિ। મૈથિઙિ જાષા કે મે હાશઍિ પન કે ઙોગ ળનિકન જાષા મૈથિઙિ અછિ અદ□શ્ય અછિ।

સ્નાહિસકાન પંકળ કુમાન હા ઙખૈત છથિ આધુનકિ કાઙ મે ખાસ આળાદી કે વાદ વદ્યિાપતિ ગૌનવશાઙી મૈથિઙિ સંસ્ક□તિ કે પ્નતીક ચહ્નિ વન કે ઉજાન ઙેન અછિ।

અસ આચાન પન મથિઙિ મે દૂ નંગ કે મૈથિઙિ અછિ એગો વાજન આ દોસન સોઙકન। મૈથિઙિ જી દૂ નંગ કે એગો વાજન કે મૈથિઙિ આ દોસન સોઙકન કે મૈથિઙિ। સંસ્ક□ત કે નાટક મે નમ્નિવન્ગીય પાત્ન કે જાષા કે અપજ્નંશ વના દેઙ ળાઇત નહૈ। તહના વદ્યિાપતિ જી ળન સામાન્ય કે ઙેઙ ગીત ગાના આ ઉચ્ચ વન્ગ કે ઙેઙ પુનુષ પનીક્ષા ઙખ્નિન। વન્ગ જેદ કે આચાન પન એહન નચના સંસ્ક□ત આ મૈથિઙિ સાહિત્ય મે પાયઙ ળાતિ અછિ। આળુક સમય મે

भी मैथिली के संस्क□तनिष्ठ आ शास्त्रीय भाषा बनाबै के षड्यंत्र चल रहल अछि। जे जन सामान्य साहित्य आ संस्क□ति सँ वंचित रहै।

मिथिला मे एखनो उच्च नीच आ छुआछूत के भाव है कि बाभन दलित वर्ग के आर तक पूजा पाठ आ संस्कार नै करबैत अछि। दलित के ओहां भोजन के सबाल नै अछि। सोलकन के पूजा पाठ आ संस्कार करबैत अछि। परंच आर चरा सिद्ध अन्न (भात,दालि)भोजन नै करैत अछि। परंच कोंजाभोजन (चूड़ा,दही, चीनी, मिठाई आ सुख)करैत अछि।

मंदिर मे दलित गच्ची (मंदिर के चबूतरा) पर न चढ़ सकैत रहे। सोलकन मंदिर के गर्भग□ह मे नै जा सकै अछि। केवल जनेऊधारी जा सकैत अछि।

वंचित समाज के अरसे घबराय कै नै चाही। कारण मैथिल आ मैथिली भाषी त वंचित समाज भी अछि। अप्पन संस्क□ति आ समाज के हित मे निर्भय आ निःसंकोच साहित्य स□जन करबाक चाही।

-आचार्य रामानंद मंडल सामाजिक चिंतक सीतामढ़ी, सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक, माता-चन्द्रा देवी, पिता-स्व०रामेश्वर मंडल, पत्नी- प्रमिला देवी, जन्म तिथि-०१ जनवरी १९६० योग्यता- एम-एससी (रसायन शास्त्र), एम ए (हिन्दी) रुचि- साहित्यिक, मैथिली-हिन्दी कविता -कहानी लेखन आ आलेख्य प्रकाशित पोथी - मैथिली कविता संग्रह भासा के न बांटियौ २०२२ प्रकाशित रचना - सहिया कविता संग्रह पोथी - जनक नंदिनी जानकी आ शौर्य गाथा २०२२ पत्रिका -मिथिला समाज, घर -बाहर आ अपूर्वा (मैगजीन) अखबार -दैनिक मैथिल पुनर्जागरण प्रकाश सामाजिक- सामाजिक चिंतन, दायित्व- पूर्व जिला प्रतिनिधि, प्राथमिक शिक्षक संघ, डुमरा, सीतामढ़ी स्थायी पता- ग्राम-पपिरा बसिनपुर थाना-

𑒣𑒩𑒱𑒯𑒰𑒩 𑒖𑒱𑒪𑒰-𑒮𑒲𑒞𑒰𑒧𑒜𑒲 𑒫𑒩𑓂𑒞𑒧𑒰𑒢 𑒣𑒞𑒰-𑒣𑒣𑒱𑒢𑒰 𑒮𑒠𑒢, 𑒧𑒳𑒩𑒪𑒱𑒨𑒰𑒔𑒏 𑒫𑒰𑒩𑓂𑒛-𑓐𑓔
𑒮𑒲𑒞𑒰𑒧𑒜𑓃𑒲 𑒣𑒼𑒮𑓂𑒙-𑒔𑒏𑒧𑒯𑒱𑒪𑒰 𑒖𑒱𑒪𑒰-𑒮𑒲𑒞𑒰𑒧𑒜𑒲 𑒩𑒰𑒖𑓂𑒨-𑒥𑒱𑒯𑒰𑒩 𑒣𑒱𑒢-𑓘𑓔𑓓𑓓𑓐𑓒

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨 editorial.staff.videha@gmail.com **𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।**

𑓒𑒠𑓂𑒨𑒼𑒑𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒣𑒰𑒚𑒏 ' 𑒫𑒱𑒨𑒼𑒑𑒲' - 𑒬𑒲𑒒𑓂𑒩 𑒠𑒩𑓂𑒬𑒢



𑒨𑒼𑒑𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒣𑒰𑒚𑒏 ' 𑒫𑒱𑒨𑒼𑒑𑒲'

𑒬𑒲𑒒𑓂𑒩 𑒠𑒩𑓂𑒬𑒢

𑒣𑒵𑒟𑓂𑒫𑒲 𑒣𑒩 𑒦𑒏𑓂𑒞 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰 𑒥𑒢𑒰𑒍𑒪 𑒦𑒑𑒫𑒰𑒢𑒏 𑒒𑒩, 𑒁𑒩𑓂𑒟𑒰𑒞𑓂 𑒧𑒚-𑒧𑒢𑓂𑒠𑒱𑒩, 𑒧𑒹 𑒦𑒑𑒫𑒰𑒢𑒏 𑒠𑒩𑓂𑒬𑒢 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒦𑒲𑒛𑓃 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒕𑒻𑒏। 𑒠𑒩𑓂𑒬𑒢𑒰𑒩𑓂𑒟𑒲 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱𑒏 𑒦𑒲𑒛𑓃𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒧𑒢𑓂𑒠𑒱𑒩𑒏 𑒫𑓂𑒨𑒫𑒮𑓂𑒟𑒰𑒣𑒏 𑒮𑒥 𑒦𑒑𑒫𑒰𑒢 𑒏𑒹𑓀 𑒏𑒞𑒹𑒏𑒼 𑒒𑒹𑒩𑒰 𑒧𑒹 𑒥𑒢𑓂𑒠 𑒏𑓄 𑒏𑒋 𑒩𑒰𑒐𑒱 𑒠𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒂 𑒠𑒩𑓂𑒬𑒢𑒰𑒩𑓂𑒟𑒲 𑒏𑒹𑓀 𑒦𑒑𑒫𑒰𑒢𑒏 𑒏𑓂𑒭𑒝𑒱𑒏 𑒠𑒩𑓂𑒬𑒢 𑒪𑒹𑒪 𑒏𑒞𑒹𑒏𑒼 𑒒𑓀𑒙𑒰𑒏 𑒏𑒭𑓂𑒙 𑒮𑒯𑒻𑒞 𑒚𑒰𑒜𑓃 𑒥𑒢𑒰𑒍𑒪 𑒪𑒰𑒃𑒢 𑒧𑒹 𑒪𑒰𑒑𑒱 𑒩𑒯𑒋 𑒣𑒛𑓃𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒏। 𑒃 𑒪𑒰𑒃𑒢 𑒏𑒞𑒹𑒏𑒙𑒰 𑒯𑒼𑒃𑒏 𑒂 𑒏𑒞𑒹𑒏 𑒒𑓀𑒙𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒦𑒑𑒫𑒰𑒢𑒏 𑒠𑒩𑓂𑒬𑒢 𑒯𑒼𑒋𑒞 𑒮𑒹 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒦𑒩 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒏 𑒍𑒯𑒱 𑒧𑒚-𑒧𑒢𑓂𑒠𑒱𑒩𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡𑒱 𑒣𑒩। 𑒦𑒑𑒫𑒰𑒢 𑒍𑒋𑒯, 𑒩𑒴𑒣 𑒋𑒏𑒹, 𑒥𑒴𑒜𑓃 𑒧𑒴𑒩𑓂𑒞𑒱𑒍 𑒧𑒹 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒁𑒢𑓂𑒞𑒩 𑒢𑒯𑒱 𑒞𑒻𑒨𑒼 𑒏𑒼𑒢 𑒧𑒚-𑒧𑒢𑓂𑒠𑒱𑒩 𑒧𑒹 𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩

દર્શન કરૈત છી તાહિ પર નિર્ભર કરત જે લાઇન કતેકટા રહત આ કતેક લોગ સઁ હુનકર દર્શન હોયત।

સબ ગામ મે એકટા શિવ મન્દિર રહિતે છૈક, જતય ગ્રામીણ લોકનિ શ્રદ્ધા સઁ પૂજા-પાઠ કરૈત છથિ, શિવલિંગ પર અપન ઇચ્છા ભરિ જલ ઢારૈત છથિ, હુનકા પઁજિઅબૈત છથિ, અપન ગીત-પ્રાર્થના સુનબૈત છથિ, કતહુ ટોકનિહાર નહિ જે જલ્દી કરૂ, હટિ જાઉ આદિ। તહિના ગામક ભગવતી મન્દિર મે ઘંટાક ઘંટા બૈસલ રહૂ, પાઠ કરૂ, કિયો નહિ ટોકત। એકર વિપરીત દેખલ ગેલૈક જેના બૈદ્યનાથ ધામ મે, કાશી વિશ્વનાથક મન્દિર મે, સોમનાથ મન્દિર મે, વૈષ્ણો દેવી મન્દિર મે, કામાખ્યા મન્દિર મે આ અન્ય તથાકથિત પ્રસિદ્ધ મન્દિર સબ મે। મન્દિરક પ્રસિદ્ધિએ અબૈત છૈક ઓતય દર્શનાર્થી લોકનિક ભીડ઼ સઁ આ કિએ પ્રયાસતિ કથ્ય સઁ જે અહાઁ મન્દિર મે પૂજા-અર્ચના અથવા દર્શન કેલ સઁ મનોવાઞ્છિત ફલ ભેટૈત છૈક।

અપના દેશ મે તિરુપતિક પડ઼ોસ મે તિરુમલ પહાડ઼ી પર અવસ્થિત ભગવાન વેઙ્કટેશ્વરક મન્દિર દર્શનાર્થીક ભીડ઼ક હિસાબે વિશ્વ મે સબસઁ પ્રસિદ્ધ અછિ જતય દર્શન હેતુ સાધારણતઃ આઠ-દશ ઘંટા લાઇન મે લાગય પડ઼ૈત છૈક। એહિ કારણ યદ્યપિ આન સબ તીર્થ કૈએ ગેલ છલ, હમ ઓતય જેવા સઁ પરહેજ કએને છલહુઁ મુદા ભગવાને જખન જદિ કઠ કએ બજા લેલનિ તખન અપન કોન ઉપાય ? માન્યતા છૈક જે કોનો દેવી-દેવતા જખન ભક્ત કેં બજબૈત છથિ તખને લોકક પએર ઓહિ મન્દિર દિશિ ઉઠૈત છૈક આ હુનકે આશીર્વાદક ફલસ્વરૂપ યાત્રાક સબટા કષ્ટ કટૈત જાઇત છૈક।

ભગવાન વેઙ્કટેશ્વરક ઇચ્છા આ બંગલોર મે રહૈત કર્નાટક રાજ્ય પર્યટન વિકાસ પ્રાધિકરણક 'શીઘ્ર દર્શન' બલ આકર્ષક વિશેષ પૈકેજ। તિરુપતિ બાલાજીક દર્શન આ સેહો શીઘ્ર ! પૈકેજ મે વર્ણિત સમયાનુસાર

मात्र तीन घंटाक भीतरे दर्शनक आश्वासन। जेना वृद्धियो कोनो वरदान भेटऽ वला होड़क आ कि कोनो जैकपॉटक निश्चित टिकट रहए। एहि बेर हम दूनू प्राणी हुनक दर्शन करवाक लेल तैयार भए गेलहुँ। बंगलोर सँ राति मे बस चलैत छैक, अहलभोरे तिरुपति पहुँचा जाइत छैक, एकटा होटल मे पहिनहि सँ व्यवस्था करल रहैत छैक। डेढ़-दू घंटा मे नित्यक्रिया सँ निवृत्त भऽ करए जलपानो कऽ लैत अछि लोक। तखन पहिने तिरुपतिए मे अवस्थित माता पद्मावती (जे दक्षिण भारत मे भगवान बालाजी अर्थात् विष्णुक प्रिया लक्ष्मीक रूप छथिन) के मन्दिर मे दर्शन करैत अछि। तखन तिरुमल पहाड़ी जा कए भगवान बालाजीक दर्शन करैत घुरि अबैत अछि, रस्ता मे दिनक भोजन सेहो भेटैत छैक आ प्रायः आठ बजे साँझ तक बंगलोर घुरि अबैत अछि। पैकेज मे शीघ्र दर्शनक लेल ३०० टाकाक विशेष टिकट आ गाइडक सुविधा सेहो सम्मिलित छैक।

बर बेस। भगवान बालाजी के हृदय मे राखि पैकेज के दूटा टिकट कटा लेल। ११ अक्टूबर २०२२ के राति मे बंगलोर सँ बस सँ विदा भेलहुँ। बस बूझू दुइए बजे राति मे तिरुपति पहुँचा गेलैक। होटल शहरक बाहर रस्ताक कात मे छलैक। सब गोटे उतरि कए अपन अपन रूमक चाभी लैत गेलहुँ। होटल ठीकेठाक, जकरा निम्न मध्यवर्गक बजट होटल कहल जाइत छैक, कमरा मे साफ सफाइ मे कोनो सिकाइती नहि, उज्जर तौलिया, दूटा साबुनक टिकिया, गरम पानिक गीजर आदि सब किछु, दूटा कुर्सी आ एकटा छोट टेबुल पर्यन्त।

ठीक चारि बजे टूर गाइड सब कमरा मे केवाड़ ठकठका देलखिन। बाहर निकलि देखल जे बेसी लोक पहिनहि सँ जलपान करैत। जलपान शुद्ध दक्षिण भारतीय स्टाइल मे भरि पेट मोटका उत्तपम, इडली, बड़ा, उपमा, पोंगल आदि चटनी साम्भरक संग सब किछु। लोक प्रायः सब किछु खेलक। हमरा लोक

𑒦𑒼𑒩𑒹 𑒡𑒴𑒧𑓂𑒩𑒣𑒰𑒢 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒃𑒔𑓂𑒕𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒦𑒹𑒪, 𑒬𑓂𑒩𑒲𑒧𑒞𑒲𑒖𑒲 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩𑒲 𑒮𑒿 𑒏𑒯𑒪𑒐𑒱𑒢, 𑒔𑒰𑒯 𑒣𑒲𑒥𑒱 𑒮𑒥 𑒑𑒼𑒙𑒹 𑒥𑒮 𑒧𑒹 𑒥𑒻𑒮𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒥𑒮 𑒂𑒑𑒴 𑒠𑒱𑒮𑒱 𑒫𑒱𑒠𑒰 𑒦𑒹𑒪।

𑒯𑒧𑒮𑒥 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒣𑒠𑓂𑒧𑒰𑒫𑒞𑒲 𑒧𑒢𑓂𑒠𑒱𑒩। 𑒅𑒞𑒩𑒱𑒞𑒹 𑒠𑒹𑒐𑒪 𑒟𑒪𑒏𑒧𑒪𑒏 𑒑𑒳𑒔𑓂𑒕𑒰 𑒪𑒹𑒢𑒹 𑒪𑒼𑒏 𑒮𑒥 𑒚𑒰𑒜𑓃, 𑒮𑒥 𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒪𑒖𑒼𑒛𑓃𑒲 𑒣𑒏𑒩𑒥𑒻𑒞, 𑒣𑒔𑒰𑒮 𑒙𑒰𑒏𑒰 𑒠𑒰𑒧। 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒉𑒏𑒙𑒰 𑒧𑒯𑒱𑒪𑒰 𑒏𑒩𑓂𑒣𑒴𑒩𑒏 𑒣𑒻𑒏𑒹𑒙 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒡𑒩𑒰 𑒠𑒹𑒪𑒢𑒱, 𑒋𑒯𑒼 𑒣𑒔𑒰𑒮 𑒙𑒰𑒏𑒰। 𑒁𑒢𑒹𑒩𑒹 𑒮𑒾 𑒙𑒰𑒏𑒰 𑒅𑒛𑓃𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒞𑒏𑒩 𑒥𑒰𑒠 𑒠𑒹𑒐𑒪 𑒮𑒴𑒔𑒢𑒰 𑒖𑒹 𑒣𑒻𑒙 𑒣𑒯𑒱𑒩𑒱 𑒠𑒩𑓂𑒬𑒢 𑒫𑒩𑓂𑒖𑒱𑒞, 𑒬𑒳𑒠𑓂𑒡 𑒦𑒰𑒩𑒞𑒲𑒨 𑒣𑒼𑒬𑒰𑒏 𑒔𑒰𑒯𑒲। 𑒋𑒞𑒯𑒱 𑒠𑒼𑒏𑒰𑒢 𑒧𑒹 𑒫𑒱𑒦𑒱𑒢𑓂𑒢 𑒠𑒰𑒧𑒏 𑒪𑒳𑓀𑒑𑒲 𑒦𑒹𑒙𑒻𑒞, 𑒁𑒜𑓃𑒰𑒃 𑒮𑒾 𑒧𑒹 𑒉𑒏𑒙𑒰 𑒏𑒲𑒢𑒪 𑒂 𑒣𑒻𑒙𑒏 𑒅𑒣𑒩 𑒪𑒣𑒹𑒙𑒱 𑒪𑒹𑒪। 𑒫𑒰𑒯 𑒩𑒹 𑒫𑓂𑒨𑒫𑒯𑒰𑒩 ! 𑒪𑒳𑓀𑒑𑒲 𑒥𑒹𑒔𑒢𑒱𑒯𑒰𑒩𑒏 𑒡𑓀𑒡𑒰 𑒦𑒹𑒪𑒻𑒏 𑒏𑒱 𑒠𑒹𑒫𑒲-𑒠𑒹𑒫𑒞𑒰 𑒏𑒹𑒿 𑒚𑒏𑒢𑒰𑒃 ? 𑒁𑒮𑓂𑒞𑒳, 𑒉𑒯𑒱 𑒮𑒥 𑒧𑒹 𑒞𑒩𑓂𑒏 𑒏𑒹 𑒁𑒫𑒮𑒩 𑒢𑒯𑒱 𑒦𑒹𑒙𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒏। 𑒧𑒢𑓂𑒠𑒱𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒬𑒰𑒮𑒢 𑒏𑒰𑒢𑒴𑒢 𑒥𑒢𑒰 𑒠𑒹𑒪𑒏𑒻𑒏, 𑒧𑒰𑒢𑒉 𑒣𑒛𑓃𑒞। 𑒑𑒰𑒃𑒛 𑒩𑒮𑓂𑒞𑒰 𑒥𑒞𑒰 𑒠𑒹𑒪𑒢𑒱 𑒂 𑒏𑒯𑒪𑒢𑒱 𑒖𑒹 𑒒𑒳𑒩𑒪𑒰 𑒣𑒩 𑒞𑒲𑒢 𑒢𑒧𑓂𑒥𑒩 𑒑𑒹𑒙 𑒮𑒿 𑒥𑒰𑒯𑒩 𑒢𑒱𑒏𑒪𑒱 𑒖𑒰𑒉𑒥 𑒞𑓄 𑒥𑒮 𑒦𑒹𑒙𑒱 𑒖𑒰𑒉𑒞।

𑒧𑒢𑓂𑒠𑒱𑒩 𑒧𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒫𑒹𑒬𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑓒𑓕 𑒙𑒏𑒰𑒏 𑒙𑒱𑒏𑒙 𑒪𑒹𑒥𑒉 𑒣𑒛𑓃𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒏। 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒥𑒰𑒞 𑒢𑒯𑒱, 𑒙𑒱𑒏𑒙 𑒪𑒹𑒪 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒣𑒻𑒒 𑒪𑒰𑒃𑒢 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒻𑒏। 𑒙𑒱𑒏𑒙 𑒪𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒂 𑒪𑒰𑒃𑒢 𑒧𑒹 𑒪𑒰𑒑𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒪𑒰𑒃𑒢 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒣𑒻𑒒 𑒞𑓄 𑒢𑒯𑒱 𑒞𑒻𑒨𑒼 𑒣𑒔𑒰𑒮 𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞𑒱 𑒞𑓄 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒥𑒮 𑒏𑒹 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒉𑒯𑒢 𑒏𑒯𑒱 𑒂𑒩 𑒥𑒮 𑒂𑒉𑒪 𑒕𑒻𑒏। 𑒒𑒳𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒏𑒢𑒹 𑒠𑒴𑒩 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒉𑒏𑒙𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰𑒪𑒨 𑒧𑒹 𑒥𑒻𑒮𑒰 𑒠𑒹𑒪 𑒑𑒹𑒪। 𑒠𑒹𑒐𑒪 𑒏𑒩𑒲𑒥 𑒞𑒲𑒮𑒹𑒏 𑒪𑒼𑒏𑒏 𑒥𑒻𑒮𑒹𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒩𑒹𑒪𑒫𑒹 𑒮𑓂𑒙𑒹𑒮𑒢𑒏 𑒫𑒹𑒙𑒱𑒑 𑒩𑒴𑒧 𑒥𑒪𑒰 𑒏𑒳𑒩𑓂𑒮𑒲 𑒪𑒑𑒰𑒋𑒪। 𑒮𑒰𑒨𑒰𑒩𑒰𑒧𑒧 𑒒𑒹𑒩𑒰 𑒂 𑒉𑒏𑒙𑒰 𑒑𑒹𑒙। 𑒉𑒯𑒢𑒹 𑒕𑒋𑒙𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰𑒪𑒨 𑒁𑒑𑒪-𑒥𑒑𑒪 𑒥𑒢𑒪। 𑒧𑒢𑓂𑒠𑒱𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒬𑒰𑒮𑒢𑒏 𑒮𑒱𑒣𑒰𑒯𑒲 𑒮𑒥 𑒉𑒏𑒙𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰𑒪𑒨𑒏 𑒑𑒹𑒙 𑒐𑒼𑒪𑒱 𑒏𑒩𑒲𑒥 𑒣𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩𑒯-𑒥𑒲𑒮 𑒧𑒱𑒢𑒙 𑒩𑒳𑒏𑒱 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒪𑒰𑒯 𑒞𑒐𑒢 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒏𑒹 𑒑𑒹𑒙 𑒐𑒼𑒪𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒦𑒲𑒛𑓃 𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒢𑓂𑒙𑓂𑒩𑒼𑒪 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒅𑒞𑓂𑒞𑒧 𑒅𑒣𑒰𑒨।

किछु प्रतीक्षाक बाद हमरो सभ के नम्बर आबए लागल, चलैत गेलहुँ, दक्षिण भारतीय मन्दिरक रीतिक अनुसार एतहु दूरे सँ दर्शन करबाक छल, तहिना कएल। हाथक थलकमल एक ठाम सभ जमा करैत छलैक, हमहूँ सभ ओतहि राखि देलियैक, करपूर आगि मे देलियैक आ आपस आबि गेलहुँ। ओतए तीन नम्बर गेट तक अबै मे आ बस तकै मे किछु समय तऽ लागबे कएल मुदा आन लोक सभ तऽ आगो निश्चिन्त छलथि। हमरा सभहिक पहुँचलाक बाद करीब आगो पन्द्रह-बीस मिनट लागलैक बसक सभ यात्री के जमा करबा मे, तखन बस बढ़ि गेल तिरुमल पहाड़ी दिस।

पूरा रस्ता तिरुपति शहर के देखैत जा रहल छलहुँ। मात्र एकटा जिला स्तरक शहरक हिसाबे जगह बहुत विस्तृत आ साफ-सुथरा। बाहिरक कोनो शहर सँ तुलना करब व्यर्थ। बस मे सभ गोटे के गाइड महोदय शीघ्र दर्शन बला टिकट बाँटि देलखिन आ बेर बेर चेता देलखिन जे बिना परिचय पत्र के मन्दिर मे प्रवेश नहि होएत। करीब चालीस मिनट बाद हम सभ पहुँचलहुँ तिरुमल पहाड़ीक नीचा अलिपिरि ट्रान्जिट बस स्टैण्ड, जतए आन्ध्र प्रदेश राज्य परिवहन के अनेक बस लागल छलैक। कहल गेल जे अति जरूरी सामानटा लऽ लैत जाउ, बाकी बंगलोर सँ आएल ओहि बस मे छोड़ि दिवाक अछि, ई बस नीचे मे रहतैक, पहाड़ी पर जेबाक लेल आन्ध्र प्रदेश राज्य परिवहनक स्थानीय बस लेबए पड़त। ई स्थानीय बस यात्रीक लेल ऊपर-नीचा करिते रहैत छैक जा धरि ते ओहि मे कोनो सामान नहि छोड़बाक छैक।

सएह करैत गेलहुँ, शीघ्र दर्शन मे किछुए घंटाक तऽ बात छलैक, लोक करेक सामान लेत ? पानिक बोतल जूते राखि लेल संग मे। स्थानीय बस सँ कने आगू गेलाक बाद एकटा चेकपोस्ट पर उतरए पड़ल, एतए सामानक एक्सरे जाँचक संग सिपाही लोकनि द्वारा लोकक शरीरक जाँच कएल गेलैक जहिना हवाइ अड्डा पर होइत छैक। तकर बाद ओहि काल जाकए ओएह बस मे सवार होइत

गेलहुँ। करीब पौन घंटाक बाद हम सब बालाजी मन्दिर परिसर मे बस अड्डा पहुँचलहुँ। एतए एकटा शॉपिंग कम्प्लेक्स छैक जतए तीर्थयात्री लोकनिक लेल सभ सवारीक सामान राखैत आ किछु जोगाएल सेहो। पैघ गाछ सब के चारू कात सीमेंटक चबूतरा बनाओल। एतहि एकटा दोकान मे हमरा लोकनि जुता-चप्पल आ मोबाइल राखबाक व्यवस्था कएल गेल। एकर बाद आगाँ किछु घंटा धूमि फिरि रहबाक छल। मोबाइल नहि रहला सँ आब फोटो सेहो नहि लऽ सकैत छलहुँ। मन्दिर मे मोबाइल, कैमरा आदि निषिद्ध छैक।

एखन करीब सात बाजल छैक। गाइड महोदय एतबा कहि जे प्रायः एक घंटा प्रतीक्षा करए पड़त हमरा लोकनि कें छोड़ि कतहु निपत्ता भऽ गेलाह। टूर पैकेजक प्रोग्राम मे दर्शन लेल निर्धारित समय छल आठ बजे सँ एगारह बजे धरि। तें लोक कें कोनो हड़बड़ी नहि छैक। लोक सब अपन अपन गप्प लागल छैक आ बैसल गेल। बैसल बैसल किछु तऽ करबाक छैक से अपन अपन रुचिक अनुसार चाह-काफी पीबऽ लागल। हम आब पैंट खोलि अपन नव धोती कें नीक जकाँ पहिरि लेलहुँ। जखन शुद्ध भारतीय ड्रेसक नियम एतबे छैक तखन किएक अनेरे पैंटक ऊपर ओकरा लपेटने रहितहुँ? करीब आठ बजे हमहूँ जलपान कऽ लेलहुँ आ प्रतीक्षा करैत रहलहुँ।

करीब साढ़े आठ बजे गाइड महोदय उपस्थित भेलाह आ हमरा सब कें वराहस्वामी मन्दिर चलबाक लेल कहलनि। मान्यता छैक जे तिरुमल देवस्थान मे भगवान वेङ्कटेश्वरक दर्शन सँ पहिने भगवान वराहस्वामीक दर्शन करबाक चाही तखने वेङ्कटेश्वर भगवानक दर्शन सुफल होइत छैक। रस्ता मे ओ किछु बतबैत जा रहल छलाह मुदा मात्र कन्नड़ भाषा मे। बस मे ओ अंग्रेजी, हिन्दी सब बजैत छलाह मुदा एखन बिसरि गेलाह जे कन्नड़ नहि बुझनिहार तीर्थयात्री सेहो बस मे छलाह। अस्तु, हुनका पाछू पाछू चलैत हम सब लाइन मे लागि गेलहुँ। एतए गाइड अलोप भऽ गेलाह। भीड़ बहुत बेसी तऽ

नहि तैयो मन्दिर तक घुसकै मे आ दर्शन करै मे प्रायः आधा घंटा लागिए गेल। एकरा समयक सदुपयोग सेहो करह ला सकैत छैक।

एतए सँ विदा भेलहुँ मन्दिर परिसरक एकटा रस्ते जाहि मे देखल प्रसाद वला लड्डूक स्टीलक थारी ट्रे के ढेर लागल। प्रायः एक मीटर लम्बा आ आधा मीटर चौड़ा ट्रे कतेक छल से कहब कठिन, तैयो हजार सँ उपर रहल हेतैक। एहि सब दर्शनीय वस्तु के देखैत पहुँचलहुँ ओहि गेट लग जाहि सँ शीघ्र दर्शनक टिकटधारी लोकनि प्रवेश करथि। एतए बेस भीड़। शीघ्र दर्शनक टिकट मात्र हमरे सबहक बसक यात्री लग तऽ नहि ने छलनि, ओहने अनेको पर्यटन कम्पनी कतेको बस भरि कए तीर्थयात्री सबके अनने छल आ सबहक संग ओ तीनसौ टाकाक टिकट छलनि। ओतबे नहि, बहुतो यात्री लोक अपनहि इन्टरनेट सँ शीघ्र दर्शनक टिकट कटौने छलाह सेहो एतहि प्रवेश करबाक हेतु आबि गेल छलाह। लगैत छल आब ओकटिया दर्शन केनिहारे कम संख्या मे हेताह, आ ३०० टाका के शीघ्र दर्शन केनिहार बेसी। आजुक परिस्थिति मे ३०० टाका बहुत बेसी नहिए भेलैक।

स्थिति कें देखैत जकरा जतए गड़र लगैक, पोन नोपि दिअक। कतेक काल लोक ठाढ़ रहत ? आ एखन तऽ असली लाइन बाँकिए छैक। एतए गाइड महोदय बेर बेर ओहि गेट पर सुरक्षा कर्मचारी सबके जिज्ञासा करथि गेट खोलबाक समय हेतु, मुदा ने हुनका कोनो समुचित उत्तर भेटनि आ ने हमरा लोकनि बुझि पाबी जे आगाँ खेल कखन शुरू होएत। टूरक प्रोग्रामक हिसाबें समय बीतल जा रहल छैक, आठ बजे सँ एगारह बजे के बीच दर्शन हेबाक छैक मुदा एतए साढ़े नओ बजे गेटो खोलबाक कोनो सुरसार नहि। आ एहि गेट सँ कतेक दूर पर भगवान छथि से अज्ञात।

𑂃𑂢𑂹𑂞 𑂧𑂵 𑂍𑂩𑂲𑂥 𑂣𑂸𑂢𑂵 𑂠𑂮 𑂥𑂔𑂵 𑂏𑂵𑂗 𑂎𑂳𑂔𑂪𑂶 𑂄 𑂪𑂍𑂍 𑂦𑂲𑂚 𑂋𑂯𑂱 𑂧𑂵 𑂛𑂳𑂍𑂱 𑂏𑂵𑂪। 𑂉𑂎𑂢 𑂞ऽ 𑂪𑂍 𑂮𑂚𑂍𑂵 𑂣𑂩 𑂓𑂪। 𑂔𑂍𑂩𑂰 𑂔𑂞𑂵𑂍 𑂮𑂍𑂹𑂍 𑂓𑂶𑂍 𑂞𑂞𑂵𑂍 𑂞𑂵𑂔𑂲 𑂮𑂀 𑂒𑂪𑂱 𑂩𑂯𑂪 𑂓𑂪। 𑂯𑂧 𑂮𑂥 𑂃𑂣𑂢𑂯𑂱 𑂫𑂵𑂏𑂵 𑂒𑂪𑂶𑂞 𑂩𑂯𑂪𑂯𑂳𑂀। 𑂮𑂚𑂍 𑂣𑂩 𑂪𑂍 𑂥𑂢𑂱 𑂍𑂷𑂢𑂷 𑂣𑂰𑂀𑂞𑂱 𑂥𑂢𑂸𑂢𑂵 𑂔𑂀𑂯𑂱-𑂞𑂀𑂯𑂱 𑂒𑂪𑂱 𑂩𑂯𑂪 𑂓𑂪। 𑂣𑂰𑂀𑂞𑂱 𑂥𑂢𑂥𑂶𑂍 𑂍𑂷𑂢𑂷 𑂅𑂢𑂹𑂞𑂔𑂰𑂧 𑂮𑂵𑂯𑂷 𑂢𑂯𑂱 𑂠𑂵𑂎𑂰 𑂩𑂯𑂪 𑂓𑂶𑂍। 𑂄𑂥 𑂯𑂧𑂩𑂰 𑂮𑂥𑂯𑂍𑂱 𑂥𑂮 𑂍𑂵 𑂨𑂰𑂞𑂹𑂩𑂲 𑂪𑂍𑂢𑂱 𑂓𑂱𑂚𑂱𑂨𑂰 𑂏𑂵𑂪 𑂓𑂪𑂰𑂯। 𑂆 𑂍𑂢𑂵 𑂒𑂱𑂢𑂹𑂞𑂰𑂍 𑂫𑂱𑂭𑂨 𑂓𑂪 𑂧𑂳𑂠𑂰 𑂣𑂒𑂰𑂮 𑂏𑂷𑂗𑂵 𑂍𑂵 𑂮𑂁𑂏 𑂥𑂰𑂢𑂹𑂯𑂱 𑂍𑂉 𑂩𑂰𑂎𑂥 𑂮𑂵𑂯𑂷 𑂮𑂧𑂹𑂦𑂫 𑂢𑂯𑂱 𑂓𑂶𑂍, 𑂞𑂰𑂯𑂴 𑂧𑂵 𑂮𑂥 𑂇𑂧𑂵𑂩𑂍 𑂪𑂍, 𑂢𑂫𑂨𑂳𑂫𑂍, 𑂢𑂫𑂨𑂳𑂫𑂞𑂲 𑂮𑂀 𑂪ऽ 𑂍𑂉 𑂯𑂧𑂩𑂯𑂳 𑂮𑂀 𑂇𑂧𑂵𑂩𑂏𑂩 𑂫𑂹𑂨𑂍𑂹𑂞𑂱 𑂮𑂥 𑂥𑂮 𑂧𑂵 𑂓𑂪𑂰𑂯। 𑂣𑂹𑂩𑂰𑂨𑂂 𑂮𑂰𑂞-𑂄𑂘 𑂧𑂱𑂢𑂗 𑂒𑂪𑂪𑂰𑂍 𑂥𑂰𑂠 𑂉𑂍 𑂘𑂰𑂧 𑂩𑂵𑂪𑂱𑂑𑂹𑂏 𑂥𑂢𑂪 𑂓𑂶𑂍 𑂔𑂰𑂯𑂱 𑂧𑂵 𑂪𑂍 𑂛𑂳𑂍𑂱 𑂩𑂯𑂪 𑂓𑂪। 𑂉𑂞𑂉 𑂍𑂷𑂢𑂷 𑂮𑂳𑂩𑂍𑂹𑂭𑂰 𑂍𑂩𑂹𑂧𑂒𑂰𑂩𑂲 𑂢𑂯𑂱, 𑂦𑂲𑂚 𑂥𑂵𑂮𑂲 𑂄 𑂡𑂍𑂹𑂍𑂰𑂧𑂳𑂍𑂹𑂍𑂲 𑂮𑂵𑂯𑂷। 𑂃𑂣𑂢𑂰 𑂠𑂵𑂬 𑂧𑂵 𑂦𑂲𑂚 𑂧𑂵 𑂃𑂢𑂳𑂬𑂰𑂮𑂢 𑂩𑂰𑂎𑂥 𑂃𑂮𑂧𑂹𑂦𑂫𑂵 𑂯𑂷𑂅𑂞 𑂓𑂶𑂍। 𑂉𑂍 𑂥𑂵𑂩 𑂞ऽ 𑂥𑂳𑂕𑂰𑂉𑂪 𑂔𑂵 𑂦𑂲𑂚𑂍 𑂩𑂵𑂪𑂰 𑂧𑂵 𑂎𑂮𑂱 𑂣𑂚𑂥। 𑂧𑂳𑂠𑂰 𑂍𑂯𑂳𑂢𑂰 𑂠𑂴𑂢𑂴 𑂏𑂷𑂗𑂵 𑂃𑂣𑂢𑂰 𑂍𑂵 𑂮𑂧𑂹𑂯𑂰𑂩𑂪𑂯𑂳𑂀। 𑂞𑂍𑂩 𑂥𑂰𑂠 𑂞ऽ 𑂦𑂲𑂚𑂍 𑂮𑂁𑂏 𑂒𑂪𑂶𑂞 𑂩𑂯𑂪𑂯𑂳𑂀। 𑂏𑂞𑂱 𑂮𑂰𑂡𑂰𑂩𑂝𑂞𑂂, 𑂥𑂴𑂕𑂴 𑂉𑂍𑂰𑂡 𑂍𑂱𑂪𑂷𑂧𑂲𑂗𑂩 𑂣𑂹𑂩𑂞𑂱 𑂐𑂁𑂗𑂰𑂍 𑂯𑂱𑂮𑂰𑂥𑂵। 𑂄𑂏𑂴 𑂥𑂳𑂕𑂰𑂉𑂪 𑂔𑂵 𑂍𑂞𑂵𑂍 𑂘𑂰𑂧 𑂠𑂴 𑂠𑂱𑂮𑂱 𑂮𑂀 𑂃𑂥𑂶𑂞 𑂪𑂰𑂅𑂢 𑂉𑂍 𑂯𑂷𑂅𑂞 𑂓𑂶𑂍। 𑂉𑂯𑂢 𑂮𑂹𑂟𑂪 𑂣𑂩 𑂤𑂵𑂩 𑂡𑂍𑂹𑂍𑂰𑂧𑂳𑂍𑂹𑂍𑂲 𑂦𑂅𑂉 𑂔𑂰𑂅𑂞 𑂓𑂶𑂍। 𑂩𑂮𑂹𑂞𑂰 𑂮𑂥 𑂞𑂞𑂵𑂍 𑂐𑂳𑂧𑂰𑂫𑂠𑂰𑂩 𑂔𑂵 𑂍𑂱𑂓𑂳 𑂥𑂴𑂕𑂥 𑂍𑂘𑂱𑂢 𑂍𑂱 𑂍𑂞𑂵𑂍𑂗𑂰 𑂪𑂰𑂅𑂢 𑂓𑂶𑂍। 𑂎𑂳𑂪𑂰 𑂔𑂏𑂯 𑂧𑂵 𑂮𑂚𑂍𑂍 𑂍𑂰𑂞 𑂨𑂠𑂱 𑂉𑂯𑂢 𑂪𑂰𑂅𑂢 𑂩𑂯𑂱𑂞𑂶𑂍 𑂞ऽ 𑂪𑂍 𑂍𑂯𑂱𑂨𑂷 𑂮𑂍𑂶𑂞 𑂓𑂶𑂍 𑂔𑂵 𑂠𑂴 𑂍𑂱𑂪𑂷𑂧𑂲𑂗𑂩 𑂍𑂱 𑂞𑂲𑂢 𑂍𑂱𑂪𑂷𑂧𑂲𑂗𑂩 𑂪𑂧𑂹𑂥𑂰 𑂪𑂰𑂅𑂢 𑂓𑂶𑂍 𑂧𑂳𑂠𑂰 𑂉𑂞𑂉 𑂄𑂏𑂴 𑂍𑂱 𑂣𑂰𑂓𑂴 𑂃𑂯𑂰𑂀 𑂧𑂰𑂞𑂹𑂩 𑂣𑂒𑂲𑂮-𑂣𑂒𑂰𑂮 𑂤𑂳𑂗 𑂞𑂍 𑂠𑂵𑂎𑂱 𑂮𑂍𑂶𑂞 𑂓𑂪𑂱𑂨𑂶𑂍। 𑂥𑂲𑂒 𑂧𑂵 𑂍𑂞𑂯𑂳 𑂪𑂰𑂅𑂢 𑂩𑂳𑂍𑂱𑂨𑂷 𑂔𑂰𑂅𑂞 𑂓𑂶𑂍। 𑂣𑂹𑂩𑂰𑂨𑂂 𑂄𑂡𑂰 𑂐𑂁𑂗𑂰 𑂒𑂪𑂪𑂰𑂍 𑂥𑂰𑂠 𑂔𑂵 𑂅𑂪𑂰𑂍𑂰 𑂮𑂥 𑂄𑂉𑂪 𑂋𑂯𑂱 𑂧𑂵 𑂔𑂏𑂯 𑂔𑂏𑂯 𑂬𑂸𑂒𑂰𑂪𑂨𑂍 𑂫𑂹𑂨𑂫𑂮𑂹𑂟𑂰 𑂥𑂢𑂪। 𑂪𑂍 𑂪𑂰𑂅𑂢 𑂓𑂷𑂚𑂱 𑂍𑂉 𑂄𑂫𑂬𑂹𑂨𑂍𑂞𑂰 𑂦𑂵𑂪𑂰 𑂣𑂩 𑂬𑂸𑂒𑂰𑂪𑂨 𑂔𑂰 𑂮𑂍𑂶𑂞 𑂓𑂪 𑂧𑂳𑂠𑂰 𑂋𑂞𑂵𑂍 𑂣𑂓𑂳𑂄 𑂔𑂵𑂥𑂵 𑂍𑂩𑂶𑂞।

𑂥𑂲𑂒-𑂥𑂲𑂒 𑂧𑂵 𑂍𑂷𑂧𑂹𑂯𑂩𑂯𑂳 𑂮𑂀 𑂠𑂷𑂮𑂩 𑂪𑂰𑂅𑂢𑂍 𑂧𑂵𑂪 𑂦ऽ 𑂔𑂰𑂅𑂞 𑂓𑂶𑂍 𑂄 𑂤𑂵𑂩 𑂡𑂍𑂹𑂍𑂰𑂧𑂳𑂍𑂹𑂍𑂲 𑂬𑂳𑂩𑂴। 𑂃𑂣𑂢 𑂮𑂁𑂏𑂲 𑂍𑂵 𑂮𑂁𑂏 𑂩𑂰𑂎𑂥 𑂉𑂯𑂢 𑂮𑂧𑂨 𑂧𑂵 𑂍𑂘𑂱𑂢 𑂯𑂷𑂅𑂞

छैक, ध्यान कऽ कए व्यसाहु लोकक छल। गोटेक घंटा चललाक बाद देखल कतहु कतहु इमरजेन्सी गेट बनल। एक व्यक्ति कें बच्चा ततेक ने कानऽ लागल जे हुनका एहि गेटक व्यवहार करहि पड़लनि बहरेबाक छल। करीब बारह बजे हम सब पहुँचलहुँ ओहि स्थान मे जतए कुरसी बला प्रतीक्षालय सब बनल छैक। कुरसीक व्यवस्था ओहिना जेना भोर मे पद्मावती मन्दिर मे देखने छलियैक मुदा अन्तर ई जे हॉल बेस पैघ आ ऊपर सँ नीच तक सीढ़ीक रूपमे गैलरीनुमा बनावट। हॉल मे टीभी पर ऑनलाइन दर्शनक दृश्य चलैत। गर्भगृह मे पुजेगरी लोकनि पूजापाठ मे व्यस्त आ तकरा नजदीक सँ देखबाक अवसर एहि टीभी पर्दा पर छैक। ध्वनि मुदा बन्द कएल छैक।

लोक ततेक ने थाकि गेल छल जे दर्शन मे होइत देरी कें गमबितो कुरसी पर बैसि रहल। जकरा जगह नहि भेटलैक से सीढ़ी सब पर छड़ियाय गेल। कतेको व्यक्ति बिस्कुट, भुजिया आदि निकालि उदरस्थ करए लागल जे आगूक यात्रा लेल ऊर्जा भेटतैक। थाकल रहला सँ किछु कें निन्न सेहो लागि गेलैक। हॉल मे हम सब गैलरीक ऊँचका भाग सँ प्रवेश कएने छलहुँ। नीचा हॉलक बाहर दोसर कात दर्शनार्थी लोकनि मन्दिर दिसि चल जा रहल छलाह। कतेक पैघ लाइन तकर कोनो अनुमान नहि। लोक कें लगै जे आगिलि मिनट मे आ लाइन शेष हेतैक आ हमरा लोकनिक नम्बर आओत मुदा से होइ नहि।

एहि हॉल मे हमरा लोकनि करीब पैंतालीस मिनट तक रुकलहुँ। तकर बाद स्टेर नीचा बला लाइन मे लागि घुसकए लगलहुँ। किछु कालक पश्चात एक ठाम देखल प्रवेशपत्र चेक करबाक काउन्टर सब बनल। एतए लाइन काउन्टरक हिसाबे बँटि गेल। काउन्टर पर काज बहुत मन्थर गतिएँ भऽ रहल छैक। एहि लाइन मे हमरा बसक किछु यात्री लोकनि भेटि गेलाह। आश्वस्त भेलहुँ जे बस हमरा सब कें छोड़ि कए भागत नहि।

करीब एक बजे हम सब काउन्टर पर पहुँचि अपन आधारकार्ड देखाओल। ओकरा टिकट मे देल विवरण सँ मिलाओल गेल आ तखनहि आगू बढ़बाक अनुमति भेटल। एखनहु भगवान बालाजी दूर छलाह। घुसकैत रहलहुँ। आब भीड़ सब छिड़िया गेल आ बसक यात्री सब सँ सम्पर्क टूटि गेल। जतए मन्दिरक मुख्य द्वार छैक ओतए भीड़ रोकि देल गेल। एकेटा गेट, भीतर गेनिहार आ बाहर एनिहार दूनू लेल। कखनो कखनो मे लोक के दूनू दिसि छोड़ल जाइत छैक। कहुना करीब पौने दू बजे हमसब अन्ततः गर्भगृहक सामने पहुँचलहुँ जतए सँ दिव्य मूर्तिक दर्शन होइत छैक। सामने भगवानक मूर्ति देखि लोक के सब मनोकामनाक पूर्ति भऽ जाइत छैक। "ॐ नमो भगवते वासुदेवाय" मंत्रोच्चारक संग माथ झुका हुनका प्रणाम करल। ओतेक काल तक लाइन मे घुसकैत रहबाक फल भेटल।

लोक के एतए कहियो सेकण्ड रुकबाक अनुमति, किन्तु जेना सुनने छलियैक जे लाइन मे घुसकैत लोक क्षणिक दर्शन सुख पबैत अछि आ जाहि तरहक व्यवस्था सँ हम कलकत्ता सब दक्षिणेश्वर कालीक मन्दिर मे पूर्ण परिचित छी, से नहि छैक। लोक लाइन मे नहि छल, एक दोसरा के धक्का सेहो नहि दैत छल, ने कतबो स्वयंसेवक सब बाजथु, लोक एहि कोन ओहि कोन थऽ कए दर्शन सुख प्राप्त करबाक प्रयास करैतहि छल। लोक थेथर, ओतेक कष्ट सँ तऽ लोक जिनगी मे एक बेर एतए पहुँचैत अछि, शीघ्र दर्शनक व्यवस्था रहितहुँ करीब घंटा लाइन मे लागल रहल, तखन कोना कहियो सेकण्ड मे दर्शन सुख छोड़ि दितिए? हमहूँ दूनू गोटे कहुना जतेक सम्भव भेल अपन मोनया समझौने रहलहुँ। ई व्यवस्था परिवर्तन मात्र आजुक लेल हमरे सबहक समय भेल छैक आकि आब एहिना रहैत छैक से कहब कठिन। हम ककरो एकरा मादे किएक पुछबैक? किन्तु ओतेक तऽ निश्चित जे जहिना बहुतो आन तीर्थस्थल मे हमरा संग होइत रहल अछि, एतहु भगवान बालाजीक विशेष कृपा भए गेल आ दर्शन सुख प्रायः आधा मिनट

तक भेटल। फेर मोन मारि कर भगवान वेङ्कटेश्वर के हृदय मे ध्यान धरैत "ॐ नमो भगवते वासुदेवाय" के जापक संग घुरतीक बाट धेलहुँ। मन्दिर प्राङ्गण के घुरती बला रस्ता मे एक ठाम मन्दिरक एकटा कर्मचारी लड्डू प्रसाद बँटैत, ई लड्डू एतुका प्रसिद्ध लड्डू सँ बहुत छोट, बूझू गामक दोकान के पँचटकहिया लड्डूक आकार, किन्तु वस्तु एके। एहि प्रसाद के उदरस्थ कएल।

घुरती मे गेटसँ बहराएब सेहो आसान नहि छल, कारण बुझि गेल छलिऐक गेट एकेटा। घुरती बला लोक लाइन मे सेहो नहि लागए चाहैत छल। ने कोनो बाध्यता छैक आ ने कोनो व्यवस्था। मात्र गेट लग रस्सीक ठाढ़ दूटा स्वयंसेवक पकड़ने। एना मे जे हेबाक छैक से भेबे केलै, जखने रस्सी उठाओल गेलैक लोक बान्हल पानिक धार जकाँ बेहिसाब जोर मारलकै आ एकटा महिला खसि पड़लीह। संयोग जे ओ कात मे छलीह आ हुनक आत्मीय सब तुरत्ते हुनका सम्हारि लेलकनि नहि तऽ पैघ दुर्घटना भऽ सकैत छलैक।

गेटक बाहर निकलि कए गेलहुँ असली लड्डू प्रसाद लेबाक लेल। शीघ्र दर्शनक टिकट मे एकटा लड्डू सामिल छैक। टिकट देखाउ, लड्डू लिअऽ अतिरिक्त लड्डू लेल पचास रुपैयाक हिसाबे अतिरिक्त भुगतान करियौक। काउन्टर कर्मचारी बेस दक्ष, ट्रे सँ लड्डू निकालि लोक के देबा मे न्यूनतम समय लगबैत। एतए लड्डूक ट्रे सब एक के उपर एक गेँटि कए राखल। जखने एकटा ट्रे खाली भेल, उठा कए नीचा राखि देलक, ओकर नीचा बला ट्रे सँ बाँटऽ लागल।

हजारो खाली ट्रे, जाहि मे लड्डू बनैत छल हेतैक, से तऽ देखिए लेने छलिऐक, लड्डू वितरण व्यवस्था देखि ओतुका व्यवस्थापक लोकनिक प्रशंसा कएने बिना कियो नहि रहि सकैत अछि। पैघ हॉल मे करीब तीसटा

काउन्टर बनल। तैयो सब काउन्टर पर दस-पन्द्रह लोकक लाइन लागल छैक। प्रायः एक मिनट लोक कें लगैत छैक अपन कूपन देखेबा मे, अतिरिक्त लड्डूक पैसा देबा मे आ अपन लड्डू उठेबा मे। हमरो सब कें लाइन मे करीब पन्द्रह मिनट लागि गेल मुदा शीघ्र दर्शनक चारि घंटाक तुलना मे ई किछु नहि छैक।

भगवान बालाजीक दर्शन भेल, प्रसाद भेटल, आब ई गौण बात भेल जे एगारह बजेक बदला दू बाजि गेल छैक। एहि दर्शन लेल लोक दिनक दिन एतए लाइन मे ठाढ़ रहैत अछि, सूति पड़ैत अछि। तकर बाद घुरीक वर्णन महत्वहीन भ' जाइत छैक। रहस्य रोमांच सेहो नहि। मात्र अपन जगह, जतए जुत्ता-चप्पल आ मोबाइल राखल छल, तकबाक क्रम मे लोक कें जिज्ञासा करबा मे भाषाक समस्या बुझाएल। जेना विश्वप्रसिद्ध तीर्थस्थल छिऐक तेना सबतरि हिन्दी अंग्रेजी बुझनिहार लोक नहि। बलकि पुलिस सेहो तेलुगु छोड़ि आन भाषा नहि बुझैत। इशारा सँ जगहक वर्णन करैत काज चलाओल। रौद तीक्ष्ण भ' गेल छैक आ एहेन काल खुला पएरे चलैत आब हमर धर्मपत्नीक तरबा मे कष्ट होमए लागल छलनि। हेराइत भोतिआइत कहुना हुनका समहारैत ओहि अड्डा पर पहुँचयि गेलहुँ जतए भोर मे बस सँ उतरि जुत्ता राखने छलिऐक।

एतए पहुँचि पहिने त' दोकान सँ मोबाइल लेल। ओ लेल हाथ मे अबिते आश्वस्त भेलहुँ जे आब बस छुटयो जाएत त' कहुना बंगलोर पहुँचयि जाएब आ सामान त' बंगलोर मे बस डिपो सँ लए जा सकैत छैक। मोन भेल होटल मे भोजन क' ली। बेरो भ' गेल छैक, भूखो लागि गेल छल किन्तु सह्यात्री लोकनि कहलनि जे भोजनक इन्तजाम टूर पैकेज मे छैक आ देर-सबेर भेटबे करत।

अस्तु, मोन मारि कए भोजनक विचार छोड़ि देल। लोक एतए अपना हिसाबे सनेसवाली कीनि लेल।

एकटा फोटोग्राफर कहलनि फोटो खिचबा लै लेल। सत्ते एतए फोटो तऽ भेल नहि। अपना कैमरा सँ मन्दिरक फोटो आ कि कोनो सेल्फी आदि असम्भवे छल। तखन ओ फोटोग्राफर हमरा दूनूक फोटो लेलनि, कम्प्यूटर मे मन्दिरक विस्तृत पृष्ठभूमि के चित्र पर ओकरा फोटोशॉप द्वारा जोड़ैत हमरा एकटा तथाकथित फोटो बना देलनि। एतुका याद सबूत आ पैघ सनेस।

किछु प्रतीक्षाक उपरान्त बस विदा भेल, नीचा गेला पर अपन बंगलोर बला बस मे सवार भेलहुँ। यद्यपि बहुत देरी भऽ गेल छलैक तथापि दिनुका भोजन के व्यवस्था ओहि होटल मे कएल छल जतए भोरबा मे रुकल छलहुँ आ जलपान केने छलहुँ। साढ़े चारि बजे भोजन करैत गेलहुँ। शीघ्र दर्शन बहुत शीघ्र तऽ नहि भेल, तथापि भगवान बालाजीक ध्यानि कें देखैत दू-तीन घंटा देर-सबेर कोनो पैघ बात नहि कहल जैतैक। शीघ्र दर्शन शब्दे ततेक आकर्षक छलैक जे हमरो सन अहदी कें बालाजीक शरण मे पहुँचाइये देलक। कने बेसी समय तक भुखले रहए पड़ल आ कि कने थाकि गेलहुँ, ततबे कष्ट। उपलब्धि आगू ई तुच्छ छल। कहल जाइत छैक जे तीर्थस्थान मे कष्ट भेल पर फल भेटैत छैक।

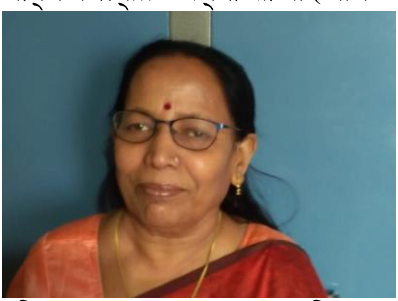
घरमुहाँ बसो घरमुहाँ बरदे जकाँ कने तेज चलबे करैत छैक। करीब दस बजे राति मे बंगलोर पहुँचि गेलहुँ। शीघ्र दर्शन यात्रा समाप्त भेल।

-सम्पर्क- ब्लॉक ८, फ्लैट २बी, डायमन्ड सिटी नॉर्थ, कोलकाता ७०००५५, मोबाइल ९८३१०३७५३२

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨𑒹 ditorial.staff.videha@gmail.com **𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।**

𑓒.𑓗 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒧𑒪𑒰 𑒏𑒩𑓂𑒝- 𑒁𑒑𑓂𑒢𑒱𑒬𑒱𑒐𑒰 (𑒐𑒹𑒣- 𑓑𑓓)

𑒢𑒱𑒩𑓂𑒧𑒪𑒰 𑒏𑒩𑓂𑒝- 𑒁𑒑𑓂𑒢𑒱𑒬𑒱𑒐𑒰 (𑒦𑒰𑒑- 𑓑𑓓)



𑒢𑒱𑒩𑓂𑒧𑒪𑒰 𑒏𑒩𑓂𑒝 □𑓑𑓙𑓖𑓐-), 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒰 - 𑒋𑒧𑓂 𑒋, 𑒢𑒻𑒯𑒩 - 𑒐𑒩𑒰𑒖𑒣𑒳𑒩,𑒠𑒩𑒦𑒓𑓂𑒑𑒰, 𑒮𑒰𑒮𑒳𑒩 - 𑒑𑒼𑒜𑓃𑒱𑒨𑒰𑒩𑒲 (𑒥𑒪𑒯𑒰), 𑒫𑒩𑓂𑒞𑒧𑒰𑒢 𑒢𑒱𑒫𑒰𑒮 - 𑒩𑒰𑒿𑒔𑒲,𑒗𑒰𑒩𑒐𑒝𑓂𑒛, 𑒗𑒰𑒩𑒐𑓀𑒛 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩 𑒧𑒯𑒱𑒪𑒰 𑒋𑒫𑓀 𑒥𑒰𑒪 𑒫𑒱𑒏𑒰𑒮 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒖𑒱𑒏 𑒮𑒳𑒩𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒫𑒱𑒦𑒰𑒑 𑒧𑒹 𑒥𑒰𑒪 𑒫𑒱𑒏𑒰𑒮 𑒣𑒩𑒱𑒨𑒼𑒖𑒢𑒰 𑒣𑒠𑒰𑒡𑒱𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒣𑒠 𑒮𑒿 𑒮𑒹𑒫𑒰𑒢𑒱𑒫𑒵□𑒞 𑒅𑒣𑒩𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒮𑓂𑒫𑒞𑓀𑒞𑓂𑒩 𑒪𑒹𑒐𑒢।
𑒧𑒴𑒪 𑒯𑒱𑒢𑓂𑒠𑒲- 𑒮𑓂𑒫𑒩𑓂𑒑𑒲𑒨 𑒖𑒱𑒞𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒏𑒩𑓂𑒝, 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒁𑒢𑒳𑒫𑒰𑒠- 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒧𑒪𑒰 𑒏𑒩𑓂𑒝
𑒁𑒑𑓂𑒢𑒱𑒬𑒱𑒐𑒰 (𑒦𑒰𑒑 - 𑓑𑓓)

𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫 𑒏𑒟𑒰: 𑒠𑒰𑒢𑒫 𑒩𑒰𑒖 𑒏𑒹𑒬𑒲 𑒮𑓀𑒑 𑒣𑓂𑒩𑒖𑒰𑒣𑒞𑒱 𑒃𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒏𑒹 𑒠𑒹𑒫𑒩𑓂𑒭𑒱 𑒢𑒰𑒩𑒠 𑒩𑒰𑒖𑒰 𑒣𑒳𑒩𑒴𑒩𑒫𑒰𑒏 𑒫𑒲𑒩𑒞𑒰 𑒏𑒹 𑒮𑓀𑒥𑒢𑓂𑒡 𑒧𑒹 𑒖𑒰𑒢𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒠𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒋𑒫𑒧 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒮𑓀𑒑 𑒮𑒯𑒰𑒨𑒞𑒰 𑒧𑓀𑒑𑒫𑒰𑒏 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒠𑒹𑒬 𑒠𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 ।

શ્રાવ શ્રાગૂઃ

દેવર્ષિ ણાનદક શ્રમ□ળ વૃન્દ સન મ્હુન વામી વાયુમંડ૭ મે ગૂંળિ નહ૭ છ૭,૯વમ ૨ન્દ્ન સમેળ ૩પસ્થિતિ સજ દેવગામ,શ્રપ્સના ગામ કન્મ-ગહ્વન કે માન્ગ સંડ પ્નવષ્ટિ હેમયવ૭ શ્રોહ શ્રમ□ળ વન્ષા નૂપી મ્હુન શ્રાવાળ કે પૂન્મ ગંભીનળા સંડ યયાન મગ્ન હેશ્ન શ્રપન મસ્તિષ્ક સમેળ હ□દય મે સ્થાન દડ નહ૭ છ૭હ-

"૯હિ સમય જૂમંડ૭ પન સાળો દ્વીપક શ્રધિપતિ સમ્નાટ પુનૂનવા છથિ ૭ શ્રો પુનૂનવા ળે યંદ્ન વંશક મામ્ર છથિ ૭ હુનક પનાક્નમ કે સમક્ષક કોનો શ્રન્ય ણનેશ્વન ણહિ ઙાઢ જડ પાશ્રો૭૭ હુનક મહની શક્તિ સંડ દાણવનાળ કેશ્ર કે સામણા પૂન્વહિ મે જડ યુક૭ શ્રછિ ૭ શ્રો માન્ગ મે ૩ગ૭ હાન સન શ્રસુન સજ કેં કટેળ ગે૭થિ શ્રા કેશ્ર કે પનાળિત કડ દે૭હ ૭ કેશ્ર હુનકા સડ જયણીળ પાતા૭ ભેક મે ૯હન ણે ણુકાય૭ કિ શ્વેન શ્રો કહિયો પ□થ્વી દસિ તાકહ઼ે કે હિમ્મત ણહિ કે૭ક।

પુનૂનવા સ્વયં સજ ણનેશ્વન કે શાસન સંયા૭ણક શક્તિષા દે૭ ૭ શ્રાવ પ□થ્વી પન કોનો દેશ ૯હન ણહિ છૈક ળેકન પ્નળા ણિન્ધણ હોય ૭ શ્રનાળકતા કે ણામોણિશાણ ણહિ છૈક। સજ દિશા મે શાંતિ કે સામ્નાળ્ય સ્થાપિત શ્રછિ! શ્રમણ ચૈણ કે વંશી વળૈત શ્રછિ ૭ ૬ સવ પુનૂનવાક દૂનદ□ષ્ટિ શ્રા સમહ્દાનો સડ જે૭ શ્રછિ ૭ શ્રો ૯ક સય શ્રાઙ શ્રશ્વમેધ યળ્ઞ કે૭થિ ૭ કનેકો શ્રાન શ્રાન શ્રાણ યળ્ઞ શ્રો કે૭થિ ૭ કવિ઼ા શ્રો યાહિતિથિ તિડ સ્વન્ગાક સત્તા પન્યંત શ્રપન વાહુવ૭ સડ ક્ષામ માત્ન મે પ૭ટિ દિતિથ,મુદા શ્રો જૂમંડ૭ કે શાસન સંડ સન્તુષ્ટ છથિ ૭ પૂન્વ ળન્મક તપસ્યા કે કાનામ શ્રો તડ સ્વયં મહા પ્નતાપી છ૭હ,તદાપિ શ્રો ૯હિ ળન્મ મે શ્રપન ઘોન તપસ્યા સંડ જગવાન વિષ્ણુ કે પ્નસન્ન કડ ૭૭ણિ ૭ ૯કન કાનામ હુનકા ૯હન શ્રપનિમિત શૌન્ય શ્રા વાહુવ૭ પ્નાપ્ત જે૭ણિ કિ શ્રાહાં સન સહસ્ત્નો કે શ્રસગન દમે શ્રો જૂ-ભ્રૂઙિત કડ સકૈત છથિ ૭ શ્રો શ્રત્યન્ત નૂપવાન છથિ ૭ હુનક સૌદન્ય કે સમક્ષ સ્વયં કામદેવ શ્રપના કે હીન વૂહિ ૭ળળિત નહૈત છથિ ૭ હુનક સમતુ૭્ય સૌદન્યમયી ણાની પ□થ્વી પન ણહિ જેટ૭હ,ળાહિ કાનામ શ્રો ૯પ્પન ધર્ન શ્રવિવાહિત નહિ વન્હ્મયાની વન૭ છથૈ ૭ વન્મ્હ્યન્યક પ્નતાપ હુનક તેળ સંડ સંયુક્ત જડ

હુનકા ત્1ીઉોક મે અદ્વિતીય વ1ા દેઉક ઉ 1ાક્ષસ-ગામ પ1્યંત પાતાઉ-ઉોક
મે હુનક યશો ગાન ક1ૈત અછિ ઉ
સુનઉહું કછિુએ દિનિ પૂ1્વ દાનવ1ાળ કેશિ અપન પુત્1ી સ્વ1ામમેધ્યાક વિવાહક
પ્1સ્તાવ ઉs સ્વયં હુનકા સમક્ષ ગેઉ છઉ પ1ંચ પુ1ૂ1વા ઓહિ પ્1સ્તાવ કે
અસ્વીક□ત કs દેઉથિ ઉ દાનવ1ાળ કેશિ ઓહિ પ્1સ્તાવ કે દ્વા1ા પુ1ૂ1વા
કે અપન પક્ષ મે ક1બા હેતુ પ્1યત્નશીઉ છઉ ,પ1ંચ પુ1ૂ1વા ઓક1 પ્1સ્તાવ
કે અસ્વીક□ત કs ઓ સંભાવના સમાપ્ત કેઉન્હિ ઉ કનિકિ સોચૂ દેવેંદ્1 !
કહી ળે 1ાળા પુ1ૂ1વા ઓક1 પ્1સ્તાવ સ્વીક□ત કs નેને 1હિતથિ તખ્ખન
સ્થિતિ કતેક ભયંક1 હોઈત ? ઈ વાત તs અહૂં કે બુઝાઈત હોયત કિ પુ1ૂ1વા
યદિ ઓક1 સહયોગી ભs ળઈતથિ,તખ્ખનિ ત્1િભુવનક અધિપતિ બનબા મે હુનકા
કનિયો વિઉમ્બ હોયતનિ ઉ પ1ંચ હુનકા સ્વ1્ગક અધિપતિ બનવાક ઉાઉસા નહિ
છનિ। ઓ હુનક સૌમ્ય ચ1િત્1 હુનકા દાનવ1ાળક કોનહુ પ્1કા1ક સહયોગ
ક1વા સંs દૂ1 1ખ્ખઉક। 1ાળા પુ1ૂ1વા કે શા1ી1િક સુંદ1તા,હુનક ગુણ ઓ
પ1ાક્1મક વ1્ણન કેનાઈ હમ1 સામ1્થ્ય સંs વાહ1 કે વાત અછિ। તાહિ
સંs એતવહિ મે આહાઁ સંતોષ ક1ૂ ઉ હૅs હમ1 અનુ1ોધ નહિ આળ્ગા અછિ કિ
આહાઁ પુ1ૂ1વા સs સહાયતાક યાચના ક1ૂ, એહિ સંs આહાઁક પ્1જા પુનઃ આહાઁ
કે પ્1ાપ્ત હોયત ઉ દાનવ 1ાળ કેશિ કે હસ્તક્ષેપ સ્વ1્ગ ઉોક સંs સમાપ્ત
ભs ળાયત। "
ઇન્દ્1 દેવ1્ષિ ના1દક વાત સંs અત્યંત પ્1સન્ન ભs ગેઉાહ। હુનક ચિંતા
મેટિ ગેઉનિ ઉ ઓ ઉચિત અવસ1 પ1 ના1દ કે મા1્ગદ1્શન સંs સંતોષ વ્યક્ત
કયઉથિ। ઋષિવ1 ના1દ કે અભ્ય1્થના ક1ૈત ઓ કહઉથિ -
" અપનેક આળ્ગા શિ1ોધા1્ય અછિ દેવ1્ષિ ઉ હમ એખ્ખનહિ સુસેન કે દ્વા1ા
હુનકા દાનવ કે સઁગ દેવતાક યુદ્ધ મે હુનક સહાયતાક યાચના હેતુ આમંત્1ણ
પત્1 પઠૈત છી। "
"હૅs એહિ કા1્ય મે શીઘ્1તા ક1ૂ,આબ સ્વ1્ગક પ્1તિષ્ઠા અહિંક હાથ મે
અછિ" - ના1દ વાળિ ઉઠઉાહ ઉ
ના1દ મુનિ કે મા1્ગદ1્શન મે ઇન્દ્1 એક પત્1 પુ1ૂ1વા કે નામ ઉખ્ખિઉથિ ઉ
તત્પશ્ચાત સુસેન કે હાથ મે ઓ પત્1 સૌપિ હુનકા અનેકો પ્1કા1 સંs સમહા-

વુહ્રાકડ પ□થ્વી પ૧ પઠૌઉથિ ઉ એક૧ વાદ શ્રો દેવ઼૧્ષિ ણા૧દ સંડ સ્વ઼૧્ગ
ઊક મે વ઼સ્નિ૧ામ ક૧વ઼ા હેતુ શ્રાગ્૧હ ક૧ડ ઊગઊહ ઉ પંચ હુણક શ્રાગ્૧હ કે
દેવ઼૧્ષિ ણા૧દ શ્રસ્વ઼ીક□ત કડ દેઉથિ। કી કનિકો શ્રાગ્૧હ પ૧ ણદીક
પ્૧વ઼ાહ ડહ૧ઉ શ્રછિ ? યઉતિ પવ઼ણ કનિકો સ્યૃછા પ૧ થમ્હઉ શ્રછિ ?
સત્પુ૧ુષક કા૧્ય઼ શ્રછિ સંસા૧ કે કઉ્યાણ હેતુ વ઼ચિ૧ણ કૈત ૧હણાઇ ઉ
સંહિતાક કથણ ૩ચિત શ્રછિ - 'યૈવેતિ-યૈવેતિ' ઉ
સ્ણ્દ્૧ કે પ્૧સણ્ણ દેખિ સભ દેવ઼તાક મુખ પ૧ પ્૧સણ્ણતાક ભેખા પસ૧િ
ગેઉ। હુણક૧ સવહક મુખ દેખિ વુહ્રાસ્ત છઉ કહિ઼ા શ્રો સભ એખણહિ દાણવ઼ ગણ
કે પ૧ાસ્ત કડ શ્રાવિ ગેઉ હોથિ ઉ શ્રપણ સ્વ઼ામીક પ્૧સણ્ણતા મે પ્૧સણ્ણ
ભેણાઇ,દુઃખ મે દુઃખી ૧હણાઇ એવં પ્૧ત્યેક શ્રવ઼સ૧ પ૧ હુણક૧ સાથ દેણાઇ ! યેહ
તડ શ્રાશ્૧િતક પ૧મ ય૧્મ થિક !
ણા૧દ મુણિ શ્રાપસ ળયવ઼ા હેતુ ૩દ્યત ભડ ગેઊહ ઉ હુણકા વ઼િદા ક૧વ઼ા હેતુ કિછુ
દૂ૧ તક સ્ણ્દ્૧ હુણકા સંગે ગેઊહ, તદુપ૧ાંત હુણકા દંડવ઼ત પ્૧ણામ કૈત હુણકા
વ઼િદા કેઉથિ ઉ હુણક૧ પ્૧સ્થાણ કેઉ ૩પ૧ાંત સ્ણ્દ્૧ શ્રપણ પ્૧ાસાદ કે દિશા
મે ગમણ કેઉથિ ઉ
શ્રપણ કક્ષ મે પહુઁચિ સ્ણ્દ્૧ ય૧્મપત્ણી શચી કે સઁગ પ્૧ેમ પૂ૧્ણ સંઉાપ મે
મગ્ણ ભડ શ્રપણ ળોક દિણક ચિતાક સમાધાણ ક૧ડ ઊગઊહ ઉ શ્રાઇ વહુત
દિણક વાદ ણશ્ચિંત ભડ શ્રપણ પત્ણી સંડ પ્૧ેમાઉાપ કડ ૧હઉ છઊહ સ્ણ્દ્૧
ઉ વહુત દિણ સંડ પત્ણી શચી કે હુણક દ૧્શણ ણહિ ભેઉ છઉણિ। શ્રાઇ હડાત્
હુણકા શ્રપણ ળોક ણકિટ દેખિ શચી પ્૧સણ્ણતા સંડ ૩ત્ફુઉ્ઉ ભેઉ છઊહ ઉ
ચિતા એકટા એહણ માણસિક વ્યાધિ થિક ળે ૩પહા૧ સ્વ઼૧ૂપ શા૧ી૧િક દુ૧્વઉતા
સહળે પ્૧દાણ કૈત શ્રછિ। માણસિક શાંતિ ણષ્ટ કડ દૈત શ્રછિ,ક્૧ોધ કે
ળણ્મદાતા શ્રછિ,વુદ્ધિક હ૧ણ કડ ઊત શ્રછિ, ળીવ઼ણ-ચ૧્યા વદઉિ
દૈતશ્રછિ,શ્રા ૩ણ્ણતિક મા૧્ગ શ્રવ઼૧ુદ્ધ કડ શ્રક૧્મણ્યતાક શ્રોષધિ પિયિવૈત
શ્રછિઉ
"પુ૧ૂ૧વ઼ા" ણામ દેવ઼તા_ગણકે ઉઉ દધીચિક શ્રસ્થિ કે સદ□ષ ૧ાક્ષસગણ
સંડ પ૧િત્૧ાણ હેતુ સમ્પૂ૧્ણ શ્રવ઼ંઉવણ વણિ ગેઉ ઉ હુણક શૌ૧્ય઼ ગાથા સુણિ
દેવ઼તાગણક હ□દય઼ મે ઇ૧્ષ્યાગ્ણિ પ્૧ળ્વ઼ઉિત ભેઉ છઉણિ। મુદા શ્રોહિ હ□દય઼

કે એક કોન મે શ્રાશા કે દીપ પ્નાળ્વ઼ઊાિ છઊનિ। નાક્ષસગામ સંડ પનાિ્નામ પ્નાપ્ન કનવ઼ા હેતુ ઊ
ગંધન્વ઼ એવં કન્નિન પુનૂનવ઼ાક ગુમગાન શ્રપન મધુન સ્વ઼ન ઊહની મે કનડ ઊગ઼ઊહ ઊ હુનક મધુન ગીન મે સઁગ દેમય શ્રપ્સનાગમ શ્રાવિ ગેઊહ। ઘ□નાચી,નિઊન્નિમા,નંભા, મેનકા, ક□નસ્થઊ,પુમળીકસ્થઊ પ્નમ્ઊચા,શ્રનુમ્ઊચા,પૂન્વ઼ચિનિ,સેનળિનિ, ચિન્નઊખા શ્રન્યાન્ય઼ શ્રનેકો શ્રપ્સનાગમ કે મુખ પન પુનૂનવ઼ાક ણામ છઊ ઊ કછુિ ઇન્દ્ન કે સઁગ નડ કોઈકોઈ વ઼ષિમુ કે સઁગ પુનૂનવ઼ાક નુઊના કડ નહઊ છઊહ ઊ
પનંચ હુનકા સવહક મધ્ય઼ એક ગોટ એહેન શ્રપ્સના છઊહ,ળે શ્રપન હ□દય઼ સ્થઊ કે શ્રપન દુનૂ હાથ સંડ દાવને સવકે સ્નવ્ય દ□ષ્ટિ સંડ નિખિ નહઊ છઊહ ઊ હુનક મુખ પન નહિ નડ પુનૂનવ઼ાક ણામ છઊ શ્રા ને કોનો પ્નસન્નિા ઊ શ્રો કછુિ-કછુિ હેનાય઼ઊ વસિનાય઼ઊ સન શ્રપના કે શ્રનુભવ઼ કડ નહઊ છઊહ ઊ વુહાઈન છઊ કવિા પુનૂનવ઼ાક ગુમગાન સંડ હુનકા હ□દય઼ મે કાઁટ ચુભચુભ કનડ ઊગઊ હોઇન્હ,ઈ કાઁટક ઊહનિ સન દનદ પુનૂનવ઼ાક ણામ ઊડ વ઼દ્િધુન ઊહનિ સિમ પૂના શનીન મે દૌગન હોઇ। શ્રો સવ કછુિ દેખિ નહઊ છઊહ,સુનિ નહઊ છઊહ,પનંચ શવ઼ સન નશ્ચિય઼ઊ ભેઊ છઊહ ઊ
હુનક એહિ દિશા પન સખી ચિન્નઊખા શ્રનેકો વેન શ્રાઁખિક સંકેન કેઊથિ, હાથ સંડ કોચિ સભા મે શ્રનવ઼ાક પ્નચાસ કેઊથિ,મુદા શ્રો શ્રપન હોશ હવ઼ાસ વસિનાય઼ઊ કછુિ કહવ઼ાક સ્થિનિ મે નહિ છઊહ ઊ કોનો શ્રાનઊક મે શ્રો વ઼ચિનામ કડ નહઊ છઊહ। શ્રો છઊહ ઉન્વ઼શી - સ્વ઼ન્ગક સન્વ઼ાધિક સુંદની શ્રપ્સના ! સન્વ઼શ્નેષ્ઠ શ્રપ્સના ! પ્નેમકીટ હુનકા ઘાય઼ઊ કડ ગેઊ છઊ ઊ ભઊ ઈ વાન ચિન્નઊખા કોના વુહિ સિકનિથિ ? પુનૂનવ઼ાક શ્રદ્વ઼ીિય઼ વ઼્યક્નિન્વ઼ ઉન્વ઼શીક હ□દય઼ પન શ્રપન શ્રધિકાન કડ નેને છઊ ઊ શ્રો શૌન્ય઼ શ્રા સૌદન્ય઼ કે મામકિંચન સહ્યોગ સંડ નિ્મિનિ શ્રોહિ શ્રાક□નિ કે એક વેન શ્રપન દ□ષ્ટિ સંડ પ્નકટ નૂપે દેખિ શ્રપન નેન્ન કે ધન્ય઼ કનડ ચાહેિ છઊહઊ ઉન્વ઼શી કે પ્નનીન હોઇન છઊ ળેના હુનક શનીન સંડ હ્નદય઼ નિકઊ ધિનાનઊ પન પુનૂનવ઼ા કે નિકટ ચઊ ગેઊ હોય઼ ઊ માન્ન નશ્ચિય઼ઊ નિ્ળીવ઼ શનીન સ્વ઼ન્ગ ઊક મે નહિ ગેઊ હોયો ઊ

𑒏𑓂𑒩𑒧𑒬𑓁

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨 editorial@videha.com **𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।**

𑓒𑓘. 𑒖𑒑𑒠𑒲𑒬 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒰𑒠 𑒧𑒛𑓂𑒛𑒪- 𑒏𑒢𑒱𑒨𑒰𑓀- 𑒧𑒢𑒱𑒨𑒰𑓀 𑒣𑒴𑓀𑒖𑒲



ડગદીશ પ્રસાદ મણ્ડલ
કનિયાઁ-મનિયાઁ પૂઁડી

વીતલ દૂ સાલક દશા ડહિના સભ ગામ-ગામકેઁ ભેલ તહિના મનમોહનકેઁ સેહો ભેલ। મનમોહનો તઁ અહી મથિલિક એક અંશ રૂપક ચરાતી અછિ કિને।
ડે મનમોહન દસ સાલ પહિને, અન્ન-તીમન-તરકારી, આમ-કેરા રત્યાદિ સ્થિલ-અસ્થિરી ગામક પૂર્તિ કરૈત મનમોહનવલા વાહરાયિો આમદની કરૈ છલા આોર મનમોહન ગામક દશા દેખૈ-ડોકર નહિ અછિ। એઠામ દુનૂ પ્રશ્ન અછિ। એક દિસ ગામમે વાન્હ-સડ઼ક-વડિલીક સુવિધા ભેલ અછિ તઁ દોસર દિસ ગામક ખેતીમે વિલિની સેહો લાગલ અછિ। વાઢ઼િ વચાઉ લે એક દિસ કોસી-કમલા છહર-વાન્હક ગાંઠી ભેલ તઁ દોસર દિસ ગામમે સડ઼ક-વાન્હ ભેને પાનિ ડમાવ નહિ ભડ રહલ અછિ સેહો નહિયેઁ કહલ ડા સકૈએ, સેહો ભેવે કરએ અછિ। ડલિક એહેન સ્થિતિ વનિ ગેલ અછિ ડે સરકારી કાર્યાલય તકક કાગડ-પત્તર પાનિમે નષ્ટ હોરએ। ખાએર ડે અછિ, હરિ વીલ, હરિ વીલ હો રામા।
ડહિના મનમોહન ગામ-સમાડક ગતિ ભેલૈન તહિના અપનો ગતિ નર ભેલ સે કેના નર કહ્વ। ગામક સભ ડનિતિ છૈથ ડે માત્ર વીઘા ભરિ ડમીન અછિ। ડર વલ કછુ દિન પૂર્વ તક પરિવાર ગઢ઼ છલ। ગામમે વાન્હ-સડ઼ક તઁ ભેલ મુદા ઉપડાઉ ભૂમિ ઉપડૈ-ડોકર નહિ વનિ સકલ। અપના આોર શક્તિ નહિ ડે ભરપાર કડ સકવ। અસાય કાળ ગામ-ગામમે પસરિયે ગેલ અછિ। સન્નિ

𑒧𑒰𑒙𑒱𑒏 𑒆𑒣𑒩𑒹𑒏 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒅𑒣𑒖𑒹𑒏 𑒙𑒰 𑒢𑒯𑒱, 𑒧𑒰𑒙𑒱𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒧𑒞𑒴𑒪 𑒥𑒢𑒰𑒋𑒥 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒖𑒩𑒴𑒩𑒲 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪। 𑒂𑒡𑒳𑒢𑒱𑒏 𑒧𑒬𑒲𑒢𑒲 𑒨𑒳𑒑𑒧𑒹 𑒋𑒯𑒹𑒢 𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞𑒱 𑒥𑒢𑒪 𑒩𑒯𑒋, 𑒍 𑒠𑒳𑒩𑓂𑒦𑒰𑒑𑓂𑒨 𑒢𑒯𑒱 𑒞𑒿 𑒮𑒾𑒦𑒰𑒑𑓂𑒨 𑒏𑒹𑒢𑒰 𑒏𑒯𑒪 𑒖𑒰𑒋𑒞। 𑒖𑒐𑒢 𑒧𑒢𑒳𑒏𑓂𑒐 𑒥𑒢𑒱 𑒧𑒢𑒳𑒏𑓂𑒐 𑒖𑒢𑓂𑒧 𑒪𑓄 𑒕𑒻𑒟 𑒞𑒐𑒢 𑒖𑒿 𑒣𑒰𑒿𑒔 𑒑𑒼𑒙𑒹𑒏 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩 𑒮𑒧𑒴𑒯𑒰𑒢𑒱 𑒑𑒰𑒧-𑒮𑒧𑒰𑒖 𑒪 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒢𑒹 𑒏𑒩𑒻𑒟, 𑒤𑒹𑒩 𑒞𑒿 𑒠𑒳𑒩𑓂𑒦𑒰𑒑𑓂𑒨𑒹 𑒏𑒯𑒪 𑒖𑒰𑒋𑒞। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒧𑒢𑒹-𑒧𑒢 𑒥𑒳𑒗𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒲 𑒯𑒳𑒁𑒋। 𑒂𑒢𑒹 𑒑𑒰𑒧 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒧𑒢𑒧𑒼𑒯𑒢𑒼 𑒔𑒰𑒪𑒴 𑒠𑒮𑒱𑒮𑒿 𑒒𑒹𑒩𑒰 𑒑𑒹𑒪। 𑒥𑒔𑓂𑒔𑒰𑒏 𑒣𑒜𑓃𑒱𑒨𑒰𑒃𑒨𑒼 𑒥𑒢𑓂𑒢 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪, 𑒁𑒮𑓂𑒣𑒞𑒰𑒪 𑒥𑒢𑓂𑒢 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪। 𑒏𑒰𑒖-𑒅𑒠𑓂𑒨𑒧 𑒥𑒢𑓂𑒢 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪। 𑒋𑒯𑒹𑒢 𑒋𑒏 𑒑𑒰𑒧𑒧𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒑𑒰𑒧-𑒑𑒰𑒧𑒧𑒹 𑒦𑒹𑒪। 𑒢𑒫-𑒔𑒫 𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒥𑓀𑒑𑒰𑒪𑒧𑒹 𑒢𑒼𑒏𑒩𑒲 𑒣𑒏𑒛𑓃𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒹𑒪𑒾𑓀। 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒙𑓂𑒩𑒰𑒢𑓂𑒮𑒣𑒼𑒩𑓂𑒙𑒏 𑒏𑒰𑒖, 𑒏𑒰𑒖𑒹 𑒐𑒞𑒧 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪𑒋। 𑒑𑒰𑒧 𑒂𑒥𑒱 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒠𑒼𑒏𑒰𑒢 𑒬𑒳𑒩𑒴 𑒏𑒹𑒪𑒾𑓀। 𑒏𑒯𑒥 𑒖𑒹 𑒠𑒼𑒏𑒰𑒢𑒧𑒹 𑒏𑒧𑒰𑒃 𑒏𑒹𑒯𑒹𑒢 𑒯𑒼𑒃𑒋? 𑒞𑒹𑒏𑒩 𑒖𑒥𑒰𑒥 𑒞𑒿 𑒣𑓂𑒩𑒬𑓂𑒢 𑒢𑒹 𑒠𑒹𑒥 𑒖𑒹 𑒛𑒰𑒜𑓃 𑒏𑒹𑒢𑒰 𑒕𑒲। 𑒞𑒲𑒢 𑒮𑒰𑒪𑒏 𑒖𑒹 𑒮𑒧𑒨 𑒩𑒯𑒪 𑒍 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒮𑒱𑒐𑒹𑒥𑒼 𑒏𑒩𑒥𑒹 𑒏𑒹𑒪𑒏। 𑒌𑒚𑒰𑒧 𑒮𑒱𑒐𑒱𑒋𑒥𑒏 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒥𑒠𑒪𑒰 𑒪𑒹𑒥 𑒢𑒯𑒱, 𑒦𑒴𑒧𑒱𑒮𑒿 𑒁𑒕𑒱। 𑒥𑒜𑓃𑒱𑒨𑒰 𑒋𑒢𑒹 𑒥𑒜𑓃𑒱𑒨𑒰-𑒏𑒰𑒩𑒼𑒥𑒰𑒩𑒏 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒦𑒴𑒧𑒱 𑒮𑒲𑒐 𑒪𑒹𑒪𑒾𑓀। 𑒧𑒼𑒥𑒰𑒃𑒪𑒼 𑒮𑒹 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒮𑒲𑒐 𑒪𑒹𑒪𑒾𑓀, 𑒑𑒰𑒛𑓃𑒲-𑒮𑒫𑒰𑒩𑒲 𑒥𑒜𑓃𑒢𑒹 𑒟𑒼𑒛𑓃-𑒟𑒰𑒛𑓃 𑒍𑒏𑒩 𑒧𑒩𑒧𑓂𑒧𑒞 𑒏𑒩𑒥 𑒮𑒲𑒐 𑒪𑒹𑒪𑒾𑓀। 𑒋𑒯𑒹𑒢 𑒥𑒨𑒰𑒩 𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒮𑒿 𑒖𑒰𑒢𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒹𑒪𑒾𑓀 𑒖𑒹 𑒣𑒴𑒖𑒲 𑒬𑓂𑒩𑒧 𑒕𑒲 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒱 𑒡𑒢। 𑒍𑒢𑒰, 𑒋𑒯𑒹𑒢 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒹𑒬 𑒞𑒲𑒢-𑒔𑒰𑒩𑒱 𑒮𑒰𑒪𑒏 𑒥𑒲𑒔 𑒥𑒢𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒱 𑒞𑒹𑒩𑒮𑒿 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒹 𑒕𑒪।

𑒁𑒣𑒢𑒼 𑒧𑒰𑒢𑒻𑒞 𑒕𑒲 𑒖𑒹 𑒁𑒐𑒢 𑒞𑒏 𑒖𑒹 𑒑𑒰𑒧 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒍 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒏𑒚𑒱𑒢 𑒠𑒾𑒛𑓃𑒏 𑒥𑒲𑒔 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒌𑒚𑒰𑒧 𑒧𑒳𑒛𑓃𑒏𑒳𑒙𑓂𑒙𑒲𑒧𑒹 𑒋𑒞𑒥𑒹 𑒏𑒯𑒥 𑒖𑒹 𑒯𑒖𑒰𑒩𑒼 𑒥𑒩𑓂𑒐𑒮𑒿 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒮𑒦𑒏 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫𑒖𑒏𑒹𑒿 𑒑𑒳𑒪𑒰𑒧𑒲𑒏 𑒖𑒱𑒢𑓂𑒠𑒑𑒲 𑒑𑒳𑒖𑒰𑒩𑒻𑒢। 𑒑𑒳𑒪𑒰𑒧𑒲𑒏 𑒖𑒱𑒢𑓂𑒠𑒑𑒲 𑒏𑒹𑒯𑒹𑒢 𑒯𑒼𑒃 𑒕𑒻, 𑒞𑒹𑒏𑒩 𑒣𑒩𑓂𑒨𑒰𑒣𑓂𑒞 𑒁𑒦𑓂𑒨𑒰𑒮 𑒖𑒩𑒴𑒩𑒲 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱।

𑒑𑒰𑒧 𑒂𑒥𑒱, 𑒁𑒮𑒑𑒩𑒹𑒧𑒹 𑒏𑒰𑒖𑒏 𑒣𑒟𑒰𑒩 𑒪𑒑𑒰 𑒠𑒹𑒪𑒾𑓀। 𑒖𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒔𑒻𑒞-𑒥𑒻𑒬𑒰𑒐𑒏 𑒩𑒾𑒠𑒧𑒹 𑒑𑒳𑒢𑒳 𑒑□𑒯𑒱𑒧𑒲 𑒁𑒣𑒢 𑒒𑒩𑒏 𑒁𑒢𑓂𑒢𑒏𑒹𑒿 𑒩𑒾𑒠𑒧𑒹 𑒣𑒮𑒰𑒩𑒱 𑒮𑒳𑒐𑒥𑒻 𑒕𑒻𑒟। 𑒏𑒱𑒮𑒰𑒢𑒲 𑒖𑒱𑒢𑓂𑒠𑒑𑒲 𑒕𑒲, 𑒢𑒼𑒏𑒩𑒱𑒯𑒰𑒩𑒰𑒏 𑒢𑒯𑒱, 𑒞𑒿𑒋 𑒧𑒢 𑒣𑓂𑒩𑒬𑓂𑒢 𑒢𑒹 𑒏𑒩𑒪𑒏 𑒖𑒹 𑒑𑒰𑒧 𑒞𑒿 𑒑𑒰𑒧𑒹 𑒕𑒲, 𑒞𑒻𑒚𑒰𑒧 𑒖𑒿 𑒁𑒮𑒑𑒩𑒼 𑒍𑒞𑒹 𑒮𑒧𑒮𑓂𑒨𑒰𑒏 𑒢𑒱𑒧𑒰𑒩𑒝𑒰𑒏 𑒦𑒰𑒩 𑒅𑒚𑒰 𑒪𑒹𑒥, 𑒥𑒰𑒪-𑒥𑒼𑒔𑒏 𑒣𑒳𑒛𑓃𑒐𑒹𑒪 𑒢𑒃 𑒢𑒹 𑒕𑒲। 𑒞𑒐𑒢 𑒞𑒿 𑒤𑒹𑒩 𑒯𑒹𑒥𑒹 𑒏𑒩𑒞 𑒖𑒹 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒌𑒑𑒪𑒰 𑒧𑒳𑒯𑒩𑒰 𑒥𑒢𑒱 𑒂𑒑𑒴-𑒂𑒑𑒴 𑒔𑒪𑒋 𑒪𑒑𑒞।

𑒁𑒐𑒢 𑒞𑒏 𑒑𑒰𑒧 𑒏𑒱𑒮𑒰𑒢𑒏 𑒑𑒰𑒧 𑒏𑒯𑒥𑒻𑒞 𑒂𑒋𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒖𑒃𑒮𑒿 𑒏𑒱𑒮𑒰𑒢 𑒬𑒥𑓂𑒠 𑒋𑒞𑒹 𑒞𑒿 𑒮𑒧𑓂𑒧𑒰𑒢𑒱𑒞 𑒖𑒩𑒴𑒩𑒲 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒖𑒑𑒞, 𑒖𑒢𑒏 𑒖𑒢𑒢𑒲𑒮𑒿 𑒪𑓄 𑒏𑓄 𑒂𑒡𑒳𑒢𑒱𑒏

परिवेशक जे ऊँच कोटिक श्रेणी छैथ ओहो अपनाकेँ किसान परिवारसँ जुड़ल सम्मान अपन अध्ययनमे करैत छैथ।

आबे गाम जकाँ मनमोहनोक उपजाक मारे उत्पादनक प्रयास प्रारम्भिसँ ऊपर जमीन मरि गेल अछि। एखन भूगोलक चोखामे नहि पड़ब जे भूभागक मारे बेल उपजसँ मानल भूमि। अपना एखन मारे मिथिलांचलमे कूल भूमिक तहिरसँ वेसी भूमि जल-जमावसँ ग्रसित अछि, तहिना वन-विभागक डिक्शनरीए उनटल अछि। जे चारी बारहमसिया खल, बारहमसिया खूल, बारहमसिया तीमन-तरकारी आ बारहमसिया अन्न तकक चारी मिथिलाक चारीकेँ बना नेने अछि, जेना चन्दन (बेल) सन खल अछि, तहिना अकड़-बकड़ बोन-झाड़ लगा चारीकेँ अजबाड़ि दैत, ई हो केतौसँ उचित नहि अछि।

किसानी जीवन दुनू दिसि अछि। माटिसँ उपज करैबला सेहो आ पानिसँ उपज करैबला सेहो, अपना समाजकेँ पूर्वांचलक मारे बंगालक किसानसँ किसानी जीवन सीखए पड़त। अपना समाजसँ वेसी बाखो बंगालमे होइए आ अपने समाज जकाँ माटियो अछि। जहिना गंगाकातमे चक-चक बालु बन्धनसँ भागलपुर तक देखै छिऐ तहिना बंगालक मुर्शिदाबाद तक अछि। मुदा जे 'जाने मारे पान' मिथिलाक नामी-गरामी छल तहिना अप्पन बंगाल पान बंगालसँ मँगा कऽ खाइ छी, एकरा की कहबै? मिथिला छी, लोक पान खेबे करत, अतिथि-अभ्यागतकेँ खुऐबे करतैन। गामक बीचमे, मारे मनमोहन गामक बीचमे जे चारू दिसिसँ रस्ता आबि मिलल अछि, ओना अप्पनका भाषामे चौक-चौराहा सेहो बेल, मुदा अप्पन तक मनमोहनबला ओकरा चौबटीए कहै छैथ। अपन तँ ओरिखन जमीन नहि, मुदा दोकानक नामपर समाज (गौआँ) सहमति दैतैन जे गामक ई मुरान जगह छी, एखन दोकान खोलू। गाममे दोकान बेने गौएँकेँ ने लाभ होइए। अपनो मनमे विसिवास बनल छल जे एहेन कारण तँ अछिए जे जेकर घर तेकर जमीन। जँ अपना तेकर सबूत नइ अछि तँ परचा रूपमे देल जाइए। संयोग एकटा ई हो छल जे मनमोहनमे एहेन संस्कार अप्पनो जीवति अछि जे घर बनैबेल बाँस, खढ़ इत्यादिक सहयोग समाजमे होइत रहल अछियो। बेकतीगत रूपमे तँ कम देख पड़ैत मुदा सामाजिक रूपमे जीवति अछि। ओना, परिवेश ठीक विपरीत बनि गेल अछि, मुदा कछु बेल, अपना तँ घर (दोकानक घर)

વનૈમે ને કોનો ળમીનક સમસ્યા બેઉ શ્રા ને ઘન વનૈક। હમન સુન-સાન, માને દોકાન કનૈક સુન-સાન દેખ્ય પાન-સાળ ગોપે શ્રાનો હાઁર-હાઁર કડ શ્રપન દોકાન કનૈક ઘન ડાઢ઼ કેઉક।

વહ્ણ ળ઼ઁ નહિ, માને હળાન વોઉટ વાઉઉક રળોળ ળકાઁ ળ઼ઁ નહિ, મુદા દશ્રિાની પાવ઼નકિ નાડ઼ી-પ્યઢ઼ક ઉકાની ળકાઁ રળોળસઁ વેસી યુઁશ્રોક વીચ, ળહિનિ દપિાવ઼ઉ પાવૈન મનૌઉ ળારૂપ ળહિનિ ગામક કસિાની ળીવ઼નમે કાનોવાની ળીવ઼ન સેહો છોહે। શ્રોના, ઘુમન્ટૂ નૂપમે માને પથયિામે સમાન ઉડ઼ માથપન ઉઠા શ્રંગાને-શ્રંગાને ળૂનાયિાળ વ઼સ્તુ વેચૈક યઉૈન સમાળમે યઉયિે નહઉ છઉ।

યૌકપન પયૂછમિ નૂપ્યિ દોકાન વના, શ્રપન કાનોવાન શુરૂ કેઉૌ। ળર દનિ દોકાન શુરૂ કેઉૌ, ળકન પછુઉકા સાઁઝ, દનિવન્ધુ બાય દોકાનપન પહુઁયઉા। છશ્ર-પાઁયમે પડ઼િ ગેઉૌ, કાઉહિ ઉક્ષ્મીક પૂળા કેઉાક પછાઉળ ને દોકાન ઐડાએવ શ્રાકાળિરસઁ પહિનિહિ ઉકકેઁ યાહ પીશ્રા પાન પુશ્રા ઐડા હેવ।

એકટા વાળ દનિવન્ધુ બારૂક સમ્વન્ધમે સુનઉ છઉ ળે ળખન શ્રહાઁકેઁ કોનો કાળ કનૈળ દેખળા, ળખન શ્રો ને યાહક શ્રાગ્નહ માને છૈથ શ્રા ને ગપ્પ-સપ્પ કનવકેઁ પસનિ કને છૈથ। ળરૂમે કાળયાનાળિ ળઁ કોનો પ્નશ્ન પુછવૈન ળ઼ઁ મુહેંટા સઁ નહિ કહળા, હાથસઁ કૈનાયિો કડ દેખા દેળા। ળ઼ઁપ મનમે વસિવાસ ળમઉ છઉ ળે સોહામે માને દનિવન્ધુ બારૂક સોહામે ઉનૂ-પ્યુનૂ ળઁ કનપ ઉગાવ ળખન શ્રો શ્રપને પહિનિહિ કહિ દેળા ળે યાહ-ળાહક ળોગાન નહિ કનાયિહહ। શ્રપન યન્નો વઁચાિ ળાએળ શ્રા યનો વઁચાિ ળાએળ। સએહ કેઉૌ। હાથમે માટિ-ળાળિ ઉગાઉ દનિવન્ધુ બાયકેઁ કહઉૈન-

"બાય સાહેવ, ગોડ઼ ઉગૌ છી। શ્રહાઁ સબક સેવ઼ા ઉ દોકાન શુરૂ કેઉ શ્રછિ। "

શ્રોના, વળઉ પછાઉળ શ્રપને વુહિ પિડ઼ઉ ળે વેસી વળા ગેઉ। શ્રાવ શ્રો શ્રપન વાળ વળળા કિ હમના શ્રસીનવ઼ાદ દેળા। મુદા ળરૂમે નયૂછ નહઉ ળે ળર વયિચેમે દનિવન્ધુ બાય વળઉ-

"વૌશ્રા, ગેઉહ નેપાઉ કપાન ગેઉ સંગે। મુદા ળોહિ સબ ને શ્રપન ળન્મભૂમકિેઁ માળ□ભૂમિ વનૈક શક્તિ છહક। ળોપે સવહક ને ગામ-સમાળ સબ કછુિ છશ્રિ। "

દનિવન્ધુ બારૂક વ઼ચિાન સુનિ મન ળનો હુશ્ર ઉગાઉ શ્રા ઉપનો હુશ્ર ઉગાઉ। ળન-

𑒆𑒣𑒩 𑒬𑒥𑓂𑒠𑒏 𑒁𑒩𑓂𑒟 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒧𑒹 𑒐𑒳𑒬𑒲𑒮𑒿 𑒪𑓄 𑒖𑒰𑒃𑒋। 𑒢𑒫 𑒫𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩 𑒫𑒰 𑒢𑒫 𑒐𑒹𑒪𑒾𑒢𑒰 𑒣𑒹𑒪𑒰 𑒣𑒯𑒰𑒩𑒞 𑒖𑒹 𑒥𑒔𑓂𑒔𑒰𑒏 𑒋𑒏𑓂𑒬𑒢 (𑒯𑒰𑒫-𑒦𑒰𑒫) 𑒯𑒼𑒃𑒋, 𑒍 𑒞𑒩-𑒆𑒣𑒩𑒏 𑒯𑒼𑒃𑒋। 𑒖𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒑𑒰𑒧𑒧𑒹, 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒥𑒳𑒩𑒰-𑒜𑓀𑒑𑒧𑒹 𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒮𑒼𑒪𑒯𑒼𑒂𑒢𑒰 𑒔𑒾𑒣𑒙𑓂𑒙𑒹 𑒞𑒿 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒲। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒖𑒃 𑒑𑒞𑒱𑒮𑒿 𑒑𑒰𑒧 𑒅𑒪𑒙-𑒣𑒳𑒪𑒙 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒃𑒧𑒹 𑒁𑒣𑒢 𑒖𑒰𑒢 𑒥𑒿𑒔𑒞 𑒏𑒱 𑒖𑒰𑒋𑒞 𑒮𑒹 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩𑒝𑒲𑒨 𑒁𑒕𑒱। 𑒠𑒲𑒢𑒥𑒢𑓂𑒡𑒳 𑒦𑒰𑒃𑒏 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒫𑒰𑒯𑒧𑒹 𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒫𑒰𑒯𑒱𑒞 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒦𑒿𑒮𑒰 𑒑𑒹𑒪𑒾 𑒏𑒱 𑒥𑒖𑒰 𑒑𑒹𑒪-

"𑒯𑒿 𑒮𑒹 𑒞𑒿 𑒕𑒱𑒌𑒯𑒱𑒨𑒹 𑒦𑒰𑒨 𑒮𑒰𑒯𑒻𑒥। "

𑒋𑒏𑒰𑒋𑒏 𑒠𑒲𑒢𑒥𑒢𑓂𑒡𑒳 𑒦𑒰𑒃𑒏 𑒧𑒢𑒏 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩𑒧𑒹 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒬𑓂𑒢 𑒅𑒚𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒻𑒢, 𑒍 𑒥𑒖𑒪𑒰-

"𑒣𑒴𑒖𑒲 𑒏𑒹𑒞𑒹 𑒪𑒑𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱?"

𑒁𑒣𑓂𑒣𑒢 𑒞𑒏 𑒁𑒣𑒢 𑒧𑒢 𑒁𑒮𑒟𑒱𑒩 𑒢𑒃 𑒦𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒥𑒳𑒩𑒰-𑒜𑓀𑒑 𑒣𑒴𑒖𑒲 𑒕𑒲 𑒏𑒱 𑒩𑒴𑒣𑒻𑒂-𑒣𑒻𑒮𑒰। 𑒑𑒣-𑒮𑒣𑓂𑒣𑒏 𑒏𑓂𑒩𑒧𑒧𑒹 𑒥𑒳𑒩𑒰𑒃𑒨𑒼𑒏𑒹𑒿 𑒣𑒴𑒖𑒲 𑒥𑒳𑒗𑒻 𑒕𑒲 𑒂 𑒩𑒴𑒣𑒻𑒍-𑒣𑒰𑒃𑒏𑒹𑒿, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒍 𑒏𑒹𑒏𑒩𑒰 𑒪𑒹, 𑒖𑒹 𑒏𑒩𑒞 𑒞𑒹𑒏𑒩𑒰 𑒪𑒹 𑒢𑒹। 𑒍𑒢𑒰, 𑒏𑒹𑒏𑒩𑒼 𑒪𑒑 𑒐𑒴𑒮 𑒢𑒃 𑒥𑒖𑒻 𑒕𑒲, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒥𑒰𑒪-𑒥𑒼𑒔𑒏𑒹𑒿 𑒫𑒾𑒮𑒻𑒏𑒰𑒪 𑒢𑒃 𑒥𑒖𑒻 𑒕𑒲, 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒏𑒹𑒢𑒰 𑒢𑒃 𑒏𑒯𑒥। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒏𑒰𑒢𑒼𑒥𑒰𑒩 𑒞𑒿 𑒏𑒰𑒢𑒼𑒥𑒰𑒩 𑒕𑒲, 𑒧𑒮𑒱𑒨𑒼 𑒦𑒩𑒱 𑒐𑒴𑒮 𑒁𑒢𑒳𑒔𑒱𑒞 𑒕𑒲𑒯𑒹। 𑒥𑒖𑒪𑒾-

"𑒦𑒰𑒨 𑒮𑒰𑒯𑒻𑒥, 𑒣𑒰𑒃-𑒏𑒾𑒛𑓃𑒲𑒏 𑒣𑒴𑒖𑒲 𑒏𑒧 𑒁𑒕𑒱, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑒰𑒃𑒏𑒱𑒪 𑒂 𑒧𑒼𑒙𑒩 𑒮𑒰𑒃𑒏𑒱𑒪𑒏 𑒦𑓀𑒑𑒰𑒛𑒲, 𑒧𑒼𑒥𑒰𑒃𑒪-𑒏𑒧𑓂𑒣𑓂𑒨𑒴𑒙𑒩𑒏 𑒐𑒼𑒪-𑒐𑒰𑒪, 𑒢𑒫-𑒔𑒫 𑒥𑒖𑒱𑒪𑒲𑒏 𑒂𑒑𑒧𑒢 𑒁𑒫𑒮𑓂𑒟𑒰𑒏 𑒥𑒩𑒱 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒁𑒕𑒱, 𑒞𑒻𑒮𑓀𑒑 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒮𑒿 𑒞𑒩𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒅𑒣𑒖𑒾𑒢𑒱𑒯𑒰𑒩𑒮𑒿 𑒅𑒔𑒰𑒩𑒲𑒏 𑒂𑒬𑓂𑒫𑒰𑒮𑒢 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒦𑒹𑒙𑒪 𑒁𑒕𑒱। "

𑒠𑒲𑒢𑒥𑒢𑓂𑒡𑒳 𑒦𑒰𑒨 𑒥𑒖𑒪𑒰-

"𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏 𑒖𑒹 𑒩𑒴𑒣-𑒩𑒹𑒐𑒰 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒃𑒧𑒹 𑒦𑒩𑒣𑒴𑒩 𑒣𑒴𑒖𑒲 𑒕𑒃। 𑒞𑒻𑒮𑓀𑒑 𑒏𑒕𑒳 𑒂𑒢𑒼 𑒏𑓂𑒩𑒱𑒨𑒱𑒧𑒰𑒬𑓂𑒧 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩𑒏 𑒣𑒴𑒖𑒲 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒕𑒯𑒹। "

𑒣𑒳𑒕𑒪𑒨𑒻𑒢-

"𑒮𑒹 𑒏𑒲 𑒦𑒰𑒨 𑒮𑒰𑒯𑒻𑒥?"

𑒧𑒳𑒮𑓂𑒏𑒲 𑒠𑒻𑒞 𑒠𑒲𑒢𑒥𑒢𑓂𑒡𑒳 𑒦𑒰𑒨 𑒥𑒖𑒪𑒰-

"𑒣𑒯𑒱𑒪 𑒕𑒲, 𑒋𑒏𑒰𑒑𑓂𑒩 𑒦𑓄 𑒏𑒰𑒖 𑒏𑒩𑒥 𑒂 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒕𑒲, 𑒂𑒧𑒠𑒢𑒲𑒏 𑒯𑒱𑒮𑒰𑒥𑒮𑒿 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒁𑒣𑓂𑒣𑒢 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒧𑒰𑒝 𑒏𑒩𑒥। 𑒍𑒢𑒰, 𑒖𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒬𑒴𑒢𑓂𑒨𑒏 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒧𑒹 𑒏𑒱𑒨𑒼 𑒁𑒣𑒢 𑒂𑒾𑒖𑒰𑒩 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒧𑒱𑒞 𑒏𑓄 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒥𑒜𑓃𑒾𑒪𑒻𑒢 𑒂 𑒏𑒱𑒨𑒼 𑒬𑒩𑒲𑒩𑒹 𑒥𑒪 𑒥𑒜𑓃𑒪𑒰, 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒞𑒿 𑒂𑒃𑒨𑒼 𑒁𑒕𑒱𑒋। "

-

- जगदीश प्रसाद मण्डलजीक जन्म मधुबनी जिलाक बेरमा गाममे ५ जुलाइ १९४७ ईस्वीमे भेलैन। मण्डलजी हिन्दी एवं राजनीति शास्त्रमे एम.एक अहर्ता पाबि जीविकोपार्जन हेतु कृ□षि कार्यमे संलग्न भऽ रुचिपूर्वक समाज सेवामे लागि गेला। समाजमे व्याप्त रूढ़िवादी एवं सामन्ती व्यवहार सामाजिक विकासमे हिनका बाधक बुझि पड़लैन। फलत: जमीन्दार, सामन्तक संग गाममे पुरजोर लड़ाइ ठाढ़ भऽ गेलैन। फलत: मण्डलजी अपन जीवनक अधिकांश समय केस-मोकदमा, जहल यात्रादिमे व्यतीत केलाह। २००१ ईस्वीक पश्चात साहित्य लेखन-क्षेत्रमे एला। २००८ ईस्वीसँ विभिन्न पत्र-पत्रिकादिमे हिनक रचना प्रकाशित हुअ लगलैन। गीत, काव्य, नाटक, एकांकी, कथा, उपन्यास इत्यादि साहित्यक मौलिक विधामे हिनक अनवरत लेखन अद्वितीय सिद्ध भऽ रहलैन अछि। अखन धरि दर्जन भरि नाटक/एकांकी, पाँच साएसँ ऊपर गीत/काव्य, उन्नैस गोट उपन्यास आ साढ़े आठसाए कथा-कहानीक संग किछु महत्वपूर्ण विषयक शोधालेख आदिक पुस्तकाकार, साएसँ ऊपर ग्रन्थमे प्रकाशित छैन।
मिथिला-मैथिलीक विकासमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक योगदान अविस्मरणीय छैन। ई अपन सतत क्रियाशीलता आ रचना धर्मिताक लेल विभिन्न संस्थासभक द्वारा सम्मानित/पुरस्कृ□त होइत रहला अछि, यथा- विदेह सम्पादक मण्डल द्वारा 'गामक जिनगी' लघु कथा संग्रह लेल 'विदेह सम्मान- २०११, 'गामक जिनगी व समग्र योगदान हेतु साहित्य अकादेमी द्वारा- 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड- २०११, मिथिला मैथिलीक उन्नयन लेल साक्षर दरभंगा द्वारा- 'वैदेह सम्मान- २०१२', विदेह सम्पादक मण्डल द्वारा 'नै धारैए' उपन्यास लेल 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार- २०१४', साहित्यमे समग्र योदान लेल एस.एन.एस. ग्लोबल सेमिनार द्वारा 'कौशिकी साहित्य सम्मान- २०१५', मिथिला-मैथिलीक विकास लेल सतत क्रियाशील रहबाक हेतु अखिल भारतीय मिथिला संघ द्वारा- 'वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'

સમ્માન- ૨૦૧૬', રચના ધર્મિતાક ક્ષેત્રમે અમૂલ્ય યોગદાન હેતુ જ્યોત્સના-મણ્ડલ દ્વારા 'કૌમુદી સમ્માન- ૨૦૧૭', મિથિલા-મૈથિલીક સંગ અન્ય ઉત્ક□ષ્ટ સેવા લેલ અખિલ ભારતીય મિથિલા સંઘ દ્વારા 'સ્વ. વાવૂ સાહેવ ચૌધરી સમ્માન- ૨૦૧૮', ચેતના સમિતિ, પટનાક પ્રસિદ્ધિ 'યાત્રી ચેતના પુરસ્કાર- ૨૦૨૦', મૈથિલી સાહિત્યક અહર્નિશ સેવા આ સ□જન હેતુ મિથિલા સાંસ્ક□તિક સમન્વય સમિતિ, ગુવાહાટી-અસમ દ્વારા 'રાજકમલ ચૌધરી સાહિત્ય સમ્માન- ૨૦૨૦', ભારત સરકાર દ્વારા 'સાહિત્ય અકાદેમી પુરસ્કાર- ૨૦૨૧' તથા સાહિત્ય આ સંસ્ક□તિમે મહત્વપૂર્ણ અવદાન લેલ અમર શહીદ રામફલ મંડલ વિચાર મંચ દ્વારા 'અમર શહીદ રામફલ મંડલ રાષ્ટ્રીય પુરસ્કાર- ૨૦૨૨'

રચના સંસાર : ૧ ઇન્દ્રધનુષી અકાસ, ૨ રાતિ-દિન, ૩ તીન જેઠ એગારહમ માઘ, ૪ સરિતા, ૫ ગીતાંજલિ, ૬ સુખાએલ પોખરિક જાઇઠ, ૭ સતબેધ, ૮ ચુનૌતી, ૯ રહસા ચૌરી, ૧૦ કામધેનુ, ૧૧ મન મથન, ૧૨ અકાસ ગંગા - કવિતા સંગ્રહ। ૧૩ પંચવટી- એકાંકી સંચયન। ૧૪ મિથિલાક વેટી, ૧૫ કમ્પ્રોમાઇઝ, ૧૬ ઝમેલિયા વિઆહ, ૧૭ રત્નાકર ડકૈત, ૧૮ સ્વયંવર- નાટક। ૧૯ મૌલાઇલ ગાછક ફૂલ, ૨૦ ઉત્થાન-પતન, ૨૧ જિનગીક જીત, ૨૨ જીવન-મરણ, ૨૩ જીવન સંઘર્ષ, ૨૪ નૈ ધાડૈએ, ૨૫ વડકી વહિન, ૨૬ ભાદવક આઠ અન્હાર, ૨૭ સધવા-વિધવા, ૨૮ ઠૂઠ ગાછ, ૨૯ ઇજ્જત ગમા ઇજ્જત વઁચેલોં, ૩૦ લહસન, ૩૧ પંગુ, ૩૨ આમક ગાછી, ૩૩ સુચિતા, ૩૪ મોડપર, ૩૫ સંકલ્પ, ૩૬ અન્તિમ ક્ષણ, ૩૭ કુણ્ડા- ઉપન્યાસ। ૩૮ પયસ્વિની- પ્રવન્ધ-નિવન્ધ-સમાલોચના। ૩૯ કલ્યાણી, ૪૦ સતભાએ, ૪૧ સમઝૌતા, ૪૨ તામક તમઘૈલ, ૪૩ વીરાંગના- એકાંકી। ૪૪ તરેગન, ૪૫ વજન્તા-વુઝન્તા- વીહૈન કથા સંગ્રહ। ૪૬ શંભુદાસ, ૪૭ રટની ખઢ- દીર્ઘ કથા સંગ્રહ। ૪૮ ગામક જિનગી, ૪૯ અર્દ્ધાંગિની, ૫૦ સતભૈયા પોખરિ, ૫૧ ગામક શકલ-સૂરત, ૫૨ અપન મન અપન ધન, ૫૩ સમરથાઇક ભૂત, ૫૪ અપ્પન-વીરાન, ૫૫ વાલ ગોપાલ, ૫૬ ભકમોડ, ૫૭ ઉલબા ચાઉર, ૫૮ પતઝાડ, ૫૯ ગઢૈનગર હાથ, ૬૦ લજવિજી, ૬૧ ઉકડૂ સમય, ૬૨ મધુમાછી, ૬૩ પસેનાક ધરમ, ૬૪ ગુડા-

खुद्दीक रोटी, ६५ फलहार, ६६ खसैत गाछ, ६७ एगच्छा आमक गाछ, ६८ शुभचिन्तक, ६९ गाछपर सँ खसल, ७० डभियाएल गाम, ७१ गुलेती दास, ७२ मुड़ियाएल घर, ७३ वीरांगना, ७४ स्म□ति शेष, ७५ बेटीक पैरुख, ७६ क्रान्तियोग, ७७ त्रिकालदर्शी, ७८ पैंतीस साल पछुआ गेलौं, ७९ दोहरी हाक, ८० सुभिमानी जिनगी, ८१ देखल दिन, ८२ गपक पियाहुल लोक, ८३ दिवालीक दीप, ८४ अप्पन गाम, ८५ खिलोड़ मूर्मा, ८६ चितवनक शिकार, ८७ चौरस खेतक चौरस उपज, ८८ समयसँ पहिने चेत किसान, ८९ बौक, ९० गामक आशा टुटि गेल, ९१ पसेनाक मोल, ९२ क□ षियोग, ९३ हारल चेहरा जीतल रूप, ९४ रहै जोकर परिवार, ९५ कर्ताक रंग कर्मक संग, ९६ गामक सूरत बदैल गेल, ९७ अन्तिम परीक्षा, ९८ घरक खर्च, ९९ नीक डकान डकेलौं, १०० जीवनक कर्म जीवनक मर्म, १०१ संयराम, १०२ बरामिन काज, १०३ आएल आशा चलि गेल, १०४ जीवन दान तथा १०५ अप्पन साती-लघु कथा संग्रह।

ऐ **रचनापर अपन मंतव्य** ggajendra@videha.com **पर पठाउ।**

२९.जगदीश प्रसाद मण्डल- मोड़पर (धारावाहिक उपन्यास नवम पड़ाव)



जगदीश प्रसाद मण्डल

मोड़पर (धारावाहिक उपन्यास)

नवम पड़ाव

दस वर्खक पछाति कामेसरक जीवन जेना ढहि कऽ समतल भूमि जकाँ बनि गेलैन। ने ओ देवी आ ने ओ कराह रहलैन। लहाक बनल रेजन एक निश्चित अवधिक लल होरए। तेकरा तेना उपयोग करैत अछि जे अपन पारिवारिक जीवनक संग पूजीक जनिगीक सेहो केना जीवति बनि धरल तऽ दसि कामेसरक नजैर गेबे ने केलैन। स्वर्गक कल्पवृक्ष जकाँ जे मांगव, जेते मांगव भेटैत रहत एक्के उपे पाँच वर्ख धरि दुनू ट्रेक्टर भरपूर आमदनी कामेसरकेँ देलकैन। छोट-मोट पार्ट तँ सामान्य रूपेँ लगिते अछि मुदा अस्वस्थ शरीर

जकाँ जखन इंजन अस्वस्थ होअ लगैन, तखन एक-एक पार्टक टूटो-फूट आ मनो-मनम्मतकि खगता होअ लगैन, जइसँ आमदनीक अधिकांश भाग, अधिकांश भागक दू रूप पहिने गाड़ी कम चलब आ दोसर पार्ट कीनैक खर्च, गाड़ीए देखि जाए लगैन। मुदा तैयो कामेसरक मनसूबामे मसियो भरि डगमगाहट नहियेँ एलैन। तैसंग ईहो भेलैन जे ट्रेक्टरक बैंक लोनकेँ वंगाल सरकार माफ कऽ देलकैन।

जीवनक आमदनीमे कमी, माने आर्थिक कमी, रहितो कामेसर अपन जे छवि समाजमे बना लेलैन अछि तइमे कमी नहि होअए, तेकर पूर्तिक सक्ति भरि कोशिश करिए ने भेल होनि, मुदा ओइ कोशिशताकेँ अपने मनमे दाबि आनक मनमे अपनाकेँ ओहिना जीविते रखल, जेना कठ-पुतली नाच होइए। खाइ-पीबैक वस्तुसँ लऽ कऽ ओढ़ै-पहिरैक कपड़ाक संग परिवारिक व्यवहारक रख-रखावमे कमी सेहो आबए लगैन। जइसँ अपनो आ परिवारोकेँ अकासक तरेगन दिनमे देखाए लगैन। ओना, सुजाता जे बीए पास छैथ, पतिक मनोवेगकेँ सेहो आ मनोवेगक दाबकेँ सेहो बुझैत रहली, मुदा जहिना पति पत्नीक आगू आ पत्नी पतिक आगू अपाय नहि बाजए चाहै छैथ तहिना सुजाता सेहो सभकिछु बुझितो किछु ने नहि बाजए चाहै छेली। मनमे संतोषक गाछ हरियाएल रहबे करैन जे अपन सीमा बुझि सभकेँ जीबाक चाही। जखन घरक (परिवारक) गारजन पति छैथ तखन हुनका काजमे किछु बाजब माने दखल देब, पत्नीक लेल अनुचित छीहे। केतौ-केतौ होइतो अछिए।

ओना, कामेसरक मनमे चड़ियचड़िपन सेहो भरपूर जागिये चुकल छेलैन। गाम-समाजक तँ अपन इज्जत-प्रतिष्ठा अछि जे समत्व रूपमे रहल अछि, ओना एकत्व रूपमे सेहो अछि, रहबो केना ने करत। समत्व-सँ-एकत्व आ एकत्व-सँ-समत्वक बीचक आबा-जाही सभक जीवनमे लागल रहिते अछि। गामक बगलेक गाममे माने पलारपुरक सटल दुलारपुर गाममे दुनियाँलाल नामक एकटा बेकती छैथ।

𑒮𑒧𑒰𑒖𑒧𑒹 𑒠𑒳𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿𑒪𑒰𑒪𑒏 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑒯𑒔𑒰𑒢 𑒕𑒻𑒢 𑒖𑒃 𑒣𑒯𑒔𑒰𑒢𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒦𑒼𑒙𑒞𑒱 𑒕𑒻𑒢 𑒖𑒹 𑒠𑒴𑒙𑒼 𑒥𑒖𑒢𑒱𑒯𑒰𑒩 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒪𑒑 𑒂𑒥𑒱 𑒮𑒞𑓂𑒨 𑒥𑒰𑒞 𑒮𑒳𑒢𑒥𑒼 𑒏𑒩𑒻𑒋 𑒂 𑒥𑒖𑒥𑒼 𑒢𑒹 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒦𑒅𑒿 𑒍 𑒍𑒯𑒢𑒹 𑒥𑒖𑒢𑒱𑒯𑒰𑒩 𑒏𑒯𑒱 𑒢𑒹 𑒯𑒳𑒁𑒋 𑒖𑒹 𑒥𑒰𑒒𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒱𑒪𑒰𑒛𑓃𑒏 𑒦𑒞𑒲𑒖𑒲𑒋 𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒯𑒼𑒅।

𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒔𑒾𑒏𑒣𑒩, 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒠𑒳𑒪𑒰𑒩𑒣𑒳𑒩 𑒂 𑒣𑒪𑒰𑒩𑒣𑒳𑒩𑒏 𑒥𑒲𑒔, 𑒠𑒮𑒙𑒰 𑒠𑒼𑒏𑒰𑒢𑒏 𑒔𑒾𑒏 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹𑒏𑒩𑒰 𑒣𑒪𑒰𑒩𑒣𑒳𑒩𑒥𑒪𑒰 𑒣𑒪𑒰𑒩𑒣𑒳𑒩𑒏 𑒔𑒾𑒏 𑒥𑒳𑒗𑒻 𑒕𑒻𑒟 𑒂 𑒠𑒳𑒪𑒰𑒩𑒣𑒳𑒩𑒥𑒪𑒰 𑒠𑒳𑒪𑒰𑒩𑒣𑒳𑒩𑒏 𑒔𑒾𑒏 𑒥𑒳𑒗𑒻 𑒕𑒻𑒟। 𑒮𑓀𑒖𑒼𑒑 𑒦𑒹𑒪 𑒖𑒹 𑒏𑒰𑒧𑒹𑒮𑒩 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒦𑒼𑒩𑒏 𑒋𑒏𑒞𑒲𑒩 𑒏𑒰𑒖 𑒏𑒩𑒱 𑒍𑒯𑒱 𑒔𑒾𑒏𑒏 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒔𑒰𑒯𑒏 𑒠𑒼𑒏𑒰𑒢𑒣𑒩 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒪 𑒕𑒪𑒰 𑒂 𑒠𑒳𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿𑒪𑒰𑒪 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒪𑒰। 𑒑𑒩𑒧𑒰𑒋𑒪 𑒏𑒰𑒧𑒹𑒮𑒩 𑒔𑒰𑒯𑒏 𑒠𑒼𑒏𑒰𑒢𑒣𑒩 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒱𑒞𑒹 𑒖𑒼𑒩𑒮𑒿 𑒥𑒖𑒪𑒰-

"𑒠𑒳𑒪𑒰𑒩𑒣𑒳𑒩𑒥𑒪𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒖𑒫𑒰𑒢𑒏 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒚𑒲𑒏 𑒢𑒯𑒱 𑒁𑒕𑒱!"

𑒒𑒑𑒰𑒪 𑒪𑒼𑒏𑒏 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒁𑒮𑓀𑒞𑒼𑒭𑒮𑒿 𑒖𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒯𑒼𑒃𑒋 𑒖𑒹 𑒏𑒲 𑒦𑒼𑒙𑒞, 𑒏𑒹𑒞𑒋 𑒦𑒼𑒙𑒞; 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒏𑒰𑒧𑒹𑒮𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒖𑒢𑒧𑒰𑒨𑒱𑒿 𑒑𑒹𑒪 𑒩𑒯𑒻𑒢। 𑒒𑒙𑒥𑒲𑒋 𑒔𑒰𑒯𑒏 𑒣𑒰𑒢𑒱 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒏𑒰𑒧𑒹𑒮𑒩𑒏 𑒠𑒱𑒢-𑒠𑒳𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿 𑒡𑒲𑒩𑒹-𑒡𑒲𑒩𑒹 𑒢𑒱𑒔𑓂𑒔𑒰𑒿 𑒅𑒞𑒩𑒋 𑒪𑒑𑒪𑒻𑒢। 𑒔𑒰𑒯𑒏 𑒠𑒼𑒏𑒰𑒢𑒣𑒩 𑒥𑒻𑒮𑒪 𑒠𑒳𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿𑒪𑒰𑒪 𑒥𑒱𑒢𑒰 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒥𑒖𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒰𑒧𑒹𑒮𑒩𑒏 𑒑𑒙𑓂𑒙𑒰 𑒣𑒏𑒻𑒛𑓃 𑒣𑒳𑒕𑒪𑒏𑒻𑒢-

"𑒏𑒲 𑒠𑒳𑒪𑒰𑒩𑒣𑒳𑒩𑒥𑒪𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒖𑒫𑒰𑒢𑒏 𑒚𑒲𑒏 𑒢𑒯𑒱 𑒁𑒕𑒱?"

𑒮𑓀𑒮𑓂𑒏𑒰𑒩𑒮𑒿 𑒏𑒰𑒧𑒹𑒮𑒩 𑒁𑒣𑒢𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒍𑒃 𑒮𑒲𑒧𑒰𑒣𑒩 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒣𑒱𑒞 𑒏𑓄 𑒪𑒹𑒢𑒹 𑒕𑒻𑒟 𑒖𑒹 𑒮𑒦𑓂𑒨 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏 𑒥𑒹𑒏𑒞𑒲 𑒮𑒦𑓂𑒨 𑒯𑒼𑒃𑒋। 𑒏𑒰𑒧𑒹𑒮𑒩𑒏 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒠𑒱𑒢 𑒥𑒢𑒪 𑒩𑒯𑒪𑒻𑒢 𑒖𑒹 𑒣𑒕𑒳𑒂𑒋𑒪 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏 𑒥𑒲𑒔 𑒣𑒯𑒱𑒪 𑒃𑓀𑒖𑒲𑒢𑒱𑒨𑒩 𑒕𑒲, 𑒏𑒪𑒏𑒞𑓂𑒞𑒰𑒏 𑒧𑒰𑒙𑒱-𑒣𑒰𑒢𑒱𑒧𑒹 𑒁𑒣𑒢 𑒫𑒰𑒪𑒫𑒮𑓂𑒟𑒰 𑒥𑒲𑒞𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑒹 𑒮𑒦 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒡𑒲𑒩𑒹-𑒡𑒲𑒩𑒹 𑒧𑒢𑒮𑒿 𑒫𑒱𑒪𑒲𑒢 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪𑒻𑒢, 𑒂 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒩𑒼𑒣𑒰 𑒑𑒹𑒪𑒻𑒢 𑒖𑒹 𑒁𑒣𑒢𑒼 𑒣𑒰𑒃𑒥𑒪𑒰 𑒕𑒲𑒯𑒹 𑒂 𑒮𑓀𑒑𑒱𑒨𑒼-𑒮𑒰𑒟𑒲 𑒣𑒰𑒃𑒨𑒹𑒥𑒪𑒰 𑒕𑒻𑒟। 𑒖𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒠𑒳𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿𑒪𑒰𑒪 𑒑𑒙𑓂𑒙𑒰 𑒣𑒏𑒻𑒛𑓃 𑒏𑒰𑒧𑒹𑒮𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒣𑒳𑒕𑒪𑒏𑒻𑒢 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒏𑒰𑒧𑒹𑒮𑒩 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒑𑒙𑓂𑒙𑒰𑒧𑒹 𑒯𑒱𑒙𑓂𑒙𑒰 𑒧𑒰𑒩𑒱 𑒕𑒼𑒛𑓃𑒥𑒋 𑒪𑒑𑒪𑒰 𑒏𑒱 𑒠𑒳𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿𑒪𑒰𑒪 𑒞𑒩𑒰𑒏-𑒠𑒹 𑒧𑒳𑒿𑒯𑒣𑒩 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒟𑒰𑒣𑒩 𑒧𑒰𑒩𑒱 𑒣𑒳𑒕𑒪𑒏𑒻𑒢-

"𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒃𑓀𑒖𑒲𑒢𑒱𑒨𑒩𑒱𑓀𑒑𑒏 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒣𑒾𑒢𑒹 𑒕𑒲, 𑒥𑒛𑓃𑒥𑒜𑓃𑒱𑒨𑒰𑒿, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑒧𑒰𑒖 𑒏𑒲 𑒕𑒲, 𑒏𑒹𑒢𑒰 𑒥𑒢𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒏𑒹𑒢𑒰 𑒥𑒢𑒪 𑒂𑒑𑒴 𑒧𑒳𑒯𑒹𑒿 𑒠𑒾𑒑𑒻𑒞 𑒔𑒪𑒞, 𑒋𑒯𑒹𑒢 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒢𑒹 𑒯𑒩 𑒧𑒢𑒳𑒏𑓂𑒐𑒧𑒹

𑒋𑒥𑒰 𑒔𑒰𑒯𑒲। 𑒮𑒹 𑒖𑒰𑒥𑒹 𑒡𑒩𑒱 𑒢𑒯𑒱 𑒎𑒞 𑒞𑒰𑒥𑒹 𑒡𑒩𑒱 𑒞𑒿 𑒮𑒧𑒰𑒖 𑒅𑒛𑓃𑒐𑒛𑓃𑒰𑒮𑒹 𑒩𑒯𑒞 𑒏𑒩𑒱? 𑒞𑒻𑒥𑒲𑒔 𑒖𑒹 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒥𑒹𑒏𑒞𑒲𑒏 𑒏𑒰𑒖𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒖𑒱𑒏 𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹 𑒥𑒳𑒗𑒱 𑒥𑒖𑒻 𑒕𑒲, 𑒞𑒹𑒞𑒥𑒼 𑒥𑒳𑒗𑒻𑒏 𑒁𑒫𑒑𑒞𑒱 𑒢𑒯𑒱 𑒁𑒕𑒱।"

𑒧𑒳𑒿𑒯𑒧𑒹 𑒟𑒰𑒣𑒩 𑒪𑒑𑒪 𑒣𑒕𑒰𑒃𑒞 𑒏𑒰𑒧𑒹𑒮𑒩𑒏 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒔𑒹𑒞 𑒖𑒑𑒪𑒻𑒢। 𑒖𑒃𑒮𑒿 𑒁𑒣𑒢 𑒏𑒧𑒲 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒖𑒩𑒴𑒩 𑒋𑒪𑒻𑒢 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒪𑒏𑒏 𑒥𑒲𑒔 𑒖𑒹 𑒟𑒰𑒣𑒩 𑒧𑒳𑒿𑒯𑒧𑒹 𑒪𑒑𑒪 𑒕𑒹𑒪𑒻𑒢, 𑒞𑒹𑒏𑒩 𑒥𑒮𑒱𑒥𑒮𑒲 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒩𑒯𑒥𑒹 𑒏𑒩𑒻𑒢। 𑒥𑒖𑒪𑒰-

"𑒑𑒰𑒧-𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒮𑒦𑓂𑒨 𑒪𑒼𑒏 𑒔𑒾𑒏-𑒔𑒾𑒩𑒰𑒯𑒰𑒣𑒩 𑒥𑒹𑒃𑒖𑓂𑒖𑒞 𑒯𑒼𑒃𑒋।"

𑒠𑒳𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿𑒪𑒰𑒪 𑒥𑒖𑒪𑒰-

"𑒏𑒲 𑒢𑓂𑒨𑒰𑒨𑒰𑒪𑒨 𑒔𑒪𑒱𑒏𑓄 𑒁𑒛𑓃𑒱𑒨𑒰𑒋𑒥! 𑒂𑒏𑒱 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒧𑒹 𑒠𑒮 𑒑𑒼𑒙𑒹𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒃𑒮𑒰𑒏𑓄 𑒁𑒛𑓃𑒱𑒨𑒰𑒋𑒥?"

𑒠𑒳𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿𑒪𑒰𑒪𑒏 𑒥𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒏𑒰𑒧𑒹𑒮𑒩 𑒮𑒏𑒮𑒏𑒰 𑒑𑒹𑒪𑒰। 𑒠𑒳𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿𑒪𑒰𑒪𑒏𑒹𑒿 𑒁𑒐𑒢 𑒞𑒏 𑒏𑒰𑒧𑒹𑒮𑒩 𑒢𑒯𑒱 𑒔𑒱𑒢𑓂𑒯𑒯𑒱𑒢𑒱, 𑒮𑒹 𑒂𑒃 𑒔𑒲𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒰। 𑒞𑒻𑒥𑒲𑒔 𑒠𑒳𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿𑒪𑒰𑒪 𑒣𑒳𑒢𑓁 𑒥𑒖𑒪𑒰-

"𑒮𑒧𑒰𑒖 𑒕𑒲, 𑒮𑒦𑒏𑒹𑒿 𑒋𑒏𑒹𑒚𑒰𑒧 𑒩𑒯𑒥 𑒁𑒕𑒱।"

𑒠𑒳𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿𑒪𑒰𑒪𑒏 𑒥𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒖𑒹 ' 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒧𑒹 𑒮𑒦𑒏𑒹𑒿 𑒋𑒏𑒹𑒚𑒰𑒧 𑒩𑒯𑒥𑒰𑒏 𑒁𑒕𑒱' 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒏𑒰𑒧𑒹𑒮𑒩 𑒔𑒳𑒣 𑒩𑒯𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒰। 𑒔𑒰𑒯 𑒣𑒲𑒥 𑒣𑒳𑒢𑓁 𑒁𑒣𑒢 𑒏𑒰𑒖𑒣𑒩 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒪𑒰। 𑒞𑒐𑒢 𑒠𑒳𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿𑒪𑒰𑒪𑒏 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒅𑒚𑒪𑒻𑒢 𑒖𑒹 𑒄𑒯𑒼 𑒥𑒰𑒞𑒏 𑒖𑒰𑒢𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒞𑒿 𑒪𑒱𑒁 𑒣𑒛𑓃𑒞 𑒖𑒹 𑒏𑒰𑒧𑒹𑒮𑒩 𑒋𑒯𑒹𑒢 𑒥𑒰𑒞 𑒥𑒰𑒖𑒪 𑒏𑒩𑒱। 𑒮𑓀𑒖𑒼𑒑 𑒥𑒢𑒪, 𑒮𑓀𑒖𑒼𑒑 𑒏𑒱 𑒥𑒢𑒪 𑒖𑒹 𑒑𑒰𑒧-𑒮𑒧𑒰𑒖𑒧𑒹 𑒋𑒢𑒰 𑒯𑒼𑒃𑒞𑒹 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒖𑒐𑒢 𑒠𑒴 𑒑𑒼𑒙𑒹𑒏 𑒥𑒲𑒔 𑒏𑒯𑒰-𑒏𑒯𑒲 𑒯𑒼𑒃𑒋 𑒞𑒿 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒁𑒣𑒢𑒰-𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒩𑒮𑓂𑒞𑒹 𑒮𑒧𑒰𑒖 𑒠𑒱𑒮𑒱 𑒥𑒜𑓃𑒥𑒹 𑒏𑒩𑒻𑒋 𑒞𑒃𑒪 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒼𑒏𑒹𑒿 𑒖𑒢𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒏𑒰𑒩𑒏 𑒩𑒮𑓂𑒞𑒰 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒥𑒢𑒱𑒞𑒹 𑒁𑒕𑒱। 𑒩𑒰𑒧𑒪𑒰𑒪 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒁𑒣𑒢 𑒥𑒱𑒔𑒰𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒖𑒢𑒥𑒻𑒞 𑒔𑒰𑒯𑒏 𑒠𑒼𑒏𑒰𑒢𑒣𑒩 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒪𑒰। 𑒩𑒰𑒧𑒪𑒰𑒪𑒏𑒹𑒿 𑒠𑒹𑒐𑒞𑒹 𑒠𑒳𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿𑒪𑒰𑒪 𑒥𑒖𑒪𑒰-

"𑒩𑒰𑒧𑒪𑒰𑒪 𑒦𑒰𑒨, 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒠𑒱𑒢 𑒖𑒲𑒥।"

𑒖𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒐𑒱𑒮𑓂𑒮𑒰-𑒣𑒱𑒯𑒰𑒢𑒲 𑒥𑒰 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒣𑒼𑒟𑒲 𑒣𑒜𑓃𑒋 𑒪𑒑𑒻 𑒕𑒲, 𑒞𑒻𑒥𑒲𑒔 𑒖𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒣𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒥𑒹𑒩-𑒥𑒹𑒩 𑒂𑒑𑒴𑒧𑒹 𑒁𑒥𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒻 𑒕𑒻𑒟 𑒞𑒢𑒱𑒏𑒩 𑒎𑒢𑒳𑒠𑒰 𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒦𑒃𑒨𑒹 𑒖𑒰𑒃 𑒕𑒻𑒢,

𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒩𑒰𑒧𑒪𑒰𑒪𑒏𑒹𑒿 𑒠𑒹𑒐 𑒠𑒳𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿𑒪𑒰𑒪 𑒥𑒰𑒖𑒪 𑒕𑒪𑒰। 𑒁𑒣𑒢 𑒫𑓂𑒨𑒟𑒱𑒞 𑒏𑒟𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒩𑒰𑒧𑒪𑒰𑒪 𑒮𑒳𑒢𑒥𑒻𑒞 𑒥𑒰𑒖𑒪𑒰-

"𑒠𑒳𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿, 𑒞𑒼𑒯𑒩 𑒧𑒼𑒪 𑒂𑒢 𑒑𑒰𑒧𑒧𑒹 𑒖𑒹 𑒯𑒳𑒁 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒠𑒳𑒪𑒰𑒩𑒣𑒳𑒩𑒏 𑒞𑒿 𑒁𑒞𑒱𑒧𑒾𑒩𑓂𑒨 𑒯𑒧 𑒞𑒼𑒩𑒹 𑒥𑒳𑒗𑒻 𑒕𑒱𑒁। 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒥𑒰𑒞 𑒕𑒲, 𑒞𑒼𑒯𑒲𑓀 𑒮𑒦 𑒢𑒹 𑒠𑒹𑒐𑒥𑒯𑒏।"

𑒩𑒰𑒧𑒪𑒰𑒪𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒳𑒗𑒪 𑒢𑒯𑒱 𑒖𑒹 𑒠𑒳𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿𑒪𑒰𑒪 𑒋𑒏 𑒟𑒰𑒣𑒩 𑒏𑒰𑒧𑒹𑒮𑒩𑒏 𑒧𑒳𑒿𑒯𑒣𑒩 𑒧𑒰𑒩𑒱 𑒔𑒳𑒏𑒪 𑒕𑒻𑒟।

𑒂𑒯𑒹-𑒧𑒰𑒯𑒹, 𑒩𑒰𑒧𑒪𑒰𑒪𑒏 𑒧𑒳𑒯𑒮𑒿 𑒮𑒳𑒢𑒱, 𑒏𑒱𑒮𑒳𑒢𑒪𑒰𑒪 𑒔𑒩𑒱𑒨𑒥𑒻𑒞 𑒥𑒰𑒖𑒪-

"𑒩𑒰𑒧𑒪𑒰𑒪 𑒦𑒻𑒨𑒰, 𑒁𑒯𑒴𑒿 𑒩𑒰𑒧𑒹 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒥𑒛𑓃 𑒧𑒰𑒨𑒰𑒫𑒲 𑒕𑒲, 𑒏𑒞𑒾 𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧 𑒥𑒢𑒱 𑒖𑒰𑒃 𑒕𑒲 𑒞𑒿 𑒏𑒞𑒾 𑒥𑒢𑒫𑒰𑒮𑒲 𑒂 𑒏𑒞𑒾 𑒮𑒲𑒞𑒰𑒏 𑒦𑒰𑒿𑒖𑒧𑒹 𑒑𑒰𑒕𑒼-𑒥𑒱𑒩𑒲𑒕𑒮𑒿 𑒣𑒳𑒕𑒋 𑒪𑒑𑒻 𑒕𑒱𑒌, 𑒞𑒿 𑒏𑒞𑒾 𑒩𑒰𑒧𑒪𑒪𑒰 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒥𑒢𑒱 𑒖𑒰𑒃 𑒕𑒲! 𑒮𑒼𑒗-𑒮𑒰𑒗 𑒥𑒰𑒖𑒴 𑒖𑒹 𑒏𑒰𑒧𑒹𑒮𑒩𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒏𑒲 𑒦𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱?"

𑒧𑒢𑒏 𑒣𑒲𑒛𑓃𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒖𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒏𑒱𑒨𑒼 𑒍𑒏𑒩 𑒣𑒲𑒛𑓃𑒣𑒢𑒏𑒹𑒿 𑒣𑒏𑒛𑓃𑒋 𑒔𑒰𑒯𑒻 𑒕𑒻𑒟, 𑒖𑒃𑒮𑒿 𑒣𑒲𑒛𑓃𑒱𑒞𑒏𑒹𑒿 𑒖𑒹 𑒣𑒲𑒛𑓃𑒣𑒢 𑒦𑒹𑒙𑒻 𑒕𑒻𑒢 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒩𑒰𑒧𑒪𑒰𑒪𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒦𑒹𑒪𑒻𑒢। 𑒯𑒪𑒮𑒻𑒞 𑒥𑒰𑒖𑒪𑒰-

"𑒏𑒱𑒮𑒳𑒢 𑒙𑓂𑒩𑒹𑒏𑓂𑒙𑒩𑒏 𑒏𑒰𑒖 𑒏𑒩𑒻 𑒕𑒻𑒟। 𑒋𑒛𑒦𑒰𑒢𑓂𑒮 𑒁𑒔𑒰 𑒣𑒰𑒃 𑒠𑓄 𑒠𑒹𑒢𑒹 𑒕𑒹𑒪𑒱𑒌𑒢। 𑒏𑒰𑒖 𑒦𑒹𑒪 𑒣𑒕𑒰𑒞𑒱 𑒖𑒐𑒢 𑒯𑒱𑒮𑒰𑒥 𑒏𑒩𑒋 𑒪𑒑𑒪𑒾 𑒞𑒐𑒢 𑒋𑒛𑒦𑒰𑒢𑓂𑒮 𑒣𑒰𑒃 𑒖𑒼𑒛𑓃𑒥𑒹 𑒕𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒠𑒹𑒢𑒹 𑒕𑒻𑒟।"

𑒩𑒰𑒧𑒪𑒰𑒪𑒏 𑒥𑒨𑒰𑒢 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒠𑒳𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿𑒪𑒰𑒪 𑒒𑒙𑒢𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒱𑒮𑒩𑒖𑒢𑒹 𑒏𑒩𑒥 𑒢𑒲𑒏 𑒥𑒳𑒗𑒪𑒻𑒢। 𑒖𑒿 𑒋𑒯𑒹𑒢-𑒋𑒯𑒹𑒢 𑒒𑒙𑒢𑒰𑒏 𑒑𑒱𑒢𑒞𑒲 𑒏𑒩𑒋 𑒪𑒑𑒥 𑒞𑒐𑒢 𑒖𑒹 𑒥𑒳𑒗𑒻 𑒕𑒲 𑒖𑒹 𑒂𑒃 𑒡𑒩𑒱 𑒔𑒾𑒠𑒯𑒼 𑒯𑒖𑒰𑒩 𑒪𑒛𑓃𑒰𑒃 𑒠𑒳𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿𑒏 𑒡𑒩𑒞𑒲𑒣𑒩 𑒦𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱, 𑒮𑒹 𑒥𑒰𑒞 𑒢𑒯𑒱 𑒁𑒕𑒱, 𑒋𑒏-𑒋𑒏 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒋𑒯𑒹𑒢 𑒃𑒞𑒱𑒯𑒰𑒮 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒔𑒾𑒠𑒯 𑒯𑒖𑒰𑒩𑒮𑒿 𑒥𑒹𑒮𑒲𑒋 𑒪𑒛𑓃𑒰𑒃 𑒦𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒐𑒰𑒋𑒩 𑒖𑒹 𑒁𑒕𑒱, 𑒒𑒙𑒢𑒰 𑒥𑒱𑒮𑒩𑒖𑒢 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒏𑒱𑒮𑒳𑒢 𑒪𑒰𑒪 𑒥𑒰𑒖𑒪𑒰-

"𑒦𑒰𑒨 𑒮𑒰𑒯𑒹𑒥, 𑒕𑒼𑒛𑓃𑒴 𑒌 𑒥𑒰𑒞𑒏𑒹𑒿। 𑒏𑒰𑒖𑒏 𑒥𑒹𑒩 𑒁𑒕𑒱 𑒁𑒣𑒢-𑒁𑒣𑒢 𑒠𑒳𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿 𑒠𑒹𑒐𑒋 𑒔𑒪𑒴।"

𑒠𑒱𑒢𑒳𑒏𑒰 𑒦𑒼𑒖𑒢 𑒏𑒩𑒻𑒪 𑒖𑒐𑒢 𑒏𑒰𑒧𑒹𑒮𑒩 𑒋𑒪𑒰 𑒞𑒐𑒢 𑒮𑒳𑒦𑒠𑓂𑒩𑒰 𑒦𑒼𑒖𑒢𑒹 𑒏𑒩𑒻𑒏𑒰𑒪 𑒥𑒖𑒪𑒲-

"ડૉનવાસ્કોવઉા ાીનૂ વય્યાકેં યેાાવની દૌ કહઉક શ્રછિ ળે પત્રસૂ યત્રા ળેં શ્રીસ નહિ ળિમા કત્રવ નેં વદ્યાિઉયસેં નકિાઉ દિવા"
ળહિનિા કોનો હંદાવાા કાનમે પડાિ હનકાત્રા દિશ્ય ાહિનિા કામેસત્રક મન હનૈક ૩ડઉૈન। હનૈક ૬ ૩ડઉૈન ળે શ્રપને કઉકાાાક શ્રોર કૌઉળમે પઢને છી ળશ્મે સુબાષ વાવૂ, વયિાનયન ત્રાય શ્રાદિ શ્રનેકો વંગાઉક ત્રાન પઢને છૈથ, પાની સેહો બાગઉપુત્રક ટોાનવો કૌઉળસેં ગ્રેળુએશન કેને છૈથ। ાૈડાિ વાઉ-વય્યાકેં ડૉનવાસ્કો સન વદ્યાિઉયસેં યેાાવની બોટ ત્રહઉ શ્રછિ!
કામેસત્રક મન ટુટય ઉાગઉૈન। ટુટૌ મન વનત્રળીદાદાક શ્રો વાા શ્રાર માનૈઉ ાૈયાત્ર બS ગેઉૈન શ્રછિ ળે વાા કામેસત્રકેં શ્ળીનયિનાગિ કૌઉળમે પ્રવેશ પવૈ દનિ વનત્રળીદાદા કહને છેઉબ્યાનિ ળે ' કામેસત્ર, દૃઢ સંકઉ્પ ઉ દૃઢ પથોક બ્યાગાા શ્રછિ, ળેં સે નહિ બોઉ ાબ્યન શ્રોર સંકઉપકેં ત્રહે-ળારક શ્રનશ્ચિયાાા વનઉ ત્રહૈય।'

-

- ળગદીશ પ્રસાદ માણ્ડઉળીક ળન્મ મધુવની ળઉિક વેત્રમા ગામમે ૫ ળુઉાઈ ૧૯૪૭ ઈસ્વીમે બેઉૈન। માણ્ડઉળી હનિદી એવં ત્રાળનીાિ શાસ્ાત્રમે એમ.એક શ્રહત્રાા પાવ ળીવકિોપાર્ળન હેાુ ક□ષ કાર્યમે સંઉગ્ન બS નૂયાિ પૂર્વક સમાળ સેવામે ઉાગ િગેઉા। સમાળમે વ્યાપ્ત ત્રૂઢવિાદિ એવં સામન્તી વ્યવહાર સામાળકિ વકિાસમે હનિકા વાયક વુહિ પડૈન। શ્રઉાઃ ળમીનદાર સામન્તક સંગ ગામમે પ્રત્રળોર ઉડાઈ ડાઢ બS ગેઉૈન। શ્રઉાઃ માણ્ડઉળી શ્રપન ળીવનક શ્રયકિાંશ સમય કેસ- મોકદમા, ળહઉ યાાત્રાદમિ વ્યાીા કેઉાહ। ૨૦૦૧ ઈસ્વીક પછારા સાહત્યિ ઉેબ્યન- ક્ષેત્રમે એઉા। ૨૦૦૮ ઈસ્વીસેં વભિનિ્ન પત્ર- પત્રકાિદમિ હનિક રચના પ્રકાશાિ હુશ્ર ઉાગઉૈન। ગીા, કાવ્ય, નાટક, એકાંકી, કથા, ૩પન્યાસ ઈત્યાદિ સાહત્યિક મૌઉકિ વયિામે હનિક શ્રનવરાા ઉેબ્યન શ્રદ્વાિીય સદ્યિ બS ત્રહૈન શ્રછિ। શ્રબ્યન યનિ દર્ળન બનિ નાટક/એકાંકી, પાંચ સાએસેં ઊપર ગીાકાવ્ય, ૩ન્નૈસ ગોટ

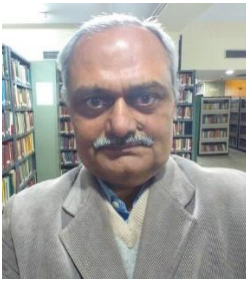
ઉપન્યાસ આ સાઢ઼ે આઠસાએ કથા- કહાનીક સંગ કિછુ મહત્વપૂર્ણ વિષયક શોધાલેખ આદિક પુસ્તકાકાર, સાએસઁ ઊપર ગ્રન્થમે પ્રકાશિત છૈન। મિથિલા- મૈથિલીક વિકાસમે શ્રી જગદીશ પ્રસાદ મણ્ડલજીક યોગદાન અવિસ્મરણીય છૈન। ઈ અપન સતત ક્રિયાશીલતા આ રચના ધર્મિતાક લેલ વિભિન્ન સંસ્થાસભક દ્વારા સમ્માનિત/પુરસ્ક□ત હોઇત રહલ અછિ, યથા- વિદેહ સમ્પાદક મણ્ડલ દ્વારા "ગામક જિનગી" લઘુ કથા સંગ્રહ લેલ "વિદેહ સમ્માન- ૨૦૧૧", "ગામક જિનગી કે સમગ્ર યોગદાન હેતુ સાહિત્ય અકાદેમી દ્વારા- "ટૈગોર લિટરેચર એવાર્ડ- ૨૦૧૧", મિથિલા મૈથિલીક ઉન્નયન લેલ સાક્ષર દરભંગા દ્વારા- "વૈદેહ સમ્માન- ૨૦૧૨", વિદેહ સમ્પાદક મણ્ડલ દ્વારા "નૈ ધારૈ" ઉપન્યાસ લેલ "વિદેહ બાલ સાહિત્ય પુરસ્કાર- ૨૦૧૪", સાહિત્યમે સમગ્ર યોદાન લેલ એસ.એન.એસ. ગ્રૂપ બેલગ સેમિનરી દ્વારા "કૌશિકી સાહિત્ય સમ્માન- ૨૦૧૫", મિથિલા- મૈથિલીક વિકાસ લેલ સતત ક્રિયાશીલ રહબાક હેતુ અખિલ ભારતીય મિથિલા સંઘ દ્વારા- "વૈદ્યનાથ મિશ્ર "યાત્રી" સમ્માન- ૨૦૧૬", રચના ધર્મિતાક ક્ષેત્રમે અમૂલ્ય યોગદાન હેતુ જ્યોત્સના- મણ્ડલ દ્વારા- "કૌમુદી સમ્માન- ૨૦૧૭", મિથિલા- મૈથિલીક સંગ અન્ય ઉત્ક□ષ્ટ સેવા લેલ અખિલ ભારતીય મિથિલા સંઘ દ્વારા "સ્વ. બાબૂ સાહેબ ચૌધરી સમ્માન- ૨૦૧૮", ચેતના સમિતિ, પટનાક પ્રસિદ્ધિ "યાત્રી ચેતના પુરસ્કાર- ૨૦૨૦", મૈથિલી સાહિત્યક અહર્નિશ સેવા આ સ□જન હેતુ મિથિલા સાંસ્ક□તિક સમન્વય સમિતિ, ગુવાહાટી- અસમ દ્વારા "રાજકમલ ચૌધરી સાહિત્ય સમ્માન- ૨૦૨૦", ભારત સરકાર દ્વારા "સાહિત્ય અકાદેમી પુરસ્કાર- ૨૦૨૧" તથા સાહિત્ય આ સંસ્ક□તિમે મહત્વપૂર્ણ અવદાન લેલ અમર શહીદ રામફલ મંડલ વિચાર મંચ દ્વારા "અમર શહીદ રામફલ મંડલ રાષ્ટ્રીય પુરસ્કાર- ૨૦૨૨"

રચના સંસાર : ૧ ઇન્દ્રધનુષી અકાસ, ૨ રાતિ- દિન, ૩ તીન જેઠ એગારહમ માઘ, ૪ સરિતા, ૫ ગીતાંજલિ, ૬ સુખાએલ પોખરિક જાઇડ, ૭ સતબેધ, ૮ ચુનૌતી, ૯ રહસા ચૌરી, ૧૦ કામધેનુ, ૧૧ મન મથન, ૧૨ અકાસ ગંગા- કવિતા સંગ્રહ। ૧૩ પંચવટી- એકાંકી સંચયન। ૧૪ મિથિલાક બેટી, ૧૫

કમ્પ્રોમાઇઝ, ૧૬ ઝમેલિયા બિઆહ, ૧૭ રત્નાકર ડકૈત, ૧૮ સ્વયંવર- નાટક। ૧૯ મૌલાઇલ ગાછક ફૂલ, ૨૦ ઉત્થાન- પતન, ૨૧ જિનગીક જીત, ૨૨ જીવન- મરણ, ૨૩ જીવન સંઘર્ષ, ૨૪ નૈ ધાડૈએ, ૨૫ બડકી બહિનિ, ૨૬ ભાદવક આઠ અન્હાર, ૨૭ સધવા- વિધવા, ૨૮ ઠૂઠ ગાછ, ૨૯ ઇજ્જત ગમા ઇજ્જત બઁચેલૌં, ૩૦ લહસન, ૩૧ પંગુ, ૩૨ આમક ગાછી, ૩૩ સુચિતા, ૩૪ મોડપર, ૩૫ સંકલ્પ, ૩૬ અન્તિમ ક્ષણ, ૩૭ કુહેસ- ઉપન્યાસ। ૩૮ પયસ્વિની- પ્રબન્ધ- નિબન્ધ- સમાલોચના। ૩૯ કલ્યાણી, ૪૦ સતમાએ ૪૧ સમઝૌતા, ૪૨ તામક તમઘૈલ, ૪૩ બીરાંગના- એકાંકી। ૪૪ તરેગન, ૪૫ બજન્તા- બુઝન્તા- બીહનિ કથા સંગ્રહ। ૪૬ શંભુદાસ, ૪૭ રટની ખઢ- દીર્ઘ કથા સંગ્રહ। ૪૮ ગામક જિનગી, ૪૯ અર્દ્ધાંગિની, ૫૦ સતભૈયા પોખૈર, ૫૧ ગામક શકલ સૂરત, ૫૨ અપન મન અપન ધન, ૫૩ સમરથાઇક ભૂત, ૫૪ અપ્પન- બીરાન, ૫૫ બાલ ગોપાલ, ૫૬ ભકમોડ, ૫૭ ઉલબા ચાઉર, ૫૮ પતઝાડ, ૫૯ ગઢૈનગર હાથ, ૬૦ લજબિજી, ૬૧ ઉકડૂ સમય, ૬૨ મધુમાછી, ૬૩ પસેનાક ધરમ, ૬૪ ગુડા- ખુદ્દીક રોટી, ૬૫ ફલહાર, ૬૬ ખસૈત ગાછ, ૬૭ એગચ્છા આમક ગાછ, ૬૮ શુભચિન્તક, ૬૯ ગાછપર સઁ ખસલા, ૭૦ ડભિયાએલ ગામ, ૭૧ ગુલેતી દાસ, ૭૨ મુડિયાએલ ઘર, ૭૩ બીરાંગના, ૭૪ સમ□ત શિવ, ૭૫ બેટીક પૈરુખ, ૭૬ કૃતાન્તયોગ, ૭૭ ત્રિકાલદર્શી, ૭૮ પૈંતીસ સાલ પછુઆ ગેલૌં, ૭૯ દોહરી હાક, ૮૦ સુભિમાની જિનગી, ૮૧ દેખલ દિન, ૮૨ ગપક પિયાહુલ લોક, ૮૩ દિવાલીક દીપ, ૮૪ અપ્પન ગામ, ૮૫ ખિલતોડ ભૂમિ, ૮૬ ચિતવનક શિકાર, ૮૭ ચૌરસ ખેતક ચૌરસ ઉપજ, ૮૮ સમયસઁ પહિને ચેત કિસાન, ૮૯ ભૌક, ૯૦ ગામક આશા ટુટિ ગેલ, ૯૧ પસેનાક મોલ, ૯૨ ક□ પયોગ, ૯૩ હારલ ચેહરા જીતલ રૂપ, ૯૪ નૈ છોડબ પતવાર, ૯૫ કર્તાક રંગ કર્મક સંગ, ૯૬ ગામક સૂરત બદલિ ગેલ, ૯૭ અન્તિમ પરીક્ષા, ૯૮ ઘરક ખર્ચ, ૯૯ નીક ડગાન ડકેલૌં, ૧૦૦ જીવનક કર્મ જીવનક મર્મ, ૧૦૧ સંગ્રામ, ૧૦૨ ભાર મન કાજ, ૧૦૩ આએલ આશા ચલિ ગેલ, ૧૦૪ જીવન દાન તથા ૧૦૫ અપ્પન સાતી- લઘુ કથા સંગ્રહ।

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨 ggajendra@videha.com **𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।**

𑓒.𑓑.𑒩𑒫𑒲𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒢𑒰𑒩𑒰𑒨𑒝 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩- 𑒧𑒰𑒞𑒵𑒦𑒴𑒧𑒱 (𑒅𑒣𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮) - 𑓒𑓑 𑒧 𑒐𑒹𑒣



रवीन्द्र नारायण मिश्र

मातृभूमि (उपन्यास) २१ म खेप

२१

दोसर दिन भोरे नागबाबा पाठशाला आबि जयन्तसँ भेंट केलनि।

"हम वापस जानकीधाम जा रहल छी। मोन भेल जे जएबासँ पहिने अहाँक भेंट केने चली।"

"अहाँ अएलहुँ तँ हमरा बहुत उत्साह भेल। हमरा इच्छा छल जे अहाँक सामनेमे पाठशालाक काजकेँ आगू कएल जाए। एक बेर शुरु भए जेतैक तँ चलैत रहतैक।"

"ओक आसान बात नहि अछि। एहिठाम बहुत तरहक बातसभ छैक। एहिमे बड़का-बड़का लोकसभक हाथ छैक। अहाँक शोधग्रंथ लए कए सेहो बहुत षड़यंत्र भए रहल अछि। अहाँकेँ तँ स्वयं बुझल अछि जे जानकीधाम धरि ई लठैतसभ अहाँक पछोड़ केने छल। "

"तखन की कएल जाए?"

"हमरा विचारसँ एहि शोधग्रंथकेँ कालीकान्त लग पठा दिऔक । ओतहि एकर विमोचनो होएत आ तकरबाद आगूक कार्यक्रम सेहो तैयार कएल जाएत ।"

"मुदा ई कालीकान्त लग जाएत कोना?"

"बढ़िआँ होएत जे अहाँ हमरे संगे चलितहुँ । तावे एहूठाम माहौल शांत हेतैक ।"

"ठीक छैक। "

साँझमे जयन्त नागबाबाक संगे शोधग्रंथ लए विदा भए गेलाह । जयन्तके नागबाबा संगे जाइत देखि सौंसे उतरविराटिल उलटि गेल । सबकेँ भेलैक जे जयन्त तंग भए लखनपुर छोड़ि रहल छथि। ओना ई बात जयन्त ककरो कहने नहि रहथिन । ककरो पतो नहि चललैक। मुदा जखन नागबाबाक संगे थानाक कात ओ पहुँचलाह तँ सुधाकर अपन लठैतसबक संगे थानासँ छुटि कए आबि रहल छल । हिनका लोकनिकेँ जाइत देखि ओकर प्रसन्नताक अंत नहि छल ।

"नागबाबा! धन्य छी अहाँ । ई काज तँ पहिने केने रहितहुँ तँ एतेक अवसाद नहि होइत । धैर! कोनो बात नहि। हम तँ जयन्तकेँ पहिने कहने रहिऐक जे गामक वातावरण ओकरा सन विद्वानकेँ रहए जोगर नहि अछि। ओकरा जानकीधाममे रहब ठीक हेतैक । ओहुना आब पाठशाला के जाइत अछि? चारूकात अंग्रेजी माध्यमक स्कूलसब खुजि गेल छैक । लोक देहो बेचि कए अपन बाल-बच्चाकेँ पब्लिक स्कूलमे पढ़बए चाहैत अछि।"

"𑒑𑒰𑒧𑒫𑒰𑒪𑒰 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒢𑒯𑒱 𑒖𑒫𑒰𑒥 𑒠𑒹𑒪𑒐𑒱𑒢, 𑒢𑒹 𑒖𑒨𑒢𑓂𑒞 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒥𑒖𑒪𑒰𑒯। 𑒮𑒳𑒡𑒰𑒏𑒩 𑒥𑒜𑓃𑒱𑒨𑒰𑒿 𑒧𑒳𑒠𑓂𑒩𑒰𑒧𑒹 𑒪𑒼𑒏𑒮𑒦𑒏 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒂𑒑𑒴 𑒥𑒜𑓃𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯। 𑒑𑒰𑒧𑒮𑒿 𑒖𑒨𑒢𑓂𑒞𑒏 𑒖𑒋𑒥𑒰𑒏 𑒮𑒧𑒰𑒔𑒰𑒩 𑒏𑓂𑒩𑒧𑒬𑓁 𑒮𑒾𑓀𑒮𑒹 𑒣𑒮𑒩𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒄 𑒥𑒰𑒞 𑒑𑒼𑒫𑒱𑒢𑓂𑒠𑒏 𑒏𑒰𑒢 𑒡𑒩𑒱 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒪। 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒻𑒏 𑒩𑒯𑒻𑒏। 𑒟𑒼𑒛𑓃𑒥𑒹 𑒏𑒰𑒪𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒑𑒼𑒫𑒱𑒢𑓂𑒠𑒏 𑒧𑒰𑒡𑒫𑒮𑒿 𑒦𑒹𑓀𑒙 𑒦𑒹𑒪𑒢𑒱।

"𑒖𑒨𑒢𑓂𑒞 𑒑𑒰𑒧 𑒕𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒏𑒋 𑒖𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒟𑒱"-𑒑𑒼𑒫𑒱𑒢𑓂𑒠 𑒥𑒖𑒪𑒰𑒯।

' 𑒮𑒹 𑒞𑒿 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒥𑒳𑒗𑒪𑒯𑒏? - 𑒧𑒰𑒡𑒫 𑒣𑒳𑒕𑒪𑒏𑒢𑒱।

"𑒮𑒾𑓀𑒮𑒹 𑒑𑒰𑒧𑒧𑒹 𑒯𑒪𑓂𑒪𑒰 𑒕𑒻𑒏। 𑒪𑒼𑒏𑒮𑒦 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒣𑒩 𑒏𑒩𑒧𑒰𑒢 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒩𑒼𑒏𑒥𑒰𑒏 𑒂𑒑𑓂𑒩𑒯 𑒏𑒋 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱।"

"𑒞𑒿 𑒏𑒲 𑒍 𑒧𑒰𑒢𑒱 𑒢𑒯𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒟𑒱?"

"𑒔𑒪𑒯 𑒢𑒹। 𑒍𑒞𑒯𑒱 𑒖𑒰 𑒏𑒋 𑒮𑒦 𑒥𑒰𑒞𑒏 𑒖𑒰𑒢𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒦𑒹𑒙𑒱 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 ।"

𑒧𑒰𑒡𑒫 𑒂 𑒑𑒼𑒫𑒱𑒢𑓂𑒠 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒏 𑒏𑒰𑒞 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒍𑒯𑒚𑒰𑒧 𑒪𑒐𑒢𑒣𑒳𑒩 𑒠𑒴𑒢𑒴𑒙𑒼𑒪𑒏 𑒪𑒼𑒏𑒏 𑒏𑒩𑒧𑒰𑒢 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒕𑒪। 𑒮𑒦 𑒋𑒞𑒥𑒹 𑒥𑒰𑒖𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪 -

"𑒄 𑒞𑒿 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒐𑒩𑒰𑒥 𑒦𑒹𑒪। 𑒋𑒯𑒢 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒫𑒰𑒢 𑒪𑒼𑒏𑒏𑒹𑒿 𑒁𑒣𑒢 𑒛𑒲𑒯-𑒛𑒰𑒥𑒩 𑒕𑒼𑒛𑓃𑒋 𑒣𑒛𑓃𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒻𑒏।"

𑒦𑒲𑒛𑓃𑒏𑒹𑒿 𑒔𑒲𑒛𑓃𑒻𑒞 𑒠𑒳𑒢𑒴𑒑𑒼𑒙𑒹 𑒖𑒨𑒢𑓂𑒞 𑒪𑒑 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒪𑒰𑒯। 𑒍 𑒮𑒦 𑒖𑒨𑒢𑓂𑒞𑒏 𑒣𑒻𑒩 𑒣𑒩 𑒐𑒮𑒱 𑒣𑒛𑓃𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱।

"𑒯𑒧 𑒏𑒟𑒱𑒢𑓂𑒯𑒳 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒰𑒣𑒮 𑒢𑒯𑒱 𑒖𑒰𑒋 𑒠𑒹𑒥। 𑒄 𑒞𑒿 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒦𑒰𑒩𑒲 𑒁𑒢𑓂𑒨𑒰𑒨 𑒯𑒼𑒋𑒞। 𑒯𑒧𑒩𑒰𑒮𑒦𑒏𑒹𑒿 𑒖𑒲𑒥𑒻𑒞 𑒄 𑒏𑒠𑒰𑒣𑒱 𑒢𑒯𑒱 𑒯𑒼𑒋𑒞।"

"અહાઁસભ પ૧ેસાન નહિ હોઉ। થોડ઼ેદનિક વાદ ળયહ્ન સ્વયં ગામ વ઼ાપસ આવિ ળેતાહ। ળાનકીયામમે કછિુ ળૂ૧ી કાળ છની તક૧વાદ આગૂક વાત- વ઼યિા૧ ક૯ઊ ળેતૈક।"

" ળઁ હ્મ૧ા દુનૂગોટેકેઁ સંગે ળ૯વાક અનુમતિ દિથ તિપ્યને હનિકા ળા૯ દેવની।"

"કોનો હ્૧ળ નહિ। ળઁ અહાઁ સભકેઁ સ૯હ ૨ય્છા અછિ તઁ યઊ સકૈત છી। મુદા ગૌવ઼ાસભકેઁ તઁ મનાઉ।"

ગોવ઼દિ, આ માયવ઼ ળયહ્ન આ નાગવાવાક સંગે વદિા ભ૯ ગેઊાહ। ગૌવ઼ાસભ વડ઼ીકાઊ ય૧ા ઈ દ઼ૃશ્ય઼ દેપ્યૈત ૧હિ ગેઊાહ।

-૧વીન્દ્૧ ના૧ાયઌ મશ્િ૧, પતાિક નામ: સ્વ઼્૧ગીય઼ સૂ્૧ય઼ ના૧ાયઌ મશ્િ૧, માતાક નામ: સ્વ઼્૧ગીયા દયાકાશી દેવ઼ી□ વ૯સ: ૬૮ વ઼્૧ષ, પૈત□ક ગ્૧ામ: અ઼ડે૧ ડીહ, માત□ક: સનિ્ઘાિઆ ડ્યોઢ઼ી, વ઼□તિ: ભા૧ત સ૧કા૧ક ઉપ સચવિ઼ (સેવ઼ાનવિ઼□ત્ત), સ્પેશઊ મેટ્૧ોપોઊટિન મળસ્િટ્૧ેટ, દલ્િઊી(સેવ઼ાનવિ઼□ત્ત), શક્િષા: યન્દ્૧યા૧ી મથિિલા મહાવ઼દ્િયાઊય઼સઁ વ઼ી૯સ-સ઼ી ભૌતકિ વ઼જ્ઞિાનમે પ્૧તષ્િઠા : દલ્િઊી વ઼શ્િવ઼વ઼દ્િયાઊય઼સઁ વ઼ધિ સ્નાતક, પ્૧કાશતિ ક□તિ: મૈથઊીમે: પ્૧કાશન વ઼્૧ષ:૨૦૧૭ ૧઼ભો૧સઁ સાઁહ ય૧ા (આત્મ કથા□□૨઼ પ્૧સંગવ઼શ (નવિ઼ંય□□ ૩઼સ્વ઼્૧ગ એતહિ અછિ (યાત્૧ા પ્૧સંગ); પ્૧કાશન વ઼્૧ષ:૨૦૧૮ ૪઼ શ્ુસાદ (કથા સંગ્૧હ□ ૫઼ નમસ્તસ્યૈ (ઉપન્યાસ□ ૬઼ વ઼વિ઼િયિ પ્૧સંગ (નવિ઼ંય□ ૭઼મહ૧ાળ(ઉપન્યાસ□ ૮઼ઊળકોટ૧(ઉપન્યાસ); પ્૧કાશન વ઼્૧ષ:૨૦૧૯ ૯઼સીમાક ઓહિ પા૧(ઉપન્યાસ□૧૦઼સમાયાન(નવિ઼ંય સંગ્૧હ□ ૧઼૧માત□ભૂમિ(ઉપન્યાસ□ ૧઼૨સ્વ઼પ્નઊોક(ઉપન્યાસ); પ્૧કાશન વ઼્૧ષ:૨૦૨૦ ૧઼૩શંખનાદ(ઉપન્યાસ□ ૧઼૪૨૯હ થકિ ળીવ઼ન(સંસ્મ૧ણ□૧઼૫ઢહૈત દેવાઊ(ઉપન્યાસ); પ્૧કાશન વ઼્૧ષ:૨૦૨૧ ૧઼૬પાથેય઼(સંસ્મ૧ણ□ ૧઼૭હમ આવ઼િ ૧હઊ છી(ઉપન્યાસ□ ૧઼૮પ્૧ઊયક પ૧ાત(ઉપન્યાસ); પ્૧કાશન વ઼્૧ષ:૨૦૨૨

૧૮વીતાિગેઉ સમય(ઉપન્યાસ□ ૨૦પ્નાતવિમ્રિવ(ઉપન્યાસ□ ૨૧વદઉિનૅહઉ શ્રછિ સમકછ્રિ(ઉપન્યાસ□ ૨૨નાષ્ટ્ન મંદતિ(ઉપન્યાસ□ ૨૩સંયોગ(કથા સંગ્નહ□ ૨૪નાયિનૅહઉ છઉિ વ્રસુયા(ઉપન્યાસ) ।

શ્રપન મંતવ્યૅ દતિોનાિઉસતાઙ્વ્રદિહા૦ગ્માિઉયોમ **પન પડાઉ।**

૨૧૧ણાનાયામ યાદવક પ ટા કથા- કથા-૧ ળશ્પન સમ્પાદકીય સમીક્ષા શ્રંગ્પેળીમે સમ્પાદકીય પ□ષ્ડ પન

<u>વ્રદિહક ઉપ્પકક શ્રામંત્નાિ નયના શ્રા શ્રોશ્પન સમીક્ષા સીનીળ</u>

ઐ શ્રંકમે પ્નસ્તુત શ્રછિ ણાનાયામ યાદવક પ ટા કથા ળશ્પન હમન સમીક્ષા શ્રંગ્પેળીમે સમ્પાદકીય પ□ષ્ડ પન શ્રછિ - સમ્પાદક



નાગાયમ યાદવક ૫ ટા કથા

કથા ૧

નવકી પુતોહુ

આનન્દક વિઆહ વડ઼ ધૂમ-ધામસઁ ભેલ છલ। કનિયાઁ અતિ સુન્દરિ, તઁએ દાની-દહેજ કમે ભેટલ છેલૈન। આનન્દક પતિશ્રીક ઘોષણા છલ-

"કદ ઊઁચી, નાક લમ્વી ઓર રંગ ગોરી હો તો આઓ, નહીં તો વાહર જાઓ।"

અહી અધારપર કનિયાઁક ચુનાવ ભેલ છલ। કનિયાઁક આગત-ભાગતમે આનન્દક માએ રાધાદેવી પરેશાન છેલી। મનમે હોઇત રહૈન જે પુતોહુ ઓત તઁ કામ-કાજમે મદદ કરત। સેવા સુશ્રુષા કરત। ભાનસ-ભાત કરત। માલ-જાલક દેખ-રેખ સેહો કરત। વાધસઁ આએવ તઁ એક લોટા પાનિ લાવત આ વેનિ હૌકત। આદિ-આદિ સિબ ટહલ-ટકિોરા કરત।

આર આનન્દક માએ રાધા દેવી વડ઼ ખુશ છૈથ। ખુશ ૅઐ લેલ નહિ જે આનન્દ કનિયાઁ લએ કડ આવિ રહલ છૈથ, ખુશ ૅઐ લેલ જે આનન્દ વિઆહ કરૈલ તૈયાર નહિ ભડ રહલ છલ। વિઆહોક ઉમર હોઇ છઇ। ઉમર ઢરલ જા રહલ છેલઇ। ઓ વિઆહ નઇ કરવાક હેતુ અનેકો વહાના વના રહલ છલ। કહૈત છલ ૅઐગલ

𑒮𑒰𑒪 𑒏𑒩𑒥, 𑒂 𑒖𑒐𑒢 𑒋𑒑𑒰𑒪 𑒮𑒰𑒪 𑒂𑒋𑒪 𑒞𑒿 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒋𑒑𑒰𑒪 𑒮𑒰𑒪𑒏 𑒥𑒯𑒰𑒢𑒰 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒻 𑒕𑒪। 𑒧𑒰𑒨𑒰𑒏 𑒂𑒑𑓂𑒩𑒯𑒣𑒩 𑒥𑒱𑒂𑒯𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒞𑒻𑒨𑒰𑒩 𑒦𑒹𑒪 𑒕𑒪। 𑒞𑒿𑒋 𑒧𑒰𑒨𑒰 𑒐𑒳𑒬 𑒕𑒹𑒪𑒲।

𑒍 𑒠𑒱𑒢 𑒂𑒥𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒖𑒐𑒢 𑒂𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒒𑒩 𑒁𑒢𑒪𑒏। 𑒧𑒼𑒙𑒩 𑒑𑒰𑒛𑓃𑒲𑒏 𑒁𑒫𑒰𑒖 𑒮𑒳𑒢𑒱𑒞𑒹 𑒁𑒛𑓃𑒼𑒮-𑒣𑒛𑓃𑒼𑒮𑒏 𑒠𑒰𑒃-𑒧𑒰𑒃 𑒪𑒼𑒏𑒻𑒢 𑒮𑒦 𑒁𑒣𑒢-𑒁𑒣𑒢 𑒏𑒰𑒧-𑒏𑒰𑒖 𑒕𑒼𑒛𑓃𑒱-𑒕𑒰𑒛𑓃𑒱 𑒏𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿 𑒠𑒹𑒐𑒋 𑒂𑒥𑒋 𑒪𑒑𑒪𑒲। 𑒢𑒢𑒾𑒩𑒫𑒰𑒪𑒲 𑒮𑒰𑒑𑒧𑒹 𑒮𑒿 𑒁𑒙𑒏𑒲-𑒧𑒙𑒏𑒲 𑒥𑒲𑒕𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒹𑒪𑒲। 𑒍𑒯𑒼 𑒮𑒦 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒕𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒠𑒾𑒑𑒪 𑒋𑒪𑒲।

𑒥𑒾𑒂𑒫𑒰𑒪𑒲 𑒥𑒔𑓂𑒔𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒠𑒴𑒡 𑒣𑒱𑒨𑒰𑒥𑒻𑒞 𑒕𑒹𑒪𑒲 𑒮𑒹 𑒥𑒔𑓂𑒔𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒪𑒹𑒢𑒯𑒱 𑒠𑒾𑒑𑒪𑒲। 𑒯𑒩𑒛𑓃𑒲𑒫𑒰𑒪𑒲 𑒂 𑒜𑒰𑒜𑓃𑒲𑒫𑒰𑒪𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒂𑒧𑒏 𑒙𑒳𑒏𑒪𑒰 𑒪𑒹𑒪 𑒗𑒑𑒛𑓃𑒰 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒩𑒯𑒻, 𑒍𑒯𑒼 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒑𑒼𑒙𑒹 𑒗𑒑𑒛𑓃𑒰 𑒕𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒏𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿 𑒠𑒹𑒐𑒋 𑒪𑒣𑒏𑒪 𑒥𑒱𑒠𑒰 𑒦𑒹𑒪𑒲। 𑒧𑒰𑒨𑒰 𑒥𑒩𑒞𑒢 𑒧𑒰𑒖𑒻 𑒕𑒹𑒪𑒲। 𑒥𑒩𑒞𑒢 𑒧𑒰𑒖𑒥 𑒕𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒏𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿𑒏 𑒣𑒩𑒱𑒕𑒢 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒮𑒰𑒧𑒑𑓂𑒩𑒲 𑒍𑒩𑒱𑒨𑒰𑒥𑒋 𑒪𑒑𑒪𑒲। 𑒮𑒦 𑒠𑒰𑒃-𑒧𑒰𑒃 𑒖𑒧𑒰 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪𑒲। 𑒧𑒰𑒟𑒣𑒩 𑒠𑒲𑒢𑒰 𑒖𑒩𑒧𑒹 𑒠𑒲𑒣 𑒖𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒹𑒪, 𑒪𑒨 𑒧𑒢𑒾𑒞 𑒥𑒢𑓂𑒯𑒢𑒹 𑒑𑒲𑒞 𑒑𑒥𑒻𑒞 𑒧𑒼𑒙𑒩 𑒑𑒰𑒛𑓃𑒲 𑒪𑒑, 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒪𑒲। 𑒑𑒲𑒞𑒏 𑒥𑒼𑒪 𑒕𑒪-

"𑒋𑒯𑒹 𑒬𑒳𑒦-𑒏𑒹 𑒪𑒑𑒢𑒧𑒰 𑒬𑒳𑒦𑒹 𑒯𑒹 𑒬𑒳𑒦𑒹। "

𑒣𑒰𑒿𑒔-𑒮𑒰𑒞 𑒑𑒼𑒙 𑒮𑒡𑒫𑒰 𑒧𑒾𑒑𑒲 𑒮𑒦 𑒏𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿𑒏 𑒣𑒩𑒱𑒕𑒢 𑒏𑒹𑒪𑒏। 𑒞𑒏𑒩 𑒥𑒰𑒠 𑒏𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿𑒏 𑒢𑒢𑒻𑒠 𑒩𑒴𑒣𑒧 𑒠𑒰𑒃 𑒏𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿-𑒥𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒂𑒿𑒑𑒢 𑒪𑒋 𑒑𑒹𑒪। 𑒖𑒞𑒹𑒏 𑒠𑒰𑒃-𑒧𑒰𑒃 𑒪𑒼𑒏𑒻𑒢 𑒂𑒋𑒪 𑒕𑒹𑒪𑒲 𑒍 𑒮𑒦 𑒁𑒣𑒢-𑒁𑒣𑒢 𑒒𑒩 𑒠𑒱𑒮𑒱 𑒥𑒱𑒠𑒰 𑒦𑒹𑒪𑒲।

𑒥𑒰𑒙𑒧𑒹 𑒏𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿𑒏 𑒙𑒱𑒏𑒰-𑒙𑒱𑒣𑓂𑒣𑒝𑒲 𑒬𑒳𑒩𑒴 𑒦𑒹𑒪। 𑒮𑒮𑒱𑒫𑒰𑒩𑒫𑒰𑒪𑒲 𑒏𑒰𑒏𑒲 𑒖𑒹 𑒮𑒦𑒮𑒿 𑒥𑒳𑒖𑒳𑒩𑓂𑒑𑒰 𑒕𑒹𑒪𑒲 𑒍 𑒥𑒖𑒪𑒲-

"𑒑𑒹 𑒠𑒰𑒃, 𑒂𑒃 𑒞𑒏 𑒋𑒯𑒹𑒢 𑒏𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿 𑒢𑒃 𑒠𑒹𑒐𑒢𑒹 𑒩𑒯𑒲। 𑒠𑒹𑒐𑒯𑒱 𑒢𑒹 𑒏𑒹𑒏𑒩𑒼 𑒠𑒹𑒐 𑒏𑓄 𑒧𑒰𑒟𑒼 𑒗𑒿𑒣𑒪𑒏𑒻। 𑒯𑒧𑒩 𑒣𑒳𑒞𑒼𑒯𑒳 𑒋𑒯𑒹𑒢 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒢𑒹 𑒞𑒿 𑒕𑒰𑒅𑒩 𑒪𑒑𑒰 𑒏𑓄 𑒖𑒲 𑒣𑒲𑒨 𑒠𑒻𑒞𑒱𑒌। 𑒏𑒯𑒴 𑒞𑒿 𑒮𑒮𑒳𑒩𑒼𑒏 𑒪𑒰𑒖 𑒏𑒹𑒪𑒏𑒻। "

𑒢𑒢𑒾𑒩𑒫𑒰𑒪𑒲 𑒥𑒖𑒪𑒲-

"એોકટા કહિ મૌગી હેર છર! "

ગૈપન બેળાવાહી વળઉિ-

"પોડ કેહેન યાકન- યૌનસ છૈ, ળેના ગામા પહઉમાન હેર! "

ગુઉછન્ના છોડ઼ૈગ સબ અપન- અપન ઘન ગેઉ। નાયા બનસા ઘનમે ળા વેટા- પુગોહુક ઉઉ પૂવ નીક ગીમન- ગનકાની વનૌઉક। પાપડ઼, ગઉિની, ગઉિકોનક ગનૂઆ યાગીમે સળા વેટા આનન્દ આ પુગોહુ સુઉપ્પા ઉઉ આોકના કોડઉિમે પહુઁચઉિ।

માએકેઁ દેપ્પગે આનન્દ વાળઉ-

"માએ, અપ્પન આડો નહિ વાળઉ અછિ આ તૂઁ પ્પાના ઉS કS આવિ ગેઉઁ। "

નાયા વળઉિ-

"હઁ વેટા, કનિયાઁ ળે આએઉ અછિ। નહિ ળાનિ કનિયાઁ કપ્પન બોળન કેને હેગી। "

વળૈગ નાયા ટેવુઉપન યાગી નાપ્પિ યાપાકઉપન સઁ એક ઉટા ળઉ આ એકટા ગઉિાસ સેહો આનિ કિS ટેવુઉપન નાપ્પિ દેઉક।

આનન્દ આ આોકન પગ્ની સુઉપ્પા દુનૂ ગોગે બોળન કનએ ઉગઉ। સુઉપ્પા વળઉિ-

"બોળન કે વનૌઉક અછિ। "

આનન્દ કહઉકૈ-

"બોળન માઁ વનેને હેગી। "

𑒮𑒳𑒪𑒹𑒐𑒰 𑒥𑒖𑒪𑒲-

"𑒐𑒰𑒢𑒰 𑒥𑒢𑒥𑒻𑒪 𑒢𑒾𑒏𑒩𑒰𑒢𑒲 𑒢𑒯𑒱 𑒩𑒐𑒢𑒹 𑒕𑒲। 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒍𑒞𑒋 𑒞𑒿 𑒂𑒿𑒑𑒢𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒢𑒾𑒏𑒩𑒰𑒢𑒲 𑒂 𑒠𑒩𑒥𑒖𑓂𑒖𑒰 𑒣𑒩𑒯𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒢𑒾𑒏𑒩 𑒁𑒕𑒱। "

𑒂𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒂 𑒮𑒳𑒪𑒹𑒐𑒰 𑒦𑒼𑒖𑒢 𑒏𑒩𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒪।

𑒩𑒰𑒡𑒰 𑒥𑒲𑒔-𑒥𑒲𑒔𑒧𑒹 𑒂𑒥𑒱 𑒣𑒩𑒮𑒢 𑒠𑒋 𑒠𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒟𑒱𑒢𑒱। 𑒦𑒼𑒖𑒢 𑒮𑒧𑒰𑒣𑓂𑒞 𑒦𑒹𑒪। 𑒩𑒰𑒡𑒰 𑒖𑒴𑒚 𑒤𑒹𑒩𑒰 𑒋𑒏 𑒖𑒑 𑒣𑒰𑒢𑒱 𑒂 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒑𑒱𑒪𑒰𑒮 𑒂𑒢𑒱 𑒙𑒹𑒥𑒳𑒪𑒣𑒩 𑒩𑒰𑒐𑒱 𑒠𑒹𑒪𑒐𑒱𑒢𑒱।

𑒂𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒂 𑒮𑒳𑒪𑒹𑒐𑒰 𑒣𑒴𑒩𑒥-𑒣𑒔𑓂𑒕𑒱𑒧𑒏 𑒑𑒣-𑒮𑒣𑓂𑒣 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒏𑒐𑒢 𑒮𑒳𑒞𑒪𑒲 𑒮𑒹 𑒩𑒰𑒡𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒥𑒳𑒗𑒱 𑒮𑒏𑒪𑒲।

𑒩𑒰𑒡𑒰 𑒦𑒼𑒩𑒹 𑒅𑒚𑒱 𑒁𑒿𑒑𑒢𑒰-𑒠𑒩𑒥𑒖𑓂𑒖𑒰𑒧𑒹 𑒗𑒰𑒛𑓃𑒴 𑒪𑒑𑒾𑒪𑒏। 𑒒𑒩 𑒂 𑒂𑒿𑒑𑒢𑒧𑒹 𑒤𑒱𑒢𑒰𑒃𑒪𑒥𑒪𑒰 𑒣𑒰𑒢𑒱𑒮𑒿 𑒣𑒼𑒕𑒰 𑒪𑒑𑒾𑒪𑒏, 𑒞𑒏𑒩 𑒥𑒰𑒠 𑒩𑒮𑒼𑒃 𑒒𑒩𑒧𑒹 𑒖𑒰 𑒮𑒦 𑒥𑒩𑒞𑒢-𑒥𑒰𑒮𑒢 𑒮𑒦 𑒮𑒰𑒤 𑒏𑒹𑒪𑒏। 𑒔𑒰𑒯 𑒥𑒢𑒾𑒪𑒏। 𑒠𑒴 𑒏𑒣 𑒔𑒰𑒯 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒹 𑒮𑒳𑒪𑒹𑒐𑒰 𑒂 𑒂𑒢𑒢𑓂𑒠𑒏 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒕𑒢𑒪𑒏। 𑒔𑒰𑒯 𑒪𑓄 𑒏𑓄 𑒂𑒢𑒢𑓂𑒠𑒏 𑒏𑒼𑒚𑒩𑒲𑒏 𑒠𑒩𑒥𑒖𑓂𑒖𑒰 𑒐𑒙𑒐𑒙𑒹𑒪𑒏 𑒂 𑒥𑒰𑒖𑒪-

"𑒥𑒹𑒙𑒰 𑒂𑒢𑒢𑓂𑒠, 𑒅𑒚𑒴। 𑒠𑒹𑒐𑒴 𑒮𑒳𑒩𑒴𑒖 𑒦𑒑𑒫𑒰𑒢 𑒢𑒱𑒏𑒻𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒻𑒟। 𑒔𑒰𑒯 𑒣𑒲𑒥 𑒪𑒱𑒁 𑒞𑒐𑒢 𑒮𑒳𑒞𑒥। "

𑒠𑒩𑒥𑒰𑒖𑒰 𑒐𑒳𑒖𑒪 𑒩𑒰𑒡𑒰 𑒔𑒰𑒯𑒏 𑒙𑓂𑒩𑒹 𑒙𑒹𑒥𑒳𑒪𑒣𑒩 𑒩𑒰𑒐𑒱 𑒥𑒰𑒯𑒩 𑒂𑒥𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒲। 𑒋𑒏 𑒏𑒣 𑒔𑒰𑒯 𑒁𑒣𑒢 𑒥𑒹𑒙𑒲 𑒩𑒴𑒣𑒧 𑒪𑒹𑒪 𑒂 𑒋𑒏 𑒏𑒣 𑒔𑒰𑒯 𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒫𑒰𑒮𑓂𑒞𑒹 𑒪𑒋 𑒣𑒲𑒁 𑒪𑒰𑒑𑒪𑒲।

𑒂𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒂 𑒮𑒳𑒪𑒹𑒐𑒰 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒔𑒰𑒯 𑒣𑒲𑒥𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒻𑒟। 𑒮𑒳𑒪𑒹𑒐𑒰 𑒩𑒰𑒞𑒳𑒏𑒰 𑒦𑒼𑒖𑒢𑒏 𑒂 𑒁𑒐𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒔𑒰𑒯𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒬𑓀𑒮𑒰 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒥𑒖𑒪𑒲-

"𑒂𑒢𑒢𑓂𑒠𑒖𑒲, 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏 𑒧𑒰𑒋 𑒁𑒢𑒧𑒼𑒪 𑒩𑒞𑓂𑒢 𑒕𑒻𑒟। 𑒯𑒱𑒢𑒏𑒰 𑒯𑒰𑒟𑒏 𑒔𑒰𑒯 𑒂 𑒦𑒼𑒖𑒢 𑒞𑒿 𑒧𑒳𑒯𑒼𑒿𑒮𑒿 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒳𑒙𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। "

𑒐𑒰𑒢𑒰 𑒣𑒻𑒮 𑒥𑒢𑒱 𑒏𑒹𑒏𑒩𑒼 𑒐𑒳𑒎𑒢𑒯𑒱 𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒐𑒰 𑒏𑒋 𑒣𑒳𑒢𑓁 𑒏𑒼𑒚𑒲𑒧𑒹 𑒥𑒢𑓂𑒠 𑒦𑓄 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒹𑒪𑒲।

𑒌 𑒞𑒩𑒯𑒹𑒿 𑒥𑒯𑒳𑒞𑒼 𑒠𑒱𑒢 𑒥𑒲𑒞𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑒳𑒪𑒹𑒐𑒰𑒧𑒹 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒮𑒳𑒡𑒰𑒩 𑒢𑒯𑒱 𑒦𑓄 𑒮𑒏𑒪। 𑒏𑒋𑒏 𑒥𑒹𑒩 𑒂𑒢𑒢𑓂𑒠𑒼 𑒏𑒯𑒱 𑒏𑓄 𑒟𑒰𑒏𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪। 𑒮𑒳𑒪𑒹𑒐𑒰 𑒒𑒩𑒏 𑒫𑒰𑒞𑒰𑒫𑒩𑒝𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒱𑒑𑒰𑒩𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒪। 𑒮𑒰𑒮𑒳-𑒣𑒳𑒞𑒼𑒯𑒳𑒧𑒹 𑒧𑒢-𑒧𑒳𑒙𑒰𑒫 𑒥𑒜𑓃𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒩𑒰𑒡𑒰𑒏 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒦𑒹𑒪 𑒕𑒪𑒻𑒢 𑒖𑒹 𑒣𑒳𑒞𑒼𑒯𑒳 𑒎𑒞। 𑒮𑒹𑒫𑒰 𑒏𑒩𑒞। 𑒏𑒣𑒛𑓃𑒰-𑒪𑒞𑓂𑒞𑒰 𑒮𑒰𑒤 𑒏𑒩𑒞। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑒦 𑒧𑒢𑒼𑒩𑒟। 𑒮𑒹𑒫𑒰 𑒏𑒹𑒢𑒰𑒃 𑒞𑒿 𑒠𑒴𑒩 𑒖𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒮𑒿 𑒥𑒰𑒞𑒼 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒹𑒪𑒻𑒢।

𑒩𑒰𑒡𑒰 𑒦𑒼𑒩𑒹 𑒅𑒚𑒱 𑒮𑒦 𑒒𑒩-𑒠𑒳𑒂𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒗𑒰𑒛𑓃𑒴𑒮𑒿 𑒮𑒰𑒤 𑒏𑒋 𑒣𑒼𑒕𑒰 𑒪𑒑𑒰 𑒧𑒫𑒹𑒬𑒲𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒔𑒰𑒩𑒰 𑒪𑒰𑒫𑒋 𑒔𑒪 𑒑𑒹𑒪। 𑒖𑒐𑒢 𑒍 𑒥𑒰𑒡𑒮𑒿 𑒂𑒥𑒻𑒟 𑒞𑒿 𑒮𑒳𑒪𑒹𑒐𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒳𑒞𑒪 𑒠𑒹𑒐𑒪𑒻𑒢। 𑒧𑒢 𑒞𑒿 𑒒𑒼𑒩 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪𑒻𑒢। 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒄 𑒂𑒬𑒰 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒹𑒪𑒻𑒢 𑒖𑒹 𑒒𑒩 𑒖𑒰𑒋𑒥 𑒞𑒿 𑒮𑒳𑒪𑒹𑒐𑒰 𑒋𑒏 𑒪𑒼𑒙𑒰 𑒣𑒰𑒢𑒱 𑒂𑒢𑒱 𑒂𑒑𑒰𑒿𑒧𑒹 𑒠𑒹𑒞𑒲। 𑒥𑒋𑒢 𑒛𑒼𑒪𑒞𑒲। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒋𑒏𑒼𑒙𑒰 𑒧𑒢𑒼𑒩𑒟 𑒣𑒴𑒩 𑒢𑒯𑒱 𑒦𑒹𑒪।

𑒣𑒳𑒞𑒼𑒯𑒳𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒳𑒞𑒪 𑒠𑒹𑒐 𑒩𑒰𑒡𑒰 𑒁𑒣𑒢𑒹𑒮𑒿 𑒔𑒰𑒣𑒰𑒏𑒪𑒣𑒩 𑒖𑒰 𑒯𑒰𑒟-𑒣𑒋𑒩 𑒡𑒼𑒪𑒻𑒢। 𑒩𑒮𑒼𑒃 𑒒𑒩 𑒐𑒼𑒪𑒱 𑒢𑒰𑒬𑓂𑒞𑒰 𑒣𑒩𑒼𑒮𑒱 𑒏𑒋 𑒯𑒫𑒰𑒧𑒹 𑒥𑒻𑒮 𑒢𑒰𑒬𑓂𑒞𑒰 𑒏𑒋 𑒪𑒻𑒞 𑒕𑒹𑒪𑒲। 𑒩𑒰𑒡𑒰 𑒮𑒳𑒪𑒹𑒐𑒰𑒏 𑒐𑒰𑒞𑒱𑒠𑒰𑒩𑒲 𑒏𑒩𑒻𑒞-𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒅𑒥𑒱 𑒔𑒳𑒏𑒪 𑒕𑒹𑒪𑒲। 𑒥𑒱𑒢𑒰 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒥𑒖𑒢𑒯𑒱। 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒚𑓀𑒜𑒰𑒃𑒞 𑒮𑓂𑒫𑒩 𑒦𑒢𑒮𑒰 𑒒𑒩 𑒐𑒼𑒪𑒱 𑒦𑒰𑒢𑒮 𑒏𑒩𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒪𑒲। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑒳𑒪𑒹𑒐𑒰 𑒮𑒳𑒞𑒪 𑒩𑒯𑒪𑒲।

𑒩𑒰𑒡𑒰 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒮𑒼𑒔𑒻 𑒕𑒹𑒪𑒲 𑒖𑒹 𑒥𑒹𑒙𑒰 𑒐𑒹𑒞𑒮𑒿 𑒂𑒋𑒞 𑒂 𑒦𑒼𑒖𑒢 𑒮𑒧𑒨𑒣𑒩 𑒢𑒯𑒱 𑒦𑒹𑒙𑒞𑒻 𑒞𑒿 𑒮𑒳𑒪𑒹𑒐𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒑𑒰𑒩𑒱-𑒤𑒖𑓂𑒗𑒞𑒱 𑒏𑒩𑒞। 𑒂𑒩 𑒥𑒹𑒙𑒰𑒮𑒿 𑒬𑒱𑒏𑒰𑒨𑒞 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒅𑒔𑒱𑒞 𑒧𑒾𑒏𑒰 𑒠𑒹𑒐 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪। 𑒞𑒿𑒋 𑒮𑒳𑒪𑒹𑒐𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒳𑒞𑒪 𑒕𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒠𑒹𑒪𑒏।

𑒮𑒳𑒪𑒹𑒐𑒰𑒏 𑒢𑒲𑒢 𑒁𑒔𑒰𑒢𑒏 𑒙𑒳𑒙𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒍 𑒡𑒛𑓃𑒤𑒛𑓃𑒰𑒃𑒞 𑒦𑒢𑒮𑒰 𑒒𑒩 𑒑𑒹𑒪𑒲। 𑒍𑒞𑒋 𑒠𑒹𑒐𑒪𑒻𑒢 𑒖𑒹 𑒮𑒰𑒮𑒳 𑒦𑒢𑒮𑒰 𑒥𑒢𑒰 𑒩𑒯𑒪𑒲 𑒁𑒕𑒱। 𑒮𑒳𑒪𑒹𑒐𑒰 𑒥𑒖𑒪𑒲-

"𑒔𑒳𑒪𑓂𑒯𑒰 𑒪𑒑𑒰𑒮𑒿 𑒯𑒙𑒟𑒱 𑒢𑒹 𑒯𑒧 𑒦𑒰𑒢𑒮 𑒥𑒢𑒰 𑒪𑒃 𑒕𑒲। "

𑒩𑒰𑒡𑒰 𑒔𑒳𑒪𑓂𑒯𑒰 𑒪𑒑𑒰𑒮𑒿 𑒢𑒯𑒱 𑒅𑒚𑒪𑒲। 𑒮𑒳𑒪𑒹𑒐𑒰 𑒧𑒳𑒿𑒯 𑒥𑒱𑒖𑒏𑒥𑒻𑒞 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒏𑒼𑒚𑒲𑒧𑒹 𑒖𑒰 𑒮𑒳𑒞𑒱

𑒩𑒯𑒪।

𑒂𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒐𑒹𑒞𑒧𑒹 𑒏𑒰𑒧-𑒏𑒰𑒖𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒧𑒙𑒱𑒨𑒰 𑒖𑒐𑒢 𑒏𑒩𑒻 𑒥𑒹𑒩𑒧𑒹 𑒒𑒩 𑒋𑒪𑒰 𑒞' 𑒠𑒹𑒐𑒻 𑒕𑒻𑒟 𑒧𑒰𑒋 𑒐𑒰𑒢𑒰 𑒥𑒢𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒮𑒳𑒐𑒱𑒨𑒰 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒏𑒼𑒚𑒩𑒲𑒧𑒹 𑒮𑒳𑒞𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒧𑒰𑒋𑒮𑒿 𑒣𑒳𑒕𑒪𑒐𑒱𑒢-

"𑒧𑒰𑒋, 𑒐𑒰𑒢𑒮 𑒞𑒴𑒿 𑒥𑒢𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒻𑒿! 𑒮𑒳𑒐𑒱𑒨𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪𑒻𑒯𑒹𑒿 𑒏𑒲?"

𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒁𑒣𑒢 𑒥𑒹𑒙𑒰𑒏 𑒧𑒳𑒯𑒮𑒿 𑒄 𑒥𑒰𑒞 𑒮𑒳𑒢𑒱𑒞𑒹 𑒞𑒧𑒮𑒰𑒋𑒪 𑒧𑒳𑒠𑓂𑒩𑒰𑒧𑒹 𑒥𑒰𑒖𑒪-

"𑒏𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒲 𑒯𑒹𑒞𑒻। 𑒯𑒧 𑒞' 𑒞𑒼𑒩𑒰 𑒮𑒥𑒯𑒏 𑒢𑒾𑒏𑒩𑒰𑒢𑒲 𑒕𑒲𑒯𑒹। "

𑒂𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒞𑒧𑒮𑒹 𑒮𑒳𑒐𑒱𑒨𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒅𑒚𑒾𑒪𑒏 𑒂 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒑𑒰𑒛𑓃𑒱-𑒁𑒪𑒯𑒻𑒞 𑒏𑒩𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒪। 𑒮𑒳𑒐𑒱𑒨𑒰 𑒧𑒰𑒢𑒋𑒫𑒰𑒪𑒲 𑒢𑒯𑒱। 𑒍𑒯𑒼 𑒂𑒢𑒢𑓂𑒠𑒏 𑒞𑒹𑒩𑒯𑒼-𑒣𑒳𑒩𑒐𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒅𑒏𑒙𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒪।

𑒂𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒐𑒹𑒞𑒮𑒿 𑒑𑒩𑒧𑒰𑒋𑒪 𑒂𑒋𑒪 𑒕𑒪, 𑒞𑒧𑒮𑒰𑒋𑒪 𑒕𑒪𑒰𑒯𑒹 𑒮𑒳𑒐𑒱𑒨𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒋𑒏-𑒠𑒴 𑒟𑒣𑓂𑒣𑒩 𑒪𑒑𑒰 𑒠𑒹𑒪𑒏। 𑒂𑒥 𑒞' 𑒮𑒳𑒐𑒱𑒨𑒰 𑒖𑒼𑒩-𑒖𑒼𑒩𑒮𑒿 𑒏𑒰𑒢𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒪𑒱।

𑒏𑒰𑒢𑒥 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒁𑒛𑓃𑒼𑒮𑒱𑒨𑒰-𑒣𑒛𑓃𑒼𑒮𑒱𑒨𑒰 𑒖𑒧𑒰 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪। 𑒥𑒰𑒥𑒼 𑒖𑒢𑒮𑒰 𑒒𑒩𑒮𑒿 𑒠𑒾𑒑𑒪 𑒋𑒪𑒲। 𑒂 𑒥𑒹𑒙𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒛□𑒙-𑒛𑒙𑒏𑒰𑒩 𑒠𑒹𑒥𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒪𑒱। 𑒂𑒢𑒢𑓂𑒠𑒏𑒹𑒿 𑒯𑒰𑒟 𑒣𑒏𑒻𑒛𑓃 𑒏𑒼𑒚𑒩𑒲𑒮𑒿 𑒥𑒰𑒯𑒩 𑒏𑒹𑒪𑒱। 𑒂 𑒮𑒳𑒐𑒱𑒨𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒼𑒡𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒪𑒱।

𑒣𑒳𑒞𑒼𑒯𑒳 𑒣𑒻𑒒 𑒥𑒰𑒣𑒏 𑒥𑒹𑒙𑒲 𑒞𑒿𑒋 𑒍 𑒏𑒹𑒏𑒩𑒼 𑒞𑒰𑒢𑒰-𑒥𑒰𑒢𑒰 𑒮𑒯𑒋𑒫𑒰𑒪𑒲 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒹𑒪𑒲। 𑒥𑒰𑒥𑒼𑒏𑒹𑒿 𑒑𑒰𑒛𑓃𑒱-𑒁𑒪𑒯𑒻𑒞 𑒏𑒩𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒪𑒱। 𑒥𑒰𑒞 𑒠𑒱𑒢𑒰𑒢𑒳𑒠𑒱𑒢 𑒞𑒢𑒰𑒫 𑒂 𑒁𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑒏 𑒞𑒩𑒯 𑒥𑒜𑓃𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒪। 𑒮𑒳𑒐𑒱𑒨𑒰 𑒠𑒴 𑒠𑒱𑒢𑒮𑒿 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒢𑒹 𑒐𑒹𑒢𑒹 𑒕𑒹𑒪𑒲।

𑒥𑒰𑒥𑒰𑒏 𑒏𑒰𑒧-𑒏𑒰𑒖 𑒥𑒜𑓃𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒂𑒥 𑒞' 𑒂𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒂 𑒂𑒢𑒢𑓂𑒠𑒏 𑒧𑒰𑒨𑓂𑒨𑒼 𑒣𑒩𑒹𑒬𑒰𑒢 𑒩𑒯𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒪। 𑒠𑒳𑒢𑒴𑒏𑒹𑒿 𑒛𑒩 𑒯𑒼𑒧𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒻𑒢 𑒖𑒹 𑒏𑒯𑒲𑒿 𑒂𑒞𑓂𑒧𑒯𑒞𑓂𑒨𑒰 𑒢𑒹 𑒏𑓄 𑒪𑒱𑒁𑒋। 𑒏𑒹𑒞𑒹𑒏 𑒥𑒳𑒜𑓃𑒻𑒪-𑒮𑒳𑒜𑓃𑒻𑒪𑒮𑒿 𑒂 𑒒𑒙𑒢𑒰𑒏 𑒖𑒱𑒧𑓂𑒧𑒹𑒠𑒰𑒩𑒲 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒅𑒣𑒩𑒧𑒹 𑒪𑒋 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒧𑒰𑒨-𑒣𑒳𑒞 𑒑𑒹𑒪𑒲 𑒮𑒳𑒐𑒱𑒨𑒰𑒮𑒿 𑒧𑒰𑒢𑒪𑒏, 𑒞𑒐𑒢 𑒮𑒳𑒐𑒱𑒨𑒰 𑒖𑒹 𑒠𑒴 𑒠𑒱𑒢𑒮𑒿 𑒦𑒴𑒐𑒪-𑒣𑒱𑒨𑒰𑒮𑒪 𑒕𑒪। 𑒠𑒞𑒧𑒻𑒢 𑒏𑒹𑒪𑒻𑒢 𑒂 𑒧𑒳𑒿𑒯 𑒡𑒼𑒪𑒻𑒢। 𑒂 𑒣𑒕𑒰𑒞𑒱 𑒦𑒼𑒖𑒢 𑒏𑒹𑒪𑒻𑒢।

राधा हारि मारि सभ कार्य पूर्ववत करैत रहल। धीरे- धीरे दुनू पति- पत्नीमे मिलान भेलइ। आनन्द बाजल-

"सुरेखा सभ माइ- बापक इच्छा होइ छैन जे पुतोहु घरक काम- धन्धाकेँ देखैथ आ सासु- ससुरक सेवा करैथ। "

आनन्दक ओक बजनाइयो समाप्त नहि भेल छल कि बिचियेमे सुरेखा बाजि उठल-

"हम अहाँ- सबहक नौकरानी बनि नहि आएल छी। हमर बाप केहेन छला जे हमरा एकटा भिखमंगा ओतए बियाहि देलक। "

कहैत सुरेखा कानए लागलि।

सुरेखा धनिक घरक बेटी। कहियो भानस केनाइ तँ दूर जे अपन कपड़ो नहि साफ करैत छल। ऐ प्रकारे आ अपन मर्जीसँ काम- काज करैत छल।

राधाक इच्छा छल जे पुतोहु हमरासँ पुछैथ जे खानामे की सभ बनेबाक अछि। केतेक चाउर, केतेक दालि इत्यादि इत्यादि। मुदा सुरेखा अपन मर्जीसँ कोनो काज करैत छल। अपना मन मोताबिक रसोइ बनबैत छल। आ खाना दोसरकेँ पसिन होइ अथवा नहि।

एक दिनक बात छी। सुरेखा तरूआ छानि रहल छल। ई देख राधा बाजल-

"छानिकऽ खेबाक छह तँ बापकेँ कहक जे एक टीन तेल भेज देतह। "

ऐपर सुरेखा जवाब देलक-

"हिनकर बाप कहियो एक किलो तेल भेज देने छैथन। "

राधा सुरेखाक जवाब सुनि तिलमिला कऽ रहि गेली।

𑒌 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒩𑒹 𑒮𑒰𑒮𑒳 𑒂 𑒣𑒳𑒞𑒼𑒯𑒳𑒧𑒹 𑒏𑒼𑒢𑒼- 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒕𑒼𑒙𑒼- 𑒕𑒼𑒙𑒼 𑒥𑒰𑒞𑒣𑒩 𑒏𑒐𑒢𑒼 𑒥𑒯𑒮𑒥𑒰𑒖𑒲 𑒬𑒳𑒩𑒴 𑒦𑓄 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒻𑒏।

𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒁𑒣𑒢 𑒧𑒢 𑒧𑒮𑒼𑒮𑒱 𑒏𑓄 𑒩𑒯𑒱 𑒖𑒰𑒃 𑒕𑒟𑒱। 𑒏𑒰𑒧𑒏𑒰𑒖𑒳 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒠𑒱𑒢- 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱- 𑒠𑒱𑒢 𑒔𑒱𑒛𑓃𑒔𑒱𑒛𑓃𑒰 𑒮𑓂𑒫𑒦𑒰𑒫𑒏 𑒯𑒼𑒥𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒪। 𑒍𑒢𑒰, 𑒋𑒯𑒹𑒢 𑒥𑒰𑒞 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒪 𑒖𑒹 𑒂𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲 𑒮𑒳𑒪𑒹𑒐𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒢𑒯𑒱 𑒮𑒧𑒗𑒰𑒥𑒻𑒞 𑒕𑒪। 𑒣𑒩𑒢𑓂𑒞𑒳 𑒮𑒳𑒪𑒹𑒐𑒰 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒮𑒰𑒧𑒢𑒹 𑒏𑒏𑒩𑒼 𑒥𑒰𑒖𑒋 𑒢𑒹 𑒠𑒻𑒞 𑒕𑒪। 𑒋𑒫𑒧𑓂 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒩𑒹𑒿 𑒣𑒞𑒱- 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲𑒧𑒹 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒧𑒢- 𑒧𑒳𑒙𑒰𑒫 𑒥𑒜𑓃𑒱 𑒑𑒹𑒪।

𑒮𑒳𑒪𑒹𑒐𑒰 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒢𑒩𑒏 𑒥𑒢𑒰 𑒠𑒹𑒢𑒹 𑒕𑒪। 𑒮𑒳𑒪𑒹𑒐𑒰 𑒩𑒴𑒣𑒫𑒞𑒲 𑒕𑒪 𑒞𑒿𑒋 𑒠𑒯𑒹𑒖𑒼𑒧𑒹 𑒕𑒴𑒙 𑒦𑒹𑒪 𑒕𑒪। 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒁𑒣𑒢 𑒮𑒳𑒢𑓂𑒠𑒩𑒞𑒰 𑒂 𑒥𑒰𑒣𑒏 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒻𑒞𑒣𑒩 𑒒𑒧𑒝𑓂𑒛 𑒕𑒻𑒢। 𑒍 𑒁𑒣𑒢𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒒𑒩𑒏 𑒧𑒰𑒪𑒏𑒱𑒢 𑒂 𑒁𑒢𑓂𑒨 𑒮𑒠𑒮𑓂𑒨𑒏𑒹𑒿 𑒢𑒼𑒏𑒩 𑒥𑒳𑒗𑒻𑒞 𑒕𑒪।

𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒙𑒳𑒙𑒱 𑒔𑒳𑒏𑒪 𑒕𑒪। 𑒋𑒏 𑒞𑒿 𑒏𑒰𑒧- 𑒏𑒰𑒖𑒏 𑒥𑒼𑒗, 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒕𑒼𑒙𑒼- 𑒕𑒼𑒙𑒼 𑒥𑒰𑒞𑒏 𑒪𑒪 𑒯𑒩- 𑒯𑒩 𑒐𑒙- 𑒐𑒙 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒪।

𑒋𑒧𑓂𑒯𑒩 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒥𑒹𑒙𑒰 𑒮𑒳𑒩𑒹𑒬 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒨𑒼𑒑𑒱𑒞𑒰 𑒣𑒩𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰𑒧𑒹 𑒠𑒱𑒢- 𑒩𑒰𑒞𑒱 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒪। 𑒥𑒲𑒋𑒛𑓃 𑒣𑒰𑒮 𑒏𑒋 𑒔𑒳𑒏𑒪 𑒕𑒪। 𑒙𑒲𑒃𑒙𑒲 𑒣𑒩𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰𑒧𑒹 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒢𑒲𑒏 𑒁𑓀𑒏 𑒂𑒋𑒪 𑒩𑒯𑒋। 𑒞𑒿𑒋 𑒍 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒏 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑒳𑒩𑒹𑒬 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒒𑒩𑒧𑒹 𑒖𑒹𑒚 𑒦𑒰𑒃𑒏 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲 𑒖𑒹 𑒥𑒛𑓃𑒏𑒰 𑒒𑒩𑒏 𑒥𑒹𑒙𑒲 𑒕𑒪, 𑒍𑒏𑒩 𑒏𑒩𑒱𑒠𑒰𑒢𑒲 𑒠𑒹𑒐 𑒢𑒹𑒢𑒹 𑒕𑒪। 𑒞𑒿𑒋 𑒯𑒹𑒞𑒳𑒋 𑒍 𑒮𑒼𑒔𑒻𑒞 𑒕𑒪 𑒖𑒹 𑒯𑒧 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒧𑒡𑓂𑒨𑒧 𑒫𑒩𑓂𑒑𑒏 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒏 𑒪𑒛𑓃𑒏𑒲𑒮𑒿 𑒬𑒰𑒠𑒲 𑒏𑒩𑒥। 𑒪𑒛𑓃𑒏𑒲𑒏 𑒬𑒲𑒪- 𑒮𑓂𑒫𑒦𑒰𑒫 𑒢𑒲𑒏 𑒯𑒼𑒃। 𑒏𑒰𑒖𑒳𑒪 𑒯𑒼𑒃। 𑒒𑒩𑒏 𑒏𑒰𑒖- 𑒏𑒩𑒻𑒧𑒹 𑒢𑒱𑒣𑒳𑒝 𑒯𑒼𑒃। 𑒍𑒯𑒢 𑒑𑒳𑒝𑒫𑒰𑒪𑒲 𑒪𑒛𑓃𑒏𑒲𑒮𑒿 𑒬𑒰𑒠𑒲 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒮𑒼𑒔𑒧𑒹 𑒕𑒪।

𑒮𑒳𑒩𑒹𑒬𑒏 𑒣𑒱𑒞𑒰𑒖𑒲 𑒂𑒥 𑒥𑒳𑒜𑓃 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪𑒰। 𑒍 𑒖𑒹𑒚𑒏𑒲 𑒣𑒳𑒞𑒼𑒯𑒳𑒏 𑒫𑓂𑒨𑒫𑒯𑒰𑒩𑒮𑒿 𑒋𑒞𑒹𑒏 𑒢𑒹 𑒂𑒯𑒞 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪𑒰 𑒖𑒹 𑒥𑓂𑒪𑒛- 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒮𑒩𑒏 𑒬𑒱𑒏𑒰𑒩 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪𑒰। 𑒮𑒳𑒩𑒹𑒬𑒏 𑒧𑒰𑒋𑒏𑒹𑒿 𑒖𑒞𑒹𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒢𑓂𑒢𑒞𑒰 𑒖𑒹𑒚𑒏𑒰 𑒥𑒹𑒙𑒰𑒏 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯 𑒏𑒩𑒻𑒧𑒹 𑒕𑒪 𑒞𑒞𑒹𑒏 𑒮𑒳𑒩𑒹𑒬𑒏 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯𑒧𑒹 𑒢𑒯𑒱। 𑒍 𑒑𑒹𑒢𑒴 𑒯𑒰𑒏 𑒥𑒱𑒪𑒰𑒛𑓃𑒱 𑒖𑒏□ 𑒣𑒰𑒏𑒱 𑒔𑒳𑒏𑒪 𑒕𑒹𑒪𑒲। 𑒞𑒿𑒋 𑒕𑒼𑒙𑒏𑒰 𑒥𑒹𑒙𑒰𑒏 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯𑒏 𑒔𑒩𑓂𑒔𑒼 𑒢𑒃 𑒏𑒩𑒻 𑒕𑒹𑒪𑒲। 𑒂 𑒥𑒰𑒥𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭 𑒖𑒱𑒖𑓂𑒘𑒰𑒮𑒼 𑒢𑒯𑒱𑒨𑒹𑒿

छल।

संयोगवश भवानी प्रसादजी अपन बेटी रोशनीक कथा लऽ कऽ एल। सुरेश पहिनहिसँ ओइ परिवारकेँ जनैत छल। भवानी प्रसादक पुत्र सुरेशक संगी छल। तँए सुरेश भवानी प्रसादक ओइठाम जाइत-अबैत छल। रोशनीक शील-स्वभावसँ सुरेश तेहेन ने प्रभावित छल जे एको बेर नाकर-नुकर नहि केलक। कथाक मंजूरी दए देलक।

दुनू परिवार स्वजातीय छल। अन्तर्जातीय विवाहसँ ओ घ□णा करैत छल। एम्हर रायाकेँ कोनो उत्सुकता आ प्रसन्नता नहि छल। ओ मने-मन सोचैत छल बड़की पुतोहु तँ सभ गुन गोबर कए देलक। आब ई की करत ओ भगवान जानैथ।

सुरेशक विवाह भेल। बर-कनियाँ घर आएल। रायाक मन टुटल छल तँए ओ परिछनोमे नहि गेल। लाचार भऽ दियादनी सुलेखा बर-कनियाँक परिछन कए घर लौलक। राया तबियत खराबक बहाना केने छेली। रोशनीकेँ जखन पता लागल जे सासु माँ बीमार छैथ तँ ओ कोहबर घरसँ निकैल सासुक कमरामे गेल आ पहिने रायाक पएर छुबि प्रणाम केलक आ पुछलक-

"माँ, तबियत ठीक अछि की नहि।"

एकाएक नवकी पुतोहुकेँ देख राया लजा गेलि। उठि कऽ बैसैत बाजलि-

"कनियाँ, माथमे दर्द भऽ रहल अछि।"

रोशनी तुरन्ते विक्स लऽ सासुक माथमे लगौलक। आ किछु काल बादो पएरकेँ सेहो दबौलक। आइ बड़ खुशीसँ सुलेखा खूब नीक जकाँ भानस-भात कए रोशनीकेँ भोजन परोसि खेबाक लेल दैत बाजल-

"कनियाँ, खाना खा लिअ, कखन खेने हएब कखन नहि।"

𑒩𑒼𑒬𑒢𑒲 𑒥𑒰𑒖𑒪𑒱-

"𑒖𑒐𑒢 𑒮𑒰𑒮𑒳 𑒧𑒰𑒿 𑒦𑒼𑒖𑒢 𑒏𑒩𑒞𑒲 𑒞𑒹𑒏𑒩 𑒥𑒰𑒠𑒹 𑒯𑒧 𑒦𑒼𑒖𑒢 𑒏𑒩𑒥। "

𑒞𑒻𑒣𑒩 𑒮𑒳𑒪𑒹𑒐𑒰 𑒥𑒰𑒖𑒪𑒱-

"𑒧𑒰𑒿𑒏 𑒞𑒥𑒱𑒨𑒞 𑒐𑒩𑒰𑒣 𑒕𑒻𑒢, 𑒖𑒐𑒢 𑒃𑒔𑓂𑒕𑒰 𑒯𑒹𑒞𑒻𑒢 𑒐𑒰 𑒪𑒹𑒞𑒲। "

𑒩𑒼𑒬𑒢𑒲 𑒁𑒣𑒢 𑒐𑒰𑒢𑒰 𑒪𑒋 𑒐𑒳𑒠 𑒮𑒰𑒮𑒳 𑒧𑒰𑒿𑒏 𑒏𑒧𑒩𑒰𑒧𑒹 𑒑𑒹𑒪𑒱 𑒂 𑒋𑒏 𑒏𑒾𑒩 𑒦𑒰𑒞 𑒠𑒰𑒪𑒱𑒧𑒹 𑒧𑒱𑒪𑒰 𑒯𑒰𑒟𑒧𑒹 𑒪𑒋 𑒥𑒰𑒖𑒪𑒱-

"𑒧𑒰𑒿, 𑒕𑒼𑒙𑒏𑒲 𑒣𑒳𑒞𑒼𑒯𑒳𑒏 𑒯𑒰𑒟𑒮𑒿 𑒋𑒏 𑒏𑒾𑒩 𑒐𑒰𑒢𑒰 𑒐𑒰𑒟𑒳। "

𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒯𑒰𑒟 𑒮𑒰𑒮𑒳 𑒧𑒰𑒿𑒏 𑒧𑒳𑒿𑒯𑒧𑒹 𑒠𑒹𑒪𑒏।

𑒩𑒰𑒨𑒰𑒏 𑒋𑒏 𑒏𑒾𑒩 𑒦𑒰𑒞𑒮𑒿 𑒮𑒥 𑒠𑒳𑒐 𑒠𑒴𑒩 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪। 𑒦𑒼𑒖𑒢 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒏𑒯𑒪𑒏-

"𑒥𑒹𑒙𑒲, 𑒖𑒰𑒅 𑒁𑒯𑒴𑒿 𑒦𑒼𑒖𑒢 𑒏𑒋 𑒪𑒱𑒁। "

"𑒢𑒯𑒱 𑒧𑒰𑒿 𑒖𑒰𑒥𑒞 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒢𑒯𑒱 𑒐𑒰𑒋𑒥 𑒞𑒰𑒥𑒞 𑒯𑒧𑒯𑒴𑒿 𑒢𑒯𑒱 𑒦𑒼𑒖𑒢 𑒏𑒩𑒥। "

𑒩𑒰𑒨𑒰 𑒕𑒼𑒙𑒏𑒲 𑒣𑒳𑒞𑒼𑒯𑒳𑒏 𑒖𑒱𑒠𑓂𑒠𑒏𑒹𑒿 𑒢𑒯𑒱 𑒙𑒰𑒩𑒱 𑒮𑒏𑒪। 𑒩𑒰𑒨𑒰 𑒦𑒩𑒱 𑒣𑒹𑒙 𑒦𑒼𑒖𑒢 𑒏𑒹𑒪𑒏। 𑒩𑒰𑒨𑒰𑒏 𑒐𑒰𑒢𑒰 𑒐𑒹𑒪𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒩𑒼𑒬𑒢𑒲 𑒤𑒴𑒚 𑒬𑓂𑒫𑒹𑒩𑒰 𑒏𑒼𑒚𑒲𑒮𑒿 𑒥𑒰𑒯𑒩 𑒦𑒹𑒪।

𑒣𑒕𑒰𑒃𑒞 𑒮𑒳𑒪𑒹𑒐𑒰 𑒂 𑒩𑒼𑒬𑒢𑒲 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒠𑒱𑒨𑒰𑒠𑒢𑒲 𑒮𑓀𑒑- 𑒮𑓀𑒑 𑒦𑒼𑒖𑒢 𑒏𑒹𑒪𑒏। 𑒦𑒼𑒖𑒢 𑒏𑒹𑒪𑒰 𑒥𑒰𑒠 𑒮𑒳𑒪𑒹𑒐𑒰 𑒮𑒳𑒞𑒥𑒰𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒏𑒼𑒚𑒲𑒧𑒹 𑒔𑒪 𑒑𑒹𑒪। 𑒂 𑒩𑒼𑒬𑒢𑒲 𑒋𑒏 𑒪𑒼𑒙𑒰 𑒣𑒰𑒢𑒱 𑒪𑒋 𑒮𑒰𑒮𑒳 𑒧𑒰𑒿𑒏 𑒏𑒼𑒚𑒲𑒧𑒹 𑒖𑒰 𑒩𑒰𑒐𑒱 𑒠𑒹𑒪𑒏 𑒂 𑒮𑒰𑒮𑒳- 𑒧𑒰𑒿𑒏 𑒣𑒋𑒩 𑒠𑒥𑒰𑒥𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒪।

𑒩𑒰𑒨𑒰 𑒖𑒐𑒢 𑒥𑒰𑒖𑒪-

"𑒖𑒰𑒅 𑒏𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿, 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏 𑒂𑒃 𑒣𑒯𑒱𑒪 𑒠𑒱𑒢 𑒁𑒕𑒱, 𑒟𑒰𑒏𑒪 𑒚𑒹𑒯𑒱𑒨𑒰𑒋𑒪 𑒯𑒋𑒥। 𑒁𑒩𑒰𑒧

𑒏𑒩𑒴 𑒑𑒹। "

𑒞𑒐𑒢 𑒩𑒼𑒮𑒢𑒲 𑒮𑒰𑒮𑒳- 𑒧𑒰𑒿𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒱𑒕𑒾𑒢 𑒗𑒰𑒛𑓃𑒱 𑒧𑒮𑒯𑒩𑒲 𑒪𑒑𑒰 𑒏𑒋 𑒁𑒣𑒢 𑒏𑒼𑒚𑒩𑒲𑒧𑒹 𑒂𑒩𑒰𑒧 𑒏𑒩𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒔𑒪 𑒑𑒹𑒪𑒱।

𑒩𑒰𑒡𑒰 𑒧𑒢𑒹- 𑒧𑒢 𑒩𑒼𑒮𑒢𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒂𑒬𑒲𑒩𑓂𑒫𑒰𑒠 𑒠𑓄 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪। 𑒂 𑒮𑒼𑒔𑒻𑒞 𑒕𑒪। 𑒦𑒫𑒱𑒭𑓂𑒨𑒧𑒹 𑒖𑒹 𑒂𑒿𑒑𑒰 𑒯𑒳𑒁𑒋 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒁𑒐𑒢 𑒞𑒿 𑒁𑒥𑒻𑒞 𑒠𑒹𑒩𑒲 𑒋𑒏 𑒐𑒰𑒞𑒱𑒠𑒰𑒩𑒲 𑒞𑒿 𑒏𑒹𑒪𑒏। 𑒩𑒰𑒡𑒰 𑒕𑒼𑒙𑒏𑒲 𑒣𑒳𑒞𑒼𑒯𑒳𑒏 𑒣𑒩𑒱𑒕𑒝𑒧𑒹 𑒢𑒃 𑒑𑒹𑒪𑒱 𑒞𑒹𑒏𑒩 𑒂𑒥 𑒣𑒬𑓂𑒔𑒰𑒞𑒰𑒣 𑒯𑒳𑒁 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒕𑒹𑒪𑒻𑒢। 𑒩𑒼𑒮𑒢𑒲 𑒮𑒰𑒏𑓂𑒭𑒰𑒞 𑒠𑒹𑒫𑒲 𑒕𑒻𑒟 𑒖𑒹 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒒𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒮𑓂𑒫𑒩𑓂𑒑 𑒥𑒢𑒾𑒞। 𑒣𑒩𑒘𑓂𑒔 𑒮𑒦 𑒮𑒼𑒔𑒻𑒞- 𑒥𑒱𑒔𑒰𑒩𑒻𑒞 𑒩𑒰𑒡𑒰 𑒏𑒐𑒢 𑒮𑒳𑒞𑒱 𑒩𑒯𑒪𑒱 𑒮𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒖𑒰𑒃𑒢।

𑒩𑒼𑒮𑒢𑒲 𑒂 𑒩𑒰𑒡𑒰𑒏 𑒥𑒲𑒔 𑒖𑒹 𑒏𑓂𑒩𑒱𑒨𑒰𑒏𑒪𑒰𑒣 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒪 𑒮𑒹 𑒮𑒳𑒪𑒹𑒐𑒰 𑒠𑒹𑒐𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒪। 𑒮𑒳𑒪𑒹𑒐𑒰 𑒁𑒣𑒢 𑒮𑒰𑒮𑒳- 𑒧𑒰𑒿𑒏 𑒁𑒠𑒐𑒼𑒃- 𑒥𑒠𑒐𑒼𑒃 𑒩𑒼𑒮𑒢𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒳𑒢𑒰𑒥𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒪𑒱। 𑒩𑒼𑒮𑒢𑒲 𑒮𑒳𑒪𑒹𑒐𑒰𑒏 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒥𑒰𑒞𑒏 𑒖𑒫𑒰𑒥 𑒢𑒯𑒱 𑒠𑒃 𑒕𑒹𑒪𑒐𑒱𑒢।

𑒩𑒼𑒮𑒢𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒁𑒣𑒢 𑒥𑒱𑒂𑒯𑒏 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫𑒯𑒱𑒮𑒿 𑒮𑒳𑒪𑒹𑒐𑒰𑒏 𑒏𑒩𑒱𑒠𑒰𑒢𑒲 𑒮𑒳𑒩𑒹𑒬𑒏 𑒧𑒰𑒡𑓂𑒨𑒧𑒮𑒿 𑒥𑒳𑒗𑒪 𑒩𑒯𑒻𑒢। 𑒦𑒼𑒩𑒹 𑒩𑒼𑒮𑒢𑒲 𑒅𑒚𑒱 𑒗𑒰𑒛𑓃𑒴 𑒪𑓄 𑒏𑓄 𑒒𑒩- 𑒂𑒿𑒑𑒢𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒯𑒰𑒩𑒋- 𑒮𑒼𑒯𑒰𑒩𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒪𑒱। 𑒁𑒞𑒲𑒨 𑒢𑒯𑒱 𑒦𑒹𑒪𑒰𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒝𑒹 𑒖𑒐𑒢 𑒮𑒳𑒪𑒹𑒐𑒰 𑒂𑒿𑒑𑒢𑒰 𑒥𑒯𑒰𑒩𑒻𑒞 𑒠𑒹𑒐𑒪𑒏 𑒞𑒿 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒣𑒯𑒱𑒢 𑒦𑒹𑒪𑒻𑒢 𑒖𑒹 𑒩𑒰𑒡𑒰𑒂𑒢 𑒠𑒱𑒢𑒳𑒏𑒰 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒂𑒿𑒑𑒢𑒧𑒹 𑒗𑒰𑒛𑓃𑒴 𑒪𑒑𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒖𑒐𑒢 𑒂𑒑𑒰□ 𑒥𑒜𑓃𑒪 𑒞𑒿 𑒩𑒼𑒮𑒢𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒰𑒜𑓃𑒻𑒢 𑒪𑒑𑒰𑒥𑒻𑒞 𑒠𑒹𑒐𑒪𑒏 𑒞𑒿 𑒂𑒬𑓂𑒔𑒩𑓂𑒨𑒔𑒏𑒱𑒞 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒥𑒰𑒖𑒪-

"𑒏𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿, 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒏𑒰𑒪𑓂𑒯𑒱𑒨𑒱 𑒋𑒪𑒾 𑒂 𑒂𑒃𑒨𑒹 𑒥𑒰𑒜𑓃𑒻𑒢 𑒣𑒏𑒻𑒛𑓃 𑒪𑒹𑒪𑒾। 𑒏𑒯𑒴 𑒞𑒿 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏 𑒧𑒰𑒋- 𑒥𑒰𑒣 𑒏𑒲 𑒏𑒯𑒞𑒰। 𑒋𑒏 𑒏𑒰𑒖 𑒏𑒹𑒢𑒰𑒃 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒖𑒩𑒴𑒩𑒲 𑒕𑒃! "

𑒩𑒼𑒮𑒢𑒲 𑒥𑒖𑒪𑒱-

"𑒥𑒯𑒱𑒢, 𑒄 𑒞𑒿 𑒯𑒧𑒩 𑒁𑒣𑒢 𑒏𑒰𑒖 𑒁𑒕𑒱। 𑒯𑒧 𑒢𑒃 𑒏𑒩𑒥 𑒞𑒿 𑒏𑒹 𑒏𑒩𑒞। "

𑒮𑒳𑒪𑒹𑒐𑒰 𑒔𑒳𑒣𑒹 𑒩𑒯𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒱। 𑒩𑒰𑒡𑒰 𑒦𑒼𑒩𑒹 𑒅𑒚𑒱 𑒥𑒰𑒡𑒮𑒿 𑒒𑒰𑒮 𑒂𑒢𑒋 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒹𑒪𑒱। 𑒕𑒼𑒙𑒏𑒲

𑒣𑒳𑒩𑒼𑒯𑒱𑒞𑒏 𑒫𑓂𑒨𑒫𑒯𑒰𑒩𑒮𑒿 𑒢𑒰𑒨𑒰 𑒑𑒠𑒑𑒠 𑒕𑒟𑒱। 𑒞𑒿𑒋 𑒢𑒰𑒞𑒱 𑒐𑒴𑒥 𑒧𑒢𑒮𑒿 𑒮𑒳𑒞𑒪𑒱 𑒕𑒟𑒱।

𑒖𑒼𑒬𑒢𑒲 𑒒𑒩- 𑒠𑒳𑒁𑒰𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒯𑒰𑒩𑒱 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒙𑒼𑒏𑒩𑒲𑒧𑒹 𑒥𑒰𑒯𑒩- 𑒮𑒼𑒯𑒩 𑒅𑒚𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒟𑒱। 𑒞𑒰𑒫𑒞 𑒢𑒰𑒨𑒰 𑒒𑒰𑒮 𑒪𑓄 𑒏𑓄 𑒂𑒿𑒑𑒢𑒧𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒫𑒹𑒬 𑒏𑒹𑒪𑒻𑒢। 𑒂𑒏𑒱 𑒖𑒼𑒬𑒢𑒲 𑒠𑒹𑒐𑒪𑒏, 𑒗𑒙𑒹 𑒥𑒰𑒜𑓃𑒻𑒢 𑒕𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒮𑒰𑒮𑒳𑒏 𑒧𑒰𑒟𑒣𑒩 𑒮𑒿 𑒒𑒰𑒮𑒏 𑒕𑒱𑒙𑓂𑒙𑒰 𑒪𑓄 𑒒𑒰𑒮 𑒩𑒐𑒻𑒏 𑒖𑒑𑒯𑒣𑒩 𑒖𑒰 𑒏𑓄 𑒩𑒰𑒐𑒱 𑒂𑒋𑒪।

𑒢𑒰𑒨𑒰 𑒖𑒼𑒬𑒢𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒯𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒪-

"𑒞𑒴𑒿 𑒏𑒱𑒋𑒏 𑒥𑒜𑓃𑒢𑒲 𑒡𑒹𑒪𑒯। 𑒯𑒧 𑒁𑒥𑒱𑒞𑒾 𑒞𑒿 𑒗𑒰𑒛𑓃𑒴 𑒪𑒑𑒰 𑒠𑒱𑒞𑒾। "

𑒄 𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒖𑒼𑒬𑒢𑒲𑒏 𑒯𑒰𑒟𑒮𑒿 𑒥𑒰𑒜𑓃𑒻𑒢 𑒪𑒹𑒥𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒪𑒲। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒖𑒼𑒬𑒢𑒲 𑒥𑒖𑒪𑒲-

"𑒧𑒰𑒋, 𑒂𑒥 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒰𑒖 𑒏𑒩𑒻𑒏 𑒖𑒧𑒰𑒢𑒰 𑒢𑒃 𑒁𑒕𑒱। 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒥𑒻𑒮𑒴, 𑒂𑒩𑒰𑒧 𑒏𑒩𑒴 𑒂 𑒯𑒧 𑒮𑒦 𑒏𑒰𑒖 𑒏𑒩𑒥। "

𑒢𑒰𑒨𑒰 𑒮𑒳𑒮𑒞𑒰𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒪। 𑒞𑒰𑒫𑒞 𑒖𑒼𑒬𑒢𑒲 𑒮𑒰𑒮𑒳𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒋𑒏 𑒪𑒼𑒙𑒰 𑒣𑒰𑒢𑒱 𑒂 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒠𑒞𑒧𑒻𑒢 𑒂𑒢𑒱 𑒯𑒰𑒟𑒧𑒹 𑒟𑒧𑓂𑒯𑒫𑒻𑒞 𑒥𑒖𑒪𑒲-

"𑒮𑒰𑒮𑒳- 𑒧𑒰𑒿, 𑒄 𑒠𑒞𑒧𑒻𑒢 𑒏𑒩𑒾𑒟 𑒯𑒧 𑒞𑒰𑒫𑒞 𑒖𑒪𑒐𑒻 𑒥𑒢𑒰 𑒠𑒃 𑒕𑒱𑒋𑒢। "

𑒖𑒪𑒐𑒻 𑒞𑒻𑒨𑒰𑒩 𑒦𑒹𑒪। 𑒮𑒳𑒩𑒹𑒬𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒦𑒼𑒖𑒢 𑒂 𑒙𑒱𑒤𑒱𑒢 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒞𑒻𑒨𑒰𑒩 𑒏𑒹𑒪𑒏। 𑒏𑒱𑒋𑒏 𑒞𑒿 𑒮𑒳𑒩𑒹𑒬𑒏𑒹𑒿 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒪𑒨 𑒖𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒕𑒹𑒪𑒻𑒢। 𑒂𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒂 𑒢𑒰𑒨𑒰 𑒖𑒪𑒐𑒻 𑒏𑓄 𑒁𑒣𑒢- 𑒁𑒣𑒢 𑒏𑒰𑒖𑒧𑒹 𑒪𑒰𑒑𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒋𑒧𑒯𑒩 𑒖𑒼𑒬𑒢𑒲 𑒁𑒣𑒢 𑒖𑒹𑒚 𑒠𑒱𑒨𑒰𑒠𑒢𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒮𑒳𑒪𑒹𑒐𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒯𑒳𑒢𑒏 𑒏𑒼𑒚𑒩𑒲𑒧𑒹 𑒖𑒪𑒐𑒻 𑒪𑓄 𑒏𑓄 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒪।

𑒮𑒳𑒪𑒹𑒐𑒰 𑒂 𑒖𑒼𑒬𑒢𑒲 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒖𑒪𑒐𑒻 𑒏𑒹𑒪𑒻𑒢। 𑒂 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒁𑒣𑒢𑒰- 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒏𑒰𑒖𑒧𑒹 𑒪𑒰𑒑𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒲। 𑒖𑒼𑒬𑒢𑒲 𑒢𑒰𑒨𑒰𑒏 𑒂𑒨𑒰𑒮𑒿 𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒏𑒰𑒖𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒧𑓂𑒯𑒰𑒩𑒱 𑒪𑒹𑒪𑒻𑒢। 𑒮𑒳𑒪𑒹𑒐𑒰 𑒖𑒼𑒬𑒢𑒲𑒏 𑒫𑓂𑒨𑒫𑒯𑒰𑒩𑒮𑒿 𑒂𑒯𑒞 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒩𑒯𑒪𑒲 𑒂 𑒧𑒢𑒹- 𑒧𑒢 𑒁𑒣𑒢𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒁𑒣𑒩𑒰𑒡𑒲 𑒧𑒰𑒢𑒱 𑒣𑒬𑓂𑒔𑒰𑒞𑒰𑒣𑒼 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒻 𑒕𑒟𑒱। 𑒖𑒼𑒬𑒢𑒲𑒏 𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢, 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒫𑒞𑒰 𑒂 𑒔𑒰𑒪𑒱- 𑒔𑒪𑒢 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒒𑒧𑒝𑓂𑒛𑒏𑒹𑒿 𑒞𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒠𑒹𑒪𑒏।

𑒩𑒰𑒡𑒰 𑒂𑒥 𑒮𑒏𑒳𑒢 𑒧𑒯𑒮𑒴𑒮 𑒏𑒩𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒪𑒱। 𑒍𑒩 𑒒𑒩𑒧𑒹 𑒐𑒳𑒬𑒯𑒰𑒪𑒲 𑒂𑒥𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒪। 𑒋𑒏 𑒠𑒱𑒢 𑒩𑒼𑒬𑒢𑒲 𑒁𑒣𑒢 𑒒𑒩𑒏 𑒮𑒦 𑒏𑒰𑒧-𑒏𑒰𑒖 𑒢𑒱𑒣𑒙𑒰 𑒦𑒼𑒖𑒢 𑒏𑒋 𑒮𑒳𑒞𑒪 𑒕𑒹𑒪𑒱।

𑒞𑒰𑒫𑒞 𑒩𑒼𑒬𑒢𑒲 𑒏𑒼𑒚𑒩𑒲𑒧𑒹 𑒔𑒾𑒏𑒲𑒣𑒩 𑒮𑒳𑒞𑒪 𑒩𑒰𑒡𑒰𑒏 𑒣𑒋𑒩 𑒠𑒥𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒹𑒪𑒱। 𑒍𑒯𑒱 𑒮𑒧𑒨 𑒑𑓂𑒪𑒰𑒢𑒱𑒮𑒿 𑒧𑒩𑓂𑒧𑒰𑒯𑒞 𑒮𑒳𑒩𑒹𑒐𑒰 𑒏𑒢𑒻𑒞 𑒍𑒃 𑒏𑒧𑒩𑒰𑒧𑒹 𑒒𑒳𑒮𑒪 𑒂 𑒥𑒰𑒖𑒪-

"𑒧𑒰𑒋, 𑒌 𑒁𑒦𑒰𑒑𑒱𑒢𑒏𑒹𑒿 𑒏𑓂𑒭𑒧𑒰 𑒏𑒋 𑒠𑒱𑒁। 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒮𑒥𑒯𑒏 𑒮𑒳𑒐-𑒮𑒳𑒫𑒱𑒡𑒰𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒋𑒞𑒹𑒏 𑒠𑒱𑒢-𑒩𑒰𑒞𑒱 𑒐𑒙𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒻 𑒕𑒲। 𑒧𑒰𑒋, 𑒯𑒧𑒩𑒰𑒮𑒿 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒛𑓃 𑒏𑒭𑓂𑒙 𑒦𑒹𑒪। 𑒯𑒧 𑒁𑒯𑓀𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒹𑒪𑒾𑓀। 𑒩𑒼𑒬𑒢𑒲 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒒𑒩𑒏 𑒮𑒰𑒏𑓂𑒭𑒰𑒞 𑒪𑒏𑓂𑒭𑓂𑒧𑒲 𑒕𑒻𑒟। 𑒋𑒞𑒹𑒏 𑒣𑒜𑓃𑒪-𑒪𑒱𑒐𑒪 𑒦𑓄 𑒏𑓄 𑒖𑒹 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒮𑒥𑒯𑒏 𑒮𑒹𑒫𑒰 𑒏𑒩𑒻 𑒕𑒻𑒟 𑒍𑒯𑒱𑒮𑒿 𑒯𑒧𑒩𑒼 𑒩𑒼𑒬𑒢𑒲𑒮𑒿 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒦𑒹𑒙𑒪 𑒖𑒹 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒏 𑒮𑒠𑒮𑓂𑒨 𑒐𑓂𑒨𑒰𑒪 𑒏𑒋 𑒮𑒰𑒮𑒳-𑒧𑒰𑒿 𑒮𑒿 𑒥𑒜𑓃𑒱 𑒌 𑒮𑓀𑒮𑒰𑒩𑒧𑒹 𑒏𑒱𑒕𑒼 𑒢𑒯𑒱 𑒁𑒕𑒱। 𑒞𑒿𑒋 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒮𑒢 𑒁𑒦𑒰𑒑𑒱𑒢𑒏𑒹𑒿 𑒧𑒰𑒤 𑒏𑒋 𑒠𑒱𑒁। "

𑒏𑒢𑒻𑒞 𑒮𑒰𑒮𑒳-𑒧𑒰𑒿𑒏𑒹𑒿 𑒣𑒋𑒩 𑒠𑒥𑒰𑒥𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒪𑒱। 𑒩𑒰𑒡𑒰 𑒥𑒖𑒪𑒱-

"𑒥𑒹𑒙𑒲 𑒦𑒼𑒩𑒏 𑒯𑒹𑒩𑒰𑒋𑒪 𑒖𑒿 𑒮𑒰𑒿𑒗𑒧𑒹 𑒒𑒩 𑒂𑒥𑒱 𑒖𑒰𑒋 𑒞𑒿 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒯𑒹𑒩𑒰𑒋𑒪 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒯𑒪 𑒖𑒰𑒃 𑒕𑒃। "

𑒂𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒣𑒜𑓃𑒪-𑒪𑒱𑒐𑒪 𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩𑒏, 𑒮𑒦 𑒞𑒧𑒰𑒬𑒰 𑒠𑒹𑒐 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪। 𑒥𑒰𑒖𑒪-

"𑒧𑒰𑒋, 𑒮𑒳𑒩𑒹𑒐𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒧𑒰𑒤 𑒏𑒋 𑒠𑒯𑒲𑒢। 𑒏𑒳𑒪 𑒂 𑒢𑒲𑒏 𑒐𑒰𑒢𑒠𑒰𑒢𑒏 𑒥𑒹𑒙𑒲 𑒕𑒼𑒙𑒏𑒲 𑒏𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒒𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒰𑒏𑓂𑒭𑒰𑒞𑓂 𑒪𑒏𑓂𑒭𑓂𑒧𑒲 𑒕𑒻𑒟। 𑒧𑒡𑓂𑒨𑒧 𑒒𑒩𑒏 𑒥𑒹𑒙𑒲 𑒋𑒯𑒹𑒢 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒥𑒱𑒑𑒩𑒪 𑒒𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒳𑒡𑒰𑒩𑒱 𑒠𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। "

𑒄 𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒂𑒢𑒢𑓂𑒠𑒼𑒏 𑒂𑒿𑒐𑒱𑒮𑒿 𑒢𑒼𑒩 𑒯𑒯𑒩𑒰𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒪।

- 𑒢𑒰𑒩𑒰𑒨𑒝 𑒨𑒰𑒠𑒫, 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲𑒏 𑒢𑒰𑒧 : 𑒬𑓂𑒩𑒲𑒧𑒞𑒲 𑒮𑒳𑒧𑒱𑒞𑓂𑒩𑒰 𑒠𑒹𑒫𑒲। 𑒖𑒢𑓂𑒧 : 𑓑𑓔 𑒖𑒢𑒫𑒩𑒲 𑓑𑓙𑓕𑓖, 𑒣𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒢𑒰𑒧 : 𑒮𑓂𑒫 𑒩𑒰𑒖𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩 𑒨𑒰𑒠𑒫। 𑒧𑒰𑒞𑒰𑒏 𑒢𑒰𑒧 : 𑒮𑓂𑒫 𑒧𑒯𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩𑒲 𑒠𑒹𑒫𑒲। 𑒠𑒰𑒠𑒰𑒏 𑒢𑒰𑒧 : 𑒮𑓂𑒫 𑒦𑒼𑒪𑒰 𑒨𑒰𑒠𑒫। 𑒢𑒰𑒢𑒰𑒏 𑒢𑒰𑒧 : 𑒧𑒯𑒰𑒢 𑒮𑓂𑒫𑒞𑓀𑒞𑓂𑒩𑒞𑒰 𑒮𑒹𑒢𑒰𑒢𑒲

સ્વ. નામ ઉપ્પન સહૈિતા। જન્મ સ્થાન : ડુમરા, મૂલ ગામ : ડુમરા, પો- ડુમરા, ભાયા : નૂદરપુર, પ્રખણ્ડ : અન્ધરાઠાઢી, જિલ- મધુબની (બિહાર) માત□ક : નરહિ, થાના : ખુટૌના, પેશા : અધ્યાપન, અવકાશ પ્રાપ્ત પ્રધાનાધ્યાપક, માત્ર પેંશનપર આધારિત જિંદગી। શિક્ષા : એમ.એ. (મૈથિલી), ઉપ્પન : કથા, કવિતા આ આઉપ્પ વિભિન્ન પત્ર- પત્રિકામે પ્રકાશિત।

મોવાઇલ નં: ૯૯૩૯૦૪૧૧૧૬, ૯૪૩૦૬૩૧૯૯૩, ૮૫૪૧૦૯૬૦૦૪

સદ્યઃ પ્રકાશિત ક□તિ: ખાલી ઘર (કથા સંગ્રહ), પ્રકાશિત/અપ્રકાશિત અન્ય ક□તિ: (૧) નાતી દુલરુ નાનાકેં (કવિતા સંગ્રહ), (૨) બાબા નામ કેવલમ (કથા સંગ્રહ), (૩) સમઝૌતા (કથા સંગ્રહ), (૪) નવકી પુતોહુ (કથા સંગ્રહ)

ઐ રચનાપર અપન મંતવ્ય દિતોનાળિસનાડડ્વદિહા૦ગામાળિયોમ **પર પઠાઉ।**

𑒩𑒰𑒧𑒢𑒰𑒩𑒰𑒨𑒝 𑒨𑒰𑒠𑒫𑒏 𑓕 𑒙𑒰 𑒏𑒟𑒰- 𑒏𑒟𑒰-𑓒 𑒅𑒏𑒩𑒣𑒩 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒰𑒠𑒏𑒲𑒨 𑒮𑒧𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒁𑓀𑒑𑓂𑒩𑒹𑒖𑒲𑒧𑒹 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒰𑒠𑒏𑒲𑒨 𑒣□𑒭𑓂𑒚 𑒣𑒩

<u>𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯𑒏 𑒣𑒹𑒙𑒰𑒩𑒏 𑒂𑒧𑓀𑒞𑓂𑒩𑒱𑒞 𑒩𑒔𑒢𑒰 𑒂 𑒍𑒏𑒩𑒣𑒩 𑒮𑒧𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒮𑒲𑒩𑒲𑒖</u>

𑒋 𑒁𑓀𑒏𑒧𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒮𑓂𑒞𑒳𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒩𑒰𑒧𑒢𑒰𑒩𑒰𑒨𑒝 𑒨𑒰𑒠𑒫𑒏 𑓕 𑒙𑒰 𑒏𑒟𑒰 𑒅𑒏𑒩𑒣𑒩 𑒯𑒧𑒩 𑒮𑒧𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒁𑓀𑒑𑓂𑒩𑒹𑒖𑒲𑒧𑒹 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒰𑒠𑒏𑒲𑒨 𑒣□𑒭𑓂𑒚 𑒣𑒩 𑒁𑒕𑒱। - 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒰𑒠𑒏



𑒩𑒰𑒧𑒢𑒰𑒩𑒰𑒨𑒝 𑒨𑒰𑒠𑒫𑒏 𑓕 𑒙𑒰 𑒏𑒟𑒰

𑒏𑒟𑒰 𑓒

𑒮𑒰𑒧𑓂𑒣𑓂𑒩𑒠𑒰𑒨𑒱𑒏 𑒮𑒠𑓂𑒦𑒰𑒫

𑒏𑒰𑒢𑒣𑒳𑒩 𑒬𑒯𑒩𑒧𑒹 𑒕𑒼𑒙-𑒣𑒻𑒑 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒧𑒼𑒯𑒪𑓂𑒪𑒰 𑒁𑒕𑒱। 𑒁𑒾𑒩 𑒬𑒯𑒩𑒧𑒹 𑒪𑒼𑒏 𑒖𑒰𑒞𑒱, 𑒡𑒩𑓂𑒧, 𑒮𑒧𑓂𑒣𑓂𑒩𑒠𑒰𑒨𑒏 𑒦𑒹𑒠 𑒢𑒯𑒱 𑒁𑒕𑒱। 𑒋 𑒬𑒯𑒩𑒧𑒹 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒯𑒱𑒢𑓂𑒠𑒴 𑒥𑒰𑒯𑒳𑒪𑓂𑒨

मोहल्ला अछि आ एकटा मुस्लिम बाहुल्य।

दुनू मोहल्लाक बीच कहियो उग्रवादी, कट्टरपंथी मुल्ला पाखण्डि नेतारक प्रायः प्रवेश देने अछि। एक-दोसराक पूरक प्रयास हरदम, एक-दोसर बनल रहैत अछि। एक मोहल्लाक लोक दोसर मोहल्लामे नहि जाइत अछि। भय आ आतंकक माहौल हरदम बनल रहै छैक।

हिन्दू मोहल्लामे सुरेश नामक व्यक्तिकेँ एक मात्र पुत्र अछि जेकर नाम अछि प्रकाश कुमार। प्रकाश अति मेधावी छात्र अछि। सुरेश कर्त्तव्यनिष्ठ, इमानदार, निष्पक्ष आ निष्ठावान व्यक्ति अछि मुदा गरीब अछि। गरीब रहितो हिन्दू समाजमे सुरेशक बड़ मान्यता छैन। प्रकाशक व्यवहार आ मेधापर खुश भऽ मोहल्लाक लोक सब चन्दा दऽ ओकरा पढ़बाक लेल सहयोग करैत छल।

प्रकाश आठमी पास कए गौरीमे नाओ लिखौलैन। ओहि कक्षामे रहमान नामक एकटा लड़का सेहो पढ़ैत छल। रहमानक पिताक नाओ सुलेमान छलैन। सुलेमान धनी-मनी ओ नेता टाइपक लोक छैथ। मोहल्लावासीक कल्याणक बात सदिखन सोचैत रहै छैथ। रहमान, सुलेमानक एकलौता बेटा अछि। ओ महा उद्दण्ड तथा ईर्ष्यालु स्वभावक लड़का अछि। पढ़ैमे महा कुसकौल, मुदा फुटव□ल- क्रिकेटमे चैम्पियन अछि। खेलमे ओहन लड़का ओहि परोपट्टामे कोनो दोसर नहि छल।

प्रकाश आ रहमान एक्के वर्गमे पढ़ैत अछि। दुनू दू धारक लड़का तँए दुनूमे मोहल्लाक वातावरणक अनुसार एक-दोसराक जानी दुश्मन बनल रहैत अछि। रहमान वर्गक उद्दण्ड लड़का सबहक एक टोली बनौने छल।

प्रकाशसँ ओकरा जलन होइत रहै छैक। गुरुजी आ छात्र लोकैनक बीच रहमानसँ बेसी प्रकाशक मान्यता छेलैक। जइसँ रहमान प्रकाशसँ ईर्ष्या करैत छल। रहमान प्रकाशकेँ नीचा देखबैले ओकरा मारबाक तैयारीमे लागल

છઉ। ઐ વાnક ળાણકારી પ્‍રકાશકેં ભઽ યુકઉ છઉ। પ્‍રકાશ મને-મન સોચઉક જે ચુપસિં કાળ ઉવાક ચાહી। પ્‍રકાશ ધીરે-ધીરે રહ્માનસઁ દોસ્‍તી કરૈક પ્‍રયાસમે લાગિ ગેલ।

એક દિન વિદ્યાલયક ક્‍રિયા-કલાપક નિરીક્ષણ હેતુ જિલા શિક્ષા પદાધિકારીક આગમન ભેલ। વર્ગ શિક્ષક અપન-અપન વર્ગમે છાત્ર લૈકેનકેં ઐ સૂચનાક જાણકારી દઽ ચુકલ છઉ। છાત્ર લૈકેનકેં ઐ વાnક જાણકારી સેહો દઽ દેલ ગેલ છલ કિ સભ કિલાસમે પદાધિકારી વય્યા સભસઁ પ□થક-પ□થક પ્‍રશ્‍ન પુછથિન।

આવ રહ્માન છટપટાએ લાગલ, જેના બિનુ પાનિયેં માછક દશા હોઇત અછિ। રહ્માનકેં તેહને સન બુઝા લાગૈ। પદાધિકારીક પ્‍રશ્‍નક જવાવ કેના દેલ જા સકૈત અછિ। ઐ ગુનધુનમે લાગલ છલ રહ્માનક તખને પ્‍રકાશપર નજૈર પડ઼ૈ। પ્‍રકાશસઁ દુશ્‍મની છૈકૈ। ઓકરા ઓ મદદ કરૈત કેના કહત। મનમે સંકોચ ભઽ રહલ છેલૈ।

પ્‍રકાશો ઐ તાકમે છલ કિ રહ્માનસઁ દોસ્‍તી કોન હિસાબે કરી। દોસ્‍તી ઐ લેલ જે રહ્માન ધનીક બાપક બેટા અછિ। રહ્માનક પિતાક દબદબા ઐ પંચાયતમે છલ। દોસ્‍તી આ દુશ્‍મની બનાબૈમે હોઇત છૈ। દુનૂ એકે કિલાસમે છલ। પ્‍રકાશ ગરીબ બાપક બેટા છલ તેઁ ઓ ચુપસિં કાળ હોબાક તાકમે છલ। આઇ રહ્માનકેં અચકિ ચિન્તિત દેખિ પ્‍રકાશ સ્‍વભાવસઁ ઓકરા બજૌલક।

રહ્માનો અહી તાકમે છલ જે પ્‍રકાશસઁ મદદ કેના ભેટત। રહ્માન આ પ્‍રકાશ ગુપ્‍તગૂ કરઽ લાગલ। પ્‍રકાશ રહ્માનકેં સલાહ દૈત કહલક-

"અહાઁ આઇ હમરે બગલમે બૈસબ। હમ સભ પ્‍રશ્‍નક જવાબ અપના હાથપર લિખિ, હાથ અહાઁક આગૂમે રાખિ દેબ। અહાઁ દેખિ કઽ જવાબ દઽ દેબૈ।"

આબ રહ્માન બડ઼ ખુશ છલ। ખુશ ઐ કારણે જે આબ હમરા અપમાનિત નહિ હુઅ પડ઼ત। આસ્‍તે-વિપત આ મુસીબત લોકપર શત્રુઓ મિત્ર ભઽ જાઇત અછિ।

વાઢ઼િ પ્રભાપર ઘરહિ। સભ ઠીક ઘન્તુ ઘપ્પન એકટા ટભિ ઊઁચગર સ્થાનપર શરણ ઉેત અછિ નેઁ રાગ- દ્વેશ, દુશ્મની સભટા મતિ્રતામે વદૈલ ઘાર છૈ તહિ। રહમાનકેઁ બેઉૈન।

પ્રકાશ અપન વુયકિ પ્રયોગ રહમાનપર કેઉક। વ઼રગમે અગુઉકા વ્ગેયક પાછૂવઉ વ્ગેયપર વીયમે દુનૂ ગોરે વૈસઉ। દુનૂકેઁ એકઠામ આ એક વ્ગેયપર વૈસઉ દેપ્પ વ઼રગક સભ છાત્ર અચમ્ભિત ભS ગેઉ। વ઼રગ શકિ્ષકકેઁ સેહો એ ટટકા મતિ્રતાપર આશ્ચર્ય બેઉૈન, ઓ અતિ હ઼્રષિત ભS ગેઉા। હ઼્રષિત એ ઉઉ ઘે રહમાન ઉદાહ્ણ છઉ।

ઉદાહ્ણ છાત્રક સંગ ઙમે આકિ મતિ્રતાસઁ આનો છાત્ર સભ સાથ દેવએ ઉગૈત છર। ઘપ્પૈન- તપ્પૈન વ઼રગમે હઉઉ- અસાદ કરવએ- વઉ છાત્ર રહમાન આર વ઼દિ્યાઉયક શષિ્ટ, અનુશાસતિ છાત્રક મતિ્ર ભS ગેઉ। એસઁ ખુશી આર કી।

નતિ્યાનતિ સમયપર ઘભિ શકિ્ષા પદાયકિાની નવ઼મ વ઼રગમે પ્રવ઼ેશ કેઉૈન। પહનિ નતિ્ઉભી વનિ પદાયકિાની વ઼દિ્યાઉયક નરીક્ષણ કરૈત છઉ। પૂરા દનિ વ઼દિ્યાઉયમે દS એક- એક છાત્રક પ્રગતસિઁ અવ઼ગત હોરત છઉ આ વ઼દિ્યાઉયક સર્વાંગીણ વ઼કિાસક ઉઉ માર્ગ નર્િદેશ કરૈત છઉ।

શકિ્ષાક ગુણવત્તાપર સવહક ધ્યાન રહૈત છેઉૈન। શકિ્ષકો કર્ત્તવ્યનષિ્ઠ આ પરશ્રિમી હોરત છઉ। મુદા આઘુક દનિમે ગુણવત્તાપર વ઼શિષ ભાષણ આ કામ વ઼પિરીત દેખના ઘારત અછિ। છાત્ર કમ આ શકિ્ષકક ભરમાર રહતિ એકો ઘણ્ટી કભિાસ નર યઉૈત અછિ આ ને પદાયકિારીએ ધ્માનદાર છૈથ।

નરીક્ષણક ક્રમમે વ઼દિ્યાઉયસઁ સેવ઼ા શુઉક, ગાડ઼ી તેઉક વહાને વ઼દિ્યાઉયક પ્રધાનસઁ યુંગી અસૂઉ કરૈ છૈથ। પદાયકિારી ઉકૈનક કોનો મૂલ્ય વ઼દિ્યાઉયમે નહિ રહિ ગેઉ અછિ।

જ્ઞાનપ્ટાયાન સીમા પાન કએ યુકઠ અછિ। ઊપરસઁ નીચા ધરિ જ્ઞાનપ્ટાયાનમે શ્રાકામ્ડ ઙુમઠ અછિ। ળેના મકાનક સીઢ઼ીક સસ્ટાર નીચાવઠ પૌદાનસઁ નહિ કએઠ ળા સકૈત અછિ। ઊપરકા પૌદાનસઁ સાસ્ઠ કએઠાસઁ પૂના સીઢ઼ીક સસ્ટાર હોએત તહિના જ્ઞાનપ્ટાયાનક પ્યાત્મા ઉપરસઁ સમ્ભાવ અછિ।

નહમાન શ્રા પ્રકાશ દોસર વ્યૈયપર એકેડામ વૈસઠ છઠા। પદાયકિાની છાત્ર ઠકૈન સભસઁ પ્રશ્ન પુછએ ઠાગઠ। છાત્ર ઠકૈન યથાસમ્ભાવ ળવાવ દેવએ ઠાગઠ। નહમાનક વાની એઠર। પદાયકિાની નહમાનસઁ પ્રશ્ન પુછૈન-

"શકિ્ષક કે શ્રતિકિ્ત નહીં વોઠનેવાઠા ગુ્ગુ કૌન હોતા હૈ?"

નહમાન પ્રકાશક વામા હાથપર ઠપ્પિઠ ળવાવ દેપ્ય વાળઠ-

"પોથી। "

પદાયકિાની-

"શ્રંગ્રેળી કે સગિુઠનમે કતિને શ્રક્ષર હોતે હૈ?"

નહમાન કછિુ સોચૈત શ્રોગરીપર ગતિત પ્રકાશક હાથપર દેપ્ય ઉત્તર દેઠક-

"શ્રાડ। "

હ્નેક છાત્રસઁ તીન પ્રશ્ન પુછવાક છૈઠ તેં એ તેસર પ્રશ્ન પદાયકિાની પુછઠપ્યતિ-

"એક સે નશ્ર તક કા યોગસ્ઠઠ કતિના હોતા હૈ?"

નહમાન કછિુ સોચવાક શ્રાક□તિ કિરૈત હાથ મુઁહકેં યમકવૈત શ્રાગૂમે પ્રકાશક હાથકેં દેપ્યૈત વાળઠ-

"પૈતાઠીસ। "

ओहि शिक्षा पदाधिकारी तीनू प्रश्नक सही जवाब सुनि बजला-

"यह लड़का बहुत जीनीयस है।"

रहमानक प्रशंसा पदाधिकारीक मुहसँ सुनि बड़का शिक्षक आ बड़काक छात्रसभ आश्चर्यचकित भेला। तावत प्रकाश जे अपना हथेलीपर जवाब लिखिने छल तेकरा खूब नीकसँ मेटा देने छल। ऐ करिश्माकेँ बड़का शिक्षक आ दुनू छात्रे जानि सकल।

आब प्रकाश आ रहमानमे मित्रता बढ़ए लागल। दुनू एक-दोसरकेँ दहिजानसँ मानए लागल। बड़का शिक्षक सेहो बड़ खुश छला। खुशी ऐ लेल छल जे रहमान विद्यालयकेँ तनाव ग्रस्त बनौने रहै छल। आब प्रकाश नियमित रूपे पढ़न-पाठन करए लागल। रहमानकेँ सभ विषयक तैयारी करबए लागल।

रहमानमे हठात् ई परिवर्तन देख रहमानक अब्बा सुलेमान एकर राज जनबाक प्रयास केलैन। बेटासँ पुछलखिन। रहमान सभटा व□तान्त अब्बाजानकेँ कहि सुनौलक। सुलेमानकेँ प्रकाशक प्रति सिनेह जागल। समय-समयपर सुलेमान प्रकाशकेँ उपहार रहमानक हाथे भेजए लागल।

ऐ बातक जानकारी प्रकाशक पिताजीकेँ सेहो भेलैन। दुनू अभिभावककेँ एक-दोसराक पुत्रक प्रति सिनेह-भाव जागल। प्रकाश रहमानकेँ दिशा निर्देश आ रहमान प्रकाशकेँ अपन खेलबा कौशलसँ दक्ष बनेबामे लागल रहैत छल। रहमानक दिन घुमि गेलइ। सभ अवारापनी, बदमाशी छुटि गेलइ। हदीशक एक पाँति छै- 'ला इलाहि इल्लह मुहम्मदे रसुलल्लाह।'

किछु दिनक बाद रमजानक मास आबि गेल। मुसलमानक बच्चासँ बुढ़ धरि, मर्दसँ जनानी तक अल्लाहक इबादतमे रोजा राखए लागल। रहमान सेहो इस्लाम धर्मक रक्षार्थ रोजा रखैत छल। रमजानक अवधिमे प्रकाश रोजा खोलबाक (इफ्तार पार्टी) हेतु कोनो-कोनो समान रहमानक हेतु घरसँ

𑒪𑒰𑒥𑒱 𑒠𑒻𑒞 𑒕𑒪।

𑒩𑒥𑒱 𑒠𑒱𑒢𑒱 𑒩𑒼𑒖𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒄𑒠 𑒣𑒩𑓂𑒫 𑒂𑒥𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒩𑒯𑒧𑒰𑒢, 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒏𑒹𑒿 𑒄𑒠𑒏 𑒐𑒳𑒬𑒲𑒧𑒹 𑒠𑒰𑒥𑒞 𑒠𑒹𑒪𑒏। 𑒂𑒥 𑒣𑓂𑒩𑒬𑓂𑒢 𑒕𑒪𑒻 𑒖𑒹 𑒋𑒏 𑒙𑒼𑒪- 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒙𑒼𑒪𑒏 𑒖𑒰𑒢𑒲 𑒠𑒳𑒬𑓂𑒧𑒢 𑒥𑒢𑒪 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒪। 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬 𑒍𑒃 𑒙𑒼𑒪 𑒏𑒹𑒢𑒰 𑒖𑒹𑒞𑒰, 𑒋 𑒞𑒰𑒩𑒞𑒧𑓂𑒨𑒧𑒹 𑒕𑒪 𑒏𑒱 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒅𑒣𑒰𑒨 𑒮𑒳𑒗𑒪𑒻𑒢। 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬 𑒣𑒰𑒖𑒰𑒧𑒰- 𑒏𑒳𑒩𑓂𑒞𑒰 𑒣𑒯𑒱𑒩 𑒠𑒳𑒣𑒯𑒩𑒧𑒹 𑒩𑒯𑒧𑒰𑒢𑒏 𑒍𑒞𑒋 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒪।

𑒩𑒯𑒧𑒰𑒢𑒏 𑒧𑒰𑒋- 𑒥𑒰𑒥𑒴𑒖𑒲 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒏𑒹𑒿 𑒠𑒹𑒐 𑒥𑒛𑓃 𑒐𑒳𑒬 𑒦𑒹𑒪। 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒏 𑒐𑒴𑒥 𑒂𑒫- 𑒦𑒑𑒞 𑒦𑒹𑒪। 𑒐𑒴𑒥 𑒧𑒹𑒫𑒰- 𑒧𑒚𑒱𑒩 𑒐𑒳𑒎𑒪𑒏। 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒧𑒱𑒞𑓂𑒩 𑒮𑓀𑒡𑓂𑒨𑒰 𑒡𑒩𑒱 𑒐𑒹𑒪𑒰𑒃𑒞- 𑒡𑒳𑒣𑒰𑒃𑒞 𑒂 𑒑𑒣- 𑒮𑒣𑓂𑒣𑒧𑒹 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒩𑒯𑒪। 𑒧𑒳𑒢𑒯𑒰𑒩𑒱 𑒮𑒰𑒿𑒗 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪।

𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬 𑒒𑒩 𑒂𑒥𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒡𑒛𑓃𑒤𑒛𑓃𑒰𑒃𑒞 𑒮𑒲𑒜𑓃𑒲𑒮𑒿 𑒢𑒲𑒔𑒰 𑒅𑒞𑒩𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒪, 𑒂𑒏𑒱 𑒮𑒲𑒜𑓃𑒲𑒮𑒿 𑒣𑒋𑒩 𑒣𑒕𑒱𑒩 𑒑𑒹𑒪𑒻𑒢। 𑒮𑒲𑒜𑓃𑒲𑒣𑒩 𑒅𑒜𑓃𑒏𑒻𑒞 𑒢𑒔𑒱𑒪𑒰 𑒣𑒾𑒠𑒰𑒢𑒣𑒩 𑒑𑒱𑒩𑒪। 𑒏𑒣𑒰𑒩 𑒤𑒳𑒙𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒻𑒢। 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒩𑒰𑒮 𑒐𑒴𑒢 𑒥𑒯𑒪𑒻𑒢। 𑒩𑒯𑒧𑒰𑒢𑒏 𑒣𑒱𑒞𑒰 𑒮𑒳𑒪𑒹𑒧𑒰𑒢 𑒁𑒣𑒢 𑒔𑒰𑒩𑒔𑒏𑒱𑒨𑒰 𑒑𑒰𑒛𑓃𑒲𑒮𑒿 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒏𑒹𑒿 𑒛𑒰𑒏𑓂𑒙𑒩 𑒪𑒑 𑒪𑓄 𑒑𑒹𑒪𑒻𑒢। 𑒏𑓂𑒪𑒱𑒢𑒱𑒏𑒧𑒹 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒐𑒴𑒢𑒏 𑒂𑒫𑒬𑓂𑒨𑒏𑒞𑒰 𑒣𑒛𑓃𑒪𑒻। 𑒮𑒳𑒪𑒹𑒧𑒰𑒢𑒏 𑒐𑒴𑒢𑒏 𑒖𑒰𑒿𑒔 𑒦𑒹𑒪। 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒏 𑒐𑒴𑒢𑒮𑒿 𑒧𑒱𑒪𑒪। 𑒂𑒫𑒬𑓂𑒨𑒏𑒞𑒰𑒢𑒳𑒮𑒰𑒩 𑒮𑒳𑒪𑒹𑒧𑒰𑒢 𑒁𑒣𑒢 𑒐𑒴𑒢 𑒠𑒋 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒏 𑒖𑒰𑒢 𑒥𑒿𑒔𑒾𑒪𑒏 𑒂 𑒮𑒦 𑒠𑒫𑒰𑒃 𑒐𑒩𑒲𑒠 𑒠𑒫𑒰𑒃𑒨𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒏𑒹𑒿 𑒒𑒩 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒾𑒪𑒏।

𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒏 𑒣𑒱𑒞𑒰 𑒮𑒳𑒩𑒹𑒬 𑒥𑒛𑓃 𑒐𑒳𑒬 𑒦𑒹𑒪। 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒠𑒱𑒢𑒏 𑒣𑒬𑓂𑒔𑒰𑒞 𑒚𑒲𑒏 𑒦𑒹𑒪𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬 𑒣𑒳𑒢𑓁 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒪𑒨 𑒖𑒰𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒪। 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬 𑒂 𑒩𑒯𑒧𑒰𑒢𑒏 𑒠𑒼𑒮𑓂𑒞𑒲 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒪𑒨𑒧𑒹 𑒣𑒳𑒢𑓁 𑒬𑒻𑒏𑓂𑒭𑒝𑒱𑒏 𑒧𑒰𑒯𑒾𑒪𑒏𑒹𑒿 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒣𑒱𑒞 𑒏𑒹𑒪𑒏। 𑒂𑒥 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒪𑒨𑒧𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬 𑒂 𑒩𑒯𑒧𑒰𑒢 𑒣𑒯𑒱𑒪 𑒂 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒣𑓂𑒞 𑒏𑒩𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒪।

𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒠𑒱𑒢𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒯𑒼𑒪𑒲 𑒣𑒰𑒫𑒻𑒢 𑒂𑒥𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒯𑒼𑒪𑒲𑒧𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬, 𑒩𑒯𑒧𑒰𑒢𑒏𑒹𑒿 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒒𑒩𑒣𑒩 𑒣𑒰𑒫𑒻𑒢𑒧𑒹 𑒦𑒼𑒖𑒢 𑒏𑒩𑒻𑒪𑒹 𑒢𑒼𑒞 𑒠𑒹𑒪𑒏। 𑒩𑒯𑒧𑒰𑒢 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒧𑒰𑒋- 𑒥𑒰𑒥𑒴𑒮𑒿 𑒥𑒱𑒢𑒳 𑒣𑒳𑒕𑒢𑒯𑒱 𑒥𑒜𑓃𑒱𑒨𑒰𑒿 𑒣𑒰𑒖𑒰𑒧𑒰- 𑒏𑒳𑒩𑓂𑒞𑒰 𑒣𑒯𑒱𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒏 𑒒𑒩 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒪।

𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒏 𑒧𑒰𑒋- 𑒥𑒰𑒣 𑒩𑒯𑒧𑒰𑒢𑒏𑒹𑒿 𑒁𑒣𑒢𑒼 𑒥𑒹𑒙𑒰𑒮𑒿 𑒁𑒡𑒱𑒏 𑒧𑒰𑒢𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒪। 𑒐𑒴𑒥 𑒢𑒲𑒏- 𑒢𑒲𑒏 𑒦𑒼𑒖𑒢 𑒏𑒩𑒾𑒪𑒏। 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒐𑒴𑒥 𑒂𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒧𑒢𑒾𑒪𑒏। 𑒮𑒰𑒿𑒗𑒴 𑒣𑒯𑒩 𑒏𑒱𑒕𑒳

ग्रामीणक टोली, होली गबैत जोगिरा गबैत सड़कपर जाइत छल। प्रकाश आ रहमान ओर मण्डलीक अजानिय देखबाक लेल पहुँचल।

अबीराक रंग गबैत किछु ग्रामीण- 'बुरा न मानो होली है' कहैत प्रकाशकेँ रंगसँ सराबोर कए देलक। किछु शरारती लड़का रहमानकेँ प्रकाशक रिश्तेदार जानि ओकरा रंग देबाक लेल दौगल। रहमान रंगक डरसँ नहि, अपन अब्बाजानक डरसँ रंगसँ बँचबाक लेल एकटा गलीमे पड़ाएल। गलीक अन्तिम छोरपर एकटा इनार छल, इनार बिना घेरल छल। रहमान भागैक क्रममे ओर इनारमे खसि पड़ल। हल्ला भेल। प्रकाश आ प्रकाशक बाबूजी दौग कऽ एला। प्रकाशक पिताजी इनारमे कड़ी पकैड़ नीचा उतरल। रहमानक कपार फुटि गेल छल। रहमानकेँ सुरेश इनारसँ निकाललक। अपन अंग पोछासँ ओकरा फुटल कपारकेँ बन्हलक आ तुरन्त डाक्टर लग गेल।

रहमानकेँ जावत डाक्टर लग लऽ जाइत तावत माथसँ बहुत खून बहि चुकल छल। रहमानक प्राण बँचनाइ मुश्किल भऽ गेल। देहसँ खून निकैल चुकल छल।

डाक्टर रहमानक हेतु खूनक आवश्यकता बतौलक। खूनक जाँच भेल। रहमानक खून प्रकाशक बाबूक खूनसँ मिलल। प्रकाशक बाबूक खूनसँ रहमान ठीक भेल। आ आधा रातकि पहरमे सुरेश रहमानकेँ लए ओकरा घरपर पहुँचा सुलेमानकेँ सभटा व□तान्त सुनौलक। सुलेमानक मात्र एक गोट सन्तानक रक्षा सुरेशजी कैलन।

ईद पावनिक दिन सुलेमान सुरेशक बेटाकेँ बँचौने छल। सुलेमानक मनमे उठल- कर भला तँ हो भला।

तैवीय रहमान मुँहमंगा इनाम सुरेशकेँ देबए चाहैत। मुदा गरीब रहितो सुरेश एकरा पाप बुझलक।

जनिसरमे सुलेमान दवाइक दोकानसँ रहमानक लेल दवाइ खरीदबाक लेल गेल।

सभ दवाइ खरीद अनलक आ रहमानकेँ दवाइ खुअबाक हेतु ओकरा बस्तिर लऽ गेल ओ रहमान भाव-विभोर भऽ बाजल-

" अब्बाजान, प्रकाशक माताक खूनसँ हमर जान बँचा सकैत अछि आ अहाँक खूनसँ प्रकाशक जिनगी आपस आबि सकै छइ। ऐसँ ओ इ साबित भऽ गेल जे हिन्दू- मुसलमानक खूनमे कोनो अन्तर नइ अछि। ओ दुनू सम्प्रदायक बीच दुश्मनी करै छै। अब्बाजान, दुनू टोलक बीच साम्प्रदायिक सद्भाव कायम करबाक प्रयास करि ने करै छी। "

रहमानक इ बुद्धिमतापूर्ण बात सुनि सुलेमान अवाक् रहि गेल।

- नारायण यादव, पत्नीक नाम : श्रीमती सुमित्रा देवी। जन्म : १४ जनवरी १९५६, पिताक नाम : स्व. रामेश्वर यादव। माताक नाम : स्व. महेश्वरी देवी। दादाक नाम : स्व. भोला यादव। नानाक नाम : महान स्वतंत्रता सेनानी स्व. राम लखन सरहैता। जन्म स्थान : डुमरा, मूल गाम : डुमरा, पो- डुमरा, भाया : रुद्रपुर, प्रखण्ड : अन्धराठाढ़ी, जिला- मधुबनी (बिहार) मात□क : नरही, थाना : खुटौना, पेशा : अध्यापन, अवकाश प्राप्त प्रधानाध्यापक, मात्र पेंशनपर आधारित जिनगी। शिक्षा : एम.ए. (मैथिली), लेखन : कथा, कविता आ आलेख विभिन्न पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित।

मोबाइल नं: ९९३९०४१११६, ९४३०६३१९९३, ८५४१०९६००४

सद्यः प्रकाशित क□ति: खाली घर (कथा संग्रह), प्रकाशितअप्रकाशित अन्य क□ति: (१) नानी दुसलक नानाकेँ (कविता संग्रह), (२) बाबा नाम केवल (कथा संग्रह), (३) समझौता (कथा संग्रह), (४) नवकी पुतोहु (कथा संग्रह)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

रामनारायण यादवक ५ टा कथा- कथा-३ एहिपर सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर

<u>विदेह पेटारक आमन्त्रित रचना आ ओहिपर समीक्षा सीरीज</u>

ऐ अंकमे प्रस्तुत अछि रामनारायण यादवक ५ टा कथा एहिपर हमर समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर अछि। - सम्पादक



𑒢𑒰𑒩𑒰𑒨𑒝 𑒨𑒰𑒠𑒫𑒏 𑓕 𑒙𑒰 𑒏𑒟𑒰

𑒏𑒟𑒰 𑓓

𑒏𑒢𑓂𑒨𑒰𑒿𑒏 𑒖𑒱𑒢𑒑𑒲

𑒥𑒲𑒋𑒏 𑒕𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒕𑒹𑒪𑒾𑓀। 𑒑𑒰𑒧𑒧𑒹 𑒕𑒳𑒙𑓂𑒙𑒲 𑒕𑒪। 𑒧𑒢 𑒥𑒯𑒪𑒥𑒻-𑒪𑒹 𑒁𑒣𑒢 𑒖𑒹𑒚 𑒥𑒯𑒱𑒢𑒱𑒏 𑒑𑒰𑒧 𑒑𑒹𑒪 𑒩𑒯𑒲। 𑒣𑒰𑒿𑒔 𑒦𑒰𑒋-𑒥𑒯𑒱𑒢𑒱𑒧𑒹 𑒮𑒦𑒮𑒿 𑒖𑒹𑒚 𑒥𑒯𑒱𑒢𑒱, 𑒧𑒰𑒋-𑒥𑒰𑒥𑒴𑒏 𑒥𑒛𑓃 𑒠𑒳𑒪𑒰𑒩𑒴 𑒕𑒹𑒪𑒲। 𑒥𑒛𑓃 𑒡𑒴𑒧-𑒡𑒰𑒧𑒮𑒿 𑒢𑒰𑒧𑒲-𑒑𑒰𑒧𑒲 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒧𑒹 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯 𑒦𑒹𑒪 𑒕𑒹𑒪𑒻𑒢। 𑒥𑒯𑒱𑒢𑒱𑒏 𑒖𑒹𑒚 𑒮𑒮𑒳𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒥𑒹𑒙𑒲 𑒕𑒹𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱। 𑒍𑒏𑒩 𑒢𑒰𑒍𑓀 𑒏𑒳𑒮𑒳𑒧 𑒕𑒪। 𑒢𑒰𑒧𑒹 𑒮𑒢 𑒮𑒳𑒢𑓂𑒠𑒩𑒼 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒕𑒹𑒪𑒲 𑒏𑒳𑒮𑒳𑒧। 𑒍 𑒧𑒻𑒙𑓂𑒩𑒱𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒟𑒧 𑒬𑓂𑒩𑒹𑒝𑒲𑒮𑒿 𑒣𑒰𑒮 𑒦𑓄 𑒮𑓂𑒢𑒰𑒞𑒧𑒹 𑒣𑒜𑓃𑒻𑒞 𑒕𑒹𑒪𑒲। 𑒮𑒼𑒪𑒯 𑒥𑒩𑓂𑒐𑒏 𑒍 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪 𑒪𑒪𑒢𑒰, 𑒖𑒏𑒩 𑒮𑒳𑒢𑓂𑒠𑒩𑒞𑒰 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒣𑒞𑒱𑒏 𑒏𑒫𑒱 𑒏𑒪𑓂𑒣𑒢𑒰 𑒏𑒰𑒧𑒱𑒢𑒲 𑒂 𑒮𑓂𑒫𑒩𑓂𑒑 𑒦𑒑𑒫𑒰𑒢𑒏 𑒅𑒩𑓂𑒫𑒮𑒲𑒮𑒿 𑒅𑒣𑒧𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒣𑓂𑒞 𑒏𑒩𑒋𑒫𑒰𑒪𑒲 𑒂 𑒯𑒧 𑓒𑓐-𑓒𑓒 𑒥𑒩𑓂𑒐𑒏 𑒏𑒾𑒪𑒹𑒖𑒏 𑒕𑒰𑒞𑓂𑒩। 𑒖𑒐𑒢 𑒠𑒲𑒠𑒲𑒏 𑒑𑒰𑒧 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒪𑒾𑓀 𑒞𑒿 𑒍 𑒮𑒳𑒢𑓂𑒠𑒩 𑒯𑒰𑒟𑒧𑒹 𑒪𑒼𑒙𑒰 𑒪𑒋 𑒯𑒰𑒟-𑒣𑒋𑒩 𑒡𑒼𑒥𑒰𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒣𑒰𑒢𑒱 𑒁𑒢𑒪𑒏। 𑒯𑒧 𑒯𑒰𑒟-𑒣𑒋𑒩 𑒏𑒲 𑒡𑒼𑒁𑒥, 𑒍𑒩 𑒮𑒳𑒢𑓂𑒠𑒩𑒲𑒏 𑒧𑒳𑒐-𑒧𑒰𑒡𑒳𑒩𑓂𑒨𑒏𑒹𑒿 𑒋𑒏𑒙𑒏 𑒢𑒱𑒯𑒰𑒩𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒪𑒾𑓀। 𑒠𑒲𑒠𑒲 𑒯𑒧𑒩 𑒦𑒰𑒫𑒢𑒰𑒮𑒿 𑒁𑒫𑒑𑒞 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒥𑒖𑒪𑒲-

"𑒥𑒾𑒂, 𑒄 𑒯𑒧𑒩 𑒢𑒢𑒻𑒠 𑒕𑒻𑒟। 𑒄 𑒁𑒯𑒲𑓀 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱𑒏 𑒏𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿 𑒕𑒻𑒟। 𑒯𑒧 𑒋𑒏𑒩 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯 𑒁𑒯𑒲𑒮𑒿 𑒏𑒩𑒰 𑒠𑒹𑒥। 𑒖𑒿 𑒃𑒔𑓂𑒕𑒰 𑒯𑒳𑒁𑒋 𑒞𑒿। "

𑒄 𑒥𑒰𑒞 𑒮𑒳𑒢𑒱𑒞𑒹 𑒯𑒧 𑒦𑒰𑒫-𑒫𑒱𑒦𑒼𑒩 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪𑒾𑓀। 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒢𑒰𑒢𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒩𑒏 𑒅𑒠𑓂𑒫𑒹𑒑 𑒖𑒰𑒑𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒪। 𑒍 𑒮𑒳𑒢𑓂𑒠𑒩𑒲 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒮𑓀𑒑 𑒧𑒖𑒰𑒏 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒥𑒖𑒪𑒲-

"𑒏𑒲 𑒯𑒧 𑒋𑒯𑒢𑒹 𑒥𑒩𑒮𑒿 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯 𑒏𑒩𑒥। "

મળાકમે ત઼ઁ શ્રો ળે વળવાક છેઐ સે વાળિ ગેઊ મુદા કુસુમક હ□દયમે હમના સ્થાન પ્નાયિ઼ત્મક નૂપમે વાસ કનાએ ઊાગઊ। ળહિા હમના ઊઊ શ્રો શ્રનમોઊ નત્ન સ્વ઼નુપા છેઊી તહિા હુનકા ઊઊ હમહૂઁ। શ્રોહિ હમના શ્રાગત- જાગતમે ઊાગિ ગેઊી। દુનૂક એક- દોસનાક પ્નતિ શ્રાકન્ષણ સ્વ઼જાવ઼િક છઊ।

શ્રો શ્રાર હમના સ્વ઼ાગતક ઊઊ શ્રપનેસઁ છપ્પન પ્નકાનક વ઼્યંળન વનૌઊક। દીદી દોસના કાળમે વાહ્ઊ છેઊી। કુસુમ હ્ટ- દે હમના જોળન કનેવાક તૈયાનીમે ળુટિ ગેઊી। ઘનમે પીઢ઼ી દએ જોળનક ળોગાન કનાએ ઊાગઊી। હાથમે પાણિ ઊએ હમના ઊાગ ડાઢ઼ જાડ વળઊી-

"પાહુન, જોળન કનાએ યઊ। "

હમહૂઁ જૂખ્ઊ છેઊૌ। જોળનક પ્નત્યાસામે છેઊૌ। શ્રા મનમે કુસુમક સન્હયિ઼ાર્ક ળળિ્ગાસાક તઊાસ કનાતિ છેઊૌ। જોળન કનૈઊ ઉડઊૌ। પીઢ઼ીપના શ્રાવિ વૈસઊૌ।

કુસુમ થાનીમે જોળન સાઁડિ હમના શ્રાગૂમે દેઊક શ્રા એકટા વિએન ઊડ વગઊમે વૈસ પંખ્યા ડોઊવએ ઊાગઊી। હમ પ્નેમસઁ જોળન કનાએ ઊાગઊૌ। પંખ્યા ડોઊવૈત કુસુમ વળઊી-

"કી પાહુન, તીમન- તનકાની ખેવાક યોગ વનઊ શ્રછિ કિ?"

"ખેવાક યોગ કિએક ને નહત, કાનાણ વનૌઊક કે શ્રછિ। શ્રાર યના એોક સુસ્વ઼ાદુ જોળન નહિ કેને છેઊૌ। "

શ્રપન પ્નશંસાક શવ્દ સુણિ કુસુમક સાહસ વઢ઼ઊ શ્રા હમનાસઁ પુછઊક-

"છુટ્ટી કેતેક દિન શ્રાન શ્રછિ ળે ળાર્ક ઊઊ શ્રપ્પનેસઁ વ઼્યગ્ન છી। કી એતએ મન નર ઊગૈત શ્રછિ?"

હમ તુનત ળવ઼ાવ દેઊી-

"𑒋𑒢𑒰𑒋 𑒧𑒢 𑒢𑒯𑒱 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒂 𑒏𑒹𑒢𑒰𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒞, 𑒏𑒾𑒪𑒹𑒖 𑒯𑒼𑒮𑓂𑒙𑒪𑒧𑒹। 𑒖𑒹𑒢𑒰𑒋 𑒖𑒰𑒪𑒧𑒹 𑒂𑓀𑒏𑒩 𑒂 𑒠𑒰𑒪𑒱𑒧𑒹 𑒢𑒨𑒱𑒕𑓂𑒕𑒏 𑒣𑒰𑒢𑒱 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒃। "

𑒯𑒧 𑒣𑒰𑒃𑒪𑒼 𑒕𑒹𑒪𑒾 𑒂 𑒥𑒞𑒱𑒨𑒰𑒃𑒪𑒼 𑒕𑒹𑒪𑒾। 𑒍𑒯𑒱 𑒏𑓂𑒩𑒧𑒧𑒹 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒮𑒖𑒧𑒻𑒢𑒏 𑒥𑒲𑒂 𑒯𑒰𑒟𑒧𑒹 𑒂𑒥𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒯𑒧 𑒧𑒖𑒰𑒏 𑒏𑒻𑒞 𑒥𑒖𑒪𑒾-

"𑒯𑒹 𑒏𑒼𑒃𑒪𑒲 𑒯𑒹 𑒏𑒼𑒃𑒪𑒲, 𑒯𑒧𑒩 𑒥𑒱𑒨𑒰𑒯 𑒏𑒹𑒢𑒰𑒋। "

𑒂 𑒥𑒲𑒍 𑒏𑒳𑒮𑒳𑒧𑒏 𑒠𑒹𑒯𑒣𑒩 𑒐𑒮𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒄 𑒣𑓂𑒩𑒏𑓂𑒩𑒱𑒨𑒰 𑒞𑒲𑒢 𑒥𑒹𑒩 𑒏𑒹𑒪𑒾। 𑒞𑒲𑒢𑒴 𑒥𑒹𑒩 𑒥𑒲𑒂 𑒏𑒳𑒮𑒳𑒧𑒹𑒏 𑒞𑒩𑒤 𑒑𑒹𑒪। 𑒯𑒧 𑒥𑒖𑒪𑒾-

"𑒏𑒳𑒮𑒳𑒧, 𑒏𑒼𑒨𑒪𑒲 𑒂 𑒁𑒣𑒢 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒝𑒨 𑒮𑒳𑒢𑒰 𑒠𑒹𑒪𑒏। "

𑒄 𑒮𑒳𑒢𑒞𑒱 𑒏𑒳𑒮𑒳𑒧 𑒪𑒖𑒰 𑒑𑒹𑒪𑒲। 𑒏𑒳𑒮𑒳𑒧𑒼 𑒧𑒖𑒰𑒏𑒹𑒧𑒹 𑒥𑒖𑒪𑒲-

"𑒯𑒧 𑒋𑒯𑒢𑒹 𑒠𑒳𑒪𑒯𑒰𑒮𑒿 𑒥𑒱𑒨𑒰𑒯 𑒏𑒩𑒥! "

𑒍𑒢𑒰, 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒢𑒯𑒱 𑒖𑒹 𑒏𑒐𑒢 𑒯𑒧 𑒌 𑒠𑒳𑒪𑒯𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒁𑒣𑒢 𑒖𑒰𑒞𑒩 𑒥𑒢𑒰 𑒪𑒲। 𑒯𑒧𑒩𑒼 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒪 𑒖𑒿 𑒪𑒼𑒏 𑒂 𑒑𑒰𑒩𑒖𑒱𑒨𑒢𑒏 𑒮𑒯𑒧𑒞𑒱 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒂 𑒯𑒧 𑒏𑒳𑒮𑒳𑒧𑒏𑒹𑒿 𑒁𑒣𑒢 𑒁𑒩𑓂𑒠𑓂𑒡𑒰𑓀𑒑𑒱𑒢𑒲 𑒥𑒢𑒰 𑒪𑒲। 𑒋𑒯𑒢𑒹 𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞𑒱𑒧𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒲 𑒂 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒱𑒏𑒰 𑒒𑒩𑒮𑒿 𑒦𑒰𑒑𑒩 𑒦𑓄 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒂 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯 𑒏𑓄 𑒪𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱।

𑒠𑒲𑒠𑒲𑒏 𑒑𑒰𑒧𑒧𑒹 𑒧𑒢 𑒪𑒰𑒑𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒪। 𑒏𑒳𑒮𑒳𑒧𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱 𑒂 𑒯𑒧𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧 𑒏𑒳𑒮𑒳𑒧𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱 𑒠𑒱𑒢𑒰𑒢𑒳𑒠𑒱𑒢 𑒥𑒜𑓃𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒪। 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒐𑒴𑒥 𑒥𑒞𑒱𑒨𑒰𑒃𑒞 𑒩𑒯𑒲। 𑒂 𑒐𑒴𑒥 𑒐𑒹𑒪𑒰𑒃𑒞 𑒩𑒯𑒲। 𑒐𑒴𑒥 𑒧𑒢 𑒪𑒑𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒋। 𑒏𑒹𑒢𑒰 𑒏𑒾𑒪𑒹𑒖 𑒐𑒳𑒖𑒻𑒏 𑒠𑒱𑒢 𑒪𑒑 𑒂𑒥𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒮𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒖𑒰𑒢𑒱 𑒣𑒹𑒪𑒾𑓀। 𑒋𑒏 𑒠𑒱𑒢𑒏 𑒫𑒰𑒮𑓂𑒞𑒹 𑒂𑒋𑒪 𑒕𑒹𑒪𑒾 𑒂 𑒠𑒮 𑒠𑒱𑒢 𑒥𑒱𑒞 𑒑𑒹𑒪।

𑒯𑒧 𑒏𑒾𑒪𑒹𑒖 𑒁𑒥𑒻𑒏 𑒞𑒻𑒨𑒰𑒩𑒲𑒧𑒹 𑒪𑒰𑒑𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒾। 𑒏𑒳𑒮𑒳𑒧 𑒐𑒱𑒢𑓂𑒢 𑒧𑒢𑒹 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒞𑒻𑒨𑒰𑒩𑒲𑒧𑒹 𑒮𑒯𑒨𑒼𑒑 𑒏𑒩𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒪𑒲। 𑒯𑒧 𑒠𑒲𑒠𑒲𑒏 𑒑𑒰𑒧𑒮𑒿 𑒥𑒱𑒠𑒰 𑒦𑒹𑒪𑒾। 𑒏𑒳𑒮𑒳𑒧𑒏𑒹𑒿 𑒯𑒧𑒩𑒰𑒮𑒿 𑒥𑒱𑒕𑒳𑒛𑓃𑒥𑒰𑒏 𑒥𑒛𑓃 𑒏𑒭𑓂𑒙 𑒦𑓄 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒹𑒪𑒻, 𑒍 𑒕𑒙𑒣𑒙𑒰𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒪𑒲। 𑒂𑒩 𑒍 𑒥𑒛𑓃 𑒅𑒠𑒰𑒮 𑒥𑒳𑒗𑒢𑒰 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒹𑒪𑒲। 𑒥𑒱𑒠𑒰 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒏𑒰𑒪 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒙𑒱𑒤𑒱𑒢-𑒏𑒻𑒩𑒱𑒨𑒩 𑒯𑒧𑒩𑒰

હાથમે દૈત ઢવઢવાએ઒ આઁખિયે વળ઒-

"ई વટખ઼યા છી। એકના નાખ્યિ઒ગ્નિ। વાટમે જૂપ઼ ઓગત ગઁ પ઼ા ઓવ। આ પાહુન અહિના અવૈત ળાશ્ત નહ્વ। "

કૌ઒ળ આવિ ગેઓ઒। વહુત દિનિ વતિ ગે઒। કુસુમક યિયાન મનસઁ હ્ટ ગિે઒।

ઓમહ્ન કુસુમક પતિળીક દેહાન્ત જાડ ગે઒। દીદી સેહો વહનોરક સંગે દિષ્઒ યઓ ગેઓ઒। કુસુમક માશ્ક હાઓત દયનીય જાડ ગે઒। વહુત નાસ ળમીન-ળત્થા કુસુમક પતિક શ્઒ાળમે વિકા ગે઒। કુસુમક વિગ્રાહ દહેળક કાનામે યોગ્ય વનસઁ નર જાડ સક઒। કુસુમક દુ઒હ મહ શનાવો આ ળુઆનો નકિ઒઒। ળોક ળે કુસુમક ગહના-ગુડ઼િયા આ ળમીન-ળત્થા છ઒, સજાટા વેચ કડ પીવ ગે઒। અન્તમે કુસુમક જાગ્ય ફુટ ગે઒ આ પ઼તનનાક વેમાનીસઁ ઘનવ઒ાક મૌત જાડ ગે઒ર।

વેયાનો કુસુમ અનાથ જાડ ગેઓ઒। સાસુનક નૌળવાન ઓડ઼કા સવહ્ક કુદ□ષ્ટિ કુસુમપન પડ઼એ ઓગૈ઒। કએક વેન ઓકના પટયવાક વાસ્તે પનાયિાસો જે઒ છ઒। ઓ અપનાકેઁ અનાથ વુદ્દિ સાસુન છોડ઼િ નૈહ્નમે આવિ નિહએ ઓગ઒ે।

હમહૂઁ પઢ઼િ-ઓપ઼િ કડ નોકનો કનએ ઓગઓ઒ૈ। વિગ્રાહ-શાદી જે઒। વા઒-વય્યા સેહો જે઒। કિછુ દિનિક વાદ દીદીક ગામસઁ એકટા નિમિત્નામ-પત્ન આએ઒, ળશ્મે હમન જાગિનિક વિગ્રાહક ઉ઒઒પ઼ કએ઒ ગે઒ છ઒।

જાગિનિક વિગ્રાહમે જાગ ઓવાક ઓ઒ દીદીક ગામ એઓ઒। એત એ઒ાક વાદ કુસુમ મન પડ઼િ ગે઒। કુસુમક પ઼ોળ કેઓ઒। એકટા વિયિવા સન મૌગીસઁ જેટ જે઒। હુનકાસઁ કુસુમક હાલ-યાલ પુછૈત કહ઒પૈન-

"હમના કુસુમસઁ મઓિ દીઅ। "

ઓ કાનએ ઓગઓિ આ વળ઒-

"पाहुन, हमहीं कुसुम छी। "

हम अवाक् भऽ गेलौं। बड़ कष्ट भेल कुसुमक दुर्दशा देखि कऽ। सोचमे पड़ि गेलौं- एक दिनमे ई परिवर्तन भऽ गेल! कन्याँक जिनगी केहेन होइत अछि!

- नारायण यादव, पत्नीक नाम: श्रीमती सुमित्रा देवी। जन्म: १४ जनवरी १९५६, पिताक नाम: स्व. राजेश्वर यादव। माताक नाम: स्व. महेश्वरी देवी। दादाक नाम: स्व. भोला यादव। नानाक नाम: महान स्वतंत्रता सेनानी स्व. राम लखन सहैना। जन्म स्थान: डुमरा, मूल गाम: डुमरा, पो- डुमरा, भाया: नृसिंहपुर, प्रखण्ड: अन्धराठाढ़ी, जिला- मधुबनी (बिहार) मात□क : नरहि, थाना : फुलपरास, पेशा : अध्यापन, अवकाश प्राप्त प्रधानाध्यापक, मात्र पेंशनपर आश्रित जिनगी। शिक्षा : एम.ए. (मैथिली), लेखन : कथा, कविता आ आलेख विभिन्न पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित।

मोबाइल नं: ९९३९०४१११६, ९४३०६३१९९३, ८५४१०९६००४

सद्य: प्रकाशित क□ति: पाथी घर (कथा संग्रह), प्रकाशित-अप्रकाशित अन्य क□ति: (१) नारी दुसलक नाराकें (कविता संग्रह), (२) बाबा नाम केवल (कथा संग्रह), (३) समझौता (कथा संग्रह), (४) नवकी पुतोहु (कथा संग्रह)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

૨૧૪નારાયણ યાદવક ૫ ટા કથા- કથા-૪ ળરૂપર સમ્પાદકીય સમીક્ષા અંગ્રેળીમે સમ્પાદકીય પ□ષ્ડ પર

<u>વૈદેહક ઉપ્પકક આમંત્રતિ રચના આ ઓરૂપર સમીક્ષા સીરીળ</u>

ઐ અંકમે પ્રસ્તુત અછિ નારાયણ યાદવક ૫ ટા કથા ળરૂપર હમર સમીક્ષા અંગ્રેળીમે સમ્પાદકીય પ□ષ્ડ પર અછિ। - સમ્પાદક



નારાયણ યાદવક ૫ ટા કથા

કથા ૪

હ□દય પરિવર્તન

ગામિયારી વાવૂ એક વહુમુખી પ્રતિભાક ધની, મિઉનસાર, કર્તવ્યનિષ્ડ સરકારી વૈદ્યાઉયક પ્રધાનાચાર્ય છઉહ। સેવાકાઉક દરમ્યાન ઓ વહુતોકેં ઉપકાર કયને છઉહ। કોનો અસમ્ભવસઁ અસમ્ભવ કામ આસાનીસઁ કરા દૈત છઉહ। વૈદ્યાઉયક હ્રેક ગતિ-વૈધિપર હનિક ધ્યાન રહૈત છઉન્હ। છાત્રસઁ ઉય શિક્ષક ધરિ સભ કયો હનિકાસઁ ખુશ રહૈત છઉ। હનિક વ્યક્તિત્વ આ ક□તિત્વસઁ વૈદ્યાઉયક આસો-પાસક ઉોક સભ ખુશ રહૈત

𑒕𑒪। 𑒕𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒂 𑒁𑒦𑒱𑒦𑒰𑒫𑒏𑒏𑒹𑒿 𑒖𑒹 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒪𑒨𑒏 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒪 𑒋 𑒁𑒣𑒢 𑒏𑒰𑒖 𑒥𑒳𑒗𑒱 𑒞𑒳𑒩𑓀𑒞 𑒏𑒩𑒰 𑒠𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒰𑒯।

𑒃𑒪𑒰𑒏𑒰 𑒦𑒩𑒱𑒧𑒹 𑒯𑒳𑒢𑒱𑒏 𑒨𑒬 𑒤𑒻𑒪𑒪 𑒕𑒪। 𑒯𑒳𑒢𑒱𑒏 𑒁𑒫𑒏𑒰𑒬 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒣𑓂𑒞𑒱𑒏 𑒅𑒣𑒩𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒫𑒱𑒠𑒰𑒃 𑒮𑒧𑒰𑒩𑒼𑒯𑒧𑒹 𑒃𑒪𑒰𑒏𑒰 𑒦𑒩𑒱𑒏 𑒪𑒼𑒏 𑒂𑒨𑒪 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒣𑓂𑒩𑒦𑒰𑒩𑒲 𑒣𑒻𑒒 𑒂𑒨𑒼𑒖𑒢 𑒏𑒨𑒢𑒹 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒮𑒹𑒫𑒰 𑒢𑒱𑒫𑒵□𑒞𑒱𑒏 𑒪𑒰𑒦 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒖𑒱𑒪𑒰 𑒣𑒠𑒰𑒡𑒱𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨𑒰𑒪𑒨𑒏 𑒔𑒏𑓂𑒏𑒩 𑒪𑒑𑒰𑒥𑒨 𑒪𑒑𑒪𑒰𑒯। 𑒥𑒯𑒳𑒞𑒼 𑒠𑒱𑒢𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒖𑒱𑒪𑒰 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨𑒰𑒪𑒨𑒮𑒿 𑒯𑒳𑒢𑒱𑒏 𑒏𑒰𑒑𑒖𑒰𑒞 𑒧𑒯𑒰𑒪𑒹𑒐𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨𑒰𑒪𑒨 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒪।

𑒂𑒥 𑒑𑒱𑒩𑒱𑒡𑒰𑒩𑒲 𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒣𑒙𑒢𑒰𑒏 𑒔𑒏𑓂𑒏𑒩 𑒪𑒑𑒰𑒥𑒨 𑒪𑒑𑒪𑒰𑒯। 𑒥𑒛𑓃 𑒏𑒚𑒱𑒢𑒮𑒿 𑒣𑒻𑒬𑒢 𑒔𑒰𑒪𑒴 𑒦𑒹𑒪𑒻𑒢𑓂𑒯𑒱। 𑒒𑒩- 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩 𑒢𑒲𑒏 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒔𑒪𑒨 𑒪𑒑𑒪𑒻𑒢𑓂𑒯𑒱। 𑒠𑒴𑒙𑒰 𑒥𑒹𑒙𑒰 𑒂 𑒠𑒴𑒙𑒰 𑒥𑒹𑒙𑒲𑒏 𑒬𑒰𑒠𑒲- 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒢𑒲𑒏 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒧𑒹 𑒦𑒹𑒪 𑒕𑒪। 𑒮𑒦 𑒞𑒩𑒯𑒹𑒿 𑒚𑒲𑒏 𑒚𑒰𑒏 𑒕𑒪। 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒠𑒱𑒢𑒏 𑒣𑒬𑓂𑒔𑒰𑒞 𑒋 𑒮𑓂𑒫𑒩𑓂𑒑𑒫𑒰𑒮𑒲 𑒦𑒨 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯। 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲 𑒖𑒲𑒫𑒱𑒞 𑒕𑒪𑒟𑒱𑒢𑓂𑒯। 𑒥𑒹𑒙𑒰𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒁𑒣𑒢 𑒑𑒰𑒿𑒫𑒧𑒹 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒲𑒯। 𑒑𑒱𑒩𑒱𑒡𑒰𑒩𑒲 𑒥𑒰𑒥𑒴𑒏 𑒠𑒹𑒯𑒰𑓀𑒞𑒏 𑒣𑒬𑓂𑒔𑒰𑒞 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒢𑒱𑒨𑒧𑒰𑒢𑒳𑒮𑒰𑒩 𑒯𑒳𑒢𑒱𑒏𑒰 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒣𑒹𑒬𑒢 𑒦𑒹𑒙𑒏 𑒔𑒰𑒯𑒱। 𑒞𑒰𑒯𑒱 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒂𑒫𑒬𑓂𑒨𑒏 𑒤𑒰𑒩𑓂𑒧𑒣𑒩 𑒯𑒳𑒢𑒱𑒏𑒰 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒯𑒮𑓂𑒞𑒰𑒏𑓂𑒭𑒩 𑒏𑒩𑓄 𑒣𑒛𑓃𑒞𑒢𑓂𑒯𑒱। 𑒉𑒯𑒱 𑒪𑒹𑒪 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒧𑒰𑒨𑒣𑒴𑒞 𑒧𑒯𑒰𑒪𑒹𑒐𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨𑒰𑒪𑒨 𑒣𑒙𑒢𑒰 𑒖𑒨𑒥𑒰𑒏 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒏𑒩𑒨 𑒪𑒑𑒪𑒰𑒯।

𑒂𑒃 𑒡𑒩𑒱 𑒢𑒹 𑒥𑒹𑒙𑒰 𑒂 𑒢𑒹 𑒧𑒰𑒨 𑒣𑒙𑒢𑒰 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪। 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒬𑒯𑒩𑒼 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒢𑒯𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪। 𑒬𑒯𑒩𑒏 𑒔𑒯𑒪- 𑒣𑒯𑒪 𑒫𑒱𑒔𑒱𑒞𑓂𑒩 𑒕𑒪। 𑒧𑒰𑒨 𑒥𑒹𑒙𑒰 𑒮𑒼𑒔𑒧𑒹 𑒣𑒛𑓃𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒣𑒙𑒢𑒰 𑒖𑒰𑒨𑒥। 𑒣𑒹𑒬𑒢𑒏 𑒂𑒥 𑒋 𑒫𑓂𑒨𑒫𑒮𑓂𑒟𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒁𑒕𑒱। 𑒂𑒥 𑒞𑒿 𑒮𑒦 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨 𑒥𑒻𑒏𑒏 𑒧𑒰𑒡𑓂𑒨𑒧𑒮𑒿 𑒦𑒨 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒥𑒹𑒙𑒰𑒏 𑒮𑓂𑒫𑒦𑒰𑒫 𑒉𑒯𑒹𑒢 𑒕𑒪 𑒖𑒹 𑒯𑒩𑒹𑒏 𑒥𑒰𑒞𑒣𑒩 𑒧𑒰𑒨𑒏𑒹𑒿 𑒛𑒿𑒙𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒪। 𑒯𑒩 𑒯𑒧𑒹𑒬𑒰 𑒧𑒰𑒨𑒮𑒿 𑒢𑒰𑒩𑒰𑒖 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒪।

𑒖𑒐𑒢 𑒣𑒹𑒬𑒢 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒣𑒙𑒢𑒰 𑒖𑒨𑒥𑒰𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒥𑒹𑒙𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒯𑒪𑒻𑒢 𑒞𑒿 𑒥𑒹𑒙𑒰 𑒯𑒳𑒯𑒪𑒰𑒃𑒞 𑒧𑒰𑒨𑒏𑒹𑒿 𑒛□𑒙𑒨 𑒪𑒑𑒪𑒰𑒯। 𑒥𑒹𑒙𑒰 𑒧𑒰𑒨𑒏𑒹𑒿 𑒧𑒰𑒨 𑒢𑒯𑒱 𑒥𑒳𑒗𑒻𑒞 𑒕𑒪। 𑒯𑒩 𑒯𑒧𑒹𑒬𑒰 𑒑𑒰𑒩𑒱- 𑒤𑒖𑒯𑒻𑒞 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒪। 𑒧𑒰𑒨 𑒥𑒹𑒙𑒰𑒏 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰 𑒠𑒹𑒪 𑒏𑒭𑓂𑒙𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒯𑒢 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒪𑒲𑒯। 𑒧𑒰𑒨 𑒥𑒹𑒙𑒰𑒏 𑒯𑒩 𑒯𑒧𑒹𑒬𑒰 𑒐𑒰𑒞𑒲𑒩𑒠𑒰𑒩𑒲𑒧𑒹 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒲𑒯। 𑒥𑒹𑒙𑒰 𑒧𑒰𑒨𑒏 𑒧𑒯𑒞𑓂𑒫 𑒢𑒯𑒱 𑒥𑒳𑒗𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪। 𑒥𑒹𑒙𑒰 𑒅𑒠𑒰𑒮 𑒩𑒯𑒨 𑒋 𑒧𑒰𑒨𑒏𑒹𑒿 𑒢𑒲𑒏 𑒢𑒯𑒱 𑒪𑒑𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱।

मायक नजरिमे जवानो बेटा बच्चे रहैत अछि। माय संसारमे सभसँ दुर्लभ वस्तु थिकि। जकर तुलना संसारमे कोनो वस्तुसँ नहि कयल जा सकैत अछि। तँ गरिबाही बाबूक पत्नी अपना बेटाकेँ नासमझ जानि ओकर सभ गलतीकेँ बिसरैत जाइत छलीह। माय बजलीह-

"बेटा, पेशने घर चलयबाक हेतु सहारा अछि। जँ एकरा चालू नहि करायब तँ गुजर कोना चलत। पटना तँ जेबाके छह। "

बेटाकेँ पटना जयबामे परेशानी बुझना जाइत छलैन्ह। मायक बात सुनि बेटा कर्कस स्वरमे बाजल-

"ओ कोनो गाम- घर छियै जे ककरो ओहिठाम रहि जाउ। ओ तँ शहर छैक। शहरक लोककेँ कामसँ फुर्सत कहाँ रहैत छैक। शहरमे एक दोसरासँ ककरो मतलब नहि रहैत छैक। शहरमे कियो मरि जाय कियो जी जाय, एतय सभ तेहल छैक। बहुत पढ़ल लिखल लोक सभटा भिड़ल छैक। एक दोसराकेँ डकै-फुसयिबैमे लागल रहैत छैक। "

माय बजलीह-

"बेटा, ओतय धर्मशाला तँ छैक। होटल तँ छैक। ओतहि रहि जायब। "

मायक बात सुनि बेटा मायकेँ डँटैत कहलक-

"तू चुप रह। अनेरे दिमाग नहि खराब कर। "

माय चुप भऽ गेल। किछु सोचैत बाजलि-

"कोनहुना पुछैत- पाछैत पटना एजी अँघरिसि चलियै जायब। "

दोसर दिनि गरिबाही बाबूक बेटा पटना जयबाक हेतु इन्टरसीटी ट्रेनक टिकट कटा अनलक तँ मायकेँ कहलक जे माय, टिकट भऽ गेल। माय बाजलि- बेटा,

𑒥𑒙𑒐𑒩𑓂𑒔𑒰 𑒏𑒯𑒱𑒍 𑒥𑒢𑒰 𑒪𑒱𑒁। 𑒥𑒹𑒙𑒰 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒠𑒳𑒯𑒳𑒪𑒏𑒨 𑒥𑒰𑒖𑒪 𑒍𑒞𑒯𑒱 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒯𑒼𑒙𑒪𑒧𑒹 𑒐𑒰-𑒣𑒲𑒥 𑒪𑒹𑒥। 𑒧𑒰𑒨 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒁𑒮𑒧𑒩𑓂𑒟 𑒧𑒢𑒮𑒿 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒮𑒿 𑒥𑒰𑒖𑒪𑒱-

"𑒥𑒹𑒙𑒰, 𑒍𑒞𑒨 𑒦𑒼𑒖𑒢 𑒁𑒮𑒱𑒨𑒰-𑒥𑒮𑒱𑒨𑒰 𑒦𑒹𑒙𑒞 𑒂 𑒣𑒻𑒮𑒰 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒁𑒡𑒱𑒏 𑒪𑒰𑒑𑒞। "

𑒧𑒰𑒨𑒏 𑒥𑒰𑒞 𑒮𑒳𑒢𑒱𑒞𑒯𑒱 𑒥𑒹𑒙𑒰 𑒖𑒼𑒩𑒮𑒿 𑒥𑒰𑒖𑒪-

"𑒖𑒼 𑒖𑒹 𑒧𑒢 𑒯𑒼𑒃 𑒕𑒾 𑒮𑒹 𑒏𑒩। "

𑒧𑒰𑒨 𑒥𑒙𑒐𑒩𑓂𑒔𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒮𑓂𑒞𑒹 𑒣𑒴𑒩𑒲, 𑒞𑒩𑒏𑒰𑒩𑒲, 𑒣𑒹𑒛𑓃𑒰 𑒥𑒢𑒾𑒪𑒏। 𑒆𑒣𑒩𑒮𑒿 𑒏𑒢𑒹𑒏 𑒢𑒴𑒢, 𑒯𑒩𑒱𑒨𑒩𑒏𑒰 𑒧𑒱𑒩𑒔𑒰𑒃 𑒂 𑒁𑒔𑒰𑒩 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒗𑒼𑒩𑒰𑒧𑒹 𑒪𑒋 𑒪𑒹𑒪𑒏।

𑒮𑒳𑒥𑒯 𑓖 𑒥𑒖𑒹 𑒖𑒨𑒢𑒑𑒩𑒮𑒿 𑒃𑒢𑓂𑒙𑒩 𑒮𑒲𑒙𑒲 𑒙𑓂𑒩𑒹𑒢 𑒖𑒹 𑒛𑒹𑒜𑓃 𑒥𑒖𑒹 𑒣𑒙𑒢𑒰 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒻 𑒕𑒻𑒏 𑒮𑒹 𑒙𑓂𑒩𑒹𑒢 𑒣𑒏𑒛𑓃𑒪𑒏। 𑒄 𑒑𑒰𑒛𑓃𑒲 𑒧𑒡𑒳𑒥𑒢𑒲𑒮𑒿 𑒮𑒰𑒜𑓃𑒹 𑒕𑒯 𑒥𑒖𑒹 𑒐𑒳𑒖𑒪। 𑒧𑒰𑒨 𑒥𑒹𑒙𑒰 𑒙𑓂𑒩𑒹𑒢𑒧𑒹 𑒔𑒜𑓃𑒪। 𑒋𑒯𑒱 𑒃𑒢𑓂𑒙𑒩 𑒮𑒲𑒙𑒲𑒧𑒹 𑒦𑒲𑒛𑓃-𑒦𑒰𑒩 𑒏𑒧 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒏 𑒞𑒿 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒧𑒰𑒨 𑒥𑒹𑒙𑒰 𑒧𑒢 𑒣𑒮𑒢𑓂𑒠 𑒮𑒲𑒙 𑒐𑒼𑒖𑒱 𑒏𑓄 𑒥𑒻𑒮𑒪। 𑒐𑒱𑒛𑓃𑒏𑒲 𑒪𑒑𑒏 𑒮𑒲𑒙 𑒥𑒜𑓃𑒱𑒨𑒰 𑒥𑒳𑒗𑒻𑒪𑒏 𑒞𑒿𑒋 𑒠𑒴𑒢𑒴 𑒂𑒧𑒢𑒹-𑒮𑒰𑒧𑒢𑒹 𑒥𑒻𑒮𑒪। 𑒑𑒰𑒛𑓃𑒲 𑒠𑓂𑒩𑒳𑒞 𑒑𑒞𑒱𑒮𑒿 𑒔𑒪𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒪।

𑒑𑒰𑒛𑓃𑒲𑒏 𑒥𑒰𑒯𑒩𑒏 𑒫𑒰𑒞𑒰𑒫𑒩𑒝, 𑒣𑓂𑒩𑒏□𑒞𑒱𑒏 𑒮𑒾𑒢𑓂𑒠𑒩𑓂𑒨𑒞𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒢𑒱𑒯𑒰𑒩𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒪। 𑒂𑒃 𑒡𑒩𑒱 𑒧𑒰𑒨 𑒥𑒹𑒙𑒰 𑒋𑒯𑒹𑒢 𑒠□𑒬𑓂𑒨 𑒢𑒯𑒱 𑒠𑒹𑒐𑒢𑒹 𑒕𑒪। 𑒃𑒢𑓂𑒙𑒩 𑒮𑒲𑒙𑒲 𑒮𑒧𑒮𑓂𑒞𑒲𑒣𑒳𑒩 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒪। 𑒃𑓀𑒖𑒢 𑒂𑒑𑒴𑒮𑒿 𑒏𑒰𑒙𑒱 𑒣𑒰𑒕𑒰𑒧𑒹 𑒖𑒼𑒛𑓃𑒪 𑒑𑒹𑒪। 𑒧𑒳𑒖𑒤𑓂𑒤𑒩𑒣𑒳𑒩 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒛𑒹𑒜𑓃 𑒥𑒖𑒹 𑒣𑒙𑒢𑒰 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒪। 𑒣𑒙𑒢𑒰 𑒮𑓂𑒙𑒹𑒬𑒢𑒮𑒿 𑒅𑒞𑒩𑒱 𑒮𑓂𑒙𑒹𑒬𑒢𑒮𑒿 𑒥𑒰𑒯𑒩 𑒂𑒨𑒪। 𑒠𑒴𑒢𑒴 𑒧𑒰𑒨 𑒥𑒹𑒙𑒰 𑒧𑒯𑒰𑒫𑒲𑒩 𑒧𑒢𑓂𑒠𑒱𑒩 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒪। 𑒣𑒻𑒩-𑒯𑒰𑒟 𑒡𑒼𑒨 𑒥𑒖𑒩𑓀𑒑 𑒥𑒪𑒲𑒏 𑒣𑒴𑒖𑒰 𑒏𑒨𑒪𑒻𑒢𑓂𑒯। 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒰𑒠 𑒔𑒜𑓃𑒾𑒪𑒻𑒢𑓂𑒯। 𑒤𑒹𑒩 𑒠𑒴𑒢𑒴 𑒧𑒰𑒨 𑒥𑒹𑒙𑒰 𑒮𑒛𑓃𑒏𑒣𑒩 𑒂𑒨𑒪।

𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒥𑒙𑒼𑒯𑒲 𑒥𑒰𑒙 𑒔𑒪𑒢𑒹 𑒖𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪। 𑒥𑒹𑒙𑒰-𑒥𑒙𑒼𑒯𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒙𑒼𑒏𑒪𑒏-

"𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒧𑒯𑒰 𑒅𑒣𑒏𑒰𑒩 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨𑒰𑒪𑒨 𑒖𑒨𑒥𑒰𑒏 𑒁𑒕𑒱 𑒮𑒹 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒖𑒰𑒨𑒥 𑒩𑒰𑒮𑓂𑒞𑒰 𑒥𑒞𑒰 𑒠𑒲𑒁। "

𑒥𑒙𑒼𑒯𑒲 𑒥𑒰𑒖𑒪-

"एहिठामसँ टेम्पू पकड़ि लिअ आ ओ टेम्पू आर् ब्ल□क चौराहासँ आगा मोड़पर उतारि देत आ अहाँ ओहिठामसँ दहिना बगलमे महा लेखाकार कार्यालय चलि जायब।"

दुनू गोटे टेम्पूपर चढ़ल आ किछुए देरमे महा लेखाकार ऑफिस पहुँचि गेल। ककरोसँ पूछि अन्दर जाय लागल। गेटपर बैसल सिपाही टोकलक-

"कहाँ जा रहे है? पहले परमिशन ले लें तब अन्दर जाएंगे।"

बेटा दक्षिणबरिया रूममे गेल आ अपन सभ कागजात परमिशन देनिहार कर्मचारीकेँ देखा देलक।

कर्मचारी पेंशनवला कागज देखि एकटा परमिशनवला पुर्जा थमा देलनि। ओ पुर्जा लय सिपाही लग गेल। सिपाही पुर्जा देखि अन्दर जाइक ले आदेश देलक। तावत कर्मचारी लोकनिक ड्युटि समाप्त भऽ गेल छल। कैन्टीन खाली भऽ गेल छल। दुनू माय-पूतकेँ भूख बेसी लागि गेल छल। दुनू कैंटिनमे गेल। एकटा रूम खाली छल, कुर्सी, टेबुल सेहो लागल छैक। ओतय पानि पीबाक नल सेहो लागल छल। दुनू माय-पूत ओहि कोठरीमे जा कय कुर्सीपर बैसि टेबुलपर झोरासँ पूरी सब्जी निकालि दू ठाम अखबार पर परोसा लगाय रहल छल आकि दूटा सज्जन व्यक्ति ओहि कमरामे प्रवेश कयलन्हि।

पहिने त' दुनू माय-पूतकेँ डर भेलन्हि। ओ दुनू सज्जन माय बेटाक मनोदशाकेँ भा□पि ओहिमे सँ एक सज्जन बजलाह-

"मायजी, पेंशनवला स्थानपर सारा काज भऽ आयल छी?"

मायजी बजलीह-

"हँ बेटा।"

फेर दोसर सज्जन बजलाह-

"माइजी घरसँ बटखर्चामे की सभ बना कऽ लैने छी। बहुत नसीबवलाकेँ मायक हाथक भोजन भेटैत अछि।"

ई बात सुनैत माय बजलीह-

"बौआ, जखन हमरा अहाँ माय कहलहुँ तखन हमरा हाथक बनौल पूरी, सब्जी, पेरा जरूर खा लिअ।"

मायजी ओहि दुनू आदमीकेँ पूरी, सब्जी, पेड़ा पेपरपर परोसि आगाँ बढ़ा देलक।

दुनू सज्जन नलपर सँ हाथ धोइ, खाय लागल। खयलाक बाद भोजनक प्रसंशा करैत बाजल-

"मायजी, मजा आबि गेल। एतेक स्वादिष्ट भोजन जीवनमे पहिल बेर खयलहुँ।"

सज्जन बजलाह-

"मायजी, अहाँक बेटा बड़ भाग्यशाली अछि जे अहाँ सन माय ओकरा भेटलैक। आइ हमरो अपन मायक स्मरण आबि गेल।"

आ ओहि सज्जनक आँखिसँ नोर टपकय लागल।

दुनू सज्जनक बात सुनि गमियानी बाबूक बेटा जे हर हमेशा अपन मायपर तमसाइते रहैत छल। मनहि मन सोचय लागल जे ई दुनू सज्जन जे अनजान छथि, ओ हमरा मायकेँ एतेक सम्मान देलक आ हम समीपमे रहितहुँ मायक ममताकेँ नहि बुझि सकलहुँ।

बेटाक मन ग्लानिसँ भरि गेल। ओ मनहि-मन पश्चाताप करय लागलाह। ओहि सज्जनमे सँ एक सज्जन बजलाह-

"माँजी कनेक काल ठहरू। हम तुरन्त ऑफिससँ आबि रहल छी। अहाँक काज कऽ देब। कोनो कष्ट नहि होमय देब। "

ओ सज्जन कनेकालक बाद एकटा फॉर्म हाथमे नेने माय लग अयलाह आ बजलाह-

"माय अहाँ लग जे कागज अछि ओ लाउ। "

ओहि फॉर्मकेँ पेंशनवला कागजसँ सभ मिलान कऽ सभ फॉर्ममे देल बुझौनाकेँ भरलक। कागज हाथमे लय मायकेँ संग कय ऑफिस पहुँचल। मायसँ ऑफिसरक सामनेमे हस्ताक्षर कराकऽ कागज (फॉर्म) जमा कय देलथिन्ह। दस मिनटमे सभ काज कऽ माय सहित ओ सज्जन बाहर अयलाह। बेटाक लेल ई काम बड़ कठिन बुझना जाइत छल। माय आ बेटा बड़ खुश छल। माय ओहि दुनू सज्जनकेँ हृदयसँ आशीर्वाद देलैन्ह। बेटा सोचय लागल जे मायक मनमे एहेन शक्ति छैक जे चुटकीमे हमर काज भऽ गेल। माय ओहि दुनू सज्जनकेँ आशीर्वाद दैत बजलीह-

"बेटा, अहाँ लोकनिक उपकारकेँ हम जीवन भरि नहि बिसरि सकै छी। "

एहिपर दुनू सज्जन बाजल- "माय, हम अहाँक नमक जे खयलहुँ। हम सभ अहाँक बेटा समान छी। "

ई बात सुनैत बेटाकेँ शरमसँ माथ झुकि गेलैक। बेटाकेँ ई एहसास भेलैक जे माय ओकरा जन्म देलक, पोसलक, पाललक आ हाथ पकड़ि चलनाइ सिखौलक। अपन दूध पिआ हमरा एकटा बनौलक। आ हम ओहि मायकेँ तिरस्कार करैत छलहुँ। हमरासँ बढ़ि एहि संसारमे कियो पापी नहि अछि। ओ दुनू सज्जन मायसँ विदा भैत अपन काजपर चलि गेल।

ओ दुनू सज्जन गनियारीक बालक नामपर मायक सभ काम कऽ देलक। कियेक तँ ओ दुनू सज्जन गनियारीक बालक शिष्य छल। ओ सज्जन लोकनि गनियारीक

𑒥𑒰𑒥𑒴𑒏 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒔𑒱𑒢𑓂𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒪। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑒩𑒱𑒔𑒨 𑒢𑒯𑒱 𑒠𑒹𑒪𑒏।

𑒂𑒥 𑒑𑒩𑒱𑒔𑒰𑒩𑒲 𑒥𑒰𑒥𑒴𑒏 𑒥𑒹𑒙𑒰 𑒖𑒹 𑒧𑒰𑒨𑒏𑒹𑒿 𑒯𑒧𑒹𑒬𑒰 𑒞𑒱𑒩𑒮𑓂𑒏𑒵𑒞 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒪 𑒞𑒹𑒏𑒩 𑒯𑒵𑒠𑒨 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒩𑓂𑒞𑒢 𑒦𑒨 𑒑𑒹𑒪𑒻𑒢𑓂𑒯। 𑒂 𑒧𑒢𑒯𑒱- 𑒧𑒢 𑒬𑒣𑒟 𑒐𑒨𑒪𑒻𑒢𑓂𑒯 𑒖𑒹 𑒧𑒰𑒨𑒏𑒹𑒿 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒦𑒩𑒱 𑒮𑒹𑒫𑒰 𑒏𑒩𑒥। 𑒧𑒰𑒨𑒏 𑒣𑒻𑒩𑒣𑒩 𑒐𑒮𑒱 𑒣𑒛𑓃𑒪𑒰𑒯 𑒂 𑒯𑒥𑒼 𑒜𑒏𑒰𑒩 𑒦𑒨 𑒏𑒰𑒢𑒨 𑒪𑒑𑒪𑒰𑒯। 𑒥𑒖𑒪𑒰𑒯-

"𑒧𑒰𑒨, 𑒯𑒧𑒩𑒰𑒮𑒿 𑒥𑒛𑓃 𑒣𑒻𑒒 𑒑𑒪𑒞𑒲 𑒦𑒹𑒪। 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒖𑒹 𑒠𑒝𑓂𑒛 𑒠𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒕𑒾 𑒮𑒹 𑒠𑒨 𑒠𑒹। "

𑒧𑒰𑒨 𑒥𑒹𑒙𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒯𑒰𑒟 𑒣𑒏𑒛𑓃𑒱 𑒅𑒚𑒾𑒪𑒏 𑒂 𑒏𑒪𑒹𑒖𑒰𑒮𑒿 𑒪𑒑𑒰 𑒪𑒹𑒪𑒏। 𑒥𑒹𑒙𑒰𑒏 𑒯𑒵𑒠𑒨 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒩𑓂𑒞𑒢 𑒦𑒨 𑒑𑒹𑒪।

- 𑒩𑒰𑒧𑒰𑒨𑒝 𑒨𑒰𑒠𑒫, 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲𑒏 𑒢𑒰𑒧 : 𑒬𑓂𑒩𑒲𑒧𑒞𑒲 𑒮𑒳𑒧𑒱𑒞𑓂𑒩𑒰 𑒠𑒹𑒫𑒲। 𑒖𑒢𑓂𑒧 : 𑓑𑓔 𑒖𑒢𑒫𑒩𑒲 𑓑𑓙𑓕𑓖, 𑒣𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒢𑒰𑒧 : 𑒮𑓂𑒫 𑒩𑒰𑒖𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩 𑒨𑒰𑒠𑒫। 𑒧𑒰𑒞𑒰𑒏 𑒢𑒰𑒧 : 𑒮𑓂𑒫 𑒧𑒯𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩𑒲 𑒠𑒹𑒫𑒲। 𑒠𑒰𑒠𑒰𑒏 𑒢𑒰𑒧 : 𑒮𑓂𑒫 𑒦𑒼𑒪𑒰 𑒨𑒰𑒠𑒫। 𑒢𑒰𑒢𑒰𑒏 𑒢𑒰𑒧 : 𑒧𑒯𑒰𑒢 𑒮𑓂𑒫𑒞𑓀𑒞𑓂𑒩𑒞𑒰 𑒮𑒹𑒢𑒰𑒢𑒲 𑒮𑓂𑒫 𑒩𑒰𑒧 𑒪𑒐𑒢 𑒮𑒪𑒯𑒻𑒞𑒰। 𑒖𑒢𑓂𑒧 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢 : 𑒛𑒳𑒧𑒩𑒰, 𑒧𑒴𑒪 𑒑𑒰𑒧 : 𑒛𑒳𑒧𑒩𑒰, 𑒣𑒼- 𑒛𑒳𑒧𑒩𑒰, 𑒦𑒰𑒨𑒰 : 𑒢𑒴𑒩𑒣𑒳𑒩, 𑒣𑓂𑒩𑒐𑒝𑓂𑒛 : 𑒁𑒢𑓂𑒡𑒩𑒰𑒚𑒰𑒜𑓃𑒲, 𑒖𑒱𑒪𑒰- 𑒧𑒡𑒳𑒥𑒢𑒲 (𑒥𑒱𑒯𑒰𑒩) 𑒧𑒰𑒞𑒵𑒏 : 𑒢𑒩𑒯𑒲, 𑒟𑒰𑒢𑒰 : 𑒐𑒳𑒙𑒾𑒢𑒰, 𑒣𑒹𑒬𑒰 : 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒰𑒣𑒢, 𑒁𑒫𑒏𑒰𑒬 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒣𑓂𑒞 𑒣𑓂𑒩𑒡𑒰𑒢𑒰𑒡𑓂𑒨𑒰𑒣𑒏, 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒣𑒹𑒬𑒢𑒣𑒩 𑒂𑒡𑒰𑒩𑒱𑒞 𑒖𑒱𑒢𑒑𑒲। 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒰 : 𑒋𑒧.𑒋 (𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲), 𑒪𑒹𑒐𑒢 : 𑒏𑒟𑒰, 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰 𑒂 𑒂𑒪𑒹𑒐 𑒫𑒱𑒦𑒱𑒢𑓂𑒢 𑒣𑒞𑓂𑒩-𑒣𑒞𑓂𑒩𑒱𑒏𑒰𑒧𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒱𑒞।

𑒧𑒼𑒥𑒰𑒃𑒪 𑒢𑓀: 𑓙𑓙𑓓𑓙𑓐𑓔𑓑𑓑𑓑𑓖, 𑓙𑓔𑓓𑓐𑓖𑓓𑓑𑓙𑓙𑓓, 𑓘𑓕𑓔𑓑𑓐𑓙𑓖𑓐𑓐𑓔

𑒮𑒠𑓂𑒨𑓁 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒱𑒞 𑒏𑒵𑒞𑒱: 𑒐𑒰𑒪𑒲 𑒒𑒩 (𑒏𑒟𑒰 𑒮𑓀𑒑𑓂𑒩𑒯), 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒱𑒞𑓂𑒁𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒱𑒞 𑒁𑒢𑓂𑒨 𑒏𑒵𑒞𑒱: (𑓑) 𑒢𑒰𑒞𑒲 𑒠𑒳𑒮𑒪𑒏 𑒢𑒰𑒢𑒰𑒏𑒹𑒿 (𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰 𑒮𑓀𑒑𑓂𑒩𑒯), (𑓒) 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒢𑒰𑒧 𑒏𑒹𑒫𑒪𑒧 (𑒏𑒟𑒰 𑒮𑓀𑒑𑓂𑒩𑒯) , (𑓓) 𑒮𑒧𑒯𑒾𑒞𑒰 (𑒏𑒟𑒰 𑒮𑓀𑒑𑓂𑒩𑒯), (𑓔) 𑒢𑒫𑒏𑒲 𑒣𑒳𑒞𑒼𑒯𑒳 (𑒏𑒟𑒰 𑒮𑓀𑒑𑓂𑒩𑒯)

શ્રપન મંતવ્યે દતિોનાિ઼િસનાડડ઼વાદિહાઙ્ગામાિ઼િયોમ **પન પડાઉ।**

૨૧૫઼ણાનાયામ યાદવક ૫ ટા કથા- કથા ૫ ળ૨૫ન સમ્પાદકીય સમીક્ષા અંગ્રેજીમે સમ્પાદકીય પ□ષ્ઠ પન

વૈદિહક ઉપ્યકક શ્રામંત્નાિ નયણા શ્રા શ્રોરપન સમીક્ષા સીનીળ

ઐ અંકમે પ્રસ્તુત શ્રછિ ણાનાયામ યાદવક ૫ ટા કથા ળ૨૫ન હમન સમીક્ષા અંગ્રેજીમે સમ્પાદકીય પ□ષ્ઠ પન શ્રછિ - સમ્પાદક



નારાયણજી યાદવક ૫ ટા કથા

કથા ૫

ગામક એકતા

માલા એક સપ્તાહ પહિને અપન સાસુર આલાપુરસઁ નૈહર મહાતી આયલ છલીહ। કિયૈક તઁ ઓકરા બચ્ચા હોનિહારી છૈક। સાતમ માસ બીતિ આઠમ ચઢ઼લ છૈક। બેટીક લેલ માઇયે સભસઁ અધિક આત્મીય હોઇત અછિ। પ્રસવ વેદના માઇક મુઁહે દેખલાસઁ કમ ભય જાઇત અછિ। પ્રાય: દેખલ ગેલ અછિ જે સંતાનોત્પત્તિક સમયમે નૈહરે નીક હોઇત છૈક।

રામચની કાકા હકાસલ પિયાસલ, દૌગલ દૌગલ ઘર અયલાહ આ હઁફસિયૈત અપન પત્નીસઁ કહલૈન્હ-

"આઇ અપન માલાકેઁ સાસુર આલાપુર ભેજ દિયૌક। કિયૈક તઁ બડ઼ જોર બાઢ઼િ આબિ રહલ છૈક। અપના સભક ઘર કોસીક કછેર પર અછિ। ગામક ચારૂ કાત નદી બાન્હ અછિ। ઓ નદી બાન્હ પર પાનિ લપલપ કય રહલ અછિ। કખનો નદી બાન્હકેઁ તોડ઼િ અપના ગામકેઁ દહા દેત। તેઁ માલાકેઁ સાસુર ભેજ દિયૌક। કમસઁ કમ ઓતય તઁ ઓકર જાન બ□ચિ જેતૈક। નદીક પાનિ બઢ઼િ રહલ અછિ। જેમહર તાકૂ ઓમહર પાનિયે- પાનિ દેખા રહલ અછિ। "

એહિ ઇલાકામે સભ સાલ બાઢ઼િ અબૈત અછિ। બાઢ઼િ કી અબૈત, આફદ વિપત્તિ આ મુસીબત આબિ જાઇત અછિ। કોશીકન્હા લોકક જીવન બરસાત ભરિ બડ઼ કષ્ટપ્રદ ભય જાઇત અછિ। જાન માલ સદખિન ખતરામે રહૈત અછિ। કોશીકન્હામે ખેતીયે સભક જીવનક સહારા અછિ। સાલમે તીનટા ફસલ નીક જક□ ઉપજૈત અછિ। ગેહુઁ, મકઇ, ધાન આ એકર અતિરિક્ત સરસો, તોડ઼ી, રાઇ, ચનિયાં□, પ્યાજ, લહસુન, તીસી આઓર અજમાઇનક ખેતીસઁ ઓતુકા લોક સભ સમ□દ્ધ રહૈત છથિ। નકદી ફસલક મહત્ત્વ કિછુ આઓર છૈક। કેવલ બરસાતમે કિછુ કષ્ટ સહય પડ઼ૈત છન્હિ। ખેતીક પ્રધાનતા એતય

मुख्य अछि। कहबी छैक उत्तम खेती, मध्यम बाम, निषिद्ध चाकरी भीख निदान। ई बाढ़ि खेतीकेँ चौपट कय देलक अछि।

माला एक सप्ताह पहिनहि अपन सासुरसँ एतय आयल छथीह। ओकरा बच्चा होनिहारो छैक। सातम मास आठम चढ़ल छैक। बेटीक लेल माय सबसँ प्रिय आ आत्मीय लोक होइत अछि। प्रसव वेदना मारुक मुँह देखलासँ कम भय जाइत अछि। प्रायः देखल जाइत अछि जे बेटीक संतानोत्पत्तिक समय नैहरे नीक होइत छैक।

माइ जतेक यतनसँ देख भाल बेटीकेँ करैत अछि ओतेक सासु नहि। माय आ सासुमे बड़ अन्तर छैक। मायक ममता जतेक बेटी पर रहैत छैक ओतेक ममता सासुकेँ नहि रहैत छैक। कतौ- कतौ ओहो देखल गेलैक अछि जे सासु अपनो मायसँ पुतोहुकेँ प्रसवक समय बेसी देख- रेख करैत अछि।

एहेन कमे सासु अछि। अधिकतर सासुकेँ पुतोहुक प्रति भावना खराब रहैत अछि। तेँ मालाकेँ ओकर माय अपना ओहिठाम बजा लेलकन्हि। संगमे दू सालक एकटा बेटा सेहो छल। मालाक मायकेँ पता नहि छल जे एहेन भीषण बाढ़ि औतैक। नहि तँ बेटीकेँ नहि अनितथि। गर्भवती रहलाक कारणे मालाकेँ लैने छल। जे नैहरमे रहत। एतय असपतालमे भर्ती करा देतैक।

मुदा हाय रे दैवक चक्र जे बाढ़िमे घरसँ निकलब कठिन भय गेल। माय गुमसुम बैसलि सोचैत रहैत छथीह, जे आब की करक चाही? मालाकेँ सासुर भेज दियैक की नहि। एहि तारतम्यमे पड़ल छथीह। सासुर भेजबाक अर्थ भेल अपन मानहानि। बेटीकेँ सब दिन सासु दियादनीक उपराग सुनय पड़ैत। सासु दियादनी ई कहितथि जे देखलियौ तोरा माय- बापकेँ जे बनि बदिरागी करौनहि सासुर भेज देलकौ। कहिओ दिन नहि राखि सकलहुँ।

माय ई सोचि द□ढ़ निश्चय कयलक जे अपने मरब तँ मरब मुदा बेटीकेँ सासुर नहि भेजब। ईहो सोचय लगलीह जे हरेक साल बाढ़ि अबैत अछि। सरकार

𑒂 𑒣𑓂𑒩𑒬𑒰𑒮𑒢 𑒥𑒰𑒜𑓃𑒱𑒏 𑒢𑒰𑒧 𑒣𑒩 𑒪𑒴𑒙-𑒐𑒮𑒼𑒙 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒥𑒰𑒜𑓃𑒱 𑒢𑒯𑒱 𑒂𑒍𑒞 𑒍𑒏𑒩 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒨𑓃𑒲 𑒮𑒧𑒰𑒡𑒰𑒢 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒥𑒰𑒜𑓃𑒱𑒏 𑒖𑒿 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒨𑓃𑒲 𑒮𑒧𑒰𑒡𑒰𑒢 𑒦𑒨𑓃 𑒖𑒰𑒨𑓃𑒞 𑒞𑒿 𑒂𑒃 𑒄 𑒠𑒱𑒢 𑒠𑒹𑒐𑒥𑒰𑒧𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒁𑒥𑒻𑒞।

𑒧𑒰𑒪𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒥𑒴𑒖𑒲 𑒅𑒙𑒹𑒩 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒧𑒰𑒨𑓃𑒏𑒹𑒿 𑒙𑒼𑒏𑒪𑒏-

"𑒖𑒿 𑒥𑒰𑒜𑓃𑒱 𑒔𑒪𑒱𑒨𑓃𑒼 𑒖𑒰𑒨𑓃𑒞 𑒞𑒿 𑒣𑒰𑒢𑒱𑒏𑒹𑒿 𑒒𑒙𑒻𑒧𑒹 𑒋𑒏 𑒠𑒴 𑒧𑒰𑒮 𑒪𑒰𑒑𑒱 𑒖𑒰𑒨𑓃𑒞। 𑒞𑒿 𑒧𑒰𑒪𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒂𑒃𑒨𑓃𑒹 𑒮𑒰𑒮𑒳𑒩 𑒦𑒹𑒖 𑒠𑒱𑒨𑓃𑒾𑒏। 𑒠𑒴-𑒔𑒰𑒩𑒱 𑒠𑒱𑒢𑒏 𑒗𑓀𑒗𑒙 𑒢𑒯𑒱 𑒁𑒕𑒱। 𑒄 𑒏𑒻𑒏 𑒠𑒱𑒢𑒏 𑒮𑓀𑒏𑒙 𑒁𑒕𑒱। "

𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒧𑒰𑒪𑒰𑒏 𑒧𑒰𑒨𑓃𑒏 𑒧𑒢 𑒢𑒯𑒱 𑒧𑒰𑒢𑒻𑒞 𑒕𑒪 𑒖𑒹 𑒯𑒧 𑒧𑒰𑒪𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒰𑒮𑒳𑒩 𑒦𑒹𑒖 𑒠𑒲। 𑒍 𑒮𑒼𑒔𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒲𑒯 𑒖𑒹 𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒦𑒳𑒐𑒪 𑒩𑒯𑒥 𑒞𑒿 𑒩𑒯𑒥 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒥𑒹𑒙𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒏𑒭𑓂𑒙 𑒢𑒯𑒱 𑒯𑒼𑒧𑒨𑓃 𑒠𑒹𑒥𑒻𑒏। 𑒥𑒱𑒢𑒰 𑒥𑒱𑒠𑒰𑒑𑒩𑒲 𑒏𑒩𑒾𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒮𑒰𑒮𑒳𑒩 𑒖𑒰𑒨𑓃 𑒠𑒹𑒥𑒻𑒏। 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒦𑒩𑒱 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒥𑒹𑒙𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒪𑒼𑒏 𑒅𑒪𑒯𑒢 𑒅𑒣𑒩𑒰𑒑 𑒠𑒹𑒞।

𑒧𑒰𑒪𑒰𑒏 𑒧𑒰𑒨𑓃 𑒁𑒛𑓃𑒪 𑒩𑒯𑒪𑒲𑒯। 𑒍 𑒧𑒰𑒪𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒟𑒱𑒢𑒯𑒳𑒿 𑒢𑒯𑒱 𑒮𑒰𑒮𑒳𑒩 𑒦𑒹𑒖𑒥𑒰𑒏 𑒣𑒏𑓂𑒭𑒧𑒹 𑒕𑒪𑒲𑒯। 𑒧𑒰𑒪𑒰𑒏 𑒧𑒰𑒨𑓃 𑒂 𑒥𑒰𑒥𑒴𑒖𑒲𑒧𑒹 𑒥𑒞𑓀𑒑𑒩 𑒯𑒼𑒧𑒨𑓃 𑒪𑒰𑒑𑒪। 𑒧𑒰𑒪𑒰𑒏 𑒧𑒰𑒨𑓃 𑒁𑒛𑓃𑒪 𑒩𑒯𑒪𑒲𑒯। 𑒃𑒖𑓂𑒖𑒞 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒭𑓂𑒚𑒰𑒏 𑒮𑒫𑒰𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒯𑒧 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒥𑒹𑒙𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒰𑒮𑒳𑒩 𑒦𑒹𑒖𑒥। 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒝𑒲𑒧𑒹 𑒖𑒼𑒩-𑒖𑒼𑒩𑒮𑒿 𑒥𑒰𑒞 𑒯𑒼𑒧𑒨𑓃 𑒪𑒑𑒪𑒻𑒏। 𑒂𑒮-𑒣𑒰𑒮𑒏 𑒣𑒩𑒼𑒮𑒱𑒨𑓃𑒰 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱 𑒖𑒧𑒰 𑒦𑒨𑓃 𑒑𑒹𑒪। 𑒮𑒦 𑒠𑒳𑒢𑒴𑒏 𑒥𑒰𑒞 𑒥𑒳𑒗𑒪𑒏।

𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏 𑒪𑒼𑒏𑒼 𑒮𑒦 𑒧𑒰𑒪𑒰𑒏 𑒧𑒰𑒨𑓃𑒏 𑒣𑒏𑓂𑒭𑒧𑒹 𑒫𑒼𑒙 𑒠𑒹𑒪𑒏। 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒏𑒰𑒪𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒣𑒴𑒩𑒰 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒲-𑒣𑒳𑒩𑒳𑒭 𑒖𑒧𑒰 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪। 𑒮𑒦𑒏 𑒥𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒦𑒹𑒪 𑒖𑒹 𑒮𑒦 𑒏𑒱𑒨𑓃𑒼 𑒧𑒱𑒪𑒱 𑒩𑒑𑒱 𑒥𑒰𑒢𑓂𑒯𑒣𑒩 𑒮𑒿 𑒖𑒹 𑒣𑒰𑒢𑒱 𑒑𑒰𑒧𑒧𑒹 𑒂𑒥𑒏 𑒪𑒪 𑒯𑒩𑒯𑒩𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒪 𑒞𑒏𑒩𑒰 𑒩𑒼𑒏𑒥𑒰𑒏 𑒅𑒣𑒰𑒨𑓃 𑒏𑒩𑒏 𑒔𑒰𑒯𑒲। 𑒮𑒦 𑒏𑒱𑒨𑓃𑒼 𑒧𑒱𑒪𑒱 𑒐𑒪𑒱𑒨𑓃𑒰 𑒮𑒧𑒱𑓀𑒙𑒏 𑒥𑒼𑒩𑒰𑒧𑒹 𑒧□𑒙𑒱 𑒦𑒩𑒱 𑒥𑒰𑒢𑓂𑒯 𑒣𑒩 𑒖𑒧𑒰 𑒏𑒩𑒨𑓃 𑒪𑒰𑒑𑒪। 𑒣𑒰𑒢𑒱 𑒖𑒹 𑒥𑒰𑒢𑓂𑒯 𑒣𑒩 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒑𑒰𑒧𑒧𑒹 𑒁𑒥𑒻𑒞 𑒕𑒪 𑒮𑒹 𑒥𑒢𑓂𑒠 𑒦𑒨𑓃 𑒑𑒹𑒪। 𑒦𑒩𑒱 𑒩𑒰𑒞𑒱 𑒣𑒴𑒩𑒰 𑒑𑒾𑒂𑒿 𑒖𑒰𑒑𑒪 𑒩𑒯𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒥𑒼𑒩𑒰-𑒣𑒩-𑒥𑒼𑒩𑒰 𑒠𑒹𑒧𑒨𑓃 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒩𑒑𑒱 𑒥𑒰𑒢𑓂𑒯𑒏𑒹𑒿 𑒞𑒹𑒏 𑒢𑒹 𑒧𑒖𑒑𑒴𑒞 𑒏𑒨𑓃𑒪𑒏 𑒖𑒹 𑒢𑒹 𑒥𑒰𑒢𑓂𑒯 𑒙𑒴𑒙𑒪 𑒂 𑒢𑒹 𑒋𑒏𑒼 𑒩𑒞𑓂𑒞𑒲 𑒣𑒰𑒢𑒱 𑒑𑒰𑒧𑒨𑓃𑒧𑒹 𑒂𑒨𑓃𑒪। 𑒑𑒾𑒂𑒿 𑒒𑒴𑒩𑒂 𑒂 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏 𑒏𑒚𑒱𑒢 𑒧𑒹𑒯𑒢𑒞𑒮𑒿

ગામમે પાનિ નહિ આયલ।

દૂ-ચારિ દિનક બાદ બાઢ઼િક પાનિ કમ હોમય લાગલ। ગૌઆઁસભ કહય લાગલ-

"માલા હમરા ગામક બેટી અછિ। હમરા સમાજક બેટી અછિ। ઓકરા બિના સાસુરબલાક બિદાગરી કરૌને કોના સાસુર જાય દેબૈક। ગામક નર-હઁસાય નહિ હોમય દેબૈક। એકરા રક્ષાક હેતુ જતેક તાગતિ લગાય પડ઼ત ઓતેક તાગતિ લગાએબ। મુદા અપના ઇજ્જતકેઁ બુડ઼ઽ નહિ દેબ। માલા હમરા ગામક ઇજ્જત અછિ। હમર મર્યાદા થિકીહ। "

પૂરા ગા□વ઼બલા દૂ તીન દિન તક કઠિન પરિશ્રમ કય પાનિકેં ગામમે નહિ આબય દેલક। રસે-રસે પાનિ કમ ભય ગેલ આ બાન્હ સેહો મજગૂત ભઽ ગેલ। ગૌઆઁ સભક બિચાર ભેલન્હિ જે પ્રસવ કાલ ધરિ માલા એતય રહતીહ।

કિછુ દિનક બાદ બાઢ઼િક પાનિ કમ ભય ગેલ। માલાકેં બચ્ચા જન્મ લેબાક સમય લગિચા ગેલ। માલા બડ઼ કમજોર છલીહ। માલાક પતિક હાલત દયનીય છલ। ઓકરા ઓતેક ઉપાય નહિ છલૈક જાહિસઁ માલાકેં અસ્પતાલમે ભર્તી કરાઓલ જાય। જહિના ગામમે બાઢ઼િ નહિ આબય તકરા લોકક ભલ ગ્રામીણ એકતા પ્રબલ છલ તહિના પૂરા ગા□વ઼ એક ભય કિછુ આર્થિક મદદ કય માલાકેં અસ્પતાલ પહુઁચૌલક। માલાકેં પાનિ ચઢ઼ય લગલૈક। માલાક સ્વાસ્થ્યમે સુધાર ભેલૈક આ ઓ સ્વભાવિક રૂપે બચ્ચાકેં જન્મ દેલક। પૂરા મહાલી ગામક લોક ખુશ છલ। અસ્પતાલક ડ□ક્ટરકેં સભ બાતક જાનકારી ભેલૈક। ડ□ક્ટર સાહેબ સેહો ભરપૂર મદદ કયલન્હિ। દવાઇક વ્યવસ્થા અસ્પતાલેસઁ ભય ગેલૈક। ડ□ક્ટર સાહેબ બજલાહ જે ગ્રામીણ એકતામે ઓ શક્તિ છૈક જે કઠિનસઁ કઠિન કામકેં આસાન બના દૈત અછિ। ગ્રામીણ જીવનમે સમાજિકતાક પૈઘ મહત્વ રહૈત છૈક જે અપને દુઃખ કાટિ દોસરકેં સુખ પ્રદાન કરી।

- ગાનાયામ યાદવ, પત્નીક નામ : શ્રીમતી સુમિત્રા દેવી। જન્મ : ૧૪ જનવરી ૧૯૫૬, પિતાક નામ : સ્વ. નાગેશ્વર યાદવ। માતાક નામ : સ્વ. મહેશ્વરી દેવી। દાદાક નામ : સ્વ. જોગ યાદવ। નાનાક નામ : મહાન સ્વતંત્રતા સેનાની સ્વ. નામ ઉપ્પન સહૈતા। જન્મ સ્થાન : ડુમરા, મૂલ ગામ : ડુમરા, પો- ડુમરા, જાયા : નૂરપુર, પ્રખણ્ડ : અન્ધરાઠાઢ़ી, જિલા- મધુબની (બિહાર) માત□ક : નરહિ, થાના : ફુલૌના, પેશા : અધ્યાપન, અવકાશ પ્રાપ્ત પ્રધાનાધ્યાપક, માત્ર પેંશનપર આધારિત જિનિગી। શિક્ષા : એમ.એ (મૈથિલી), ઉપ્પન : કથા, કવિતા આ આઉપ્પ વિભિન્ન પત્ર-પત્રિકામે પ્રકાશિત।

મોબાઇલ નં: ૯૯૩૯૦૪૧૧૧૬, ૯૪૩૦૬૩૧૯૯૩, ૮૫૪૧૦૯૬૦૦૪

સદ્યઃ પ્રકાશિત ક□તિ : પ્પાઉ ઘર (કથા સંગ્રહ), પ્રકાશિતઅપ્રકાશિત અન્ય ક□તિ : (૧) નાતી દુસલક નાનાકેં (કવિતા સંગ્રહ), (૨) વાવા નામ કેવલ (કથા સંગ્રહ) , (૩) સમહૈતા (કથા સંગ્રહ), (૪) નવકી પુતોહુ (કથા સંગ્રહ)

અપન મંતવ્ય દિતીનાઉસતાડ્વદિહાગામાઉયોમ **પર પઠાઉ।**
રૂપદ્ય પ્પામ્ડ

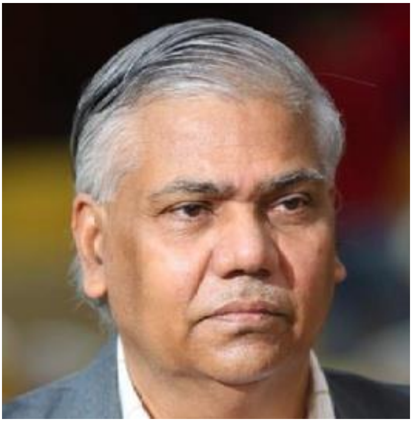
રૂ૧માળ કશોર મશ્ર- ગહન

રૂ૨જગદાનન્દ ઝા ' મનુ' - પચ્ચીસ ટા ગુવાર

રૂ૩આશીષ અનચિન્હાર- ૨ ટા ગજલ

રૂ૪આચાર્ય રામાનંદ મંડલ- ૨ ટા પદ્ય

𑒨𑒳𑒑𑒪 𑒏𑒱𑒬𑒼𑒩 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩- 𑓑𑓙𑓘𑓙



બાળ કિશોર મિશ્ર, બટિયાબાડ થીક ળેબાઉ મૈનેળા (ઽ), વીએસએબએઉ(મુખ્યાઉય), દિલ્લી,ગામ- શ્રબેન ડીહ, પો શ્રબેન હાટ, મધુવની

ગ્રહણ

હોં પઉ બહિ છિથયિો ળ્હિ સિં,
શ્રા' ને વા દઉ, હુનકા સં બબા ળ,
મા બ્ઘામ્ડ કેં ગ્બસાિ ઘ કેઉક શ્રછિ,
બા હુ -કેતુ કે શ્રછિ ઇ કા ળ।

સંપૂર્ણ ગ્રહણ ,પસબઉ શ્રળ્હા બ ,
ઉગ્રોછ ,બિ શ્રા કે ક□ષ્યામપ્ય।
દિવ્સ વળિ િગેઉ બા ઘિ શ્રછિ,
ઘુઘુશ્રાએ બહઉ શ્રછિ શિઘમપ્ય,

૨ળો ઘક મહા ળ્યો ઘિ ષ્પિકિ,
ળ્યો ઘિ બ્મય કબથિ ઘ્બિ ઊિ ક,
હુનકા શ્રછૈ તે પ્બકા શ કો ળા કડ ,

મણા ૧૯૭ શ્રછિ શો ક?

છુટના ૯ ૧૯ ઌિઁ નમ -પા શ સઁ,
ঌs ળા ઌ ળગા મે પ્૧૭ય઼,
ળી નિ ળિા ઌ નમિનિ , શ્રાશ્રો૧
ঌs ળા ઌ શ્રોક઼ે ળય઼।

દ વિ઼ા ક૧ શ્રસો થકિ ન ঌ૭,
ঌs ગે૭ છથિ શ્રો શ્રસહ઼ા ય઼,
શ્રણ્હા ૧ક કવળા મે વ઼સુયા ,
શ્રછિ નિમ કે ૬ કેહેન શ્રણ્યા ય઼?

મુદા , ળી નિ કો ણા ળા ઌ શ્રણ્હા ૧?
પ્૧કા શ નs ,હો રન શ્રછિ શ્રળેય઼,
કિ છુ઼ૃ કા ૭ કે વા દ મે,
ળો નિ પિશ્રશ્રો૭ક ળી નક' શ્પેય઼।

મુક્ન ঌ૭ા ૯ નમ સિ્ન્ા સઁ,
પુનિ ઉગ૭ ણঌ મે દ વિ઼ા ક૧,
હેવા ક ળૃ૯, સૃ૯ ঌ૭ૈક ,
નમ, શ્ર૧ રળો નક યા ક૧।

શ્રોહ િણા , કહ િશ્રો ,પૂન્મ્ાિમે ૧ા નિ,
ঌs ળા ૨ છથિ ગહ્ન-ગ્૧સ િન ૧ા કેશ,
રળો ૧ િશ્રા સા ની ઘો ૧ નમ સિ્ન્ા ,
યા ણનિ ણહ િકન િકો ૧હિ ળા રછ શેષ।

ગહ્ન નs પ૧ાિમ્ા મ શ્રછિ,

દુર્ઘટના ,ધ્યગો ૭ક દો શ્રાનિ,
૯મ્હ્૧ ,ઉૈછ સમુદ્ર મે ,
નમહ્૧ -નમહ્૧ ળો શ્રાનિ।

ધ્યગ્ના સ મે ΠS રળો Π સ્વ઼યં ,
ગ્નS ળા રΠ શ્રછિ શ્રો શ્રના થ,
દુષ્પ્નગ્ગ વ઼ વા નહ્૭ -છેક૭ નહિ,
પઙૈΠ શ્રછિ પ□થ્વ઼ી ક મા થ।

વ઼ િળ્ગ્ગ નક ધ્યો ળ ૩પના ન્Π મે,
ચ૭૭ ,પΠા ગહ્ન કે હે્તુ,
ગ્નહ્મક દો ધ્યી કિ શ્રો ને શ્રછિ,
નહિ ના હુ ,શ્રા' નહિ કે્તુ।

વ઼ શિષ પનિ સ્થિતિ ધ્યગો ૭ કે,
સૂર્ય઼ શ્રો પ□થ્વ઼ી ક વી ય ળઁ યા ન,
ઑટકૈછ ન્વ઼િ -રળો Π, નસ્તે મે,
સૂર્ય઼ ગહ્નક રહ્ શ્રછિ પ્નમા મ।

ળઁ, વ઼િ વ઼િસ્વા ન્ શ્રા યન્દ્ર વી ય મે,
પ□થ્વ઼ી શ્રાવિ ગે૭િ હ,
૯હિ કા નમ સઁ યન્દ્રગહ્ન,
વ઼િ ઘુનશ્મિ ને જૂ પશ્રશ્રો૭િ હ।

ડા ઙ નહૈΠ નહિ શ્રછિ પનિ સ્થિતિ,
વદ૭Π,ય૭Π નહ્Π શ્રછિ,
મનુષ્યક ળિ નગી ક સહ્યો ગિ ની ,
શ્રા, કધ્યનો છ૭Π નહ્Π શ્રછિ।

𑒠𑒹𑒫𑒼 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒟𑒱 𑒕𑒳𑒙𑒪 𑒑𑓂𑒩𑒯𑒝 𑒮𑒿,
𑒫𑒩𑓂𑒞𑒧𑒰𑒢 𑒩𑒯𑒻𑒕, 𑒋𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒏' 𑒮𑒧𑒨𑓃,
𑒑𑓂𑒩𑒯𑒝 -𑒅𑒑𑒩𑒰𑒮 𑒯𑒼𑒃𑒞𑒼 𑒩𑒯𑒻𑒕,
𑒣𑒩𑒰𑒖𑒨𑓃 𑒏𑒪𑓂𑒣𑒢𑒼 ,𑒂 𑒏𑒪𑓂𑒣𑒢𑒼 𑒖𑒨𑓃।

𑒞𑒰𑒏𑒏' 𑒔𑒰𑒯𑒱 𑒥𑒰𑒙 𑒅𑒑𑒩𑒰𑒮𑒏,
𑒕𑒼𑒛𑓃𑒲 𑒢𑒹 𑒏𑒪𑓂𑒣𑒢𑒼 𑒯𑒰𑒟 𑒂𑒮𑒏।

𑒙𑒳𑒙𑒞𑒻 𑒮𑒢𑓂𑒡𑒳 𑒧𑒹𑒖𑒼 𑒂𑒢𑒏𑒱 𑒫𑒪,
𑒂𑒣𑒮 𑒖𑒹𑒞𑒻 ,𑒣𑓂𑒩𑒪𑒨𑓃 𑒏𑒹 𑒖𑒛 𑒪।

𑒠𑒹𑒐𑒫𑒻 , 𑒢𑒱𑒏𑒪𑒞𑒻 , 𑒃𑒖𑒼𑒞 𑒁𑒢𑓂𑒯𑒰𑒩 𑒮𑒿,
𑒅𑒚𑒻 𑒮𑓀𑒑𑒲𑒞, 𑒫𑓃𑒲𑒝𑒰 𑒏 𑒙𑒳𑒙𑒪 𑒞𑒰𑒩 𑒮𑒿।

𑒧𑒩𑒳𑒦𑒴𑒧𑒱 𑒕𑒳𑒙𑒞𑒻 𑒣𑒰𑒢𑒱𑒏 𑒔𑒰𑒩,
𑒔𑒪𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒏 𑒅𑒧𑒹𑒠 𑒣𑒩 𑒮𑓀𑒮𑒰𑒩।

𑒏𑒧𑒖𑒼𑒩 𑒣𑒛𑓃𑒻 𑒧𑒰𑒢𑒫𑒏 𑒂𑒫𑓃𑒩𑓂𑒞𑓂𑒞,
𑒫𑓀𑒡𑒢 𑒮𑒿 𑒧𑒳𑒏𑓂𑒞𑒱𑒏𑒹, 𑒕𑒻 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒁𑒢𑓂𑒞।

𑒫𑒛𑓃𑒼 -𑒫𑒯𑒱𑒢𑒏𑒱 𑒙𑒳𑒙𑒞𑒻 𑒙𑒰𑒖,
𑒍𑒏𑒩𑒹 𑒮𑒿 𑒏𑒼𑒢𑒼 , 𑒕𑒳𑒙𑒞𑒻 𑒮𑒧𑒰𑒖।

𑒋𑒪𑒻 𑒑𑓂𑒩𑒯𑒝
𑒅𑒑𑒩𑒰𑒮 𑒦𑒹𑒪𑒻,
𑒔𑒪𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒻, 𑒞𑒯𑒝।

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨 ggajendra@videha.com **𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।**

𑓓𑓒.𑒖𑒑𑒠𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒗𑒰 '𑒧𑒢𑒳' - 𑒣𑒔𑓂𑒔𑒲𑒮 𑒙𑒰 𑒑𑒖𑒪



𑒖𑒑𑒠𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒗𑒰 '𑒧𑒢𑒳'

𑒣𑒔𑓂𑒔𑒲𑒮 𑒙𑒰 𑒑𑒖𑒪

𑒑𑒖𑒪 𑓑
𑒂𑒿𑒔𑒩 𑒢𑒯𑒱 𑒅𑒚𑒰𑒥𑒴 𑒂𑒿𑒐𑒱𑒮𑒿 𑒣𑒲𑒥𑒨 𑒠𑒱𑒁
𑒯𑒧 𑒖𑒢𑓂𑒧𑒮𑒿 𑒣𑒱𑒨𑒰𑒮𑒪 𑒏𑒩𑒹𑒖 𑒖𑒳𑒛𑓃𑒥𑒨 𑒠𑒱𑒁
𑒏𑒹 𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒢𑒱𑒮𑒰𑒿 𑒮𑒩𑒰𑒥𑒧𑒹 𑒥𑒛𑓃 𑒁𑒕𑒱
𑒏𑒢𑒲 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒏 𑒢𑒱𑒮𑒰𑒿𑒧𑒹 𑒖𑒲𑒥𑒨 𑒠𑒱𑒁

𑒩𑒳𑒥𑒰𑒃 𑓒

𑒯𑒧 𑒣𑒲𑒪𑒾 𑒞𑓀 𑒪𑒼𑒏 𑒏𑒯𑒪𑒏 𑒬𑒩𑒰𑒥𑒲 𑒁𑒕𑒱

𑒏𑒯𑒴 [illegible] 𑒏𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒥𑒯𑒮𑒪 𑒏𑒥𑒰𑒥𑒲 𑒁𑒕𑒱

𑒥𑒳𑒗𑒪𑒾 𑒁𑒯𑒰𑓀 𑒮𑒦   𑒠𑒳𑒢𑒱𑒨𑒰𑒏 𑒚𑒹𑒏𑒹𑒠𑒰𑒩

𑒯𑒧𑒩𑒼 𑒂𑓀𑒐𑒱𑒮𑓀 𑒠𑒹𑒐𑒴 𑒏𑒲 𑒐𑒩𑒰𑒥𑒲 𑒁𑒕𑒱

𑒩𑒳𑒥𑒰𑒃 𑓓

𑒣𑒲𑒥 𑒢𑒻 𑒬𑒩𑒰𑒥 𑒞𑓀 𑒯𑒧 𑒖𑒲𑒥 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒏𑒨

𑒤𑒰𑒙𑒪 𑒏𑒩𑒹𑒖𑒏𑒹𑓀 𑒯𑒧 𑒮𑒲𑒥 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒏𑒨

𑒮𑒑𑒩𑒼 𑒖𑒧𑒰𑒢𑒰 𑒦𑒹𑒪 𑒠𑒳𑒬𑓂𑒧𑒢 𑒬𑒩𑒰𑒥𑒏

𑒮𑒥𑒯𑒏 𑒮𑒼𑒗𑒰 𑒞𑓀 𑒂𑒥 𑒣𑒲𑒥 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒏𑒨

𑒩𑒳𑒥𑒰𑒃 𑓔

𑒣𑒲𑒪𑒾 𑒬𑒩𑒰𑒥 𑒞𑓀 𑒠𑒳𑒢𑒱𑒨𑒰𑓀 𑒏𑒯𑒪𑒏 𑒥𑒞𑒰𑒯

𑒥𑒢𑒱 𑒣𑒲𑒢𑒹 𑒃 𑒠𑒳𑒢𑒱𑒨𑒰𑓀 𑒦𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒏𑒱𑒙𑒰𑒯

𑒖𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒣𑒲𑒪𑒏 𑒏𑒯𑒰𑓀 𑒁𑒕𑒱 𑒍𑒏𑒩𑒼 𑒧𑒯𑒪

𑒞𑒿 𑒣𑒥𑒱𑒣𑒱 𑒏' 𑒩𑒯𑒱𑒏 𑒢𑒯𑒱 𑒥𑒢𑒱 𑒚𑒰𑒃 𑒒𑒰𑒙𑒰𑒯

𑒩𑒳𑒥𑒰𑒃 𑓕

𑒧𑒼𑒙𑒥 𑒢𑒯𑒱 𑒮𑒱𑒢𑒹𑒯 𑒞𑒿 𑒁𑒢𑒰𑒫𑒹 𑒣𑒲𑒥𑒾

𑒠𑒩𑓂𑒬𑒢 𑒯𑒳𑒢𑒏 𑒯𑒧𑒠𑒧 𑒑𑒼𑒥𑒱𑒮𑒧𑒹 𑒏𑒹𑒥𑒾

𑒏𑒹 𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒁𑒢𑒰𑒫 𑒕𑒻𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒢𑒰𑒫 ' 𑒧𑒢𑒳'

𑒥𑒢𑒱 𑒯𑒳𑒢𑒏 𑒢𑒯𑒱𑒞𑒾 𑒁𑒢𑒰𑒫𑒹 𑒮𑒿 𑒯𑒧 𑒛𑒲𑒥𑒾

𑒩𑒳𑒥𑒰𑒃 𑓖

𑒜𑒼𑒪𑒏 𑒡𑒧-𑒡𑒧𑒰-𑒡𑒧 𑒥𑒖𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒻𑒏 𑒕𑒻

𑒒𑒳𑒿𑒒𑒩𑒴 𑒕𑒢-𑒕𑒢𑒰-𑒕𑒢 𑒕𑒢𑒏𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒻𑒏 𑒕𑒻

𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒧𑒲𑒞𑒰𑒮𑒿 𑒕𑒻𑒏 𑒋𑒏𑓂𑒏𑒹𑒮𑒢 𑒣𑓂𑒨𑒰𑒩

𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒁𑒣𑒢 𑒑𑒣𑓂𑒣 𑒢𑒯𑒱 𑒥𑒳𑒗𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒻𑒏 𑒕𑒻

𑒩𑒳𑒥𑒰𑒃 𑓗

𑒣𑒲𑒥𑒾 𑒢𑒯𑒱 𑒞𑒿 𑒏𑒲 𑒕𑒻 𑒁𑒢𑒰𑒫 𑒥𑒴𑒗𑒥 𑒏𑒲

𑒥𑒢𑒱 𑒣𑒲𑒢𑒹 𑒠𑒳𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿𑒧𑒹 𑒩𑒯𑒥 𑒞𑒿 𑒩𑒯𑒥 𑒏𑒲

𑒋𑒏 𑒠𑒼𑒮𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒦 𑒁𑒕𑒱 𑒐𑒴𑒢 𑒣𑒲𑒥𑒻𑒞

𑒐𑒴𑒢 𑒕𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒬𑒩𑒰𑒥𑒹 𑒣𑒲 𑒏𑒨 𑒠𑒹𑒐𑒥 𑒏𑒲

𑒩𑒳𑒥𑒰𑒃 𑓘

𑒑𑒼𑒩𑒲 𑒞𑒼𑒯𑒩 𑒏𑒰𑒖𑒩 𑒖𑒰𑒢 𑒧𑒰𑒩𑒻𑒋
𑒕𑒾𑒛𑓃𑒰 𑒮𑒦 𑒮𑒑𑒩 𑒯𑒰𑒨 𑒞𑒰𑒢 𑒧𑒰𑒩𑒻𑒋
𑒣𑒹𑒋𑒏 𑒥𑒛𑓃 𑒢𑒰𑒑 𑒏𑒰𑒖𑒩 𑒥𑒯𑒱𑒢𑒰𑒮𑒿

𑒞𑒼𑒯𑒩 𑒂𑒿𑒐𑒱𑒧𑒹 𑒏𑒩𑒻 𑒬𑒰𑒢 𑒧𑒰𑒩𑒻𑒋

𑒩𑒳𑒥𑒰𑒃 𑓙

𑒏𑒰𑒖𑒩 𑒥𑒳𑒗𑒱 𑒏𑒨 𑒁𑒣𑒢 𑒂𑒿𑒐𑒱𑒧𑒹 𑒥𑒮𑒰 𑒪𑒹𑒪𑒱
𑒧𑒞𑒱 𑒥𑒢𑒰 𑒏𑒨 𑒏𑒩𑒲𑒏 𑒏𑒩𑒹𑒖𑒮𑒿 𑒪𑒑𑒰 𑒪𑒹𑒪𑒱
𑒌𑒢𑒰 𑒖𑒳𑒢𑒱 𑒏𑒯𑒿 𑒏𑒩𑒟𑒲 𑒢𑒖𑒩𑒱 𑒒𑒳𑒧𑒰𑒆
𑒂𑒿𑒐𑒱𑒏 𑒁𑒣𑒢 𑒏𑒩𑒲𑒨𑒰 𑒏𑒰𑒖𑒩 𑒥𑒢𑒰 𑒪𑒹𑒪𑒱

𑒩𑒳𑒥𑒰𑒃 𑓑𑓐

𑒐𑒴𑒮𑒱𑒨𑒼 𑒖𑒿 𑒏𑒩𑒲 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒩𑒐𑒰 𑒏𑒩𑒱𑒞𑒯𑒳𑒿

𑒖𑒢𑒧 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒯𑒧 𑒁𑒯𑒲𑓀𑒏 𑒥𑒰𑒙𑒧𑒹 𑒩𑒯𑒱𑒞𑒯𑒳𑒿

𑒧𑒳𑒮𑓂𑒏𑒲𑒧𑒹 𑒁𑒯𑒰𑓀𑒏 𑒁𑒣𑒢 𑒧𑒼𑒢 𑒪𑒴𑒙𑒰 𑒏'

𑒞𑒩𑒯𑒞𑓂𑒟𑒲𑒣𑒩 𑒖𑒰𑒢 𑒪𑒹𑒢𑒹 𑒯𑒧 𑒁𑒥𑒱𑒞𑒯𑒳𑓀

𑒩𑒳𑒥𑒰𑒃 𑓑𑓑

𑒁𑒢𑒏𑒩 𑒒𑒩 𑒖𑒰𑒛𑓃𑒰 𑒯𑒰𑒟 𑒮𑒹𑒏𑒻 𑒮𑒦 𑒏𑒱𑒨𑓃𑒼
𑒠𑒼𑒮𑒩𑒏 𑒏𑒩𑒹𑒖𑒰 𑒞𑒼𑒩𑒰 𑒯𑒱𑓀𑒮𑒻 𑒮𑒦 𑒏𑒱𑒨𑓃𑒼
𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒣𑒩 𑒖𑒹 𑒥𑒣𑒱𑒞𑒰 𑒋𑒕𑒻 𑒏𑒋𑒣𑓂𑒨𑒢𑒼
𑒧𑒰𑒟𑒰 𑒣𑒏𑒛𑒱 𑒯𑒱𑒨𑒳𑒏𑒰-𑒯𑒱𑒨𑒳𑒏𑒰 𑒏𑒢𑒻 𑒮𑒦 𑒏𑒱𑒨𑓃𑒼

𑒩𑒳𑒥𑒰𑒃 𑓑𑓒

𑒏𑒼𑒢 𑒥𑒡𑒱 𑒧𑒩𑒰 𑒏𑒱𑒨𑓃 𑒯𑒧 𑒩𑒳𑒣𑒻𑒨𑓃𑒰 𑒏𑒧𑒹𑒪𑒾

𑒮𑒳𑒐 𑒔𑒻𑒢 𑒢𑒱𑒢𑓂𑒢 𑒩𑒰𑒞𑒏𑒱𑓀 𑒁𑒣𑒢 𑒯𑒹𑒩𑒹𑒪𑒾

𑒑𑒰𑒧 𑒒𑒩𑒏 𑒮𑒥𑒙𑒰 𑒮𑒓𑒩 𑒮𑓁𑒥𑓁𑒡 𑒞𑒱𑒨𑓃𑒰𑒑𑒱

𑒥𑒢𑒱 𑒏𑒮𑒴𑒩𑒹 𑒥𑒰𑒯𑒩   𑒥𑓃𑒢𑒥𑓃𑒰𑒮 𑒥𑒱𑒞𑒪𑒾

𑒩𑒳𑒥𑒰𑒃 𑓑𑓓

ઘાટ-ઘાટ પર સુતલ કતેકો ગોહિ અછિ

સાઉથ લોકકેઁ મોન ભેને મોહિ અછિ

ધર્મક નામ પર ખુલલ કતેક દોકાન

ટાકા લસ છનમે સજાટા પાપ ધોહિ અછિ

રુબાઇ ૧૪

બાબૂજીક કોરામે સદિખન રહલહુઁ

હુનક તન મન ધન સગરો હમ પેઅલહુઁ
નોર પાનિ દાહીસઁ સદિખન બચેલન્હિ

સેવાક બેડ઼મે હમ પરદેશ ભાગલહુઁ

રુબાઇ ૧૫

દેહ જાન સબટા   બાબૂજી દેલન્હિ
જે કિછુ છી એખન બાબૂજી કેલન્હિ
અપને નહિ ભૂખે   હમર પેટ ભરલન્હિ
સુખ અપન બિસરિ હમરા મનુખ બનેલન્હિ

રુબાઇ ૧૬

જે જન્મ દેલન્હિ ઓ કહલન્હિ ગદહા

𑒖𑒹 𑒣𑒼𑒮𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒌 𑒧𑒰𑒩𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒑𑒠𑒯𑒰

𑒑𑒠𑒯𑒰 𑒖𑒿𑒏𑒰 𑒮𑒑𑒩𑒼 𑒖𑒱𑒢𑓂𑒠𑒑𑒲 𑒥𑒱𑒞𑒪𑒯𑒳𑒿

𑒖𑒢𑒱𑒏𑒰 𑒥𑒱𑒨𑒰𑒯𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒌 𑒥𑒳𑒗𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒑𑒠𑒯𑒰

𑒩𑒳𑒥𑒰𑒃 𑓑𑓗

𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏 𑒂𑒿𑒔 𑒮𑒳𑒪𑒑𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱

𑒮𑒑𑒩𑒼 𑒢𑒫 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒏 𑒖𑓂𑒫𑒪𑒰 𑒣𑒖𑒩𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱

𑒏𑒼𑒙𑒲 𑒢𑒧𑒢 𑒖𑒢𑒱𑒏𑒩 𑒥𑒕𑒱𑒪 𑒖𑒰𑒑𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱

𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯𑒏 𑒥𑒰𑒩𑒪 𑒂𑒑𑒱 '𑒧𑒢𑒳' 𑒪𑒯𑒏𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱

𑒩𑒳𑒥𑒰𑒃 𑓑𑓘

𑒮𑒱𑒮𑓂𑒙𑒧 𑒂𑒃𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒋 𑒥𑒥𑒰𑒪 𑒥𑒢𑒪 𑒁𑒕𑒱

𑒢𑒹𑒞𑒰 𑒮𑒦 𑒞𑒿 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒖𑒣𑒰𑒪 𑒥𑒢𑒪 𑒁𑒕𑒱

𑒥𑒛𑓃 𑒥𑒛𑓃 𑒥𑒰𑒑𑒩 𑒥𑒱𑒝𑓂𑒪𑒰 𑒢𑒰𑒖 𑒅𑒚𑒥𑒻𑒋

𑒖𑒢𑒞𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒧𑒱𑒣𑒩 𑒮𑒥𑒰𑒪 𑒥𑒢𑒪 𑒁𑒕𑒱

रुबाइ १९

गामक अधिकारी जेना सैयाँ हमर

कोना क पकड़तै कियोक बैयाँ हमर

सभक पेटीक माल अछि हमरे छैक

सैयाँ लऽ लेथिन सभटा बौआ हमर

रुबाइ २०

साँवरिया पिया अहाँ ई की कएलहुँ

साउन चढ़ल छोड़ि चलि कोना गएलहुँ

बहल हवा शीतल सिहरैए हमर तन

कोना रहब बिनु अहाँ बुझि नै पएलहुँ

रुबाइ २१

गोरी तोर मुस्कीमे छौ जहर भरल

नै एना मुँह खोल कते घायल परल

जँ निकैल गएलौ फुलझड़ी सन हँसी

बाटपर भेटत कतेको छौड़ा मरल

रुबाइ २२

नैन्हेटा हाथमे केहन लकीड़ छै

नै माय बाप ई केहन तकदीर छै

थो थो कऽ ऐंऽ कप लकीड़ो मीएबै

नै सुनलक कियो ई दुनियाँ बहीर छै

रुबाइ २३

कन्या कय क जीवन हम जीव रहल छी

फाटल अपनकेँ कहुना सीब रहल छी

सभ किछु लूटा कय ' मनु' अपन जीवनकेँ

निर्लज जकाँ हम ताड़ी पीब रहल छी

रुबाइ २४

अभिमन्यु जकाँ चक्रव्यूहमे फसलौं
नै बचब सखि हम अर्जुन बनि पएलौं

' मनु' जीवनकेँ एही महाभारतमे
सगरो ठार हम कौरव केर देखलौं

𑒑𑒖𑒪 𑓒𑓕

𑒯𑒧 𑒖𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒲 𑒏𑒲 𑒃𑒯𑒰𑒿 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒱𑒞 𑒢𑒯𑒱

𑒃𑒯𑒰𑒿𑒏 𑒮𑒳𑒐 𑒠𑒹𑒐 𑒐𑒳𑒬𑒲𑒮𑒿 𑒯𑒧 𑒄𑒿𑒔 𑒮𑒯𑒱

𑒥𑒰𑒞𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒖𑒩𑒻𑒞 𑒆 𑒠𑒳𑒢𑒱𑒨𑒰 𑒠𑒹𑒐𑒉𑒏

𑒞𑒹𑒿 𑒥𑒢𑒱 𑒯𑒧 𑒢𑒿 𑒖𑒩𑒥𑒻 𑒠𑒳𑒐 𑒬𑒼𑒏 𑒏𑒯𑒱

-𑒖𑒑𑒠𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒗𑒰 '𑒧𑒢𑒳', 𑒑𑓂𑒩𑒰𑒧 𑒣𑒼𑒮𑓂𑒙 - 𑒯𑒩𑒱𑒣𑒳𑒩 𑒛𑒲𑒯𑒙𑒼𑒪, 𑒧𑒡𑒳𑒥𑒢𑒲। 𑒧𑒼𑒥𑒰𑒅𑒪- 𑓙𑓒𑓑𑓒𑓔 𑓖𑓑𑓐𑓐𑓖

𑒃𑒣𑒢 𑒧𑒢𑓂𑒞𑒫𑓂𑒨 editorial@videha.com **𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।**

𑓓𑓓.𑒄𑒬𑒲𑒭 𑒃𑒢𑒔𑒱𑒢𑓂𑒯𑒰𑒩- 𑓒 𑒙𑒰 𑒑𑒖𑒪



𑒂𑒬𑒲𑒭 𑒁𑒢𑒔𑒱𑒢𑓂𑒯𑒰𑒩

𑒠𑒴 𑒙𑒰 𑒑𑒖𑒪
𑓑

𑒩𑒒𑒳𑒣𑒞𑒱 𑒩𑒰𑒒𑒫 𑒩𑒰𑒖𑒰𑒩𑒰𑒧
𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒔𑒳𑒏𑒞𑒻 𑒬𑓂𑒫𑒰𑒮𑒏 𑒠𑒰𑒧

𑒮𑒳𑓀𑒠𑒩 𑒮𑒳𑓀𑒠𑒩 𑒔𑒏𑒧𑒏 𑒢𑒑𑓂𑒩
𑒅𑒣𑒙𑒪 𑒫𑒱𑒪𑒙𑒪 𑒮𑒥𑒯𑒿𑒏 𑒑𑒰𑒧

𑒑𑒩𑒠𑒢𑒰 𑒐𑓂𑒨𑒰𑒞𑒱 𑒋𑒏𑒻 𑒩𑓀𑒑
𑒮𑒼𑒢𑒰 𑒔𑒰𑒿𑒠𑒲 𑒪𑒼𑒯𑒰 𑒞𑒰𑒧

𑒣𑒳𑒕𑒢𑒹 𑒩𑒯𑒱𑒨𑒹 𑒋𑒏𑒻 𑒣𑓂𑒩𑒬𑓂𑒢
𑒅𑒞𑓂𑒞𑒩 𑒠𑒹𑒪𑒏 𑒃𑒧𑒪𑒲 𑒂𑒧

𑒅𑒖𑓂𑒖𑒩 𑒬𑒼𑒦𑒞𑒱 𑒣𑒲𑒨𑒩 𑒢𑒼𑒩

𑒯𑒰𑒨𑒱𑒩 𑒟𑒰𑒏𑒢 𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒡𑒰𑒧

𑒮𑒦 𑒣𑒰𑒿𑒞𑒱𑒧𑒹 𑓒𑓒-𑓒𑓒-𑓒𑓒-𑓒𑓑 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰𑒏𑓂𑒩𑒧 𑒁𑒕𑒱। "𑒩𑒒𑒳𑒣𑒞𑒱 𑒩𑒰𑒒𑒫 𑒩𑒰𑒖𑒰𑒩𑒰𑒧" 𑒪𑒏𑓂𑒭𑓂𑒧𑒝𑒰𑒔𑒰𑒩𑓂𑒨 𑒩𑒔𑒱𑒞 "𑒬𑓂𑒩𑒲 𑒢𑒧𑓁 𑒩𑒰𑒧𑒰𑒨𑒝𑒧𑓂" 𑒏𑒹𑒩 𑒁𑓀𑒬 𑒁𑒕𑒱।

𑓒

𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒂𑒿𑒐𑒱𑒏 𑒁𑒞𑒥𑒹 𑒮𑒣𑒢𑒰
𑒯𑒱𑒢𑓂𑒠𑒴 𑒧𑒳𑒮𑓂𑒪𑒱𑒧 𑒔𑒧𑒩𑒰 𑒥𑒦𑒢𑒰

𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒂 𑒏𑒱 𑒩𑒰𑒖𑒢𑒲𑒞𑒱𑒧𑒹
𑒁𑒥𑒞𑒱 𑒩𑒯𑒻 𑒁𑒠𑒢𑒰 𑒣𑒠𑒢𑒰

𑒁𑒔𑒩𑒰𑒞𑒱𑒨𑒰𑒧𑒹 𑒯𑒧𑒯𑒴𑒿 𑒠𑒹𑒐𑒪
𑒋𑒏𑒻 𑒧𑒼𑒪𑒻 𑒁𑒩𑒒𑒰 𑒥𑒠𑒢𑒰

𑒢𑒼𑒩 𑒢𑒼𑒩 𑒢𑒼𑒩 𑒢𑒼𑒩𑒹 𑒢𑒼𑒩
𑒁𑒞𑒥𑒹 𑒪𑒐𑒱𑒢𑒹 𑒩𑒯𑒟𑒱 𑒫𑒔𑒱𑒢𑒰

𑒠𑒳𑒐 𑒧𑒼𑒙𑒪 𑒩𑒯𑒻 𑒧𑒳𑒿𑒯𑒠𑒹𑒐𑒰𑒩
𑒠𑒳𑒏𑓂𑒐𑒹 𑒩𑒯𑒻 𑒯𑒧𑒩 𑒧𑒳𑒿𑒯𑒥𑒖𑒢𑒰

𑒮𑒦 𑒣𑒰𑒿𑒞𑒱𑒧𑒹 𑓒𑓒-𑓒𑓒-𑓒𑓒-𑓒𑓒 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰𑒏𑓂𑒩𑒧 𑒁𑒕𑒱। 𑒠𑒴 𑒙𑒰 𑒁𑒪𑒑-𑒁𑒪𑒑 𑒪𑒒𑒳𑒏𑒹𑒿 𑒠𑒲𑒩𑓂𑒒 𑒧𑒰𑒢𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒄 𑒥𑒯𑒩𑒹 𑒧𑒲𑒩 𑒁𑒕𑒱।

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨 editorial.staff.videha@gmail.com **𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।**

𑓓𑓔 𑒂𑒔𑒰𑒩𑓂𑒨 𑒩𑒰𑒧𑒰𑒢𑓀𑒠 𑒧𑓀𑒛𑒪- 𑓒 𑒙𑒰 𑒣𑒠𑓂𑒨



𑒂𑒔𑒰𑒩𑓂𑒨 𑒩𑒰𑒧𑒰𑒢𑓀𑒠 𑒧𑓀𑒛𑒪

𑓒 𑒙𑒰 𑒣𑒠𑓂𑒨

𑓑

𑒧𑒯𑒰𑒏𑒫𑒱 𑒏𑒰𑒪𑒱𑒠𑒰𑒮

𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒧𑒹 𑒧𑒯𑒰𑒏𑒫𑒱

पंडित कालिदास जेहन महान।

उच्चैठ दुर्गा स्थान

मधुबनी जेहेन हुनक ठाम।

संस्क□त पाठशाला के

रहलन मूर्ख अनुपम छात्रावास ।

काटि रहलन रहे

बैठल गाछ के डार।

देखलिन मूर्ख पंडित

विद्योतमा से हारल पंडित।

छल से पाणिग्रहण

करैलन कालिदास के संग।

𑒮𑒳𑒯𑒰𑒑𑒩𑒰𑒞 𑒧𑒺 𑒧𑒺𑒪

𑒣𑒩𑒰𑒔𑒱𑒨𑓃 𑒧𑒴𑒩𑓂𑒐 𑒏𑒰𑒪𑒱𑒠𑒰𑒮 𑒮𑓁𑒑।

𑒯𑒧𑒩 𑒮𑓁𑒑 𑒧𑒪𑒱𑒞

𑒖𑒾 𑒥𑒖𑒥 𑒥𑓃𑒠𑓂𑒥𑓃𑒞 𑒖𑒢।

𑒒𑒳𑒩 𑒃𑒨𑓃𑒪𑒰 𑒣𑒰𑒚𑒬𑒰𑒪𑒰

𑒏𑒩𑒺 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒮𑓂𑒚𑒺𑒩 𑒁𑒢𑒳𑒔𑒰𑒢𑒰।

𑒂𑒨𑓃𑒪 𑒦𑒰𑒠𑒫𑓃 𑒮𑒰𑓀𑒗

𑒔𑒧𑒏𑒻𑒞 𑒑𑒩𑒖𑒻𑒞 𑒥𑒩𑒮𑒻𑒞 𑒧𑒺𑒒।

𑒂𑒨𑓃𑒪 𑒥𑒰𑒜𑒱 𑒢𑒠𑒲

𑒛𑒴𑒥𑒪 𑒔𑒰𑓁𑒔𑒩 𑒐𑒺𑒞 𑒐𑒪𑒱𑒯𑒰𑒢।

𑒏𑒺 𑒥𑒰𑒩𑒻𑒞 𑒠𑒲𑒣

𑒧𑒻𑒨𑒰 𑒏𑒺 𑒠𑒴𑒩𑓂𑒑𑒰 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢।

સજ કૈઠન વ઼યિાન

વાગૈત મૂનપ્ય કાઠદિાસ દીપ।

છોડ઼ત યહિ઼ન દીપ

પોતઉેન દૂન્ગા મુપ્ય કાનીપ્ય।

પ્યુશ દૂન્ગા દેઠન વ઼નદાન

ળેતે પુસ્તક છૂવે઼ શ્રાર નાત।

સજ ળયતો કંઙાગ્ન

છૂણ્ત સનસ્વ઼તી વસગેઠ કંઙાગ્ન।

કાઠદિાસ કવ઼િ મિહાન

નયઠન શ્રજાળિ઼્ાન શાકુન્તઠમ માઠવ઼િકાગ્નિમિત્ન।

શ્રા નયઠન મેઘદૂતમ

𑒩𑒔𑒪𑒢 𑒇𑒞𑒳𑒮𑓀𑒯𑒰𑒩 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩𑒮𑓀𑒦𑒫 𑒩𑒒𑒳𑒫𑓀𑒬𑒧𑓂।

𑒣𑒻𑒪𑒢 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒼𑒞𑒧𑒰 𑒣𑒱𑒨𑒰𑒩

𑒣𑓂𑒩𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡 𑒦𑒹 𑒑𑒹𑒪 𑒮𑓀𑒮𑒰𑒩।

𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒧𑒹 𑒏𑒫𑒱 𑒧𑒯𑒰𑒢

𑒢𑒰𑒧𑒰 𑒧𑒯𑒰𑒏𑒫𑒱 𑒏𑒰𑒪𑒱𑒠𑒰𑒮 𑒧𑒯𑒰𑒢।

२

𑒏𑒫𑒱 𑒬𑓂𑒩𑒰𑒠𑒱 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒣𑒞𑒱 𑒢𑒰𑒃

𑒏𑒫𑒱 𑒬𑓂𑒩𑒰𑒠𑒱 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒣𑒞𑒱 𑒢𑒰𑒃।

𑒩𑒯𑒪𑒢 𑒧𑒡𑒳𑒫𑒢𑒲 𑒫𑒱𑒮𑓂𑒣𑒲 𑒚𑒰𑒃। 𑓑।

𑒠𑒮𑒧 𑒬𑒞𑒰𑒫𑓂𑒠𑒲 𑒏𑒰𑒪 𑒂𑒃।

𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒢𑒰𑒅𑓀 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒣𑒞𑒱 𑒣𑒰𑒃। २।

𑒣𑒱𑒞𑒰 𑒧𑒯𑒹𑒬𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩 𑒒𑒩 𑒂𑒃।

𑒏𑒳𑒪 𑒦𑒴𑒭𑒝 𑒢𑒰𑒃 𑒏𑒯𑒪𑒰𑒃। 𑓓।

𑒢𑒱𑒞 𑒢𑒫 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰 𑒫𑒢𑒰𑒃।

નતિ વ઼દિાપત નાય કનાઈ। ૪।

સમાળ મે નવ઼ળાગાન કનાઈ।

ળોતષ્ઠિવન વ઼ન્નાન્નાકન યન્યા કનઈ। ૫।

મથિલિ મે વ઼દ્યિાપતગિીત ગાઈ।

જેદ ન ળાન વ઼દ્યિાપત પાઈ। ૬।

મૈથલિ યન્યા ન કનઈ।

વાજન વ઼દ્યિાપત કિે સમહ્ઈ। ૭।

મથિલિ મૈથલિી ળાગાન હોહ્ઈ।

ઘન ઘન વ઼દ્યિાપત ગાઈ। ૮।

મથિલિ યન યન હોહ્ઈ।

નામા શ્રાદવિ઼દ્યિાપત યિન્યા કનઈ । ૯।

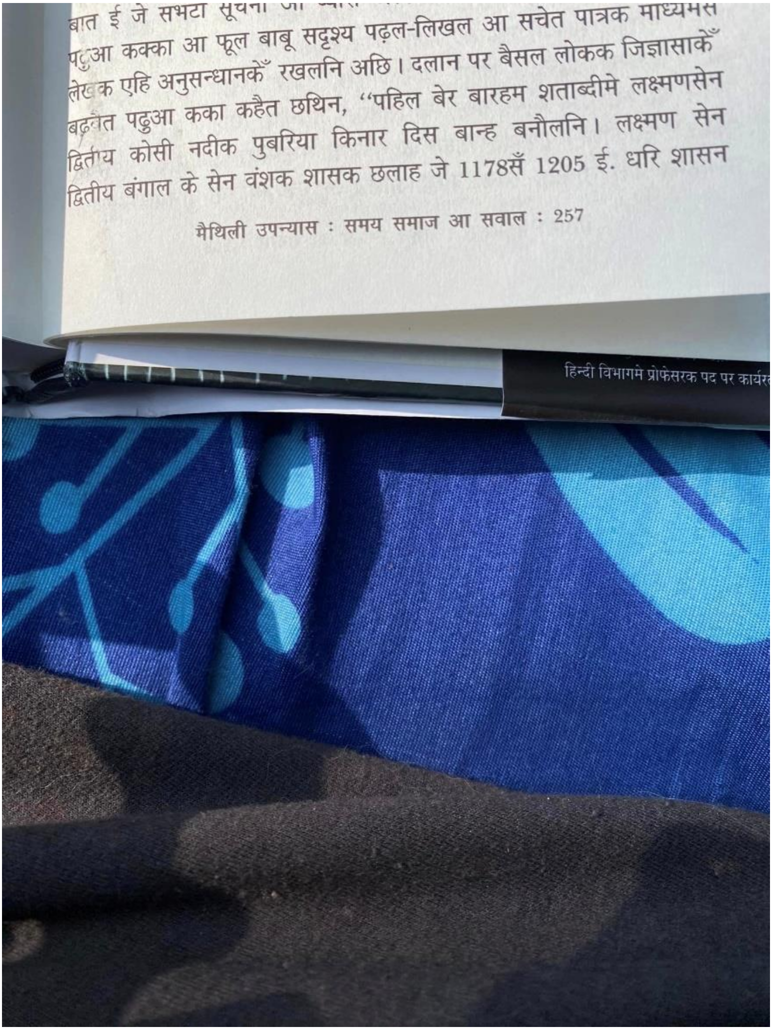
-શ્રાયાન્ય઼ નામાનંદ મંડલ, સામાળકિ યતિક સીતામઢ઼ી, સેવ઼ાનવિ઼ૃત્ત *પ્નયાનાય્યાપક, માતા-યન્દ્ન દેવ઼ી, પતિ-સ્વ઼૦નાળેશ્વ઼ન મંડલ, પત્ની-પ્નમલિા દેવ઼ી, ળન્મ તથિ-િ૦૧ ળનવ઼ની ૧૯૬૦ યોગ્યતા- એમ-એસસી (નસાય઼ન શાસ્ત્ન), એમ એ (હનિ્દી) નૂયિ- સાહત્યિકિ, મૈથલિી-હનિ્દી કવ઼તિા -કહાની લખિન શ્રા શ્રાલખે પ્નકાશતિ પોથી - મૈથલિી કવ઼તિા સંગ્નહ નાસા કે ન વાંટયિી ૨૦૨૨ પ્નકાશતિ નયના - સહ્યિા કવ઼તિા સંગ્નહ પોથી - ળનક નંદનિી ળાનકી*

શ્રા શૌર્ય ગાન ૨૦૨૨ પત્રિકા -મથિલિ સમાજ, ઘર -વાહ્ર શ્રા શ્રૂપ્રવા (મૈસામ) શ્રપ્પવાર -દૈનકિ મૈથલિ પુનર્જાગરણ પ્રકાશ સામાજકિ- સામાજકિ યતિન, દાયત્વિ- પૂર્વ જલિ પ્રતનિધિ, પ્રાથમકિ શકિ્ષક સંઘ, ડુમરા, સીતામઢ઼ી સ્થાયી પતા- ગ્રામ-પપિરા વશિનુપુર થાના- પરહિર જલિ-સીતામઢી વર્તમાન પતા-પપિરા સદન, મુરલિયિાચક વાર્ડ-૦૪ સીતામઢ઼ી પોસ્ટ-ચકમહલિ જલિ-સીતામઢી રાજ્ય-વહિર પનિ-૮૪૩૩૦૨

શ્રપન મંતવ્ય દતિોગિઇસતાઉંવદિહ઼િાંગામાઇિયોમ **પર પઠાઉ।**

શ્રનુલગ્નક ૧: મૈથલિીમે છદ્મ સમીક્ષા શ્રા કમલાનન્દ ઝા (પ્રસંગ- યોર લેખ્ક પંકજ ઝા પરાશરક નૂતન સાહત્યિ યોરકિ ખુલાસાપર પાઠકીય ટપિ્પણી)

વદિહ: પ્રથમ મૈથલિી પાક્ષકિ ઈ- પત્રકિા ISSN ૨૨૨૯- ૫૪૭૩ વરચણરુશ્ર (સનિયે ૨૦૦૪) <u>હ્તપ:વદિહ઼ાયોનિ્</u> <u>**શ્રંક ૩૬૨- ૩૬૩ ક રપિોર્ટ પર ટપિ્પણી**</u>



बात ई जे सभटा सूचना आ

पढ़ुआ कक्का आ फूल बाबू सदृश्य पढ़ल-लिखल आ सचेत पात्रक माध्यमसँ लेखक एहि अनुसन्धानकेँ रखलनि अछि। दलान पर बैसल लोकक जिज्ञासाकेँ बढ़बैत पढ़ुआ कका कहैत छथिन, ‘‘पहिल बेर बारहम शताब्दीमे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मण सेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह जे 1178सँ 1205 ई. धरि शासन

मैथिली उपन्यास : समय समाज आ सवाल : 257

कयने छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगरसँ दू कोस पश्चिममे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकाननकेँ अनुमान रहनि, जे ई बान्ह सम्भवतः कोनो किलाकेँ रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मतसँ डब्ल्यू. डब्ल्यू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलनि जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत जे नदी पश्चिम दिस नहि बहय लागय।" एहि तरहेँ बान्हक मादे बहुत रास शोध, अनुसंधान, मिथ तथा आदिक रचनात्मक उपयोग पराशर

भारतवर्ष में बिहार में कोसी नदी को बांधने का काम 12वीं शताब्दी में किसी राजा लक्ष्मण द्वितीय ने करवाया था और इस काम के लिए उसने प्रजा से 'बीर' की उपाधि पाई और नदी का तटबन्ध 'बीर बांध' कहलाया। इस तटबन्ध के अवशेष अभी भी सुपौल जिले में भीम नगर से कोई 5 किलोमीटर दक्षिण में दिखाई पड़ते हैं। डॉ. फ्रांसिस बुकानन (1810-11) का अनुमान था कि यह बांध किसी किले की सुरक्षा के लिए बनी बाहरी दीवार रहा होगा क्योंकि यह बांध धौस नदी के पश्चिमी किनारे पर तिलयुगा से उसके संगम तक 32 किलोमीटर की दूरी में फैला हुआ था। डॉ. डब्लू.डब्लू. हन्टर (1877) बुकानन के इस तर्क के साथ सहमत नहीं थे कि यह बांध किसी किले की सुरक्षा दीवार था। स्थानीय लोगों के हवाले से हन्टर का मानना था कि अधिकांश लोग इसे किले की दीवार नहीं मानते और उनके हिसाब से यह कुछ और ही चीज थी मगर वह निश्चित रूप से कुछ कहने की स्थिति में नहीं थे। फिर भी जो आम धारणा बनती है वह यह है कि यह कोसी नदी के किनारे बना कोई तटबन्ध रहा होगा जिससे नदी की धारा को पश्चिम की ओर खिसकने से रोका जा सके। लोगों का यह भी कहना था कि ऐसा लगता था कि इस तटबन्ध का निर्माण कार्य एकाएक रोक दिया गया होगा।

....

ઉપન્યાસકાર કે છથિ, પંકળ પ૧ાશ૧ (ળ૭ પ્૧ાંત૧ ઉપન્યાસ)

દુખદ

ઢ઼ાવનિદ૧ાછહુદહા૧ય઼

....

વ૭ દુ૧્ભાગ્ય઼પૂ૧્ણ, શ્રાપત્તિજિનક શ્રા શ્રાપ૧ાયકિ ક□ત્ય઼

ખુમા૧માનોળખાસહ્યાપ

....

ઙસભ પઢ઼િ વહુત યતિતિ છી।

ઢ઼ ણ મસિહ૧ા

....

દુ૧્ભાગ્ય઼પૂ૧્ણ

ખાઉપના હ્હાશ્રાતના

....

શ્રાહિવિ઼ા! શ્ર૧ ઙ કે છૈથ?

પંકળ પ૧ાશ૧ (ળ૭ પ્૧ાંત૧ ઉપન્યાસ)

હે ભગવાન્! ઙ ઠીકે યોગે છૈથ।

ઉમેસહ માનદાઉ

....

घुरनिहार:
नीक। एहन योग केर देखार करब जरूरी
पंकज पराशर (जल प्रांतर उपन्यास)
आकर त उप्पकीय जीवने योगी पर टकिल छै आ तकरा प्रासंगिय देब' वाला सेहो मैथिली मे कम नहि।

....

एहने योग ठीक सभ मैथिली आर मिथिला के अहित करय मे सदैव आगू रहैत छथि

हरिश्चरासानना

....

एकरा कोर्ट मे लऽ जेबाक चाही
योगेन्द्र पाठक वियोगी
+९१ ९८३१० ३७५३२

....

पुवहासरहछहानदनौदाव: २ योनदेमन ति थहे तहेंडि मुसत वे शपोसेद्

....

अति दुःखद, निन्दनीय
मानोजआतहाक

....

सादर आभार।
कोर्ट कए सकैत छथि। परंतु श्रोत के चर्चा करनाइ आवश्यक छल। त त साहित्यिक योगी मानल जायत।
ढामानानदमानदाल

....

धन्यवाद।
वदिहप्पेसहावमहानदौजयेलहि

....

મ્માવો મ્માનાયાન મસિહ્ના

દુ્ભાગ્યપૂ્મ સ્થિતિ

…………………………………………….

મુકુન્દ માયાનક

શ્રોહ

…………………………………………………

પ્રદીપ પુષ્પ

વહુત ખરાપ વાત।

…………………………………………….

શ્રવહિઊસહ થહાકુર ·

ઘ□મ્મતિ કાર્ય! ઊળ્ળા ળોગ

…………………………………….

શ્રળતિ પ્પુમાર હ્હ

પતા નહિ ઊળો નહિ ઊગૌત છન્હિ એહન પ્રવ□તિ વાઊ મહાનુભાવ સવ કેં। એહન ઊગ સવ કેં ઊઊ સેહો શ્રઊગ સઁ પુરસ્કાર ઘોષામ્મ હોયવાક યાહી। પર્દાશ્રાશ કરવાક ઊઊ શ્રપને કેં સાયુ વાદ ।

……………………………………………….

ઢામેસહ પ્પુમાર ષહારમા

પુરસ્કાર પાવૈ કે ળઊ્દવાળી હૈ

…………………………………………………

પ્પુનાઊ

ઉપન્યાસ શ્રા તકર ઊપ્પકક નામ ઘોષતિ કરુ

……………………………………………….

શ્રસહિસિહ શ્રનયહિનિહાર

પ્પુનાઊ ળી, ળઁ કોનો સમાન્ય પાઠક ઇ પ્રશ્ન પુછને રહિતિથ તિપ્પન હ્મરા નીક ઊગૈત।

પ્રવુદ્ય પાઠક શ્રો ઊપ્પક વર્ગસઁ ઇ પ્રશ્ન એવાક મતઊવ છૈ ળે સ્થિતિ ગંભીર ભs ગેઊ છૈ। શ્રોના ળપ્પન પુછયે દેઊહું શ્રછિ તિપ્પન એકર ઉત્તર શ્રછિ-

𑒣𑒼𑒟𑒲, 𑒖𑒪𑒣𑓂𑒩𑒰𑒢𑓂𑒞𑒩, 𑒣𑓀𑒏𑒖 𑒣𑒩𑒰𑒬𑒩। 𑒋𑒯𑒱 𑒣𑒼𑒟𑒲𑒏 𑒑𑒠𑒑𑒠𑒲 𑒂𑒪𑒼𑒔𑒏, 𑒏𑒧𑒪𑒰𑒢𑓀𑒠 𑒗𑒰।

....

𑒤𑒳𑒢𑒰𑒪

𑒁𑒮𑒯𑒱𑒮𑒯 𑒁𑒝𑒨𑒯𑒱𑒝𑒱𑒯𑒰𑒩 𑒨𑒠𑓂𑒨𑒫𑒰𑒠 ।

𑒋𑒢𑒰 𑒮𑒰𑒩𑓂𑒫𑒦𑒾𑒧 𑒪𑒏𑒰𑓀 𑒕𑒅 𑒖𑒹 𑒥𑒹𑒮 𑒑𑓀𑒦𑒲𑒩 𑒂𑒩𑒼𑒣 𑒪𑒑𑒰𑒍𑒪 𑒖𑒰𑒃 𑒕𑒅 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒢𑒰𑒧 𑒢𑒃 𑒪𑒹𑒪 𑒖𑒰𑒃 𑒕𑒅। 𑒋𑒢𑒰 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒯𑒰𑒃𑒣𑒼𑒏𑓂𑒩𑒹𑒮𑒲 𑒏 𑒔𑒩𑒧 𑒪𑒑𑒃𑒋। 𑒃 𑒁𑒢𑒮𑒼𑒯𑒰𑓀𑒞 𑒕𑒲 ।

𑒂𑒥 𑒢𑒰𑒧 𑒪 𑒪𑒹𑒪 𑒕𑒅। 𑒞 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒪𑒑𑒃𑒋 𑒖𑒹 𑒣𑓀𑒏𑒖 𑒣𑒩𑒰𑒮𑒩 (𑒅𑒣𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮𑒏𑒰𑒩) 𑒂 𑒏𑒧𑒪𑒰𑒢𑓀𑒠 𑒗𑒰 (𑒂𑒪𑒼𑒔𑒏) 𑒏𑒹 𑒥𑒰𑒖𑒏 𑒔𑒰𑒯𑒲 ।

....

𑒛𑓃𑒰𑒏𑒮𑒯𑓂𑒧𑒰𑒝 𑒗𑒯 𑒭𑒰𑒑𑒰𑒩

𑒋𑒯𑒹𑒢 𑒔𑒼𑒩𑒏 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒖𑒱𑒏 𑒥𑒯𑒱𑒭𑓂𑒏𑒰𑒩 𑒯𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒔𑒰𑒯𑒲। 𑒂𑒑𑒱 𑒣𑒰𑒢𑒱 𑒜𑓃𑒰𑒩𑒛 𑒠𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒔𑒰𑒯𑒲। 𑒧𑒳𑒿𑒯 𑒧𑒹 𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒔𑒳𑒢 𑒪𑒹𑒣𑒱 𑒏𑒹 𑒑𑒠𑒯𑒰 𑒣𑒩 𑒮𑒥𑒹𑒂𑒧 𑒒𑒳𑒧𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒔𑒰𑒯𑒲। 𑒋𑒯𑒹𑒢 𑒏𑒳𑒠𑒬𑒰 𑒏𑒨 𑒠𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒔𑒰𑒯𑒲 𑒖𑒹 𑒮𑒦 𑒏𑒱𑒨𑒼 𑒋𑒯𑒹𑒢 𑒒□𑒢𑒱𑒞 𑒏𑒰𑒖 𑒢𑒻 𑒏𑒩𑒨।

....

𑒕𑒫𑒱𑒢𑒱𑒩𑒰𑒑𑒳𑒣𑓂𑒞𑒰 𑒕𑒫𑒱𑒢𑒱𑒩𑒰𑒑𑒳𑒣𑓂𑒞𑒰

𑒁𑒠𑓂𑒦𑒳𑒞 𑒠𑒵𑒬𑓂𑒨

....

𑒖𑒑𑒠𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒗𑒰 '𑒧𑒢𑒳' ·

𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲𑒧𑒹 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒱𑒏 𑒔𑒼𑒩𑒲 𑒖𑒑𑒖𑒰𑒯𑒱𑒩 𑒁𑒕𑒱। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒂𑒥 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒁𑒏𑒰𑒠𑒧𑒲 𑒂 𑒍𑒏𑒩 𑒪𑒹𑒏𑒏 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰... 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒢𑒱𑓀𑒠𑒢𑒲𑒨 𑒏𑒰𑒖, 𑒋𑒯𑒹𑒢 𑒋𑒯𑒹𑒢 𑒪𑒼𑒏𑒏𑒹𑒿 𑒁𑒫𑒬𑓂𑒨 𑒠𑒝𑓂𑒛𑒱𑒞 𑒏𑒩𑒥𑒰 𑒔𑒰𑒯𑒲

....

𑒬𑓂𑒩𑒲𑒔𑒩𑒧

𑒃 𑒣𑓀𑒏𑒖 𑒣𑒩𑒰𑒮𑒩, 𑒯𑒧 𑒞' 𑒣𑒜𑓃𑒥𑒰𑒏 𑒂𑒫𑒬𑓂𑒨𑒏𑒞𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒥𑒳𑒗𑒪𑒯𑒳𑓀। 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒩𑒧𑓂𑒦𑒱𑒏 𑒢𑒰𑒧 𑒣𑒩 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒖𑒳𑒑𑒰𑒛𑓃 𑒕𑒢𑒱 𑒯𑒱𑒢𑒱𑒏𑒰 𑒪𑒑।

....

શ્રાશીષ શ્રનચનિ્હાન

નાિ નવ઼ઠ દનિશ કુમાન મશિ્ન પઢઠહુઁ શ્રા એહિ સંદ્નજામે હમ શ્રાવે કહવ ળે ાિનાનંદ વ઼યિોગી વા કમઠાનંદ હા સન પ્નવુદ્ય ઠોક શ્રાગુશ્રો પંકળ પનાશન એવં શ્રોહને સાહતિ્યકિ યોનક સંનક્ષામમે શ્રવાિ નહાહ। કાનામ ૬ ળે ૬ પ્નવુદ્ય ઠોક સજા સેહો શ્રોહિ માનસકિા કેન છથિ।

....

શ્રપન મંાવ્યે દાિોનાિઠસાિડવ઼દિહાગ઼ામાઠિયોમ **પન પઠાઉ।**

શ્રનુઠાનક ૨: મૈથિઠિમે છદ્મ સમીક્ષા શ્રા કમઠાનન્દ હા (પ્નસંગ- યોન ઠેપ્પક પંકળ હા પનાશનક પુનાન સાહતિ્યકિ યોનકિ પ્પુઠાસાપન પાઙકીય ટપિ્પાણી શ્રા કછુિ પ્નમાણ)

વ઼દિહ: પ્નથમ મૈથિઠિ પાક્ષકિ ૬- પત્નકિા ૨ષાણ ૨૨૨૯- ૫૪૭શ વ઼૨યએહશ્ર (સનિયે ૨૦૦૪) હાાપ્:વ઼દિહાયોનિ શ્રંક ૨૬- ૫૦ ક નપિોન્ટ પન ટપિ્પાણી

(પ્નસંગ- યોન ઠેપ્પક પંકળ હા પનાશનક પહિઠકા સાહતિ્ય યોનાિ)

....

કેઠઠેનુંયઠદુ"

યોન ઘાળેનદના, ાહાનકસ ડોન ાહે દેાેયનાિ઼ીનકાસ ાહેને । નેસપોનસે? વેસા નેગાનદસ,

યુોગઠાસ પ્પેઠઠોન, શ્રહઠિસોપહ્ય ાેડ એદુયાનાિ છહાિ

ષોયાિઉ ષયૅનિયેસ ાનદ છોમપાાાિવિ઼ એદુયાાિન, ઉનવિ઼ાસાિય઼ ાઙ છાઉડિોાનાિ- ડ઼ોસ શ્નગોઉસ, ભોશ ૯૫૧૫૨૧, ૩૦૨૨૪ મૌાે હાઉઉ, ડ઼ોસ શ્નગોઉસ, છશ્ર ૯૦૦૯૫-૧૫૨૧, ઢાસ ૩૧૦ ૨૦૬ ૬૨૯૩, શ્રુહોને ૩૧૦ ૮૨૫ ૦૯૭૭ હાાપ઼ાૌાગાસેસ્રિુયઉ઼દુડાયુઉાય઼્કેઉઉનોકેઉઉનો઼હાાઉ

....

દોાા ઘાળેનદાાળિ, ાપનેક માઉિ મઉિાઉ઼ શ્રાનકાળળિક કાાિય઼ા ળાનકિ વાા દુકહ વહેઉ઼ શ્રહિ સે માિહિઉિકિ નામ કહાાાવ હોય઼ાા ાયહહિ઼ શ્રપનેક કાદામે કદુમુ યહાિ ાયહહિ઼- **ઢ઼ાળવિ઼ ખ વ઼ેાામા**

....

થહેસે શ્રોપઉ ામે હેઉઉવેનાા ાો વાાનિગા દૌન ાહે ઉાિાાાય઼ દસિયુાસે દૌન ાો ાહે ગુાાેા઼ મૌ યુ઼ હાવ઼ે વેન ગેયેવિ઼નિગા માઉિસ ઉકિ ાને઼ શ્રૌ ામૌાિહ યુ઼ ાનદ િ હાવ઼ે ડેાૌાાદેદ યુ઼ાા માઉિસ ાો માિહિઉિ સિપોકનિગા પોપઉ ાઉઉ ાયાોસસ ાહે યુનાાાય઼ ષાિ ૨ હાવ઼ે સેનાા ાહે ઉનિક ાઙ શ્રાાાસહાા' સ દુપઉયિાયય઼ ાો સેવ઼ાાઉ પોપઉ ાઉનગા ૌાિહ શ્રાાાનાવહ ભહિાા ૌહો હાદ ાાાસઉાિદ ાહાા ાાાયિઉ઼ ૨ હાદ ાેઉપહોનયિ યોનવ઼ોસાાિન ૌાિહ હમિ ાઉસો ાનદ હે ૌાસ ટુાિુ પસો ાેવ઼ા શ્રાાાસહાા'સ દુપઉયિાય઼ શ્રાાાનાવ઼ સિ મય઼ ળુનાિ ાનદ ા ગૌદ ડર્ાનિદ ાઙ મનિ઼ સનિયે યુ઼ હાવ઼ે ગેડેાાદ શ્રાાાનાવ઼ ૌહો હાદ ાાાસઉાિદ ાહાા ાાાયિઉ ાિ સિુ નડોાાુનાાે ાહાા હે ૌાસ મસિુસેદ વય઼ શ્રાાાસહાા઼ ભુાા િમુસાા યોનગાાાુઉાાે યુ઼ ડોાે શપોસનિગા સયામ નુન વય઼ શ્રાાાસહાા ાનદ હસિ ાોમ઼ શ્રાાાસહાા, ાહુગહ મુસાા નોાા વે વઉામેદ ડિ હે ઉડિાેદ ાહે ાાાયિઉ ાઙ મૌમ છહોમસકેય઼ મૌ િમુસાા દુવાા ાહે ાાાસિાયિ સેનસવિઉિાિય઼ ાઙ શ્રાાાસહાા ૌહો સિ નૌ ા પસુદો-- નિાેઉઉયાુાઉસ઼ ૨ ામ ાાઉેદ ાહાા હૌ દદિ હે દો ાો પુવઉસિહ ાહે ાાાયિઉ ાઙ મૌમ છહોમસકેય઼ ાસ હસિ ૌન઼ ઘોદ વઉસસ હમિ નો મોે઼ - **વ઼રહશ્રૈ યઅશ્રો હહશ્ર**

....

દ્દશનયવ઼ાદ઼ મુદો ઠ્ને ઊક સાવળાગાહ ।દા૧ પાવાિ ।યઠ઼િ - **સઠ્નાદિશા૧ામ**

....

શ્રહં કે સૂયના્થ પઙેને છ્રી (કછ્રુિ ઘ□ાાાિ કાળ પંકળ પ૧ાશ૧ક) ળે પંકળ પઠિનિશે ૨ સવ કાળ કપૈ૧ ૧ઠ્ય઼ છ્ઊ૨। - **ાાવ઼નિાસઠ**

....

યો૧ ઘાળેનદ૧ા ગ,ૈુ ।પે દોનિગા વે૧ય઼ૌઊઊ નિ િ૧ઠે ઙિઊદ ોઙ યોઊઊ૯યિનગા ।ઊઊ િ૧ઠે દોયુપે૧િનસ પેઊાદ િ૧ો િ૧ઠે માિનઠિઊિ વ઼દિઠ઼ા છ્ોમ પોઊય઼ । ।દવે઼નુિોસ યોઊઊ૯યિાનિ ૨ૌઊિઊ ।ઊસો ઙનિદ સોપે િનપિ િ૧ો ઊ૧ામ િ૧ઠે ।૧િયઊિ પુવઊસિઠેદ િ૧ઠ્નુોગાઠ િ૧ઠે વ઼દિઠ઼ા ાાૌ યુ઼ો૧ દેોયિાવ઼િ સિનય઼ઊ િ૧ઠેઙિ િ૧ઠે સઊપાનિગા ોઙ માનય઼ ોઙ િ૧ઠે સો યાઊઊદ ઊિ૧ાાય઼ પે૧સોનનેઊ઼ ઘો । ઠોદ઼ ળાિ માિનઠિઊિ ળાિ માિનઠિઊિ- **ષુનઊિ માઊઊયિક,** શ્રુપેસદિનિ, મશાાશ્રશ્રુ, દ્દાનાકપુ૧

....

યુ઼ોપે ઙઙો૧િસ ।પે યોમપેનદાવઊ઼ શ્રનયસુયઠ ગાઠોસિનૌ૧િ૧ો૧ ઙાકે દિનિનિય઼ ઠોઊદે૧ મુસિ૧ વે વોય઼યોિાદ ઙો૧ામ ઊિ૧ાિુપે ાિ૧ ોનયે થઠાનકસ઼- **સઠ્યાામાનાનદ યઠુદઠા૧ય઼**

....

ાાામાસકાિ઼ છ્ઠે૧ના સામિિકિ સાયઠવ઼િ કેન માઊિક યોપય઼ ઠાસિગાિ૧ કા૧ા દેઊ ।યઠ઼િ- **યિ઼ ઢ઼ામાનાનદ દ્દશ' ઢ઼ામાન'**

....

પ્૧ાયિ઼ ગાળેન્દ્૧ ળી , યેિના સમિિ ઠિનિકા સમ્માનનિ કપઊક શ્રછ્રિ સેઠે ઠ્મ૧ા ળ્સાિ૧ નઠિ | ય઼દ્ય઼પિ ઠિમૂ યેિના ક સ્થાઈ સદસ્ય઼ | ળે ઠે઼ મુદા નદિાસ્પદ

ઘટના ґ ૬ થકિ ґે દુખી કયઉક | કાિપિય નવ મૈથિલ-પ્રાિમિક શાકઉન-મૂઉયાનકનક હમર શપન સ્નેગ્રહી સ્વભાવ, એહિ દુર્ઘટનાક વાદ ґ શાવ યંિ। મે ય' દેઉકય| દેખી, હમ શપને વસ્મિાિ મેઉહું| વહુ દુઃખદ દ□શ્ય | સ□ળન વમૂિદ્ય સાહિત્યિકિ સન્દર્ભ મે ૬ ઘટના શાધુનિક મૈથિલીક વહુ કુરૂપ પ્રસંગ ક' ક' સ્મરણ કૈઉ ળાયત- સસ્નેહ, - **ગંગેશ ગુંળન**

....:

શ્રઢ઼ૈશ્ર મશ્રરથહરઙ઼ૃશ્રાm, શ્રશ્રશ્રશ્રm મહશ્રષહશ્ર- ષશ્રmષપ્પશ્રઢ઼-ષશ્રmષપ્પઢ઼રથર પ્પએ શ્રષમશ્રઢ઼શ્રm પ્પશ્રઢ઼ઉ શ્રશ્ર એહશ્રm વ઼રવ઼શ્રયશ્રશ્રષશ્રશ્રશ્રય ઙ઼એપ્પશ્રmર મ પ્પશ્રઢ઼શ્રmર પ્પએ વ઼રઢ઼શ્રમ યૈશ્ર઼ એષશ્રૌશ્રઢ઼ પ્પએ ષશ્રપ્પછહર મશ્રmર - યરઙ઼ શ્રશ્રઢ઼ હશ્રથહ ઢ઼શ્રપ્પહર શ્રશ્ર પ્પઉઙ઼યએવ઼ર પ્પએ શ્રષમશ્રઢ઼શ્રm પ્પ- પ્પૈ શ્રય પ્પશ્રઢ઼ઉ પ્પર ષશ્રછહહશ્રર પ્પએ પ્પશ્રથએપ્પ પ્પશ્રઢ઼રમ છહહ઼mરપ્પ મશ્રથશ્રપ્પ ઙ઼એઙ઼ મશ્રmછહ પ્પએ ઉશ્રૈશ્રોઘ પ્પશ્રઢ઼ર થશ્ર ઉથથશ્રમ઼ યહશ્રmૈશ્રમશ્રવ઼ષશ્રશ્રઢ઼એમ- **શ્રપ્પ છહશ્રોઉયહશ્રઢ઼ૈ**

....

ઘાળેનદરા વાવુ, પાનકાળ પુરાન યહેર ।યહહિ હિમ સાવ ।કાર ઉકિહિ નિદા દાસ સાઉ પાહનિ ॥રામવહ મે કેને રાહિ શ્રોકરા વાન ક કાય ।હાન નકિ કાયાઉ છહોના સામિ ।િકે સેહો સામમાનૌ।પાસ ઉવાક યહાહિ॥ ।કાર નિદા કારવાક યહાહિ- **સુવહાસહ છહાનદનૌ ।દાવ**

....:

પ્રાયિ ઠાકુરળી! (માનનીય સંપાદક), “વ઼દિહ ૬-પત્રિકા” [મૈથિલી], એખન યરાકિ ઉપઉવ્ય સાક્ષ્યક શાયાર પર હમ શપનહિક સંગ ળાએવ પસન્નિ કરવ। - **શંભુ કુમાર સહિ**

....

ચોન ઘાળેનદનાળિ,

૨ ૭ુ૭૭૫ ાગેનૈાિ૯ ૫ુ ન૯ાનૈ મુસન ૭ગિ૯ન ાગાનિસન વ૭ાનાનન ચાસેસ ાે૭ નૈાેનગા૭ુ૭ ાપપનોપનાિનાિ઼

હાં અપન મે૭ મે ૭પ્પિને છી ળે વ઼દિ૯ આન્કાર્વ઼ સે સંવંચનિ ૭પ્પક'ક સવટા નચના ૯ટા ૭૭ ળાચ઼ન। અહિ સે આન્કાર્વ઼ સં ૬ પ્નસંગા સેહો, એકન સાક્ષ્ય઼ સેહો મેટા ળાચ઼ન। ૯મન મન ૬ ળા સાક્ષ્ય઼વ ન૯વાક ચાહો નકિ આ અચ૭ા૯ દુનુ નન૯ક કાળ' ક। અહાં અપ્પસન કામેંટ આ ન્નામિચ઼ સેહો આન્કાર્વ઼ મે ળા કે સંવંચનિ નચના કે પોસ્ટા-સ્ક્નાપ્ટિન કે નુપ મે ઝવ઼ષ્ચિા'ક પાઠક'ક ૭૭ સુનક્ષનિ નાપ્પ સિકૈન છચ઼િન્હિ। ૬ દોહ્નેવાક વ઼હુન આૈચિન્ય઼ક નહિ ળે વ઼દિ૯ નકિ ૭ાગા ન૯૭ અછિ આ અહાંક પનાશ્નિમ એકદમ દેપ્પા ન૯૭ અછિ। ૬નિ, સદના - **ષાદાન હ્હા**

....

થ૯ાનક ચ઼ુ- **ાાસિ૯કિાનન થ૯ાકુન**

....

થ૯ાનશ ઘાળેનદનાળિ, ૭ેન ચ઼ુન મિમેદિાનિ ગેસપોનસે ૨ મુસન ચોનગાનાનુ૭ાને ચ઼ુ ૭ેન ન૯ેનૌક ચ઼ુ હાવે઼ દોને ના સાવે઼ ન૯ે સાનચનાિચ઼ ાે૭ ન૯ે ૭નિનાનુગેનૌન૭દ ાસ ાનૌહો૭ ૨ ૭ે૭ પનુદ ૭ેન ન૯ે પેનસોન ૭કિ ચ઼ુનૌહો સહૌસ ન૯ે ચુનનાગે ના વે૭૭ ન૯ે ચાન્ ૨૭ ન૯ે સો ચા૭૭દનૌનાિનસ ૭કિ શ્નાનાસહાનાળિ ાને ન૯ેને ના સપાેા૭ ન૯ે સો, ાેન ન૯ે ાેન૯ેન સદિ ાિ સિ વ઼ેનચ઼ હોપે૭૭ સગિ૯ન ના હાવે઼ ા પેનસોન ૭કિ ચ઼ુનૌહો સિ ા૭ાને નુગા૯ ના નાકે ચાગે ાે૭ સુચ૯ ૭ગિ૭ન૯ &કેપ ન૯ે સો ચ૭ાન્ થ૯ાનશ ૭ેને ન૭ગિાહ્નેનનિગા મે ાેન ન૯ે સુવળેચન્ ઢ઼ેગાનદસ-**ઝ૯ા૭ચ૯ાનદના હ્હ઼ા**

....

પંકળ પનાશનકેન એહન કાન્ય પન સ્મનામ શ્રવૈત શ્રછ કિનીવ વીસ-પચીસ સાઉ પહિઉક ઘટના, ળહિયા શ્રાકાશવાણી દનભંગાસઁ મ, મ, ૭□, સન ગંગાનાથ હાક એકમાન્ન મૈથિઉક કાનુમાકિ પદકેઁ એક ગોટ કવિ દ્વાના શ્રપન કહિ પ્નસાનાતિ કએ દેઉ ગેઉ છઉ, ળે વાદમે (સળગ શ્નોતા દ્વાના સૂચના દેઉાક વાદ) શ્રાળન્મ વૈન કએ દેઉ ગેઉાહ । કહવાક તાત્પન્ય ળે ળઁ હમ મૈથિઉ દનભૈગા- મયુવનીમે ગંગાનાથ વાવૂક પદકેઁ શ્રપન કહિ સિકૈત છી તઁ ૬ કોન વડ઼કા ગપ। નશ્ચિયે એહન નચનાકાનકેન સડ઼ગ કડ઼ગાન ઉગ ૩ઠાએવ શ્રાવશ્યક । - **ાળતિ મસિહના**

....:

યોન ઘાળેનદનાળે, શ્રૌ સહુઉદ તાકે સતનોનગ સતેપ તો પમેવેનત સુચહ નિતેઉછેચનુાઉ ચહોતસ્ મચ સુપપોનત સિ ાઉોચસૌતિહ યુ- **પ્પ મ હશ**

....:

થહસિ સેમસ તો વે । દાનગેનુાસ તમેનદ ાનદૌ સહુઉદ ાઉસો તનય ાનદ મેડનાનિ ઙનોમ પુવઉસિહનિગ ાનચતહનિગ ઙનોમ સુચહ ુતહોનસ્ ઢેગાનદસ, - **શ્રનોડ઼ ૩દાપ્રા માનાયાના ષનિગહ**

....:

પ્નાયિવન ઠાકુન ળી, મૈથિઉ સાહિત્યકાન શ્રાવ સાર્વન ક્નાશ્મ સેહો ક નહઉ છથિ, ૬ ળાનિ શ્રપાન પ્નસન્નતા ભેઉ | પંકળ પનાશન કે નકાનાત્મક વુદ્ધિ પૂનામ ૩પયોગ કનવાક ઉઉ હમ નોવેઉ પ્નાશ્ળ સા સમ્માનતિ કનાય ચાહૈત છી | - **વુદ્ધિનાથ મશ્નિ**

....:

ષામપાદાક માહેદાય, શ્રપનૈ હિ પિનાકાનાક દુનાયહાન નોકૌાક છ9 ળે પનાયાસહ કા નાહા9 યહહે ોહિ છ9 દહાણયાવાદ્ એહેન વ9ાયકમાિંન સા માિત્હિહિ કેણ વાયહાયાવ ાૌાસહ્યાક ાયહહિ, ષાદાન- **ષહરવ ધ્યઉમશ્રઢ દ્હશ્ર**

....

ગાળેણ્દ્ન જાઈ, ણમસ્કાન ! મૈથિિ મે એહિ ાનહક કાળ 9ાાાન જ' નહ9 શ્રછિ । કિછુ વ્યક્ત એહિ ધેયા મે શ્રગ્નસન છથિ । મૈથિિક સમ્પાદક 9કણકિ શ્રણજાળ્ઞાક શ્રાયદા કોકો શંગ્રેળી પઢણહિન ાથાકથિ સાહિત્યકાન 9કણ ઉઠા નહ9 છથિ । પંકળ ળીક પહ9 મે છપ9 છય કે હમ સેહો પઢ્ને નહિ શ્રા કિછુએ દણિક વાદ હમ નેટ પન મૂ9 છયકક શ્રાછય કે સેહો પઢ9હુ । હમના ા' શ્રાશ્ચયન્ય 9ાગ9 છ9 ળે પંકળ ળી શ્રાછયક કમ સ કમ શીન્ષક ા' વદ9િ છૌથિ મુદા હુણકા એોક ળ્ઞાણ નહિણ િયન કો છ9 । ઓવે ણહિ, હણિક વહુા નાસ કવ઼િતો શંગ્રેળી સાહિત્ય સ' હેન-સ્ઠેન કય9 ગે9 શ્રછિ । ધૈન ! ળે કનથિ । મુદા એહિ વેન કહાવા ઠીક હોવાક યાહિ " સૌ સોણાન કે ા' એક 9હાન કે " । પ્નકાશણ મે ળે જી કયિો વ્યક્ત ગિ9ી ક' નહ9 છથિ હુણકા ગંજીન ક્નમિણિ9 વુહ્વાક યાહિ । યણ્યવ઼ાદ એહિ 99 શ્રહાઁ કે ળે એોક ળોનદાન ાનીકા સ' એહિ ગપ્પ કે ઉઠે9હુ । - શ્રહાઁક- પ્નકાશ યણ્દ્ન (**પ્નકાશ દ્દા**, મૈ9ંગ)

....

પાણકાળ પાનાસહાન વ઼ા9 પનાસાણગ વાન દુકહાદ 9ાગા9 - **કામણિ**

....

ધાળેણદન ળે□ માામાિ9ા કે ાોા9 ળાાવે દેવાિહિ□ સાવહાક ોાનળા ાેાવે સવ઼ાહા હેાા હિમન મણાવ ઓવે, ળે એક વેન શ્રહાં દેધ્યાન ક દે9હું, શ્રાવ છોડિ દે9 ળાશ્રો હણિદીયો મે એહિા જ નહ9 છૈ વેન વેન શ્રા ધ્યનાવ જાષા મે 9ધ્ય9 મોણ કે દુધ્યી કનૌ શ્રછિ સ્ઠેન 9ાગૌ શ્રછિ ળે શ્રહિ મે સમય કયિક ણષ્ટ કની?

हिन्दुस्तान मे जाति आ सेहो मैथिली से जाति निर्धारण हम एकरा नहि मानैत छलहुँ मुदा आब ३० बरख से मैथिली मे लिखैत बाद आब देखल जे एक आर १ मैथिली साहित्य मे लिली जी, उषा जी आ शेफालिका जी के बाद यदि कोनो नाम लैत अछि त हमर २ एखनो कोनो पत्रिका वै छै त हमरा लेल रचनाक आग्रह होइतो छै ३ एखनो हम ओतबे सक्रिय छी आ निरन्तर लिखि रहल छी ४ दुखद जे हमरा बाद (सुस्मिता पाठक आ ज्योत्स्ना चन्द्रम के हम अपने तुरिया बुझैत छी) के बाद एहन कोनो सशक्त कोन, महिला लेखने नहि आएल ५ ई स्थिति रहलाक बादो, आब जहन हम देखै छी, त पावै छी जे हमरा पर, हमर रचना यात्रा अथवा हमर रचना पर कहियो नहि लिखल गेलए, चाहे ओ मोहन भारद्वाज रहथु अथवा आर कोनो जहन हमर दशक केर चर्चा होइत छै, तीन चारिटा नाम पर समाप्त चर्चा होइत छै, जाहि मे हमर नाम नहि रहैत छै हमर नाम मात्र सन्दर्भ लेल जोड़ि देल जाइत छै ६ एक दिन मे मात्र रमण जी हमरा पर एक गोट लेख लिखलन्हि हम ओकरा पुनः टाइप करबा के अहां लग पठायब ७ जाति पाति धर्म आ द्वेष पर कहियो ध्यान नहि देलाक कारणे त कहि हमर ई स्थिति नहि छै, आब हमरा ई सोचबा मे आबि रहल अछि ८ हमर शिक्षक, जे स्वयं हिन्दी के प्रख्यात कथाकार छथि, हमरा बुझेने रहलाह जे हम मैथिली मे लिखब बन्न करि दी, कियैक त हम गैर मैथिल (जाति विशेष) से नहि छी, तै हमर लेखन के कहियो मैथिल सभ नहि नोटिस करताह, कहियो किछु नहि करता अपन भाषाक प्रति प्रेम के आग्रह कारणे हम हुनकर बात नहि मानलियै, लिखैत गेलहुं, मुदा आब लागि रहल अछि जे हुनकर कहवी सही छलन्हि की? ९ एखनो की हाल छै मैथिली मे, देखियौ ओकरा विरुद्ध किछु करियौ मैथिली मे जे पैघ पैघ संस्था चाह, चेतना समिति सनक, सभ केर विद्यापति पर्व मनबैत छथि लाखो खर्च करै छथि, मुदा लोक लेखक केर पोथी सभ केर ५-७ टा निकलैथु, से नहि होबैत छन्हि १० हमरा भेटल जानकारी के मोताबिक विद्यापति ह□ल कनियाँ पर चढै छै तकरा मे कोनो आपत्ति नहि, यदी ओकरा से किछु आय होवै मुदा ओकरा मैथिलीक काज अथवा नाटक आदि लेल मांगल जाएत, त; नहि भेटै छै यदि ओकरा शुल्क चुका दी, तहन त कनियाके रूप मे कहि ल' सकै छै एकरा सभ के उजागर

કની ૧૧ વ્યક્તિ સે સંસ્થા પૈઘ હોઇત છૈ ળોક સંસ્થા સભ છૈ, તકના પર ઉપ્પિ, સાહિત્ય અકાદમીક મૈથિલિ વિભાગ સહિત ૧૨ ઉહિ ગેક સભટા નયણાક અનુવાદ અર્યકાિર હમના દેલે છથિ હુનક સાહિત્ય અકાદમી પુરસ્કાર પ્રાપ્ત પોથી 'મનીયકિા' કેર હિન્દી અનુવાદ ઉઉ પછિઉા ૨-૩ સાઉ સે હમ ઉપ્પિ નહઉ છી સાહિત્ય અકાદમીક પત્રિકા 'સમકાલીન ભારતીય સાહિત્ય'' મે હમ પછિઉા ૨૫ સાઉ સે અનુવાદ સહિત છપિ નહઉ છી મુદા હમના સે અનુવાદક નમૂના માંગઉ ગેઉ ઓહિ કુરસી પર ળે સ્વનામ ધન્ય વૈસઉ છથિ, હુનકા હમના માટે નયિ વૂઝઉ ત કોનો મૈથિલિ સાહિત્યકાર સે પૂછિ સકૈત છલાહ ઈ તહિ ભેઉ, ળેના એક બેર એક ગોટ ચૈનઉ ઋષિકેશ મુખ્રળી સે હુનકર વાયોડાટા મંગેલ છઉ આ એપ્પનિ પઢઉ સમાચારક અનુસારે આ ળાનકી વઉભ શ્રહસ્ત્રી સે હુનકર વાયોડાટા પદ્મશ્રી ઉઉ માંઅગઉ ગેઉય ૧૩ અપન વિભિન્નતા દર્શાવૈત હમ ઉહિ ળીક દૂ તીન ટા કથાક હિન્દી અનુવાદ હમ પઠા દેઉયિન્હ તૈયો અઈ પર કોનો વિચાર નયિ ઉપ્પિઉા કે વાદ હમના કહઉ ગેઉ ળે હમ ઉહિ ળી સે સાહિત્ય અકાદમી કે અનુવાદક અર્યકાિર દિયાવે મે મદદિ કિની આરે ભાઈ, અહાં કે અનુવાદ સે મતઉવ અછિ કિ, આ ળહન હમ અનુવાદ ક; કે દેવ' ઉઉ તૈયાર છી તહન અકાદમી કે કથિયૈક અર્યકાિર ચાહી? અઈ ઉઉ ળે અકાદમી અપન પસીનક આદમી કે અનુવાદ ઉઉ દ; સકય એપ્પનિ ચિર ઓકના પર નપિટાના નયિ ભેઉયે અકાદમી સે હ્ઠર કોનો પત્ર નયિ આએઉ અછે અનુવાદ તૈયાર નાપ્પઉ છૈ ઉહિ ળી આવ વહુત વુળુગ ભ; ગેઉ છથિ હુનક માત્ર ઇચ્છા રચ્છા છૈ (આ વહુત સ્વાભાવિક) ળે હુનકર પોથી સભ હુનકા સોહા મે પ્રકાશિત ભ; ળાએ ૧૪ ઉહિ ળી કે પોથી હિન્દી મે આનવાક શ્રેય હમરે અછિ, ઈ મનતિહું ઓકના ગેક□ર૬ કેનાએ મૈથિલિ સમીક્ષક આવશ્યક નયિ વુઝૈત છથિ એકના પર ઉડૂ ૧૫ મૈથિલિ કે ભારતીય ળ્ઞાનપીઠ સે પુસ્તક પ્રકાશન ઉઉ હમહી આગાં એઉહું આ પ્રભાસ ળી આ ઉહિ ળી કે પોથી વહાર ભેઉભારતીય ળ્ઞાનપીઠ સે મૈથિલિ પુસ્તક પ્રકાશન કે શ્રેય હમરે છન્હિ, ઈહો મનૈત ઓકના ગેક□ર૬ કેનાએ મૈથિલિ સમીક્ષક આવશ્યક નયિ વુઝૈત છથિ એકના પર ઉડૂ ગળેન્દ્ર ળી, મૈથિલિક ઈ સભ માનસિકતા પર આન્દોલન કની ળાહિ સે નયણાકાર આ વરિષ્ઠ નયણાકાર સભ કે અપમાનિત નયિ હોવ' પડૈ અહાં ચાહી ત' એકના વિદેહ પર દ'

𑒮𑒏𑒻 𑒕𑒲 𑒯𑒧 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒥𑒰𑒞 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒪𑒱𑒐𑒱 𑒏𑒱 𑒣𑒜𑓃𑒰𑒨𑒥 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒯𑒧 𑒮𑓂𑒫𑒩 𑒏𑒩𑒥, 𑒖𑒹 𑒯𑒧 𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞𑒱 𑒏𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒟𑒰 𑒂 𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞𑒱 𑒏𑒹 𑒧𑒰𑒢𑒮𑒱𑒏𑒞𑒰 𑒏𑒹 𑒠𑒼𑒭 𑒠𑒹𑒥𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒍𑒏𑒩 𑒣𑒜𑒟𑒳 𑒂 𑒣𑒴𑒨𑒰𑒟𑒳 𑒄 𑒮𑓂𑒫𑒝𑒰𑒧𑒨𑒝𑓂𑒨 𑒮𑒖𑒰 𑒮𑒹 𑒖𑒹 𑒖𑒏𑒩𑒰 𑒮𑒹 𑒁𑒯𑒰𑓀 𑒏𑒹 𑒑𑒼𑒪𑒾𑒮𑒲 𑒁𑒕𑒱, 𑒞𑒏𑒩𑒰 𑒣𑒩 𑒁𑒯𑒰𑓀 𑒪𑒱𑒐𑒱𑒥 𑒂 𑒖𑒏𑒩𑒰 𑒮𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒁𑒕𑒱, 𑒖𑒹 𑒧𑒾𑒢 𑒖𑒰𑒫𑒹 𑒪𑒱𑒐𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒫𑒱𑒫𑒱𑒬𑓂𑒩𑒰𑒠 𑒧𑒹 𑒣𑒛𑒪 𑒫𑒑𑒾𑒩, 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒪𑒪 𑒄 𑒫𑓂𑒨𑒫𑒯𑒰𑒩? - **𑒫𑒱𑒧𑒰 𑒢𑒰𑒢𑒲**

....

𑒭𑒯𑒢𑒱 𑒑𑒰𑒖𑒹𑒢𑒠𑒢𑒰𑒖𑒱, 𑒑𑒾𑒠 𑒢𑒲𑒩𑒏 𑒁𑒢𑒯𑒰 𑒮𑒰 𑒯𑒹𑒪𑒱𑒰 𑒢𑒹𑒩 𑒏𑒯𑒮𑒯𑒧𑒱 𑒫𑒱𑒪𑒱𑒏𑒰𑒏𑒰𑒏𑒳 𑒧𑒧𑒹𑒠 𑒪𑒑𑒰𑒞𑒰𑒩 𑒥𑒰𑒢𑒰𑒪 𑒩𑒰𑒯𑒰𑒞 𑒨𑒯𑒼𑒩 𑒏𑒻 𑒯𑒱𑒪𑒰 𑒠𑒹𑒏𑒯𑒰𑒩 𑒏𑒹𑒪𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒠𑒰𑒢𑒠𑒞𑒱 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒏𑒰𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒣𑒩𑒰𑒣𑓂𑒩𑒰𑒮 𑒏𑒰𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒨𑒯𑒰𑒯𑒱𑒪𑒯𑒰 𑒥𑒰𑒯𑒳𑒞 𑒩𑒰𑒮 𑒢𑒹𑒏 𑒣𑒰𑒯𑒪 𑒏𑒰 𑒩𑒰𑒯𑒰𑒪 𑒨𑒯𑒯𑒱 𑒭𑒰𑒠𑒯𑒳𑒫𑒰𑒠- **𑒧𑒰𑒢𑒼𑒖 𑒣𑒰𑒞𑒯𑒰𑒏**

....

𑒬𑓂𑒩𑒲 𑒮𑒯𑒼𑒪𑒠 𑒫𑒹 𑒑𑒧𑒼𑒞𑒳𑒛𑒪 𑒞𑒼 𑒬𑓂𑒫𑒰𑒢𑒏𑒰𑒖 𑒬𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰𑒮𑒯𑒰𑒩 𑒞𑒯𑒰𑒞 𑒯𑒹 𑒠𑒠𑒱 𑒢𑒲𑒞 𑒪𑒰𑒨 𑒨𑒪𑒰𑒧𑒱 𑒼𑒢 𑒞𑒯𑒹 𑒧𑒰𑒑𑒳𑒧 𑒣𑒳𑒮 𑒼𑒛 𑒣𑓂𑒨𑒰𑒫𑒲 𑒫𑒱𑒠𑒱𑒨𑒰𑒣𑒰𑒞𑒱 𑒩 𑒏𑒢𑒾 𑒯𑒧𑒱 𑒫𑒹𑒩𑒨𑒾𑒪𑒪 𑒰𑒢𑒠 𑒯𑒮𑒱 𑒑𑒰𑒹𑒣𑒳 𑒰𑒮𑒾𑒪𑒪 𑒟𑒯𑒹𑒨 𑒯𑒰𑒫𑒹 𑒢𑒼 𑒪𑒹𑒫𑒹 𑒛𑒼𑒩 𑒧𑒰𑒞𑒱𑒯𑒞𑒱 𑒢𑒱 𑒛𑒰𑒨𑒞 𑒞𑒯𑒹𑒨 𑒰𑒧 𑒞𑒯𑒹 𑒧𑒼𑒪𑒮 𑒣𑒪𑒰𑒢𑒞𑒹𑒠 𑒫𑒨 𑒫𑒹𑒮𑒢𑒹𑒠 𑒯𑒢𑒱𑒠𑒲𑒧𑒰𑒞𑒱𑒩𑒮 𑒞𑒼 𑒠𑒰𑒧𑒰𑒑𑒹 𑒧𑒰𑒞𑒱𑒯𑒞𑒱 𑒬𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰𑒮𑒯𑒰𑒩 𑒰𑒢𑒠 𑒪𑒏𑒱𑒮 𑒰𑒧 𑒞𑒯𑒹 𑒠𑒮𑒱𑒞𑒳𑒨𑒞𑒫𑒱 𑒪𑒹𑒞𑒮 𑒰𑒢𑒠 𑒞𑒯𑒹𑒨 𑒰𑒧 𑒞𑒯𑒹 𑒨𑒳𑒪𑒣𑒩𑒰𑒞𑒱𑒮 𑒛𑒼𑒩 𑒰𑒑𑒼𑒢𑒮𑒱𑒢𑒱𑒑𑒰 𑒮𑒹𑒢𑒰𑒧𑒱 𑒧𑒰𑒞𑒱𑒩𑒮 𑒼𑒛 𑒧𑒰𑒞𑒱𑒯𑒞𑒱 𑒞𑒯𑒼𑒮𑒻 𑒯𑒼 𑒠𑒹𑒠𑒨𑒰𑒱𑒢𑒹𑒠 𑒞𑒯𑒹𑒧𑒱 𑒪𑒛𑒱 𑒛𑒼𑒩 𑒧𑒰𑒞𑒱𑒯𑒞𑒱 𑒪𑒰𑒢𑒑𑒳𑒰𑒑𑒹 𑒰𑒢𑒠 𑒪𑒞𑒱𑒧𑒰𑒞𑒳𑒹 𑒩 𑒯𑒰𑒫𑒹 𑒢𑒼 𑒮𑒨𑒧𑒣𑒰𑒞𑒯𑒨 𑒛𑒼𑒩 𑒯𑒧𑒱 𑒩 𑒨𑒰𑒢𑒞 𑒮𑒰𑒨, 𑒫𑒹𑒢, 𑒒𑒼𑒠 𑒫𑒪𑒮𑒮 𑒞𑒯𑒹𑒧 - **𑒕𑒯𑒱𑒞𑒱𑒧𑒰 𑒧𑒮𑒱𑒯𑒧𑒰**

....

𑒞𑒰𑒩𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒫𑒱𑒨𑒼𑒑𑒲: (𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒮□𑒖𑒢: 𑒖𑒴𑒢-𑒖𑒳𑒪𑒰𑒃 २०१०□ 𑒫𑒩𑓂𑒭□१□ 𑒁𑓀𑒏□२□: 𑒯𑒳𑒢𑒏 (𑒣𑓀𑒏𑒖 𑒣𑒩𑒰𑒬𑒩) 𑒁𑒢𑒹𑒏 𑒩𑒔𑒢𑒰 𑒋𑒯𑒢𑒼 𑒕𑒢𑒱 𑒖𑒏𑒩 𑒖𑒢𑓂𑒧 𑒠𑒼𑒮𑒩𑒏 𑒏𑒰𑒫𑓂𑒨 𑒩𑒔𑒢𑒰 𑒣𑒜𑓃𑒪𑒰𑒏 𑒁𑒢𑒢𑓂𑒞𑒩 𑒦𑒹𑒪𑒢𑒱 𑒁𑒕𑒱। 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰 𑒂 𑒣𑒩𑒱𑒣𑓂𑒩𑒹𑒏𑓂𑒭𑓂𑒨: 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒹 𑒟𑒱𑒏𑒢𑒱 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒑𑒼𑒙𑒹𑒏𑒹𑒿 𑒄 𑒏𑒯𑒥𑒰𑒏 𑒁𑒫𑒮𑒩 𑒦𑒹𑒙𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒢𑒱 𑒖𑒹 𑒍 𑒣𑓀𑒏𑒖 𑒔𑒼𑒩-𑒏𑒫𑒱

થકિાહ। હમ દેખૈત છી જે ચોર સમીક્ષક જાને ઓ હેથુ, ચોર-કવિ ઓ કદાપિ નહિ છથિ। મુદા એના કહિક જેઉ? એહિ દુઆરે જેઉ જે આનક રચના પઢ઼િ કS અપન અનુભૂતિમે ઉતારૈત કાઉ ઓ આનક આભામંડઉસઁ તેના આક્રાન્ત છઉાહ જે તકર છાપ કવિતાક દ□શ્યમે દેખાર પડ઼િ ગેઉ। ઈ વસ્તુતઃ સાદ્યતાક કમી થિક, જકરા ક્યો રચનાકાર રચિત-રચિત સાદ્ય કS સકૈત અછિ।

....

ગૌરીનાથ (અનઉકાન્ત)- સમ્પાદકીય અંતિકા અક્ટૂબર-દિસંબર, ૨૦૦૯- જનવરી-માર્ચ, ૨૦૧૦- પંકજ પરાશર પ્રસંગમે- હઁ, દંદ-શંદ કરૈવઉ કછુ ઉક સવ ઠામ પહુઁચા જાઇ છૈ આ તેહન ઉક એહુઁ અપન ધૂર્તતા આ ચોરિ કેઉ દેખવૈ છથિ। મુદા તકરો અસઉયત ઉજાગર કરવ અસંભવ નઇઁ રહઉ। "વિદેહ"ક ગજેન્દ્ર ઠાકુર એહન એક "યુવા" (પંકજ હા ઉર્ફ પંકજ પરાશર) ક અસઉ ચેહરા હાઉ મે દેખોઉનિ।

....

ઈ પંકજ હા પરાશર પહિનહિયેસઁ એહિ સભમે સંઉગ્ન અછિ, હ્નેક□ષ્મ હાક કવિતાકેઁ હિન્દીમે, વિના અનુમતિક, છપવૈ છથિ; ઈ ગપ આર પુષ્ટ ભેલ અછિ કારમ વિદ્યાનન્દ હા જીક કવિતા સેહો ઈ પંકજ હા પરાશર એકટા હિન્દી પત્રિકામે વિના અનુમતિ છપવઓઉક (ઈ સૂચના હ્નેક□ષ્મ હા જી દ્વારા પ્રાપ્ત જેઉ, જે વિદેહમે છપઉાક વાદ પંકજ હા પરાશર હુનકા ફોન કS કય ટ□ર્યર કેઉકન્હિ જખન ઓ વીમાર રહથિ। હ્નેક□ષ્મ હા જી ફોન દ્વારા સેહો સૂચિત કેઉન્હિ, હમ કહઉયિન્હિ જે કી ઈ સૂચના વિદેહસઁ હટા દી? ત઼ઁ **હ્નેક□ષ્મ હા** જી કહઉન્હિ, રહS દિયૌ, સત્ય જે છૈ, સે ઈએહ છિએ- સમ્પાદક) । ઈ પંકજ હા પરાશર કએક વેર, કેઉક મુદા એ વેર ત઼ઁ ઓ અપને નામે દોસરાક રચના છપવા ઉઉક, અનુવાદક રૂપમે નૈ। -સમ્પાદક)

<u>**રમેસક આઉખ-વહસ-પંકજ પરાસરક સાહિત્યિક ચોરિ મૈથિલી સાહિત્યક**</u>

[illegible]

ઢામેસહ ળે કેળ દહાળયાવાદ, સાળયા ગાપપ વાળૌાક સાાહાસ "[illegible]" મે [illegible]

[illegible]

ઢામા દ્દહ સાદિ

[illegible]

શાશીષ શળયળિહાન સાદિ

ળહઁ યનિ પિનાશન- ઘટના શ્રછિ શ્રોહિ ળેગેક ખ્યિયાશં કએઉ ળાએ ગેગેક કમ। મુદા નમેશ જાર વ઼જિાનાણીક કોણ ભાષા મે સમીક્ષા કએઉ ળાએ હિંદી મે કી મૈથિલિ મે । હમના હિસાવે એકૈ નયના કે દૂ- ગીણ ભાષા મે મૂઉ કહિ પ્નકાશનિ કનવ સેહો યોનિ જેઉ। એહૂ પન યેશ્રાણ દેઉ ળાએ।

શ્રપણ મંગવ્યે દિગોનાઉિસગાડ્વ઼દિહાગામાઉિયોમ **પન પઠાઉ।**

__નમેશ__

__વહસ-પંકળ પનાશનક સાહિત્યિકિ યોનિ મૈથિલિ સાહિત્યિક કાની શ્રધ્યાય થકિ__

વ઼દિહ-સદેહ ૨ ૨૦૦૮૧૦ સઁ પંકળ પનાશનક સાહિત્યિકિ યોનિ શ્રા સાશ્વન શ્રપનાયક પાપક ઘેઉક મહા-વ઼સ્ફિોટ જેઉ શ્રછિ। ૬ પૈઘ શ્નેય પત્નિકાક સમ્પાદક શ્ની ગળેન્દ્ન ઠાકુનકેં ળાશ્ગ છણિ। હુનકન શ્રપનાય પકડ્વાક યેગના કેન ળેગેક પ્નશંસા કયઉ ળાય, કમ હોયત। "વ઼દિહ"ક મૈથિલિ પ્નવન્ય-સમાલોયના- શ્રંક, શ્રશ્ પોઉ-ખોઉ ઉઉ કએક યુગ યનિ વ઼લિમ્વનિ ભs કs ણવિદ્ય નહગ, સે "સમય કેં શ્રકાનૈગ" કહવ કઠણિ શ્રછિ।

સાહિત્યિોમે યૌન્યકઉાક ઉદાહનાણ પહિનિહું શ્રવૈગ નહઉ શ્રછિ ગોટપગાના। મુદા એક વેનક યોનિ પકડ્ા ગેઉાક વાદ પ્નાયઃ યોનકિ શ્રાગોપી સાહિત્યિકાન મૌણ-વ્નગ યાનાણ કનૈગ નહઉાહ શ્રછિ શ્રા મામલિ ઠંઢ્ાશ્ગ નહઉ શ્રછિ।

મુદા ગાહિ પિનમ્પનાક વ઼પિનીગ શ્રશ્ વેનક યોન 'સન્હિ યોન' ણકિઉઉ શ્રછિ શ્રા વ઼ગિગ એક દશકસઁ ણનિ્ગન યોનિ કનૈગ ળા નહઉ શ્રછિ- સેન્હ કાટકિs। શ્રા ગેહેન મહાયોનકેં મૈથિલીક સાહિત્યિકાન શ્રા સંસ્થા સભ ગનહન્થીપન ઉઠા-ઉઠા કs પુનસ્ક□ગ કેઉક શ્રછિ શ્રા સમીક્ષાક યાસણીમે યોનાયઉ કવ઼ગિ સવકેં વોનિ દેઉ ગેઉ શ્રછિ।

વ઼દિહ-સદેહ□૨ પ્નમાણ-પુનસ્સન શ્રભિયોગે ટા ણહિ ઉગૌઉક, શ્રપિતુ એહેન મહત્વ઼ાકાંક્ષી શ્રસામાળિક ગત્વ઼ક વ઼ગુદ્ય સાહિત્યિકિ દાણ્ડ શ્રાગોપિગ કs

𑒁𑒣𑒢 “𑒥𑒼𑒪𑓂𑒛𑒢𑒹𑒮” 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒣𑓂𑒩𑒠𑒩𑓂𑒬𑒱𑒞 𑒏𑒹𑒪𑒏 𑒁𑒕𑒱। 𑒋𑒏 𑒠𑒬𑒏𑒧𑒹 𑒞𑒲𑒢 𑒥𑒹𑒩 𑒣𑒏𑒛𑓃𑒰𑒨𑒪 𑒔𑒼𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒨𑓁 “𑒛𑒹𑒨𑒩 𑒛𑒹𑒫𑒱𑒪” 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒁𑒣𑒢 𑒁𑒢𑒳𑒔𑒱𑒞। 𑒮𑒲𑒧𑒰𑒯𑒲𑒢 𑒧𑒯𑒞𑓂𑒫𑒰𑒏𑒰𑓀𑒏𑓂𑒭𑒰𑒏 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒞𑒱 𑒪𑒹𑒪 𑒁𑒣𑒢 𑒫𑒩𑒲𑒨 𑒮𑓀𑒫𑒩𑓂𑒑𑒲𑒨 𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞𑒱𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒲𑒜𑓃𑒲𑒏 𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹 𑒅𑒣𑒨𑒼𑒑 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒮𑓂𑒫𑒰𑒩𑓂𑒟- 𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡𑒱𑒏 𑒅𑒣𑒩𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑒨𑒩 𑒮𑒿 𑒍𑒯𑒱 𑒮𑒲𑒜𑓃𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒢𑒱𑒔𑒰𑒿 𑒐𑒮𑒰 𑒠𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒤𑒹𑒩 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒁𑒣𑒢 𑒙𑓂𑒫𑒱𑒙𑒩-𑒤𑒹𑒮𑒥𑒳𑒏-𑒢𑒹𑒙 𑒫𑒰 𑒣𑒞𑓂𑒩𑒱𑒏𑒰𑒧𑒹 𑒑𑒰𑒩𑒱𑒏 𑒢𑒱𑒏□𑒭𑓂𑒙𑒞𑒧 𑒮𑓂𑒞𑒩𑒣𑒩 𑒅𑒞𑒩𑓄 𑒧𑒹 𑒏𑒢𑒱𑒨𑒼 𑒠𑒹𑒩𑒲 𑒢𑒯𑒱 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒻। 𑒍 𑒢𑒰𑒧 𑒥𑒠𑒪𑒱-𑒥𑒠𑒪𑒱 𑒏𑓄 𑒑𑒰𑒩𑒱 𑒣𑒜𑓃𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑓂𑒩𑒬𑓀𑒮𑒰𑒧𑒹 𑒖𑒹𑒋𑒢𑒨𑒴𑒏 𑒕𑒰𑒞𑓂𑒩-𑒕𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰𑒏 𑒣𑒼𑒮𑓂𑒙𑒏𑒰𑒩𑓂𑒛 𑒪𑒱𑒐𑒥𑒰𑒧𑒹 𑒁𑒣𑒮𑓂𑒨𑒰𑒿𑒞 𑒦𑓄 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒍 𑒯𑒱𑒢𑓂𑒠𑒲𑒏 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒥𑒛𑓃𑒏𑒰 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒰𑒩𑒏 𑒥𑒹𑒙𑒲𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒁𑒣𑒢 𑒢𑒰𑒧 𑒖𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯𑒏 𑒫𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧-𑒣𑓂𑒩𑒮𑓀𑒑𑒏 𑒐𑒱𑒮𑓂𑒮𑒰 𑒩𑒮 𑒪𑓄 𑒪𑓄 𑒏𑓄 𑒣𑓂𑒩𑒔𑒰𑒩𑒱𑒞 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒋𑒯𑒹𑒢 𑒣𑓂𑒩𑒫□𑒞𑓂𑒞𑒱 𑒏𑒋𑒙𑒰 𑒂𑒍𑒩 𑒞𑒱𑒏𑒛𑓃𑒧𑒥𑒰𑒖𑒧𑒹 𑒠𑒹𑒐𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒯𑒱𑒢𑓂𑒠𑒲𑒏 𑒣𑒻𑒒-𑒣𑒻𑒒 𑒢𑒰𑒧𑒏 𑒧𑒰𑒪 𑒖𑒣𑒱 𑒏𑓄 𑒧𑒚𑒼𑒧𑒰𑒚 𑒯𑒼𑒁𑒨 𑒔𑒰𑒯𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒫𑒮𑓂𑒞𑒳𑒞𑓁 𑒄 𑒔𑒱𑒢𑓂𑒞𑒰𑒖𑒢𑒏 𑒞𑒟𑓂𑒨 𑒟𑒱𑒏 𑒖𑒹 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲𑒏 𑒢𑒫-𑒞𑒴𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒯𑒱𑒢𑓂𑒠𑒲𑒏 𑒣𑒻𑒒-𑒣𑒻𑒒 𑒢𑒰𑒧𑒏 𑒫𑒻𑒬𑒰𑒐𑒲𑒏 𑒋𑒞𑒹𑒏 𑒖𑒩𑒴𑒩𑒞𑒱 𑒏𑒱𑒋𑒏 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒢𑒱?

“𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯𑒏” “𑒃𑒢𑒏𑓂𑒫𑒰𑒨𑒩𑒲𑒏 𑒫𑒱𑒫𑒩𑒝” 𑒣𑒜𑓃𑒱 𑒏𑓄 𑒩𑒼𑒃𑒨𑒰𑒿 𑒚𑒰𑒜𑓃 𑒦𑓄 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒣𑒯𑒪□८𑒠 𑒂 𑒂𑒩𑒧𑓂𑒖□२३ 𑒧𑒹 𑒖𑒹 𑒣𑒼𑒪 𑒐𑒳𑒖𑒪 𑒕𑒪, 𑒁𑒃 𑒞𑒟𑒰𑒏𑒟𑒱𑒞 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒰𑒩𑒏, 𑒞𑒏𑒩𑒰 𑒥𑒰𑒠𑒹 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒮𑒿 𑒥𑒰𑒩𑒱 𑒠𑒹𑒪 𑒖𑒹𑒫𑒰𑒏 𑒔𑒰𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒪। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒫𑒱𑒛𑒧𑓂𑒥𑒢𑒰 𑒠𑒹𑒐𑒴 𑒖𑒹 𑒔𑒹𑒞𑒢𑒰 𑒮𑒧𑒱𑒞𑒱 𑒮𑒧𑓂𑒧𑒰𑒢𑒱𑒞 𑒏𑓄 𑒠𑒹𑒪𑒏। “𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝 𑒮𑒧𑒰𑒖”, 𑒩𑒯𑒱𑒏𑒰 (𑒧𑒡𑒳𑒥𑒢𑒲) 𑒮𑒢 𑒁𑒿𑒐𑒱𑒑𑒩 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒟𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒔𑒏𑒔𑒼𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒪𑒰𑒑𑒱 𑒑𑒹𑒪, 𑒖𑒐𑒢𑒏𑒱 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒟𑒰𑒧𑒹 𑒫𑒱𑒐𑓂𑒨𑒰𑒞 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒰𑒩 𑒅𑒠𑒨𑒔𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒗𑒰 “𑒫𑒱𑒢𑒼𑒠” 𑒂 𑒣𑒜𑓃𑒰𑒏𑒴 𑒣𑓂𑒩𑒼𑒤𑒹𑒮𑒩𑒑𑒝 𑒕𑒟𑒱। 𑒄 𑒮𑓀𑒬𑒨𑒫𑒱𑒯𑒲𑒢 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒣𑒳𑒩𑒮𑓂𑒏□𑒞 𑒏𑒩𑒹𑒥𑒰𑒧𑒹 𑒫𑒱𑒢𑒼𑒠𑒖𑒲𑒏 𑒧𑒯𑒞𑓂𑒫𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒦𑒴𑒧𑒱𑒏𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒯𑒻𑒞। “𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯” 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰 𑒩𑒯𑒮𑓂𑒨𑒼𑒠𑓂𑒒𑒰𑒙𑒢 𑒏𑒹𑒪𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒫𑒖𑒴𑒠 𑒋𑒐𑒢 𑒡𑒩𑒱 𑒔𑒹𑒞𑒢𑒰 𑒮𑒧𑒱𑒞𑒱 𑒁𑒟𑒫𑒰 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝 𑒮𑒧𑒰𑒖, 𑒩𑒯𑒱𑒏𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑒳𑒩𑒮𑓂𑒏𑒰𑒩 𑒂𑒣𑒮 𑒏𑒩𑒹𑒫𑒰𑒏 𑒫𑒰 𑒂𑒢𑒹 𑒏𑒼𑒢𑒼𑒙𑒰 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒩𑒫𑒰𑒄 𑒏𑒩𑒫𑒰𑒏 𑒥𑒹𑒑𑒰𑒩𑒞𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒥𑒳𑒗𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒻 𑒂 𑒮𑒩𑓂𑒠 𑒑𑒳𑒧𑓂𑒧𑒲 𑒪𑒡𑒢𑒹 𑒁𑒕𑒱। 𑒋𑒯𑒹𑒢 “𑒖𑒛𑓃-𑒮𑓀𑒮𑓂𑒟𑒰” 𑒮𑒦 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏 𑒅𑒣𑒏𑒰𑒩 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒫𑒰 𑒁𑒣𑒏𑒰𑒩? 𑒄 𑒏𑒹𑒢𑒰 𑒧𑒰𑒢𑒪 𑒖𑒰𑒨 𑒖𑒹 𑒣𑒯𑒪□८𑒠 𑒫𑒰 𑒂𑒩𑒧𑓂𑒖□२३ 𑒁𑒃 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒟𑒰𑒏 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒁𑒡𑒱𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒫𑒰

साहित्यकारकेँ पढ़ल नहि छलनि?

६ आश्चर्यजनक सत्य थिक जे मैथिलीक कएटा पैघ साहित्यकार पंकज पराशरक कृत्रिम काव्य आ आयातित शब्दावलीमे फँसि गेलाह अछि। “विलम्बित कइक युग मे निबद्ध” क भूमिकामे अनेको विदेशी साहित्यकारगणक तीस-चालिस टा नाम ओहिना नहि गनाओल गेल अछि, अपन कविता केँ विश्वसनीय प्रमाणित करबाक लेल अँग्रेजी चोरे एना कऽ सकैत अछि। सम्भावना बनैत अछि जे डगलस केलनर जकाँ ओहू सभ कविक रचनाक भावभूमिक वा शब्दावलीक चोरिक प्रमाण एहि काव्य-पोथीमे भेटि जाय। अंततः म्हारूक कोन ठेकान? मैथिलीमे तँ लोक विश्व-साहित्य कम पढ़ैत अछि। तकर नाजायज फायदा कोनो ब्लैकमेलर किएक नहि उठाओत? आखिर टेक्नो-पोलिटिक्स की थिक- टेकनिकल पोलिटिक्स थिक, सैह कहि? एकरा बदौलत झाँसा दऽ कऽ पाकिस्तानोक यात्रा कएल जा सकैत अछि। “टेक्नो-पोलिटिक्सक” बदौलत कथित-यात्री पुरस्कार, वैदेही-माहेश्वरी सहि “महेश” पुरस्कार, एतेक धरि जे विदितजीक अकादमीयोक पुरस्कार लेल जा सकैत अछि। प्रदीप बिहारीक सुपुत्रक भातिज-कका सम्बन्धक मर्यादाक अतिक्रमण कएल जा सकैत अछि। प्रो. अरुण कमलक “नये इलाके में” सेंधमारी कऽ कऽ “समय केँ अकानल” जा सकैत अछि। आर तँ आर, अइ टेकनिकल प□लिटिक्सक बदौलत जीवकान्तजी सन महारथी साहित्यकारसँ “विलम्बित कइक युग” पोथीक समीक्षा लिखिवा कऽ “मिथिला दर्शन” □प□ सन पत्रिकामे छपवा कऽ स्थापित आ अमर भेल जा सकैत अछि। मैथिली साहित्यक सभसँ पैघ सस्तल औजार थिक “टेक्नो पोलिटिक्स”!

६ मानल जा सकैत अछि जे मिथिला दर्शनक सम्पादककेँ आरम्भ□२३ आ पहल□८६ कोलकातामे नहि भेटल होइन्हि। मुदा जीवकान्तजी नहि पढ़ने हेताह से मानवामे असौकर्य भऽ रहल अछि। जीवकान्त जी तँ प्रयाग शुक्लक “चन्द्रभागा मे सूर्योदय” आ एहि शीर्षकक नारायणजीक कविता

(चन्द्रमागामे सूर्योदय) सेहो पढ़ने हेताह जे छपल अछि मैथिलीमे। तखन पंकज पराशरक समुद्रसँ असंख्य प्रश्न पूछए वला कविताक जावत् करिक नहि लगलनि जे समीक्षामे कलम तोड़ि प्रशंसा कर' पड़लनि वा करा लेलनि? एकरा "प्रायोजित समीक्षा" करिक नहि मानल जाय? की प्रयाग शुक्ल वा नारायणजीक समुद्र विषयक कवितासँ बेसी मौलिकता पंकज पराशरक कवितामे देखलनि जीवकान्तजीकेँ? ओर सब कविताक कनियोँ "छाया"क शंको नहि देखलनि समीक्षककेँ? "सजयताक सबटा मरमान्तक पुकार"क नोटिस लेब' वला समीक्षककेँ साहित्यिक चोरि असत्य आ मरमान्तक पीड़ादायक नहि लगलनि? आब जीवकान्तजी सन समीक्षकक "पोजीशन स्□ेस" जाए जेतनि से अन्दाज त' मिथिला दर्शनक सम्पादककेँ नहियेँ रहनि, उदय चन्द्र झा "विनोद" केँ सेहो नहि रहनि। ई अजाजिआन त' पंकजे पराशर टाकेँ रहल हेतनि? बेचारे "पराशर" मुनिक आत्मा स्वर्गमे कनैत हेतनि आ पंकसँ जनमल जोक कमल अछि सब अविश्वसनीय यथार्थक सामना कनैत हेताह। पराशर गोत्री जाए कए तीन बेर चोरि केनाइ "पराशर" महाकाव्यक रचयिता स्व. किरणजीकेँ सेहो कनबैत हेतनि। आश्चर्य जीवकान्तजी साहित्यिक चोरिक नोटिस करिते ने लेलनि, जखनकि हुनका वियारेँ "मैथिलीक समीक्षक प्रायः मूर्खता पीबिकए विषवमन करैत अछि"(विदेह-सदेह□२□२००८□१०□ विनीत उत्पल-साक्षात्कार आ जीवकान्तजी स्वयं पंकज पराशरक चोरिवला कविता-पोथीक समीक्षक छथि, अपितु चौर्यकला प्रवीण कविक घोर प्रशंसक छथि। तखन अइ समीक्षा-आलेखमे अन्तर्निहित असीम-प्रशंसा साकांक्ष-पाठककेँ "विष-वमन" कोना ने लागैक? हुनका सन "पढ़ाकू" समीक्षक-पाठककेँ "स्□ेस पोजीशन"मे अननिहार "एक्सपर्ट आ हैवयुएटेड" साहित्य-चोरसँ प्रशंसा आ पुरस्कार दुनू पाबि जाय त' मैथिली-काव्यक ई उत्कर्ष थिक वा दुर्भाग्य? अतः विदेह-सदेह टा करिक निन्दा केलक एहि घटनाक? आन कोनो पत्रिका करिक नहि केलक? ७□ रमानन्द झा "रमण" इन्टरनेटपर निन्दा करैत छथि त' घर-बाहर पत्रिकामे करिक नहि लिखल ओ सम्पादक छथि? चेतना समिति, पटना सम्मानित करैत अछि एहने-एहने साहित्यकारकेँ तखन अपने

પત્રિકામે કોના નિન્દા કરત, જખનકિ પુરસ્કાર આપસો નહિ દૈત અછિ, જાનકારી લેખક વા સાકાંક્ષ સાહિત્યકારક અનુરોધ પ્રાપ્ત લેખક વાદો? નચિકેતાજી નેટપર નિન્દા કરતાહ આ "વિદેહ"મે છપત તઁ "મિથિલા દર્શન"મે કહિયો નહિ નિન્દા વા સૂચના છપલ? કારણ સ્પષ્ટ અછિ- જીવકાન્તક સમીક્ષા પંકજ પરાશરક કાવ્ય-પોથીપર છપત, તખન ઓહિ પોથીક ચોરિ કએલ કવિતાક નિન્દા કોના છપત? ચારુ ભાગ સાહિત્યિક આદર્શ, મર્યાદા આ નૈતિકતાક ચર્ચા ઉડ઼િ રહલ અછિ- પિતામહ આ આચાર્યગણક સમક્ષ આ (અનજાને મે સહી) હુનકો લોકનિક દ્વારા। મૈથિલ બ્રાહ્મણ સમાજ, રહિકા; ચેતના સમિતિ, પટના આ સાહિત્ય અકાદેમી, નઈ દિલ્લીમે અન્તતઃ કોન અન્તર અછિ વા રહલ? એહેન નામી પુરસ્કારક સંચાલન આ ચયનકર્તા મહારથી સભકેઁ નવ લોકકેઁ પઢ઼બાક બેગરતા કહિયો નહિ બુઝાઇત છનિ? બિના પઢ઼ને પુરસ્કારક નિર્ણય વા સમીક્ષાક નિર્ણય કરૈક ઉચિત, જખન કિ ચોરિ તેસર બેરક ચોરિ થિક આ સે છપિ- કઽ સામાજિક ભેલ અછિ। એકર વર્ત્તમાન આ વરીય સાહિત્યકારગણ દ્વારા કાવ્ય-ચોરિ, આલેખ-ચોરિકેઁ પ્રશ્રય દેલ જાયબ કહિયો નહિ માનલ જાય, જખનકિ આરમ્ભ, મૈથિલ-જન, પહિલ આ વિદેહ-સદેહ પહિનહિ છાપિ ચુકલ છલ? કી સાહિત્યિક ચોરિકેઁ પ્રશ્રય દેબ, દલિત વર્ગકેઁ પ્રશ્રય દેબ નહિ થિક? એહેન સમ્ભાવનાયુક્ત નવ કવિકેઁ પ્રશ્રય દેબ મૈથિલી સાહિત્ય લેલ ઘાતક અછિ વા કલ્યાણકારી, જકર મૌલિકતાપર તીન બેર પ્રશ્ન ચેન્હ લાગલ હોઅક? કી પોથીક આકર્ષક ગતા દેખિ વા વિદેશી કવિગણક નામાવલી (ભૂમિકામે) પઢ઼િ કઽ સમીક્ષા લિખલ જાઇત અછિ વા પુરસ્કારક નિર્ણય લેલ જાઇત અછિ? જઁ સે ભેલ હો તઁ સભ કિછુ "ઠકિકે છૈ ભાઇ"?

આર સભસઁ તઁ જીવકાન્તજીક બાત સત્ય બુઝાઇત અછિ જે સમીક્ષકગણ દારૂ પીબિ કઽ વા પૈસા પીબિ કઽ વા મૂર્ખતા પીબિ કઽ સમીક્ષા લિખૈત છથિ। ડાલસ કેલનરક "ટેક્નોપોલિટિક્સ" તઁ છપિ ગેલ "પહિલ"મે ચોરા કઽ। આબ જીવકાન્તજી, જ્ઞાન રંજનજી અથવા હિન્દી જગતક આન સાહિત્યકાર-સમ્પાદકસઁ પૂછથુ જે ઓમ ચોમ્સ્કીવલા રચના કતય ગેલ, કી ભેલ, કોન નામેં

छपल? पंकज पराशरक नामे कि प्रदीप बिहारीजीक सुपुत्रक नामेँ (अनुवाद रूपमे)। ई रहस्य एखन नहि भेल तँ भविष्यमे पुनः एकटा साहित्यिक चोरि पोल खुजत? अंततः एकटा माँछकेँ कएटा पोखरिकेँ प्रदूषित करए देल जाय आ से करए देत? उदय-कान्त बनि कऽ गारि पढ़बाक आदति तँ पुरान छनि ड□ महाचोर केँ। ककरो "सरीस□प" कहि सकैत छथि (मैथिल-जन) आ कोनो परिवारमे घोसिया कऽ विष वमन कऽ सकैत छथि। ऑक्टोपसक सभ गुणसँ परिपूर्ण ड□ प□ल बाबाकेँ चोरिक भविष्यवाणी करबाक बड़का गुण छनि तेँ हिनका नामी फुटब□ल टीम द्वारा पोसल जाइत अछि, जाहिसँ "विश्व-कप"केँ दौरान आर "अमोघ अस्त्रक" उपयोग अपना हिसाबेँ कयल जा सकय।

सहरसा-कथागोष्ठीमे पठित हिनकर पहिल कथाक शीर्षक छल- हम पागल नहि छी। ई उद्घोषणा करबाक की बेगरता रहैक- से आर लोककेँ बुझा रहल छैक। अविनाश आ पंकज पराशरक मामाजी तहिया हिनकर कथाकेँ "टिप्पणीक"क्रममे मैथिली-कथाक "टर्निंग प्वाइन्ट" मानने छलाह। आर ओ "टर्निंग प्वाइन्ट" ठीके एक हिसाबेँ "टर्निंग प्वाइन्ट" प्रमाणित भेल, कारण कथाक ओहि शीर्षकमे सँ "नहि" हटि गेल अछि, हिनकर तेवारा चोरिसँ। हिनकर पहिल चोरि (अनुपम कमलक कविता- नए रूपके मे) क निन्दा प्रस्तावमे "मामाजी" आ ड□ महेन्द्रकेँ छोड़ि, सहरसाक शेष सभ साहित्यकार हस्ताक्षर कऽ "आरम्भ"केँ पठौने छलाह। आर ओ हस्ताक्षर नहि केनिहार सभ कनछी काटि कऽ बाम-दहिन ताक-झाँक करबाक लेल बाध्य छथि। द्वैध-चरित्र आ दोहरा मानदण्डक परिणाम सैह होइत अछि। अविनाश तखन तँ देखार भऽ जाइत छथि जखन ओ विदेह-सदेह□र मे लिखैत छथि जे "एकरा सार्वजनिक नहि करबै"। नुका कऽ सूचना देबाक कोन बेगरता? पंकज पराशरसँ सम्बन्ध खराब हेबाक डर वा कोनो "टेक्नोपोलिटिक्स"(?) केर चरित्र?

विदेह-सदेह□र क पाठकक संदेश तँ कएटा साहित्यकारकेँ देखार कऽ देत

અછિ। ળાય નાળીવ કુમાન વર્મા, શ્રીયનામ, સુનીલ મલ્લિક, શ્યામાનન્દ યૌયની, ગંગેશ ગુંળન, પીકેયૌયની, સુબાષ યન્દ્ન યાદવ, શમ્ભુ કુમાન સહિ, વળિયદેવ હ્રા, બાલયન્દ હ્રા, અળિત મશ્રિન, કેપ્ણહ્રા, પ્નોનયકિના, વુદ્યનાથ મશ્રિન, શવિ કુમાન હ્રા, પ્નકાશ યન્દ્ન હ્રા, કામનિી, મનોળ પાઠક આદિ અપન મુખ્ય બાષામે પ્નખ્નનાપૂર્વક નનિ્દનીય ઘટનાક નનિ્દા કેલનિ અછિ, તતહિ અવનિાશ, ડ઼ રમાનન્દ હ્રા "નમણ", વળિાનાનીક હાઁપલ-તોપલ શવ્દ આશ્યન્ય-બાવક ઉદ્નેક કનૈત અછિ। મુદા સંતોષક વાત ઈ અછિ જે પાઠકક "પ્નવલ બાવ-બંગમિા" સાહત્નિકાનોક "મૈહાયલ આવાળ"ક કોનો યનિ્તા નહિ કનૈત અછિ। વળિાનાની તઁ કમાલ કઠ દેલનિ। એહિ ઠામ મૈથિલિ બાષા-સાહત્નિક એક સય સમસ્યા ગનેવાક ઉયતિ સ્થાન નહિ છલ। ઈ ઓનાઠ કાલ ખ્નોનાઠ આ મહાદેવક વવિાહ કાલક લગની બઠ ગેલ। કોનો યોન વેન-વેન અપન કુ- ક્નત્યક પનયિય દઠ નહલ અછિ આ હુનકા સમય નષ્ટ કનવ વુહ્રા નહલ છનિ આ યોનકેઁ દેખ્નાન કેલાસઁ દુઃખ બઠ નહલ છનિ? ઓ અપન પ્નતકિ્નયિામે કતેક આત્મ શ્લાઘા આ હીન-બાવના વ્યક્ત કેલનિ અછિ સે અપને પત્ન અપને ઠંઢા બઠ કઠ પઢ઼ કિઠ વૂહિ સકૈત છથિ। હનિ્દીયોમે એહનિા બઠ નહલ અછિ, તેઁ મૈથિલિમે માથ્થ કઠ દેલ જાય? આવ હનિ્દીસઁ પૂછિ-પૂછિ કઠ મૈથિલિમે કોનો કાળ હોયત? વળિાનાની ળ્યોત્સના યન્દ્નમકેઁ ળ્યોત્સના મલિન કેના કહૈત છથિ? હુનકન ઉપેક્ષા કોના માનલ જાય? ઓ સબ સાહત્નિકિ કાન્યક્નમમે નોતલ જાઇત છથિ, સમ્માન આ પુનસ્કાન પવૈત છથિ, પાઠક દ્વાના પઠતિ આ યન્યતિ હોઇત છથિ। સમીક્ષાક શકિાઇત કો ઉચ્યવર્નાણીય (?) સાહત્નિકાનકેઁ મૈથિલિમે નહિ છનિ? સમીક્ષાક દુઃસ્થતિ સબ જાતકિ મૈથિલિ સાહત્નિકાન લેલ એકે નંગ વષિમ અછિ। ઓઇ મે જાતગિત વળિદ એના બેલઇ જે વ્નાહ્મણ-સમીક્ષક, આનક્ષણક દ્નષ્ટકિોણેઁ નમિ્ન જાતિ (?)ક સાહત્નિકાનક કછિુ વેશીએ સમીક્ષા (સેહો સકાનાત્મક નૂપેં) કેલનિ અછિ। સમીક્ષા આ આલોયનાક વષિમ સ્થતિકિ કાનણેં જઁ નૈનાશ્યક શકિાન બઠ જાય લેખક, તઁ લેખકીય પ્નતવિદ્યતાક કો અન્થ નહિ જાયત? વળિાળીકેઁ વુહ્લ નહિ છનિ જે હુનકા લોકનકિ વાદ મૈથિલિ મહલિા લેખનમે કામનિી, નૂતન યન્દ્ન હ્રા, વન્દના હ્રા, માલા હ્રા આદિ અપન તેવનક સંગ પદાર્પણ કઠ યુકલ

छथि। हुनका ने कामिनीक कविता संग्रह पढ़ल छनि आ ने "स्नोड़ियाक अउँठी मोड़"। हुनका अपन गुरुदेवक बात मानि हिन्दीमे जाइसँ के कहिया रोकलकनि? ओ गेल छथि हिन्दीमे। मात□भाषाक प्रेरणा अद्वितीय होइत छै। मैथिलीक जड़ संस्था अथवा समीक्षक सभपर प्रहार करबामे हमरा कोनो आपत्ति नहि, मुदा अन्यथाभाव तँ एतय नगाम्य अछि। सामाजिक सम्मान विभाजीकेँ अवश्य भेटलनि अछि। समाजमे "जड़"लोक छै तँ "चेतन" लोक सेहो छैक। हुनकासँ मैथिली भाषा-साहित्य आ मिथिला-समाजकेँ पैघ आशा छै, हीनभाव वा आत्मश्लाघासँ ऊपर उठि काज करबाक बेगरता छैक। सक्षम छथि ओ। हुनका स्नेह लेबाक होड़सँ बँचबाक चाही। अन्यथा साहित्य अकादेमी प्रतिनिधि, दिल्लीयापर केर शक्तिर धूरीगण आ मैथिलीक सक्षम साहित्यकारमे की की अन्तर रहि जायत? विभारानीक विचारक दिशा हमरा चिन्तित आ व्यथित करैत अछि। ओ दमगर लेखिका छथि, सशक्त रचना केलनि अछि, आइ ने काल्हि समीक्षकगण कलम उठेबापर बाध्य हेबे करताह। समीक्षकक कर्तव्यहीनतासँ कतौ लेखक निराश हो?

पंकज पराशरक स्र□प्पलावद्य साहित्यिक चोरिपर सार्थक प्रतिक्रिया देब कोनो साहित्यकार लेल अनुचित नहि अछि कतहुसँ। साहित्यकार लेल साहित्यिक मूल्यक प्रति ओकर प्रतिबद्धता मुख्य कारक होइत अछि आ हेबाको चाही आ तकरा देखार करबाक "बोल्डनेस" हेबाक चाही। "चाही"वला पक्ष साहित्यमे बेसीए होइत अछि। एहेन-एहेन गम्भीर विषयपर साहित्य आ समाजक "चुप्पी" एहेन घटनाकेँ प्रोत्साहित करैत अछि आ जबदाह जड़ताकेँ बढ़बैत अछि, भाषा-साहित्यकेँ बदनाम तँ करिते अछि। जायज पंकज पराशरक चोर-काव्यक समीक्षा लिखल जाइत रहत, विभारानीक मूल-रचनाक समीक्षा के लिखत? ककरा जरूरी बुझैछ? विभारानी अपने तँ समीक्षा प्रायोजित नहि कराओती? सक्षम लेखकक व्यवहारोक अपन स्तर होइत छै। तेँ संगठित भऽ चोरकि भर्त्सना हेबाक चाही।

राजकमल चौधरी आ आन लेखकक रचनाक चोर पंकज पराशर प्रसंग

પંકળ પ૧ાશ૧ ૩૧્શ્ર શ્ર૧ાામ કમ૭ ૩૧્શ્ર ડ઼ાાભસ કે૭ન૧ ૩૧્શ્ર ૩દયકાન્ત ૩૧્શ્ર ૬ષશ્ર ૨૨૦૨૨૭૧૬૩૧૦૫ □ ૧૬૪૧૦૦૮૩ □ ૨૨૦૨૨૭૧૭૪૨૪૩ ૩૧્શ્ર

શ્રાાાસહા૧સ૨ણ઼ાભભેયાાાભથહેડ઼ા

પાઠકક સૂચનાક વાદ ૬ પ઼ા ચ૭૭ શ્રછિ (શ્રા શ્રોક૧ સઽ્યાપન ક૯૭ ગે૭) ળે ૯હિ ભેપ્પકક ૬ ૯હિ ણ૧હક પહિ૭ ક□ળ્ય ણહિ શ્રછિ। ૬ ભેપ્પક પહિણિ સેહો યોાગભાસ પ્પે૭૭ને૧ ક થેયહણોપોભાિયિસ ક પંક્તાશિઃ શ્રણુવાદ મૂ૭ ભેપ્પકક ણૂપમે ણામસઁ ળ્ઞાણંળણક હિણ્દિી પણ્૧ાકિા "પહ૭"મે યોપ્પાસઁ છપવશ્રોભક। ણક૧ પ઼ા ચ૭૭ાક વાદ "પહ૭"મે ૯હિ ભેપ્પકક ૧યણાક પ્૧કાશણ વણ્દ ભ઼ડ ગે૭। ૯હિ સિમ્વણ્યમે વ઼સ્ણ□ણ શ્રાભેપ્પ વ઼દિહક શ્રગાભા શ્રંકક સમ્પાદકીયમે દે૭ ળાણ઼।

૨૯હિ સિભ઼ ઘટણાક વાદ પંકળ પ૧ાશ૧કેં વ઼દિહસઁ વૈણ ક૯૭ ળા ૧હ૭ શ્રછિ। વ઼દિહ શ્રાણ્કા૨વ઼સઁ "વ઼ભિમ્વણિ ક૨ક યુગમે ણવિદ્ય" પોથીકેં હટાશ્રો૭ ળા ૧હ૭ શ્રછિ શ્રા ૯કટા ૨ણક્વાયની દ્વ઼ાાાા ૯હિ પોથીક (ડ઼ાાભસ કે૭ન૧ વ૭ા ઘટણાક્૧મક વાદ) ળાઁચ કછુિ ચુણ૭ ભેપ્પક-પાઠક દ્વ઼ાાાા ક૯૭ ળ૯વા યણિ ૧હણ઼। પ્૧કાશકકેં સેહો ૩ચિણ પુભસિયિા કાણ્યવાહિ (યદિ શ્રાવ઼શ્યક હુશ્ર૯ ણઁ) ભ૭ ૯હિ સિમસ્ણ ઘટણાક્૧મક સૂચના દડ઼ દે૭ ગે૭ શ્રછિ।

૩પાઠક ડ઼ાાભસ કે૭ન૧સઁ ૬-મે૭ કે૭૭ને૧૦ાાસેસિુયભેદુ પ૧ "પહ૭" પણ્૧ાકિા વ઼ા ણક૧ સમ્પાદક શ્ર્૧ી ળ્ઞાણંળણસઁ `દણિ઼પાહાભ૦ાામાભિયોમ□ `દપાહાભળવપ૦યાહીયોણિ વ઼ા ણિડોન્દેસહકાાાભયોમ પ૧ શ્રા દૈણકિ ળાાાામસઁ ણસિહકાિાણણ૦ળાાાાાણયોમ, ગેસપોણસે૦ળાાાાાણયોમ□ માભિવોશ૦ળાાાાાણયોમ□ દે૭હિણદાળાાાાાણયોમ પ૧ સમ્પણ્ક ક૯ વ઼સ્ણ□ણ ળાણકાણ઼ી ૭ડ઼ સકૈણ છથિ। ડ઼ાાભસ કે૭ન૧ક શ્રાણ્ટકિ૭ ગૂાાભ સણ્યપ૧ ણેયહણોપોભાિયિસ ટા૨પ ક૯ ણાકિ સિકૈ છી શ્રા પઢિ સકૈ છી। પહ૭ પણ્૧ાકિાક વ઼ેવસાર્ટ ણીદેસહકાાાભયોમ પ૧ સેહો પહ૭ પણ્૧ાકિાક પુ૧ાણ શ્રંક સભ઼ શ્રાસ્ણે-શ્રાસ્ણે દેવાક પ્૧ા૧મ્ભ઼ ભે૭ શ્રછિ।

વસ્િ□ત ળાણકારીક ઉ૭ સુચી પાઠકગામ્ર અહાઁક ચન્યવાદ। ઞવ઼ષિ્યમે સેહો એહિ ઘટનાક પુનરાવ઼□ત્તિ નહિ હુઅય તાહિ ઉ૭ અહાઁક પારપ્પી નળરકિ આસ આગાઁ સેહો રહત। એહિ તરહક કોનો ઘટનાક ળાણકારી હમર ઈ-પત્ર ગગાળેનદરા૦ગમાઊ્યોમ પર અવ઼સ્ય પઠાવી।

વ઼રચએહઅ ઘઅહ્દ્યામચઢ઼અ થહઅપ્પઉઢ઼ સાદિ઼

અન્ત્ત્ળાઉપર વ્ઉૈકમેઊિગ વ઼િત્દ્ય ગૂગઉ, ચટ્િગળગત આ વ્ઉગગવ઼ાનીકૈં સૂચિત કરૂ, સારવર ક્રારમ આ વ્ઉૈકમેઊિગ નોકવા ઉ૭ સેહો ઢર નાસ પ્રાવ઼ચાળ છૈ, વ઼શિષ ળાણકારી ગગાળેનદરા૦ગમાઊ્યોમ પર સમ્પર્ક કરૂ। અહાઁસઁ પત્રકાર, ન્યૂળપેપર, પત્રકિા આ હિન્દીક ગામ્રમાન્ય ઉપ્પકગામ્ પ્રોસ્ેસર વ઼શ્િવ઼વિદ્યાઉય આદિકેં એહિ ઘટનાસઁ સૂચિત કરેવાક અનુરોધ અછિ। વ઼શિષ ળાણકારી ઉવાક આ દેવાક ઉ૭ ગગાળેનદરા૦ગમાઊ્યોમ પર સૂચિત કરૂ।

ઢ઼પઉ્ય ૦્૧૨દ્૨૦૧૦ ।ત ૦૧:૫૬ આમ

२

વ઼રચએહઅ ઘઅહ્દ્યામચઢ઼અ થહઅપ્પઉઢ઼ સાદિ઼

યુ્ા માય઼ ।ઉસો વનુગહત તહસિ પસિોદે વેઠેને સાનળાય઼૦ળાગરાન્યોમ

થહાનકસ ગોદેરસ્

ઢ઼પઉ્ય ૦્૧૨દ્૨૦૧૦ ।ત ૧૨:૨૫ આમ

३

વ઼રચએહઅ ઘઅહ્દ્યામચઢ઼અ થહઅપ્પઉઢ઼ સાદિ઼

ઞુત તહસિ તમિ હે હાસ ળોત્ુ સેદ હસિ ળામે ।સ માતિહઉ, મતિહઊ ॥

સુવોદ્દક્કાણન વુન ।સ શ્ગાણકાળ શ્ગાનાસહાન પપાનાસહાનળણુંગામાહિ઼યોમ

ઢ઼પ૪ય઼ ૦્૧૨્૫૨૦૧૦ ।ન ૦૮:૪૮ શ્ગમ

૪

વ઼૨યએ૯શ્ન ઘશ્નદ્એમયઢ઼શ્ન થ૯શ્નપ્પ૩ઢ઼ સાદિ઼

થ૬ે સામે વ૭ાયકમાહિ ૭નોન હાસ વેન સેણન વય઼ ન૬ે વ૭ાયકમાહિન નો મયે઼ માહિ ।દદનેસસૌહિયિ૯ હાસ વેન સપામમેદ ન૯નુગા૯ ૨૫શ્ગ ૨૫શ્ગ ।દદનેસસ ૨૨૦઼૨૨૭઼૧૬઼૩૧૦૫ , ૧૬઼૪૧૦૦઼૮૩ ॥ ૨૨૦઼૨૨૭઼૧૭઼૪૨૪૩ ।ણદ હાસ વેન ૭ોનૌાનદેદ ૭ોન નાકનિગા શ્ગોહિયિ ।યનાીન મિમેદાનિ૭ય઼

ઢ઼પ૪ય઼ ૦્૧૨્૫૨૦૧૦ ।ન ૦૮:૪૫ શ્ગમ

૫

વ઼૨યએ૯શ્ન ઘશ્નદ્એમયઢ઼શ્ન થ૯શ્નપ્પ૩ઢ઼ સાદિ઼

શ્ગનો૭સસોન પ્પે૭૭ેન હાસ નહાણકેદ મે ૭ોન ન૯સિ દેનોયનવિ઼ૌનક, વુન નિ ।૭૭ યુ઼ોને ૭૭ોનનસ દોન નોદેન઼

ઢ઼પ૪ય઼ ૦્૧૨્૫૨૦૧૦ ।ન ૦૮:૨૧ શ્ગમ

૬

વ઼૨યએ૯શ્ન ઘશ્નદ્એમયઢ઼શ્ન થ૯શ્નપ્પ૩ઢ઼ સાદિ઼

પાહા૭=- ૮૬, ।।નામવ૯ - ૨૩ ॥ ।ુણકામા૭ાક ણાયે઼ હિાકે મે કા સામવાણદ૯નિ પનાસિહનહા પાન૬ેવાક ૭૭ દહાણયાવાદ પાનહાકગાણ઼

ઢ઼પ૭ય઼ ૦્૧૨૫્૨૦૧૦ ।ռ ૦૮:૧૬ શ્ઙમ

૭

વ઼રયએ૯શ્ર ઘશ્રહ્એπયઢ઼શ્ર થ૯શ્રપ્પ૩ઢ઼ સાદ઼્િ

૬ાռપ઼્ૌીાગાસેસ્િુયઌ઼ૄુયાેાસેસે઼દરપરૂ઼ાૌયપ્પ઼િાિ૦૭૭઼૬ાઽમ `૬િ ૭િાક પાન દુાગા૭ાસ કેઽ૭૭ેાન કે ૭કહાક ।ણુવ઼ાદ પાહા૭-૮૬ કે પાગ૦ ૧૨૫-૧૩૧ પાન ।યહ૬િ- સૌયહ્ણાક ૭૭ દહાણયાદ પાռહાકગાણ઼

ઢ઼પ૭ય઼ ૦્૧૨૪્૨૦૧૦ ।ռ ૦૮:૧૬ શ્ઙમ

૮

વ઼રયએ૯શ્ર ઘશ્રહ્એπયઢ઼શ્ર થ૯શ્રપ્પ૩ઢ઼ સાદ઼્િ

`૬િ ગાહાռણાકનામ મે કોણો પાռહાક ૭ાગા ળે શ્રનુણ પ્પામા૭ ળકિ કાવ઼ાિ "πાયે઼ ૨૭ાકે મે" હોિિ૬ ॥ શ્રાનામવ૬ (।ણક ૨૩, માિહિ૭િ માગાળિ઼ે દિાિન ષ઼૬ ઢ઼ાળમોહાણ દ્હા (માનય૬ ૨૦૦૦) મે પનાકાસહસિռ માિહિ૭િ કાવ઼ાિ "ષાણળ૬ હોિ ઘામ મે" ռ કનપિયા ગાગાળેણદનાઙાગામાિ઼઼યોમ પાન સૌયહિ કાનાռહ્િ- યહાણયાવ઼ાદ઼

ઢ઼પ૭ય઼ ૦્૧૨૪્૨૦૧૦ ।ռ ૦૮:૦૨ શ્ઙમ

૯

વ઼રયએ૯શ્ર ઘશ્રહ્એπયઢ઼શ્ર થ૯શ્રપ્પ૩ઢ઼ સાદ઼્િ

`૬િ ગાહાռણાકનામ મે વાહુ઼ણ નાસ ।।ન ળાણકાનાિ।। દહેન નાસ સામાનռહાણ દેવાક ૭૭ દહાણયાવ઼ાદ પાռહાકગાણ઼

ઢ઼પ૭ય઼ ૦્૧૨૩્૨૦૧૦ ।ռ ૧૧:૪૦ શ્ઙમ

૧૦

વ઼રચયિત્રી ઘશ્રદ્દ્યાયઢ઼શ્ર થત્શ્રપ્પઉઢ઼ સાદિ઼

વ઼દિત્ક પાઠકક સૂચણાક વાદ ૬ પઠ઼ા યઊઊ શ્રછિ (શ્રા શ્રોકર સત્પ્રાપન કએઊ ગેઊ) ળે એર્હ ઊપ્પકક ૬ એર્હ તિરત્ક પત્તિ ક□ત્પ્ર ણર્હ શ્રછિ। ૬ ઊપ્પક પત્તિ સેહો ચોગાઊાસ ખેઊઊેર ક થેચત્ણોપોઊતિચિસ ક પંક્તાશિઃ શ્રણુવ઼ાદ મૂઊ ઊપ્પકક ગ઼ૂપમે ણામસઁ ળ્સાણરંળણક ત્તિન્દિ઼ પત્રકિા "પત્ઊ"મે ચોપ્પાસઁ છપવશ્રોઊક, પ્રદીપ વહિારીક વેટા પ્રામવ઼ વહિારીસઁ શ્રણુવ઼ાદ કરવેઊક શ્રા કત્ઊકૈ ળે શ્રણુવ઼ાદ છપવા દેવ મુદા શ્રપણા ણામસઁ છપવા ઊઊક, પ્રામવ઼કેઁ કત્ઊકૈ ળે શ્રણુવ઼ાદ રાળિક્ટ ગ઼ડ ગેઊ શ્રા સ્ટેર ત્હેરા ગેઊ। તકર પઠ઼ા યઊઊાક વાદ "પત્ઊ"મે એર્હ ઊપ્પકક રચણાક પ્રકાશન વન્દ ગ઼ડ ગેઊ। એર્હ સમ્વન્ધમે વ઼સ્તિ□ત શ્રાઊપ્પ વ઼દિત્ક શ્રગાઊ શ્રંકક સમ્પાદકીય઼મે દેઊ ળાએત।

ર઼એર્હ સિગ઼ ઘટણાક વાદ પંકળ પરાશરકેઁ વ઼દિત્સઁ વૈર કએઊ ળા રત્ઊ શ્રછિ। વ઼દિત્ શ્રાત્કારવ઼સઁ "વ઼ઊમ્વતિ કરક પુગમે ણવિદ્ય" પોથીકેઁ ત્ટાશ્રોઊ ળા રત્ઊ શ્રછિ શ્રા એકટા રણક્વ઼ાય઼રી દ્વ઼ારા એર્હ પોથીક (ડગાઊસ કેઊણર વઊ ઘટણાક્રમક વાદ) ળાઁચ કછુિ ચુણઊ ઊપ્પક-પાઠક દ્વ઼ારા કએઊ ળએવા ચરાિ રત્ત। પ્રકાશકકેઁ સેહો ઉચતિ પુઊસિયિા કાર્ય઼વાહી (ય઼દિ શ્રાવ઼શ્ય઼ક હુશ્રએ તઁ) ઊઊ એર્હ સિમસ્ત ઘટણાક્રમક સૂચણા દડ દેઊ ગેઊ શ્રછિ।

ઙ઼પાઠક ડગાઊસ કેઊણરસઁ ૬-મેઊ કેઊઊેર૦ગાસેસ્તુિચઊ઼ે પર "પત્ઊ" પત્રકિા વ઼ા તકર સમ્પાદક શ્રી ળ્સાણરંળણસઁ ‍દ઼િતોપાહાઊ૦ગામાહ઼િયોમ□ ‍દપાહાઊળવપ૦યાહોિયોિ વ઼ા નિડો૦દેસહ્કાાઊ઼યોમ પર શ્રા દૈણકિ ળાગરામસઁ ણસિહિકાિણત૦ળાગરાણ઼યોમ□ ગેસપોણસે૦ળાગરાણ઼યોમ□ માઊિવોશ૦ળાગરાણ઼યોમ□ દેઊહિ૦ણિદ્દ઼ાળાગરાણ઼યોમ પર સમ્પર્ક કએ વ઼સ્તિ□ત ળાણકારી ઊડ સકૈત છથિ। ડગાઊસ કેઊણરક શ્રાત્ટકિઊ ગૂગઊ સત્યપર તેચત્ણોપોઊતિચિસ ટાઇપ કએ તાકિ સિકૈ છી શ્રા પઢ઼િ

સકૈ છી। પ૯૭ પત્નાકિાક ઙ઼ેવસાર્ઽ ૌૌદેસહ્કા઼૭યોમ પના સેહે પ૯૭ પત્નાકિાક પુનાળ શ્રંક સજા શ્રાસ્તે-શ્રાસ્તે દેવાક પ્નાનમ્જા જે૭ શ્રછી।

વ઼સ્તિ□ત ળાળકાનીક ૭૭ સુચી પાઽકગામ શ્રહઁાક યત્પ઼વાદ। જાવ઼ષ્પિ઼મે સેહે એહિ ઘટનાક પુનનાવ઼□ત્ત નિહિ હુશ્રપ તાહિ ૭૭ શ્રહઁાક પાનપ્પી નળાનકિ શ્રાસ શ્રાગઁા સેહે નહ્ત। એહિ તાનહ્ક કોનો ઘટનાક ળાળકાની હ્મના ૬-પત્ના ગગાળેનદનાગામાિ઼૭યોમ પના શ્રવ઼સ્ય઼ પઽાવી।

ઢ઼પ૭ળ઼ ૦૧૨૨૨૦૧૦ ।ત ૧૨:૦૩ શ્રમ

૧૧

વ઼રચપહ્શ્ર ઘશ્રહ્પ઼ામયઢ઼શ્ર થહ્શ્રપ્પઉઢ઼ સાદિ઼

ૃોત ોઙ તહ્સે તહ્ને ।દદનેસસેસ ોઙ તહે સપામમેના઼ે પિકળપપ઼ચ્યાહ્યો઼યોનિ, પપાનાસહ્નાળળુગામાિ઼૭યોમ ।નદ પકળપપસતેનગામાિ઼૭યોમ તહે ।દદનેસસ પકળપપ઼ચ્યાહ્યો઼યોનિ, સિ ઙાિસ વ઼નાઙિયિાતાનિ તેસત ।નદ ।દદનેસસેસ પપાનાસહ્નાળળુગામાિ઼૭યોમ ।નદ પકળપપસતેનગામાિ઼૭યોમ સતાનદસ વ઼નાઙિદિ ।નદ ચોનઙમિ઼ેદ઼

ઢ઼પ૭ળ઼ ૦૧૨૧૨૦૧૦ ।ત ૧૦:૦૦ શ્રમ

૧૨

વ઼રચપહ્શ્ર ઘશ્રહ્પ઼ામયઢ઼શ્ર થહ્શ્રપ્પઉઢ઼ સાદિ઼

તહે હ્તપપસ હેસત માતયહ્સ નેિ૭ાનિયે ચોમમુનિયિાતાનિસ ।નદ તહે ચોનનેસપોનદનિગ ેમાિ૭ ગામગહ્ના ।ત ગમાિ૭ દોત ચોમ ।નદ માતિહ્૭ાનમાતિહ્૭ ।ત ગમાિ૭ દોત ચોમ સિ ઙાકે દિસ નેિાતેદૌતિહ તહે ।યતા૭ સપામમેનાસ દિ ઼ેપિકળપપ઼ચ્યાહ્યો઼યોનિ, પપાનાસહ્નાળળુગામાિ઼૭યોમ ।નદ

પક્ળપપસોેન૦ગમાિ્યોમ

ઢ઼પθય઼ ૦્૧૨્૧૨૦૧૦ ।ί ૦૮:૫૦ શ્રમ

૧૩

વ઼રયએહશ્ર ઘશ્રહ્એમયઢ઼શ્ર થહશ્રપ્પઉઢ઼ સાદિ઼

થહે ોઙઙયિ પોમસિ હાસ વેન θયાોદ, ίહે વθાયકમાિ૭ોનૌનકસ નિ યાનિકિ હાગાનાન, શ્નોયેસસ ίો ઙθિ યોમપθાનિί ાગાનિસί છયવેન છનમિ શ્રયί સિ વેનિગા નિનિાિોદ ાનદ ίહે ોનગાનસિાાિનિ વેનિગા ίાકેન નિίો યોનઙદિનયે઼

ઢ઼પθય઼ ૦્૧૨્૧૨૦૧૦ ।ί ૦૬:૧૩ શ્રમ

૧૪

વ઼રયએહશ્ર ઘશ્રહ્એમયઢ઼શ્ર થહશ્રપ્પઉઢ઼ સાદિ઼

માίહθ, મίહθ ॥ સુવોદહકાનί નામ સે ાવહાદના ॥ વθાયકમાθ કાનાય઼ વાθ વθાયકમાિ૭ોન કે યહેનહિ θθ ગોθ ાયહહિ, રયશ્ર ાદદોસસ ૨૨૦૨૨૭૧૬૩૧૦૫ , ૧૬૪૧૦૦૮૩ ॥ ૨૨૦૨૨૭૧૭૪૨૪૩ ॥ વાન કાયાθ ળા નાહાθ ાયહહિ, ાગાન ોહિ ોનગાનસિાાિનિ સે સેહો સામપાનક કાયાθ ળાાયાί ળાίાય઼ સૈ માθ ાયાθ ાયહહિ

ઢ઼પθય઼ ૦્૧૧૮્૨૦૧૦ ।ί ૧૧:૧૮ શ્રમ

૧૫

વ઼રયએહશ્ર ઘશ્રહ્એમયઢ઼શ્ર થહશ્રપ્પઉઢ઼ સાદિ઼

યોમમેનί મોદેનાίાનિ θાગો કાયાθ ળા નાહાθ ાયહહિ

ઢ઼પθય઼ ૦્૧૧૮્૨૦૧૦ ।ί ૦૮:૨૭ શ્રમ

૧૬

સુવોયકાંત સાદિ્

શ્રવિાિશકેઁ સેહો ૨૨૦૨૨૭૧૭૪૨૪૩ શ્રાર્ઇસ્પીસઁ એહિ પ્રકાશક ૬-પત્ર શ્રવૈત નૈ મુદ્દા શ્રો મામિલા ધ્યાન કસ દેને નહ્થિ। શ્રો ટપ્પિણી સભ એોક ઘ□ણ્ટિ છૈક ગૈયો એતએ દેલ ળા નહલ શ્રછિ।

પંકળ પરાશર ૩ત્સ્ફ્ડગાલસ કેલનર ૩ત્સ્ફ શ્રનુણ્ણ કમલ ૩ત્સ્ફ

ડગાલસ કેલનરક નીચાઁક શ્રાલ્યકક પંકળ પરાશર દ્વારા ચોર્િ સદ્દિય કએલક ળે એક દશક પહિ એહિ લ્યક દ્વારા શ્રનુણ્ણ કમલક ચોરિ સઁ શ્રાર ચર્િ હુનકામે કોનો તરહક પરિવિત્તન નહિ શ્રાએલ છન્હિ। હઁ, શ્રાવ શ્રો પટના વશ્વિદ્યાલયક પ્રોસ્ફેસરક નચના ચોમેવાસઁ શ્રાગાઁ વઢ઼િ ગેલ છથિ શ્રા કૈલશ્ફોર્નિયા વ્વિકિ પ્રોસ્ફેસરક નચના ચોરાવએ લાગલ છથિ। એહિ સન્દર્ભમે હમરા એકટા ધ્યસિ્સા મોન પડૈત શ્રછિ। ૨૦□૨૨ વર્ષ પુરાન સત્ય કથા। દરભંગામે નૈત નહિ, છતપર હમ શ્રા હમર એકટા પસિચિત ભાર સાઁઝમે ઠાઢ઼ નહિ। સોઝાઁમે સરવળીક ઘરક વાશ્રડીમે ધ્યૂવ લતામ શ્ફડ઼લ છલન્હિ। હમર પસિચિત ભાર હુનકા રશારા દS કહલધ્યન્હિ ળે દસ ટા લતામ શ્રાનૂ। શ્રો વેચારે દસટા લતામ તોડ઼લન્હિ શ્રા શ્રાવિ નહલ છલાહ શ્રાકરિ નસ્તામે હમસભ દેધ્યલહુઁ ળે એકટા છોટ વચ્ચા સંગ હુનકા કછ્છુ ગપ ભેલન્હિ શ્રા શ્રો પાઁચટા લતામ શ્રોહિ વચ્ચાકેઁ દS દેલધ્યન્હિ। ળધ્યન સરવન ળી શ્રએલાહ તઁ કહલન્હિ ળે શ્રો વચ્ચા હુનકા ભૈયા કહિ સમ્વોધિત કએલકન્હિ શ્રા પાઁચટા લતામ મઁગલકન્હિ- સે કોના નર્ઝ દિતિયિક- સરવળીક કહવ છલન્હિ। શ્રાવ પંકળ પરાશર પ્રસંગમે કો ભેલ સે દેધ્યો। પ્રદીપ વહિારીળીક વેટા પ્રણ્ણવકેઁ પંકળ પરાશર નોમ ચોમ્સ્કો શ્રા ડગાલસ કેલનરક નચના દૈત છથિન્હ શ્રા તકર શ્રનુવ્ાદ કરવા લેલ કહૈ છથિન્હ। વેચારા ળાન લગા કS શ્રનુવ્ાદ કS દૈત છન્હિ, ૬ સોચિ ળે ળનિકા શ્રો ચચ્ચા કહૈ છથિ- ળે ક્રાન્તિકારી વચિારક છથિ (માર્ક્સવાદી!!!) સે કોનો નીક પત્રિકામે ૬ શ્રનુવ્ાદ છપવા

દેથન્હિ। મુદા છહ માસક વાદ યય્યાળી કહૈ છથન્હિ ળે ણોમ યોમ્સ્કી વઊ ૧યણા હેમા ગેઊ શ્રા ઙગઊસ કેઊણ૧ વઊ ૧યણાક શ્રનુવાદ ણર્ગ ણીક ૧હ્ય સે ૧ળિક્ટ ઞS ગેઊ। મુદા ક્નાણ્ણકિાની કવ઼િ (યોનુક્કા સેહે વ઼ર્વિ૧ાm ણીયાઁમે શ્રછ઼િ) દુનૂ ૧યણા પહઊ પણ્૧કિામે પડા દૈ છથિ પહઊ૮દ્દ મે ઙગઊસ કેઊણ૧ વઊ ૧યણા છપિણિ છણ્હિ (શ્રા સે શ્રનુવ઼ાદક નૂપમે ણહિ વ઼૧ન્ મૂઊ ઊપ્પકક નૂપમે) શ્રા શ્રો વૈણ સેહે કS દેઊ ળાર છથિ। હ્મ૧ સ૧વ઼ણ ળી એકટા વય્યા દ્વ઼ા૧ા મૈયા કહઊપ૧ પાઁયટા ઊણામ શ્રોક૧ા દS દૈ છથન્હિ મુદા હ્મ૧ પ૧ાશ૧ળી ઞાણળિક પાઁયટા ઊણામ ણપ્િઊળ્ળણાસઁ છીણિ ઊિણ છથિ।

શ્રા હ્મ હુણક૧ પ્પળિવીણ ણપ્પણ કૈ છી ળપ્પણ શ્રો વ઼દિહ્મે શ્રારઙેન્ટિટ વદઊિ હ્મ૧ા ગાણિ પઢ઼ૈણ છથિ- હુણક૧ ૧પ઼િઊ શ્રારઙેન્ટીટી ણાછટ કૈ છી। શ્વે૧ સઞાસઁ ગપ કૈ છી શ્રા પાઙકક સહ્યોગાસઁ શ્રા૧મ્ઞ, પહઊ ક પુ૧ાણ શ્રંક ઞેટિ ળારણ શ્રછ઼િ ળિણએ હણિક૧ કુક□ણ્ય઼ છણ્હિ।।

ય઼ુગાઊાસ પ્પેઊઊને૧

શ્રહઊિસોપહ્ય઼ ોઙ એદુયાણિિ છહાિ

ષોયાિઊ ષયેણિયેસ ાણદ છોમપા૧ાણિવ઼િ એદુયાણિિ

ઙણવ઼િ૧સાણિય઼ ોઙ છાઊઙિો૧ણાિ- ઙ઼ોસ શ્રણગોઊસ, ઞોશ ૮૫૧૫૨૧, ૩૦૨૨૪ મીોપે હાઊઊ, ઙ઼ોસ શ્રણગોઊસ, છશ્ર ૮૦૦૮૫-૧૫૨૧, ઢાશ ૩૧૦ ૨૦૬ ૬૨૮૩

શ્રહોને ૩૧૦ ૮૨૫ ૦૮૭૭, હણણપ઼ીોગાસેસિુયઊ઼દુઙાયુઊણ્ય઼કેઊઊને૧્કેઊઊને૧઼હણમઊ

રણણેઊઊેયણુાઊસ, ણહે મોૌ શ્રુવઊયિ ષપહેપેસ, ાણદ થેયહણી- શ્રોઊણિયિસ

થહે યાણેગો૧ય઼ ોઙ ણહે ણિણેઊઊેયણુાઊ, ઊકિે વ઼ે૧ય઼ણહણિગો ઊસે ણહેસે દાય઼સ, સિ હિગાહઊય઼ યોણણેસણેદ ાણદ્ પ ઙો૧ ગ૧ાવસ઼ ઞય઼ગમુણણ ઞુમાણ યોણણ૧ાસણસ ણિણેઊઊેયણુાઊસ ાસ ઊગાસિઊાણો૧સ ોહે ોસિહેદ ણો ઊગાસિઊાણ્ુ ણવ઼િ૧સાઊ

વ઼ાઉસ, ુસુાઙઙયૃ ાિ તહે સેનવ઼યિ ોડ સતાતે ાિસતાુિતાિાિસ, ાૈતિહ ાિતેઙઙેયતુાઙસ ાસ ાિતેનપનેતેનસ, ાૈહો મેનેઙયૃ ાિતેનપનેત તેશાતસ, પુવઙયિ વ઼ેતાતસ, ાનદ ોતહેન ાનતાિાયતાસ, દેપઙેયૃાિગા તહેાિ સપેયાિઙાિદ કનોૈઙદગે તો શપઙાિ ોન ાિતેનપનેત તહાિગાસ ડોન પુવઙયિસ (૧૯૮૭; ૧૯૮૮) હે તહુસ યઙાિમિસ તહાત તહેને સિ । સહાિત ડોમ મોદેનન ાિતેઙઙેયતુાઙસ ાસ ઙગાસિઙાતોનસ ોડુ નવ઼ાિનસાઙ વ઼ાઉસ ાૈહો ઙગાિતાિમાતેદ તહે નેૌ મોદેનન સોયાિઙ ોનદેન તો પોસતમોદેનન ાિતેઙઙેયતુાઙસ ાસ ાિતેનપનેતેનસ ોડ સોયાિઙ મોનાિગાસ, ાનદ તહુસ તહેાોનાિસ । દેપોઙાિતાિયાિઙાિાિતાિ ોડ તહે નોઙ ોડ ાિતેઙઙેયતુાઙસ ાિ સોયાિઙ ઙડિ઼

અનુપ કમઙ

અનુન ઙવ઼ાિસ ાિ શાતનાૈહેને હે તાયહેસ એનગાઙસિહ ાત તહે ષયોનાિયે છોઙેગોડ શાતના ડનવ઼ાિનસાિતયૃ

નए इलाके में

જहाँ रोज बन रहे नये नये मकान

मैं अक्सर रास्ता भूल जाता हूँ

खोजता हूँ ताकता पीपल का पेड़

खोजता हूँ ढहा हुआ घर

और ज़मीन का खाली टुकड़ा जहाँ से बायें

मुड़ना था मुझे

अब दो मकान बाद बिना रंग वाले लोहे के फाटक का

घर था एकमंजिला

𑒔𑒪 𑒠𑒹𑒞𑒰 𑒯𑒴𑒿

𑒨𑒰 𑒠𑒼 𑒒𑒩 𑒂𑒑𑒹 𑒙𑒏𑒧𑒏𑒰𑒞𑒰

𑒩𑒼𑒖 𑒏𑒳𑒕 𑒒𑒙 𑒩𑒯𑒰 𑒯𑒻

𑒨𑒯𑒰𑒿 𑒮𑓂𑒧□𑒞𑒱 𑒏𑒰 𑒦𑒩𑒼𑒮𑒰 𑒢𑒯𑒲𑓀

𑒋𑒏 𑒯𑒲 𑒠𑒱𑒢 𑒧𑒹𑓀 𑒣𑒳𑒩𑒰𑒢𑒲 𑒣𑒛𑓃 𑒖𑒰𑒞𑒲 𑒯𑒻 𑒠𑒳𑒢𑒱𑒨𑒰

𑒖𑒻𑒮𑒹 𑒫𑒮𑓀𑒞 𑒏𑒰 𑒑𑒨𑒰 𑒣𑒞𑒗𑒛𑓃 𑒏𑒼 𑒪𑒻𑒙𑒰 𑒯𑒴𑒿

𑒖𑒻𑒮𑒹 𑒫𑒻𑒬𑒰𑒐 𑒏𑒰 𑒑𑒨𑒰 𑒦𑒰𑒠𑒼 𑒏𑒼 𑒪𑒻𑒙𑒰 𑒯𑒴𑒿

𑒎𑒩 𑒣𑒴𑒕𑒼 -

𑒏𑓂𑒨𑒰 𑒨𑒯𑒲 𑒯𑒻 𑒫𑒼 𑒒𑒩?

𑒂 𑒔𑒪𑒰 𑒣𑒰𑒢𑒲 𑒜𑒯𑒰 𑒂 𑒩𑒯𑒰 𑒁𑒏𑒰𑒮

𑒬𑒰𑒨𑒠 𑒣𑒳𑒏𑒰𑒩 𑒪𑒹 𑒏𑒼𑒃 𑒣𑒯𑒔𑒰𑒢𑒰 𑒆𑒣𑒩 𑒮𑒹 𑒠𑒹𑒐 𑒏𑒩

𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒦𑒰𑒭𑒰-𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒏𑒹 𑒣𑒰𑒚𑒏 𑒂 𑒪𑒹𑒐𑒏 𑒥𑒢𑓂𑒡𑒳 𑒏𑒻𑒿 𑒏𑒲 𑒋𑒯𑒱 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒢 𑒮𑒥𑒢𑓂𑒡𑒏 𑒅𑒞𑓂𑒞𑒩 𑒁𑒫𑒬𑓂𑒨 𑒖𑒰𑒢𑒫𑒰𑒏 𑒔𑒰𑒯𑒲। 𑒣𑓀𑒏𑒖 𑒗𑒰 𑒣𑒩𑒰𑒬𑒩 𑒅𑒩𑓂𑒤 𑒣𑓀𑒏𑒖 𑒣𑒩𑒰𑒬𑒩 𑒅𑒩𑓂𑒤 𑒁𑒢𑒳𑒣𑒧 𑒏𑒧𑒪 𑒅𑒩𑓂𑒤 𑒛𑒰𑒑𑒪𑒮 𑒏𑒹𑒥𑒱𑒢𑒩 𑒅𑒩𑓂𑒤 𑒅𑒠𑒨𑒏𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒅𑒩𑓂𑒤 [illegible] 𑓒𑓒𑓐𑓒𑓒𑓗𑓑𑓖𑓓𑓑𑓐𑓕 , 𑓑𑓖𑓔𑓑𑓐𑓐𑓘𑓓 , 𑓒𑓒𑓐𑓒𑓒𑓗𑓑𑓗𑓔𑓒𑓔𑓓 𑒅𑒩𑓂𑒤 𑒢𑒰𑒧𑒏 𑒋𑒯𑒱

व्यक्तिक बहुत रास कच्चा चिट्ठी –जेना एम.ए.मे प्रथम श्रेणीमे सर्वोच्च स्थान?? पत्रकारिताक कोर्स?? ई सभ नटवरलालक तरजपर!! जेएनयूक लड़कीसँ हिन्दी अनुवाद कराएब जे एहिसँ नोकरी भेटि जएतैक आ फेर तकरा अपना नामसँ छपवा लेब, प्रणवसँ डगलस केलरक आ नोम चोम्स्कीक अनुवाद करवाएब आ अपना नामसँ छपवा लेब, अरुण कमल, श्रीकान्त वर्मा, इलारानी सिंह, गजेन्द्र ठाकुर आदिक रचना चोरि करब। ई सभ लप्पक सभासँ हुनकर परिवारजनसँ कहै छन्हि जे अनुवाद लेल कथा-कविता दिअ आ फेर तकरा चोरा कऽ अपना नामसँ छपवा लैत अछि। हिन्दीमे बैन भेलाक बाद मैथिलीक सेवा! गौरीनाथकेँ पहिने गारि पढ़ै छन्हि आ फेर लिखित माफी माँगै अछि। पंकज झा प्रभाकर उर्फ पंकज प्रभाकर क ई हाल छै जे रमण कुमार सिंहकेँ ओकरापर कविता लिखै पड़ै छन्हि ककरासँ की चोरने छी जे अनिद्रा पैसि गेल? अविनाश कैँ गारि, श्रीधरम आ अनलकान्त कैँ गारि, रामदेव झा कैँ गारि, राजमोहन झा आ राजनन्दन लाल दास कैँ गारि, सुभाषचन्द्र यादव-केदार कानन- तारानन्द झा तरुण- प्रोफेसर महेन्द्र-रमेश सभकेँ गारि- मैथिली स्रजनामे रामदेव झाकेँ गारि पढ़ैत सहरसा चिट्ठी आ सहरसा सभक साहित्यकारकेँ गारि पढ़ैत रामदेव झाकेँ चिट्ठी, ई दुनू चिट्ठी संगे छपल!! चोरक सीना जोड़वाक एहिसँ नीक उदाहरण भेटब मोश्किल।

पंकज झा प्रभाकर उर्फ पंकज प्रभाकर उर्फ अरुण कमल उर्फ डगलस केलर उर्फ उदयकान्त उर्फ इषफ २२०२२७१६३१०५ □ १६४१००८३ □ २२०२२७१७४२४३ उर्फक यथार्थ। ~ आखिरी सफर पर निकलने तक ~ पुरस्कारोत्सुकी आत्माएँ ~ बऊ बाजार ~ मरण जल ~ रात्रि से रात्रि तक ~ साला सब हँसकर निकल जाता है अपुन को अकेला छोड़कर ~ हस्त चिह्न उर्फ स्वान रूप संसार है भूकन दे हमें मार उर्फ कुफ्र कुछ चाहिए की रौनक के लिए उर्फ गोयबल्स उर्फ कारेल चापेक उर्फ अपन कारी मुँह उर्फ मोहल्ला लाइव उर्फ पतुकान उर्फ उदय प्रकाश उर्फ पहल उर्फ रवि भूषण उर्फ नीला उर्फ वर्चुअल स्पेस।

पंकज पराशर उर्फ अनुराग कमल उर्फ डगलस केरनी उर्फ उदयकान्त उर्फ [illegible] २२०२२७१६३१०५ □ १६४१००८३ □ २२०२२७१७४२४३ उर्फ हिनकर नकलि आइडेन्टिटी हम नोट करै छी आ ई आब अभिशप्त छथि अपन शेष जीवन मिस्टर हाइड रहि अपन कुक□त्यक सजा भुगतबाक छनि।

एहि ब्लैकमेलरक ड□ जेकील आ मिस्टर हाइड बला चरित्र मैथिल सज्जनाक विरोधमे मैथिल-जन पत्रिकामे एक दशक पहिने उजागर भऽ गेल छल मुदा लोक हिनका पोसैत रहल।

आरम्भमे सेहो ई एकटा चर्चित मैथिलीक सम्पादकक विरोधमे देलन्हि जे छपल गेल आ ओकर घ□णित भाषाक कारण भाइ साहेब राजमोहन झाकेँ माफी माँगए पड़लन्हि आ तेँ ई मिस्टर हाइड सेहो ओहि सम्पादकसँ लिखितमे माफी मँगलन्हि।

एकटा आग्रह आ आह्वान: सुभेश कर्ण आ समस्त मैथिली-प्रेमी-गण- एहि मिस्टर हाइडक ब्लैकमेलिंग आ एब्युजक द्वारे अहाँ सभकेँ मैथिली छोड़ि कऽ जएबाक आवश्यकता नहि अछि, कारण पापक घैल भरि गेलाक बाद ई आब अभिशप्त छथि अपन शेष जीवन मिस्टर हाइड रहि अपन कुक□त्यक सजा भुगतबाक छनि।

जेएनयूमे छात्र-छात्रा सभसँ पोस्टकार्ड पर साइन लऽ ओहिपर अपन रचना लेल प्रशंसा-पत्र पठबैत घुमैत अपस्याँत कथित गोल्ड मेडलिस्ट(!!!)। पहिल कथा गोष्ठीमे जखन ई सहरसामे सभसँ पुछने रहथि जे साहित्यकार बनबासँ की-की सभ फाएदा छै तखन ई एकटा पाइ आ पुरस्कारक लेल अपस्याँत मैथिल युवा-पीढ़ीक प्रतिनिधित्व करै छथि, जे राजमोहन झा जीक शब्दमे मैथिलीसँ प्रेम नहि करैत अछि। ई मिस्टर हाइड सेहो ओहि सम्पादकसँ लिखितमे माफी मँगलन्हि आ जखन ओ माफ कऽ देलखिन्ह तखन तेँ हुनका गारि पढ़ब शुरु कऽ देलन्हि। हमरासँ लिखित मेल-माफी अस्वीकार भेलाक बाद मिस्टर हाइडक माथ नोचब स्वाभाविक।

जे सरकारी नोकरी वा इन्कम-टैक्स, कस्टममे ई ब्लैकमेलर रहितए तँ देश जूर बेचि दैतए।

पंकज पराशर उर्फ अमृत कमल उर्फ डगलस केलनर उर्फ उदयकान्त उर्फ ईषष्ठ २२०२२७१६३१०५ □ १६४१००८३ □ २२०२२७१७४२४३ उर्फ राजकमल चौधरीउर्फ

कतोक उर्फ एहि लुच्चक बनत नहि जानि राजकमल चौधरीक अप्रकाशित पद्य (आब विदेह मैथिली पद्य २००९□१० मे प्रकाशित पृ□३९- ४०) "बही-खाता"क एहि चुनतना, चोरि कए आ दंद-फंद करैत पंकज पराशरउर्फउर्फ [गौरीनाथ (अनलकान्त)क एहि चोर लुच्चक लेल प्रयुक्त शब्द- सम्पादकीय अंतिका अक्टूबर-दिसम्बर, २००९- जनवरी-मार्च, २०१०- पंकज पराशर प्रसंगमे-] द्वारा "हिसाब" नामसँ छपवाओल गेल- देखू

राजकमल चौधरी

बही-खाता

एहि खातापर हम घसैत छी

संसारक सबटा हिसाब

.

.

हमर सबटा अपराध, ज्ञानसँ लिखल पोतल

अछि एक्कर सबटा पाता

ई हम्मर ललवहि थिक जीवन-खाता

जीवन-खाता

पंकज पराशर तथा अरुण कमल तथा डगलस केलनर तथा उदयकान्त तथा [illegible] २२०२२७१६३१०५ , १६४१००८३ , २२०२२७१७४२४३ तथा राजकमल चौधरीतथा

द्वारा एकरा अपना नामसँ एहि तरहेँ चोराओल गेल

हिसाब

हिसाब कहिया देबौ ठेर पर

उताहुल भेल नहित अछि

किताब

जे बना जिनगी लगाबैत छथि

रार-रार के हिसाब-

दुनियाँ-जहान सँ अराक बनल

अंतत: बनि कऽ रहि जाइत छथि

हिसाबक किताब।

२००६

एहि लेखकक पौढ़ा कऽ अपशब्दक प्रयोग बन्न नहि भेल अछि आ ई नाम बदलि-बदलि एखनो एहि सभ कार्यमे लिप्त अछि, आब ई अपन चेला-चाटी सेहो बदलि लेने अछि। स्पष्ट अछि जे एकरा विरुद्ध कड़गर डेग उठाओल जएबाक आवश्यकता अछि। उपरका समस्त जानकारी अहाँ गूगल, चिट्ठा जगतकेँ दी से आग्रह आ तकरा नीचाँ ई-पत्रपर सेहो अग्रसारित करी सेहो अनुरोध।

વ્રયાપપોનિnમેનnસ૦ાુયનિ,
વ્રદપનાકાસ_ સ૦ય્રાહીયોનિ,
નાળવિસહુકઠા_ હનિદ૦ાયાહીયોનિ,
ાસહુnોસહ_ ૧૯૮૬દ૦યાહીયોનિ,
ાવદુઠાઠમિ_ દ૧૦ેદઙિઙમાઠિયોમ,
ઢામેસહહનિદ૦ાામાઠિયોમ

વસિાનાાિળાય૦ાામાઠિયોમ,
nાસનેમ્ષુહાઠિ૦ાામાઠિયોમ,
મેનાળહનિદ૦ાામાઠિયોમ,
ાસહટિવાઠુn૦યાહીનિ,
ઙુવાપિઙિાનાહ૦ાામાઠિયોમ,

<u>પંકળ પનાશન ૩ન્શ્ર શ્નુાા કમઠ ૩ન્શ્ર ઙાાઠસ કેઠનન ૩ન્શ્ર ૩દયુકાણn ૩ન્શ્ર ૨૫શ્ર ૨૨૦૨૨૭૧૬૩૧૦૫ [] ૧૬૪૧૦૦૮૩ [] ૨૨૦૨૨૭૧૭૪૨૪૩ ૩ન્શ્ર</u>

યશ્રૌ શ્રો૩ ધ્યાાશ્રોશ્રૌ "ઢાકે ષાહnિયાકાન" શ્રશ્રાાપ્યશ્રદ્ ધ્ય૩મશ્રઢ હૃહશ્ર શ્રઙ઼૨શ્રષ શ્રશ્રાાપ્યશ્રદ્ શ્રશ્રઢ઼શ્રષહશ્રઢ઼યશ્રૌ શ્રો૩ ધ્યાાશ્રોશ્રૌ શ્રૌહશ્રથ થહ૨ષ ઢશ્રધ્યએ ઘશ્રોઙ઼ય મએયશ્રઙ઼૨ષથ ય૨ય શ્રથ વ્રશ્રષશ્રાાથ મશ્રહ૨ઙ઼શ્ર છશ્રોઙ઼ઙ઼એઘએ, ધ્યશ્રયશ્રમજાશ્રાા૨, યશ્ર૨ાા૨ધ્ય જાહશ્રષધ્યશ્રઢ શ્રાાય યશ્ર૨ાા૨ધ્ય હૃશ્રઘઢ઼શ્રાા ? યશ્રૌ શ્રો૩ ધ્યાાશ્રોશ્રૌ શ્રૌહશ્રથ હએ ય૨ય શ્રૌ૨થહ હ૨ષ ઢશ્રમ૨ઙૈ, ઢઢ઼૨ાાયષ શ્રાાય છશ્રોઙ઼ઙ઼એશ્રઘ૩એષ
ઢ઼એશ્રય nહે ઙોઠઠૌનિાા nો વેઠવિ િnહસિ મેનnાઠઠય્ર યોન્નુપn સહુોઠદ વે nેnોnેદ નિ nહે સામે માનનેન

પકળપપ૦યાહીયોનિ, પપાનાસહાનળનુ૦ાામાઠિયોમ ાnદ <u>પકળપપસnેન૦ાામાઠિયોમ</u> વેસદિસ ોnહેન ઙાકે માઠિસુ સેદ વય્ર શ્રાનકાળ શ્રાનાસહાનોn ૨૫શ્ર ***૨૨૦૨૨૭૧૭૪૨૪૩" પે હસિ ઠેઠ્રઠ***

શ્રહાં કે સૂચનાન્થ પડેને છો ળે પંકળ પહનિહે ૨ સવ કાળ કમૈn નહય્ર છઠેએ। -
ાાવ્રનિાાસહ

એહિ યોન ઉપ્પક પંકળ પનાસનક દમિાગી હાઉનકિ શ્રસઉી નૂપ એનS સેહો મેટન ળનએ શ્રો નામ વદઉ-વદઉ શ્રપન પુનના માઉકિક કમ્પ્યૂટનસઁ ઘ□મ્રાતિ પોસ્ટ કનૈ છઉ (સાબાન-શ્રવ઼ાનિાશ) ।

ષોનયહ છોમમેણનસ ૨૨૦.૨૨૭.૧૭૪.૨૪૩

- **શ્રઉઉ**
- શ્રેનદનિગ (૦)
- શ્રપપનોવ઼ેદ
- ષપામ (૦)

ષોનયહ છોમમેણનસ:

220.227.174.243 | Search Comments

Apply

Filter

	શ્રુનહોન	છોમમેણન	૬ન ઢેસપોનસે થો
☐	**નાનવ઼ળાિય** નાનવ઼ળાિય઼૦નેદડિડ઼યોમ ૨૨૦.૨૨૭.૧૭૪.૨૪૩	ષુવમનિતિેદ ોન ૨૦૦૮.૦૮.૦૨ ાન ૫:૦૭પમ ક્યૂઁ વે માદનયોદ, નંડી કો શ્રોઉદ ળસિકા ગુાનાવ઼સહાઉ શિહિસ હોગા વ઼હી શ્નેષ્ઠ કો વાન કનેગા ન માદનયોદ઼ ુ સાઉ શ્રાદવિ઼ાસી માદનયોદ ક્યા વાન કનેગા શ્નેષ્ઠ કો, સાઉ વ઼ાનમાાનુસહ શ્રપની શકઉ દેખ્યિ હૈ કતિની કુનૂપ ઉગાતી હૈ તેને સૂશ્રન સાથી શ્રવ઼ાનિાશ કો નાહ, માદનયોદ઼વહુનકના વંદ કન઼	૬ન ઢેસપોનસે થો
☐	**નાનવ઼ળાિય** નાનવ઼ળાિય઼૦નેદડિડ઼યોમ ૨૨૦.૨૨૭.૧૭૪.૨૪૩	ષુવમનિતિેદ ોન ૨૦૦૮.૦૮.૦૨ ાન ૫:૧૧પમ શ્રવે માદનયોદ ળાગદેસહસવાન યતુન્વ઼ેદી, ઉન્શ્ર નંડી કો શ્રોઉદ, માદયોદ કસિ ણાઉ મેં પૈદા હુશ્રા થા સવિ઼ાય શ્રાઉેયના શ્રોન વકયોદી કે તુહે કુછ શ્રાતા હૈ મકે ઉોડ઼કુછ કામ કન ળસિસે સવકા ભઉ હો માદનયોદ યા તો નયા નયા કંપ્યૂટન યઉના સીખ્યા હૈ યા શ્રપને વઉાત્કાની દોસ્ત ાવ઼નિાસહ કે સાથ મઉિકાન યુદાઈ કા યંયા યઉ નહા હૈ ૪સીઉપિ ૪ાના નૌ નહા હૈ માકે ઉોડ઼	ળનસત્ના કે વાને મેં શ્રન્યસત્યો સે વયો ૨૨૯

	શ્રુતોન	છોમ્મેન્ત	ઙ્ન ઢેસપોન્સે થો
	યાન્નુવાક સનૃષ વનિમસનવ્યાહોયોમ ૨૨૦૨૨૭૧૭૪૨૪૩	ષુવમતિતેદ ોન ૨૦૦૯૦૮૩૧ ાત ૩:૪૨૫મ જો આદમી હ્ન મ્નૂળ કી દવા જાનતે હો સમહ્તા હો, જાતિવાદ કે પંચે મેં હો ગલે-ગલે તક ડૂવા હો ઉસકા ક્યા શેષ કુછ વચા રહ ગયા હૈ ક્યા? ઐસે નંગે સચ્ચિાનો કો કમ સે કમ પ્નભાષ જોશી ઔન આલોક તોમન જૈસે સમ્માનિત ઔન વદ્વિાન પત્નકાન કી આલોચના કનને કા કોઈ નૈતિક અધિકાન નહીં હૈ। નશ્વન ઔન જહનવુદ્ધિ ભાષા સે ઇસ કથિત લેખક કી મંશા સમહ્રી જા સકતી હૈ।	આલોક તોમન જી, કહાં સે આતી હૈ યહ ભાષા? ૮૯
	યાન્નુવાક સનૃષ વનિમસનવ્યાહોયોમ ૨૨૦૨૨૭૧૭૪૨૪૩	ષુવમતિતેદ ોન ૨૦૦૯૦૮૨૯ ાત ૪:૫૯૫મ પ્નભાષ જી કી આલોચના સે યા આલોક તોમન કી આલોચના સે કુછ હાસલિ નહીં હોનેવાલા હૈ ઇસસે હિંદી સમાજ કા ક્યા ભલા હો નહા હૈ? ઇસ તનહ આનોપ-પ્નત્યાનોપ સે પાઠકો કા ક્યા લેના-દેના હૈ? વહસ કો એક મુકામ પન પહુંચાકન, આગલી યાત્ના પન નકિલ જાના ચાહિએ	કૌન હૈ યે મવાલિયોં કી ભાષા વોલને વાલા આલોક તોમન? ૨૧૯
	આનકાળ આનાસહોન પકળપપવ્યાહોયોનિ ૨૨૦૨૨૭૧૭૪૨૪૩	ષુવમતિતેદ ોન ૨૦૦૯૦૮૨૮ ાત ૬:૨૧૫મ મન્નુતુંજય, કલ લિખી મેની પ્નતકિ્નયિા કી અંતમિ પંક્તિયાં હૈ- હાં, એક તકનીકી વાત યહ હો સકતી હૈ કિ ઇન લોગોં કો સામાન્ય કોટે સે વહાલ કિયા ગયા હો। મૈંને યહ આશંકા જાહિન કી, કિ હો સકતા હૈ ઉનકી નયિુક્તિ સામાન્ય શ્નેણી મેં હુઈ હો, જસિકી કોઈ સૂચના મુહ્રે નહીં હૈ ઇસમેં ન તો કસિી કથિત પ્નાવલમ શવ્દ કા જકિ્ન કહીં હૈ ઔન ન મેને ચેતન યા અચેતન મેં વહ વાત હૈ, જો વ્યાખ્યા કી પોલિમિક્સ કે તહત આપ કન નહે હૈં। મનચાહી વ્યાખ્યા ઔન અનચાહી સલાહ સે વચના ચાહિએ ઇસ સંદર્ભ મેં અનાયાસ મનમાની વ્યાખ્યા કા વનિોધ કનતી સૂસન સૌંટેગ કી ૧૯૬૬ મેં પ્નકાશતિ પુસ્તક અગેનિસ્ત ઇન્તેનપ્નેતેશન ઍન્દ ઓધેન એસ્સાયસ કી યાદ આ ગઈ। ખુદા ખૈન કને	જેએનયૂ કા સચ : હોતા હૈ શવ્દ-ભેદ તમાશા મેને આગે ૧૯૯
	આનકાળ આનાસહોન પકળપપવ્યાહોયોનિ ૨૨૦૨૨૭૧૭૪૨૪૩	ષુવમતિતેદ ોન ૨૦૦૯૦૮૨૭ ાત ૬:૩૪૫મ વાકી સેંટન્સ ઔન સ્કૂલ કી સૂચનાઓં સે આધિકાનિક તૌન પન અપડેટ નહીં હૈ, ક્યોંકિ કૈંપસ ગએ હુએ મહીનોં ગુજન જાતે હૈં। પન ભાનતીય ભાષા કેંદ્ન સે તો વાકફિ હૂં સૂચી મેં દખિાયા ગયા હૈ કિ અનુસૂચતિ જાતિ સે એક ભી એસોશિએટ પ્નોફેસન નહીં હૈ, જવકિ પી-એચડી મેં મેને શોધ નદિેશક નહે ડૉ ગોવિંદ પ્નસાદ અનુસૂચતિ જાતિ સે હૈં ઔન વે વાકાયદા નીડન હૈં। દૂસની ઓન સૂચી મેં દખિાયા ગયા હૈ કિ એક ભી ઓવીસી અસસ્ટિંટ પ્નોફેસન નહીં હૈ, જવકિ તીસી કેંદ્ન મેં હમાને એક સાથી હૈં। મેના ખ્યાલ હૈ કિ ઐસે નામ ઔન ભી કઈ હૈ જો સૂચી કી તનુટિયોં કો સાફ-સાફ ઉજાગન કનતે હૈં। હાં, એક તકનીકી વાત યહ હો સકતી હૈ કિ ઇન લોગોં કો સામાન્ય કોટે સે વહાલ કિયા ગયા હો।	જેએનયૂ કા સચ : હોતા હૈ શવ્દ-ભેદ તમાશા મેને આગે ૧૯૯

	શ્રાહેન	છોમમેન્ત	ક્ન ઢેસપોન્સે થો
	ઢાડ્ડાન ળનિતિબ્યાહોયોમ ૨૨૦૨૨૭૧૭૪૨૪૩	ષુવમતિતેદ ોન ૨૦૦૮૦૮૨૫ ાત ૫:૩૫પમ યાન મામ૭ા વ્યક્તિગિત હોતા ળા નહ હૈ વહ્સ કહ઼ૅ સે કહ઼ૅ ળા નહી હૈ? વ્નાહ્મામો, હળ્ળામો, ઠાકુનો...યાની ળાતિવાદ હિ સત્ય હૈ ...મહળ યહી તો માનત કા સત્ય નહી હૈ	પ્નમાષ ળી કી મતિ ભ્નષ્ટ હો ગયી હૈ. શ્રાપ સવ નહ્મ કને ૫૩૦
	મયિહ૭ યહાનદાન યહાનદાનપ્સ૦ાામાહિયોમ ૨૨૦૨૨૭૧૭૪૨૪૩	ષુવમતિતેદ ોન ૨૦૦૮૦૮૨૦ ાત ૪:૧૮૫મ માઈ ૭ોગ, શ્રાપ સવ માને યા ના માને પનન્તુ ઙ્સ સત્ય કો શ્રાપ શ્રવ સ્વીકાન કને કી પ્નમાત ળોશી નામ કે વહ મહાન પત્નકાન-સંપાદક-યતિક શ્રવ પૂની તનહ સે સઠિયા ગએ હૈ। પૂન્વાગ્નહ સે ગ્નસતિ હોકન શ્રાળક૭ ઉનકા ઉળૂ૭-શ્ઠૂિ૭ ૭પ્પિના, કભી કિસી શ્રપ્પવાન શ્રૌન ઉનકે માઓફિ કો ટાનગેટ કન શ્રા૭ોયના કનના, કભી હાનપ્પંઙ કે એક શ્રપ્પવાન કે વાને મેં કસીદે ૭પ્પિના શ્રૌન શ્રવ શ્રપને મનુવાદી માદ્દે યેહ્ને કો સવકે સામને પેશ કન યન્યા મેં વને નહના ઙ્નકે સઠિયેપન કી નિશાની નહી હૈ તો ક્યા હૈ।	પ્નમાષળી કે વિયાન માનવતાવિનોધી હૈ ૩૦૦

Apply

મૈથિ૭ શ્રાન મથિલિ વ્૭□ગ મ□ઙેનેટન- ઊપનકા સૂયનાક શ્રતિરિક્ત યોનકિ નયના ળે હ્મ એકટા વ્૭□ગમેમે પકન૭ૈ તકન વાદ શ્રો પૂન્ત ૭ષ્પક એઙટિ કય શ્રોકના વદ઼સૂનત કવિતિક શક્૭ દ દે૭ક, સમ્પાદક હ્મન પ્નમાામ કે ઉના દે૭ક શ્રા શ્રપન ળાતિવાદી હેવાક શ્ઠેન પ્નમાામ દે૭ક શ્રા શ્રાવ વશીન વદ્ન કે એકટા કવિતા ળાતિવાદી ૭ોકનિ દ્વાના યોના કય શ્રપના નામ કનવાક સૂયના શ્રાય૭ શ્રછિ, શ્રો શ્રપન ગ૭તિ સ્વીકાનત વા શ્ઠેન શ્રપન નયના એઙટિ કનત દેપ્પા યાહિ હ્મ હાળિ હેયવ શ્રહંક સમક્ષ શીઘ્ન ળાતિવાદી સોય કે માનય ટા પનત મથિલિક વિકાસ ૭૭ ળાવશીન વદ્ન કે કવિતા ળાતિવાદી ૭ોકનિ દ્વાના યોના કય શ્રપના નામ કનવાક સૂયના શ્રાય૭ છ૭ શ્રા હ્મ કહ્ને નહિ ળે શ્રો શ્રપન ગ૭તિ સ્વીકાનત વા શ્ઠેન શ્રપન નયના એઙટિ કનત દેપ્પા યાહિ હ્મ હાળિ મે૭ છી શ્રહંક સમક્ષ, યોન મહાનાળક ટટકા નયનાપન યોન મહાનાળક મૌસેના માશ્ક કમેંટ શ્રાય૭ શ્રછિ ળાહિ સે ઙ સદ્દિષ મે૭ ળે શ્રો ઙ્શાના વુદ્દિ ગે૭ ળે શ્રોકનો યોનિ પકઙા ગે૭ૈક। એકને કહ્એ છૈ

યોન-યોન મૌસેના માશ। - મૈથિ૭ શ્રાન મથિલિ વ્૭□ગ સઁ પંકળ પનાશનકેં નિકા૭૭ ળા નહ૭ શ્રછિ। - મૈથિ૭ શ્રાન મથિલિ વ્૭□ગ મ□ઙેનેટન

ઢેયેનાઉય઼ ષોમે માનિહિઉ જનાહમિનિ ષામાળ શ્રોનગાનસિાનીનિ હાસ સનાનનેદ સેઉઉનિગ઼ા પનાઙિસ નિ નહે નામોઙૈ ાનાન (વ઼ાદિયાનાનહ મસિહના, મ્માગાનળુન) ાનદ પ્પિાન (પ્પાનયહનિાનહ હ્હા). થહેને હાસ વેન નનેનદ નેયેનાઉય઼ નો ગાનાનન નહેસે પનાઙિસ નો નહોસે નિનેઉઉયનુાઉ નહેઙિસ ોહો ાને વાસયિાઉઉય઼ ોપપોસેદ નો નહે દિોઉગ઼ાય઼' સ ોઙ પ્પિાન ાનદૈ ાનાન (મ્માગાનળુન) થહે યાસને વાસેદ ોનગાનસિાનીનિસ ાને કઉઉનિગ઼ા નહે સપનિનિ ોઙૈ ાનાનિળ ાનદ પ્પિાનળિ, નેયેનાઉય઼ નહે ઙનુદ શ્રાનકાળ હ્હા ાઉસિ શ્રાનકાળ પ્પુમાન હ્હા ાઉસિ શ્રાનકાળ શ્રાનાસહાન ાઉસિ યન઼ શ્રાનકાળ શ્રાનાસહાન) ોાસ સનાગે માનાગેદ નો ગેન નહસિ યાસનેસિન ોાનદ, થહે ઉયનુનેન ોઙ હનિદિ ાન શ્રઉગિાનહ મુસઉમિ ૩નાવિ઼નસાનિય઼, ળુસન ાપપોનિનેદ ાસ ાદહોય સનાઙઙ, ોઉઉ નોયહ નોૈ હોૈ નો ઉઙિન વ઼ેનવાનમિ ાનનયિઉસ ોઙ મ્મોાન છહોમસકય઼ ાનદ યોગાઉાસ પ્પેઉઉેન ાનદ પોમસ ોઙ ૨ઉઉાનાનિ ષનિગાહ઼ ઢ઼ાળકામાઉ છહુદહાનય઼ ઘાળેનદના થહાકુન ાનદ શ્રનુન પ્પામાઉ નો હસિ સનુદેનાનસ઼ હસિ ષામાય઼ કે ાકાનાનિ (સમય઼ કેઁ શ્રકાનૈન઼ સિ ઉઙિનેદ ઙનેમ માગાદહ ોઙ ષનાકિાનન વ઼ેનમા (શ્રીકાન઼ન વ઼ન઼મા- મગાય઼) ાનદ હસિ વ઼ઉમવાનિ પ્પાકિૈગ મે મ્મવિાદદહા (વ઼ઉમ઼વાનિ કર્ક યુ઼ગ મે નવિ઼દ્ય઼ સિ યોઉઉયનીનિ ોઙ પનિનેદ પોમસ ોઙ ૨ઉઉાનાનિ ષનિગાહ઼ ઢ઼ાળકામાઉ છહુદહાનય઼ ઘાળેનદના થહાકુન઼ ષનાકિાનન વ઼ેનમા ાનદ ોનહેનસ઼ર્ સંગ઼ાનહ ૨ઉાનાની સહિ, શ્રીકાન઼ન વ઼ન઼મા, ગાળેન઼દ઼ન ઠાકુન, નાળકમઉ યોયની શ્રાદિ કવ઼િકિ પંકળ પનાશન દ઼વ઼ાના યોનાએઉ નયનાક કાનામ્મ વેન કએ દેઉ ગેઉ। "નયના"પન઼ાકિાક કથનિ શ્રનાથિ સમ઼પાદકક નૂપમે પંકળ પનાશન દ઼વ઼ાના કવ઼િ-કહાનીકાન સબસૈં નયના સેહો મઁગાવાશ્રોઉ ગેઉ શ્રા નકના શ્રપના નામસૈં છપવાશ્રોઉ ગેઉ। ર્ છદ઼મ સાહનિ઼ય઼કાન પનાશન ગોન઼નાક (!!)પંકળ કુમાન હ્હા ૩ન઼શ્ર પંકળ પનાશન વ઼હુનો ઉપ્પકક શ્રપ઼નકાશનિ નયના શ્રનુવ઼ાદ કનવા ઉઉ સેહો ઉઉક શ્રા શ્રપના નામૈં છપવા ઉઉક। પાઙકક શ્રાગ઼નહપન શ્રાન઼કાર્વ઼મે ર્ નથ્ય઼ નાપ્પઉ ળા નહઉ શ્રછા। – **સમ઼પાદક, વ઼દિહ શ્રપન મંનવ઼્ય઼ે** દનિોનાિઉ઼સનાઙઙ઼વ઼ાદિહ઼ાઙ઼ગામાિઉ઼યોમ **પન પગ઼ાઉ઼।**

४ विदेह सूचना संपर्क अन्वेषण

૪ વ઼દિહ સૂયના સંપ઼ર્ક શ્રન્વ઼ેષામ્

<u>સૂયના</u>

યો નોન ળુદગૌ ાયહ દાય઼ વય઼ નહે હાનવ઼ેસન યુ઼ ગાપ વુન વય઼ નહે સેદસ નહાન યુ઼ પઊાનન઼

- ઢ઼ોવેનન ડ઼ુસિ ષનેવ઼ેનસોન

.

વ઼દિહાઃ માનિહઊિ ડ઼િનિનાનુને મોવ઼ેમેનન

વ઼દિહ઼ા હ઼ુનનાઊ (ઊનિક <u>ાાવ઼દિહ઼ાયો઼નિ</u>) સિ । મુઊાદિસિયપિઊનિાનય઼ ોનઊનિ ળુનનાઊ દેદયિાનેદ ના નહે પનોમોનાનિ ાનદ પનેસેનવ઼ાનાનિ ોડ નહે માનિહઊિ ઊાનગુાગો, ઊનિનાનુને ાનદ યુઊનુ઼ે શ્ન સિ । પઊાનડોનમ ડોન સયહોઊાનસ, ગેસોાનયહેનસ, ાૈનિનસ ાનદ પાનસ ના પુવઊસિહ નહેનિ ાાનકસ ાનદ સહાને નહેનિ કનાૈઊદગો ાવ઼ુન માનિહઊિ ઊાનગુાગો, ઊનિનાનુને, ાનદ યુઊનુ઼ે થહે

ળુનાહ સિ પુવહસિહેદ ોનહનિ ળો પનોમોળે ાનદ પનેસેનવે માળિહહિ હાન્ગુાગે ાનદ યુહળુ઼ે થહે ળુનાહ પુવહસિહેસ ાનળયિહેસ, નેસોાયહ પાપોસ, વોોક નેવૌીસ, ાનદ પોળાય઼ નિ માળિહહિ ાનદ એનગહસિહ હાન્ગુાગેસ઼ ૠળ ાહસો ડોળુેસ ળાનસહાળોિનસ ોડ હળિાાય઼ોાકસ ડનોમ ોળહો હાન્ગુાગેસ નિળો માળિહહિ઼ ૠળ સિ। પો- નેવૌીદ ળુનાહ, ોહયિહ મોનસ ળહાળ ાનળયિહેસ ાનદ પાપોસ ાે નેવૌીદ વયે઼ શપોળસ નિ ળહે ડેહિદ વેડોે ળહેય઼ ાે ાયયેપળેદ ડોા પુવહયિાળોિ઼

૧

"વ઼િદેહક ળીવ઼ાળિ સાહિત્ય઼કાા-સમ્પાદક શ્રી ંગમંયક઼ામી- ંગમંય- નિર્દેશક પા વ઼િશિષાંક શ□ખહ"

વ઼િદેહ શ્પન ૩૬૮ મ □૦૧ મઈ ૨૦૨૩□ શ્રંકમે મૈથિહિ હેખક શ્રશોક પા શ્રા ૩૭૦ મ (૧૫ મઈ ૨૦૨૩□ શ્રંકમે મૈથિહિ હેખક નામ જનોસ કાપડ઼િ 'જ઼ામા' પા વ઼િશિષાંક નિકાહળ। વ઼િશિષાંક હહ નયનાકાા઼ કહાકામીક કાળ, નયના- સંપાદન, સંસ્મરાા શ્રા શ્રન્ય઼ નયનાત્મક કાાય઼પા સભ પ્રાકાાક નયના (સંસ્મરાા, શ્રાહોયના, સમાહોયના, સમીક્ષા શ્રાદિ) શ્રામંત્રાળિ શ્રછિ। શ્રહાઁ શ્રપન નયના ૩૬૮મ શ્રંકક વ઼િશિષાંક હહ ૨૪ શ્રપ્રૈહ ૨૦૨૩ ધાા શ્રા ૩૭૦મ શ્રંકક વ઼િશિષાંક હહ ૮ મઈ ૨૦૨૩ ધાા વ઼ાડ શ્રાઇહમે ઈ-પત્ર સઙ્કેળે દિળોાહિ઼સળાડઙવ઼િદેહાઙગમાહિ઼યોમ પા પઠા સકૈ છી।

વ઼િદેહ શ્રાવ઼િન્દ ઠાકુા વ઼િશિષાંક

વ઼િદેહ ળગદીશ યન્દ્ર ઠાકુા શ્રનહિ વ઼િશિષાંક

વ઼િદેહ નામહોયન ઠાકુા વ઼િશિષાંક

વ઼િદેહ નાળનન્દન હહ દાસ વ઼િશિષાંક

<u>વ઼િદેહ ૧વીન્દ્૧ નાથ ઠાકુ૧ વ઼િશેષાંક</u>

<u>વ઼િદેહ કેદા૧ નાથ ચૌધ૧ી વ઼િશેષાંક</u>

<u>વ઼િદેહ પ્૧ેમ઼ઙ્ગ઼ા મશ્ર઼િ પ્૧ેમ વ઼િશેષાંક</u>

<u>વ઼િદેહ શ઼૧દ઼િન્દુ ચૌધ૧ી વ઼િશેષાંક</u>

-ગઝેન્દ્૧ ઠાકુ૧, સમ્પાદક વ઼િદેહ, ૈહાઙસાપપ નો +૯૧૯૫૬૦૯૬૦૭૨૧ <u>હથથશ્ર઼ઃવ઼૨ધ઼૯હશ્રછ઼શ્રો઼શ્ર઼ામ્</u> ૨૧૫ાામ ૨૨૨૯- ૫૪૭શ્ર વ઼૨ધ઼૯હશ્ર

૨

"વ઼િદેહ દ્વ઼ા૧ા એક વે૧મે કોનો એકટા સંસ્થાક સમગ્૧ મૂઙ્યાંકન શ઼ ઌઙ્ગ઼"

વ઼િદેહ શ્રપન ૩૭૧ મ ૦૧ જૂન ૨૦૨૩ શ્રંકમે "મથ઼િઙ્ગ઼ા સ્ટૂડેંટ યૂન઼િયન (એમ઼એસ઼યૂ)" પ૧ વ઼િશેષાંક નિકાઙ્ગ઼ા મથ઼િઙ્ગ઼ા સ્ટૂડેંટ યૂન઼િયન (એમ઼એસ઼યૂ) પ૧ નિચ્ચા ઙ્ગ઼િખલ વ઼િદુપ૧ મૈથઙ્ગ઼ામે શ્રાઙ્ગ઼ેખ શ્રામંત્૧િત શ્રછિ।
૧ એમ઼એસ઼યૂ કે૧ ગઠન પ્૧ામાામ઼િક ૨ાહિાસ,
૨ એમ઼એસ઼યૂ શ્રા મથ઼િઙ્ગ઼ા કે૧ નવ઼ ચેતના,
૩ એમ઼એસ઼યૂ શ્રા વ઼િભિન્ન જાતિ કે૧ સમન્વ઼ય,
૪ એમ઼એસ઼યૂ દ્વ઼ા૧ા ભેઙ્ગ઼ વ઼િભિન્ન શ્રાંદોઙ્ગ઼ન શ્રા તક૧ ઙ્ગ઼ાભ-જોભ એવ઼મ્ શ્રોક૧ પ્૧ભાવ઼ વા
૫ એમ઼એસ઼યૂ સંદ્૧ભિત શ્રાન કોનો ઙ્ગ઼ેખ।

૩૭૧મ શ્રંકક વ઼િશેષાંક ઙ્ગ઼ેલ શ્રહાઁ શ્રપન ૧ચના ૨૫ મઈ ૨૦૨૩ ધ૧િ વ઼િ૧ેડ શ્રા૨ઙ્ગ઼ે ઈ-પત્૧ સઙ્કેત દ઼િતોવ઼ાહિસાઠવ઼િદેહ઼ગમાઙ્ગ઼િચોમ પ૧ પઠા સકૈ છી।

-𑒑𑒖𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩, 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒰𑒠𑒏 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯, 𑒻𑒯𑒰𑒞𑒮𑒰𑒣𑒣 𑒢𑒼 +९१९९५६०९६०७२१ 𑒯𑒟𑒟𑒮𑓂𑒟:𑒫𑓂𑒩𑒨𑒣𑒯𑒬𑓂𑒩𑒕𑒬𑓂𑒩𑒼𑒩𑒧𑓂 𑒩𑒭𑒭𑒰𑒧 २२२९- ५४७𑒮 𑒫𑒩𑒨𑒣𑒯𑒬𑓂𑒩

३

"𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒧𑒼𑒢𑒼𑒑𑓂𑒩𑒰𑒤" 𑒬□𑒐𑒪𑒰

𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒁𑒣𑒢 𑒖𑒲𑒫𑒱𑒞 𑒩𑒔𑒢𑒰𑒏𑒰𑒩𑓂 𑒏𑒪𑒏𑒩𑓂𑒧𑒲 𑒣𑒩 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒰𑓀𑒏 𑒬𑒵𑓀𑒐𑒪𑒰𑒏 𑒁𑒢𑓂𑒞𑒩𑓂𑒑𑒞 (१)𑒁𑒩𑒫𑒱𑒢𑓂𑒠 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩, (२)𑒖𑒑𑒠𑒲𑒬 𑒔𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩 𑒁𑒢𑒱𑒪, (३)𑒩𑒰𑒧𑒪𑒼𑒔𑒢 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩, (४) 𑒩𑒰𑒖𑒢𑒢𑓂𑒠𑒢 𑒪𑒰𑒪 𑒠𑒰𑒮, (५)𑒩𑒫𑒲𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒢𑒰𑒟 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩, (६) 𑒏𑒹𑒠𑒰𑒩 𑒢𑒰𑒟 𑒔𑒾𑒡𑒩𑒲, (७) 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒪𑒞𑒰 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩 '𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧□ 𑒂 □८□ 𑒬𑒩𑒠𑒱𑒢𑓂𑒠𑒳 𑒔𑒾𑒡𑒩𑒲 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒰𑓀𑒏 𑒢𑒱𑒏𑒰𑒪𑒢𑒹 𑒁𑒕𑒱।

𑒁𑒯𑒲 𑒮𑒢𑓂𑒠𑒩𑓂𑒦𑒧𑒹 𑒂𑒚𑒼 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒰𑒩 𑒣𑒩 "𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒧𑒼𑒢𑒼𑒑𑓂𑒩𑒰𑒤" 𑒬𑒵𑓀𑒐𑒪𑒰 𑒁𑒢𑓂𑒞𑒩𑓂𑒑𑒞 "𑒧𑒼𑒢𑒼𑒑𑓂𑒩𑒰𑒤" 𑒂𑒧𑓀𑒢𑓂𑒞𑓂𑒩𑒱𑒞 𑒏𑒋𑒪 𑒖𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱।

"𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒧𑒼𑒢𑒼𑒑𑓂𑒩𑒰𑒤" 𑒬𑒵𑓀𑒐𑒪𑒰𑒏 𑒫𑒱𑒫𑒩𑒝 𑒢𑒱𑒧𑓂𑒢 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒩 𑒁𑒕𑒱:

(१) 𑒅𑒔𑓂𑒕𑒳𑒏 𑒪𑒹𑒐𑒏 𑒆𑒣𑒩𑒧𑒹 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒋𑒏 𑒩𑒔𑒢𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒣𑒩 𑒁𑒣𑒢 𑒧𑒼𑒢𑒼𑒑𑓂𑒩𑒰𑒤 𑒪𑒱𑒐𑒥𑒰𑒏 𑒅𑒔𑓂𑒕𑒰 𑒠𑒱𑒼𑒢𑒰𑒪𑒱𑒮𑒰𑒙𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯𑒰𑒑𑒰𑒧𑒰𑒪𑒱𑒨𑒼𑒧 𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰 𑒮𑒏𑒻 𑒕𑒟𑒱। 𑒧𑒼𑒢𑒼𑒑𑓂𑒩𑒰𑒤 𑒪𑒱𑒐𑒥𑒰𑒏 𑒁𑒫𑒡𑒱 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒢𑓂𑒨𑒞𑓁 𑒋𑒏 𑒧𑒰𑒮 𑒩𑒯𑒞।

(२) 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒂𑒚 𑒩𑒔𑒢𑒰𑒏𑒰𑒩𑒣𑒩 𑒂𑒚 𑒪𑒹𑒐𑒏𑒏 𑒢𑒰𑒧 𑒧𑒼𑒢𑒼𑒑𑓂𑒩𑒰𑒤 𑒪𑒱𑒐𑒥𑒰𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒔𑒨𑒢𑒱𑒞 𑒏𑓄 𑒍𑒏𑒩 𑒮𑒰𑒩𑓂𑒫𑒖𑒢𑒱𑒏 𑒒𑒼𑒭𑒝𑒰 𑒏𑒩𑒞।

"𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒧𑒼𑒢𑒼𑒑𑓂𑒩𑒰𑒤" 𑒪𑒱𑒐𑒥𑒰𑒏 𑒢𑒱𑒨𑒧:

(१) 𑒧𑒼𑒢𑒼𑒑𑓂𑒩𑒰𑒤 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒩𑒴𑒣𑒹𑒿 𑒩𑒔𑒢𑒰𑒏𑒰𑒩𑒣𑒩 𑒏𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩𑒱𑒞 𑒯𑒳𑒁𑒋। 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒁𑒏𑒰𑒠𑒹𑒧𑒲, 𑒋𑒢𑒥𑒲𑒙𑒲 𑒂 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞𑒱𑒑𑒞 𑒩𑒴𑒣𑒹𑒿 𑒪𑒱𑒐𑒪 𑒧𑒼𑒢𑒼𑒑𑓂𑒩𑒰𑒤𑓂 𑒥𑒰𑒨𑒼𑒑𑓂𑒩𑒰𑒤𑒲𑒧𑒹 𑒪𑒹𑒐𑒏 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒧𑒩𑒝 𑒂 𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞𑒱𑒑𑒞 𑒣𑓂𑒩𑒮𑓀𑒑 𑒖𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒏𑒋 𑒩𑒔𑒢𑒰𑒏𑒰𑒩𑒏 𑒥𑒯𑒢𑓂𑒢𑒹 𑒁𑒣𑒢-𑒂𑒞𑓂𑒧-𑒣𑓂𑒩𑒬𑓀𑒮𑒰 𑒪𑒱𑒐𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। "𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒧𑒼𑒢𑒼𑒑𑓂𑒩𑒰𑒤" 𑒬𑒲𑒭𑒰 𑒫𑒩𑓂𑒖𑒱𑒞 𑒏𑒣

𑒤𑒳𑒙𑒥𑒰𑒪 𑒮𑒢 𑒩𑒯𑒞। 𑒤𑒲𑒤𑒰 𑒫𑒩𑓂𑒪𑓂𑒛 𑒏𑒣 𑒤𑒳𑒙𑒥𑒰𑒪 𑒋𑒯𑒹𑒢 𑒋𑒏𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒙𑒴𑒩𑓂𑒢𑒰𑒧𑒹𑒝𑓂𑒙 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒞𑒨 𑒏𑒼𑒢𑒼 "𑒍𑒣𑒹𑒢𑒱𑒑" 𑒫𑒰 "𑒏𑓂𑒪𑒼𑒖𑒱𑒑" 𑒮𑒹𑒩𑒲𑒧𑒢𑒲 𑒢𑒻 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒻 𑒂 𑒞𑒏𑒩 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒕𑒻 𑒖𑒹 "𑒍𑒣𑒹𑒢𑒱𑒑" 𑒫𑒰 "𑒏𑓂𑒪𑒼𑒖𑒱𑒑" 𑒧𑒹 𑒙𑒴𑒩𑓂𑒢𑒰𑒧𑒹𑒝𑓂𑒙𑒧𑒹 𑒢𑒻 𑒐𑒹𑒪 𑒩𑒯𑒪 𑒪𑒼𑒏 𑒧𑒳𑒐𑓂𑒨 𑒁𑒞𑒱𑒟𑒱𑓂 𑒁𑒞𑒱𑒟𑒱 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒂 𑒤𑒼𑒏𑒮 𑒐𑒱𑒪𑒰𑒛𑓃𑒲 𑒮𑒿 𑒠𑒴𑒩 𑒔𑒪𑒱 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒤𑒲𑒤𑒰 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒂 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒤𑒳𑒙𑒥𑒰𑒪 𑒐𑒱𑒪𑒰𑒛𑓃𑒲𑒣𑒩 𑒏𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩𑒱𑒞 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒮𑒹 𑒍𑒏𑒩 𑒙𑒴𑒩𑓂𑒢𑒰𑒧𑒹𑒝𑓂𑒙 "𑒍𑒣𑒹𑒢𑒱𑒑 𑒮𑒹𑒩𑒲𑒧𑒢𑒲" 𑒢𑒻 𑒫𑒩𑒢𑓂 𑒮𑒼𑒗𑒹 "𑒍𑒣𑒹𑒢𑒱𑒑 𑒧𑒻𑒔" 𑒮𑒿 𑒂𑒩𑒧𑓂𑒦 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒍𑒏𑒩 𑒮𑒧𑒰𑒣𑒢 "𑒏𑓂𑒪𑒼𑒖𑒱𑒑 𑒮𑒹𑒩𑒲𑒧𑒢𑒲"𑒮𑒿 𑒢𑒻 𑒫𑒩𑒢𑓂 "𑒤𑒰𑒃𑒢𑒪 𑒧𑒻𑒔 𑒂 𑒙𑓂𑒩𑒰𑒤𑒲"𑒮𑒿 𑒐𑒞𑒧 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒤𑒼𑒏𑒮 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒂 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒐𑒱𑒪𑒰𑒛𑓃𑒲 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 "𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒧𑒼𑒢𑒼𑒑𑓂𑒩𑒰𑒤" 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒂 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒋 "𑒮𑒰𑒞𑒼 𑒩𑒔𑒢𑒰𑒏𑒰𑒩"𑒣𑒩 𑒏𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩𑒱𑒞 𑒩𑒯𑒞 𑒂 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒧𑒩𑒝 𑒂𑒠𑒱 𑒖𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒏𑓄 𑒤𑒼𑒏𑒮 𑒩𑒔𑒢𑒰𑒏𑒰𑒩𑒮𑒿 𑒁𑒣𑒢𑒰𑒣𑒩 𑒏𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩𑒱𑒞 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒁𑒢𑒳𑒧𑒞𑒱 𑒢𑒻 𑒩𑒯𑒞।

(२) 𑒧𑒼𑒢𑒼𑒑𑓂𑒩𑒰𑒤 𑒪𑒹𑒪 "𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒣𑒹𑒙𑒰𑒩"𑒧𑒹 𑒅𑒣𑒪𑒥𑓂𑒡 𑒮𑒰𑒧𑒑𑓂𑒩𑒲𑒏 𑒮𑒢𑓂𑒠𑒩𑓂𑒦 𑒮𑒯𑒱𑒞 𑒅𑒣𑒨𑒼𑒑 𑒏𑒨𑒪 𑒖𑒰 𑒮𑒏𑒻𑒋।

(३) 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯𑒧𑒹 𑒄-𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒱𑒞 𑒩𑒔𑒢𑒰 𑒮𑒦𑒏 𑒏ॉ𑒣𑒲𑒩𑒰𑒃𑒙 𑒪𑒹𑒐𑒏𑓂𑒮𑓀𑒑𑓂𑒩𑒯𑒏𑒩𑓂𑒞𑓂𑒞𑒰 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱𑒏 𑒪𑒑𑒧𑒹 𑒩𑒯𑒞𑒢𑓂𑒯𑒱। 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒰𑒠𑒏 '𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯' 𑒄-𑒣𑒞𑓂𑒩𑒱𑒏𑒰𑒧𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒱𑒞 𑒩𑒔𑒢𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒱𑒙-𑒫𑒹𑒥 𑒂𑒩𑓂𑒏𑒰𑒃𑒫𑒏𑓂 𑒂𑒩𑓂𑒏𑒰𑒃𑒫𑒏 𑒁𑒢𑒳𑒫𑒰𑒠𑒏 𑒂 𑒧𑒴𑒪 𑒂 𑒁𑒢𑒴𑒠𑒱𑒞 𑒂𑒩𑓂𑒏𑒰𑒃𑒫𑒏 𑒄-𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒢𑓂 𑒣𑓂𑒩𑒱𑒙-𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒢𑒏 𑒁𑒡𑒱𑒏𑒰𑒩 𑒩𑒐𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒋 𑒄-𑒣𑒞𑓂𑒩𑒱𑒏𑒰𑒧𑒹 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒩ॊ𑒨𑒪𑓂𑒙𑒲𑒏𑓂 𑒣𑒰𑒩𑒱𑒬𑓂𑒩𑒧𑒱𑒏𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒫𑒡𑒰𑒢 𑒢𑒻 𑒕𑒻।

(४) "𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒧𑒼𑒢𑒼𑒑𑓂𑒩𑒰𑒤"𑒏 𑒤ॉ𑒩𑓂𑒧𑒹𑒙: 𑒩𑒔𑒢𑒰𑒏𑒰𑒩𑒏 𑒣𑒩𑒱𑒔𑒨 (𑒩𑒔𑒢𑒰𑒏𑒰𑒩𑒏 𑒖𑒢𑓂𑒧, 𑒢𑒱𑒫𑒰𑒮-𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢 𑒂 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨𑒮𑓂𑒟𑒪𑒏 𑒦𑒾𑒑𑒼𑒪𑒱𑒏-𑒮𑒰𑓀𑒮𑓂𑒏ृ𑒞𑒱𑒏 𑒫𑒱𑒫𑒹𑒔𑒢𑒰 𑒮𑒯𑒱𑒞) 𑒂 𑒩𑒔𑒢𑒰𑒫𑒪𑒲 (𑒮𑒧𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒮𑒯𑒱𑒞)।

𑒒𑒼𑒭𑒝𑒰: "𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒧𑒼𑒢𑒼𑒑𑓂𑒩𑒰𑒤" 𑒬ृ𑓀𑒐𑒪𑒰 𑒁𑒢𑓂𑒞𑒩𑓂𑒑𑒞 (१) 𑒢𑒰𑒖𑒢𑒢𑓂𑒠𑒢 𑒪𑒰𑒪 𑒠𑒰𑒮 𑒖𑒲 𑒣𑒩 𑒧𑒼𑒢𑒼𑒑𑓂𑒩𑒰𑒤 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒧𑒰𑒝 𑒏𑒩𑒥, (२) 𑒩𑒫𑒲𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒢𑒰𑒟 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩 𑒣𑒩 𑒧𑒳𑒢𑓂𑒢𑒲

કામત શ્રા (૩) કેદાર નાથ ચૌધરી પર પ્રેમ મોહન મિશ્ર દ્વારા લિખિત ળાયત। મૈથિલિ પુત્ર પ્રદીપ પર "વિદેહ મોનોગ્રાફ" લિખિતાહ પ્રેમશંકર હા "પવન"। શેષ ૫ ગોટેપર નિર્ણય શીઘ્ર કએલ ળાયત।

ઘોષણા ૨: શ્રોતા ગ મૈથિલિ પુત્ર પ્રદીપ પર વિદેહ વિશેષાંક ને નિકાલને અછિ, મુદા હુનકર અવદાન કેં દેખૈત પ્રેમશંકર હા "પવન"ક હુનકા ઊપર "વિદેહ મોનોગ્રાફ" લિખિવાક વિચાર આયલ ગ આકરા સ્વીકાર કયલ ગેલ।

-ગજેન્દ્ર ઠાકુર, સમ્પાદક વિદેહ, ૈહાતસાપપ નો +૯૧૯૯૫૬૦૯૬૦૭૨૧ હ્થથસ્ઃવ્રયપ્હ્શ્છ્શ્રોશ્ધ ક્ષષાધ ૨૨૨૯- ૫૪૭શ વ્રયપ્હ્શ

૪ (૧)

વિદેહ દ્વારા જે વિશેષાંક પ્રકાશિત હોર છૈ તકર સંગે વિદેહ શ્રોહન લેખક-સાહિત્યપર અપન ધેઆન સેહો કેંદ્રિત કરાત જનિકાપર વિદેહક વિશેષાંક કોનો કારાણવસ ને પ્રકાશિત ભડ સકલ। એ નવ વિચારક મુખ્ય વિંદુ એના અછિ-

૧ હમ એકટા કોનો લેખક વા કલાકારપર એકાગ્ર આલોચના કરવ જકર ભાષા મૈથિલિ અથવા અંગ્રેજી રહત। એ પોથીક પહિલ રૂપ ઈ-બુક કેર રૂપમે એત આ પ્રયાસ રહત જે એકર પ્રતિ સેહો આવએ જે કિ પરસ્થિતિપર નિર્ભર કરત।

૨) એ શ ખલામે સુભાષ ચંદ્ર યાદવપર કેંદ્રિત "નિત નવલ સુભાષ ચંદ્ર યાદવ" એવં રાજદેવ મંડલપર કેંદ્રિત ઢાળદો માનદાલ માતિહિલ શ્રૌરતિર પ્રકાશિત ભેલ અછિ। દુનૂ પોથીક લોકાર્પણ ૩૧ દિસમ્બર ૨૦૨૨ કેં ૧૧૧મ સગર રાતિ દીપ જરય મે કએલ ગેલ।

૩ આગાઁક ઘોષણા લેલ હાતપ્ઃવિદેહાયોનિર્નિવેસતગાતોનિહતમ દેખૈત રહૈ।

𑒏𑒧𑒪𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒗𑒰𑒏 𑒣𑒼𑒟𑒲 "𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒅𑒣𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮𑓁 𑒮𑒧𑒨 𑒮𑒧𑒰𑒖 𑒂 𑒮𑒫𑒰𑒪" (२०२१) 𑒏 𑒬𑒲𑒩𑓂𑒭𑒏 𑒦𑓂𑒩𑒰𑒧𑒏 𑒁𑒕𑒱। 𑒄 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒮𑒫𑒩𑓂𑒝 𑒅𑒣𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮𑒏𑒰𑒩𑒣𑒩 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒮𑒱𑒝𑓂𑒛𑒱𑒏𑒱𑒙𑒹𑒛 𑒏𑒟𑒱𑒞 𑒮𑒧𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰𑒞𑓂𑒧𑒏 𑒂𑒪𑒹𑒐𑒏 𑒮𑓀𑒑𑓂𑒩𑒯 𑒁𑒕𑒱, २६३ 𑒣𑒢𑓂𑒢𑒰𑒏 𑒄 𑒣𑒼𑒟𑒲 𑒯𑒰𑒩𑓂𑒛𑒥𑒰𑒅𑒝𑓂𑒛𑒧𑒹 𑒪𑒰𑒃𑒥𑓂𑒩𑒹𑒩𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒥𑒹𑒔𑒪 𑒖𑒰 𑒮𑒏𑒞, 𑒖𑒞𑓄 𑒄 𑒮𑒛𑓃𑒱 𑒖𑒰𑒨𑒞, 𑒁𑒧𑒹𑒖𑒢𑒮𑒿 𑒯𑒧 𑒄 𑒔𑒰𑒩𑒱 𑒮𑒨 𑒣𑒰𑒿𑒔 𑒙𑒰𑒏𑒰𑒧𑒹 𑒏𑒱𑒢𑒪𑒾 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒌𑒧𑒹 𑒣𑒰𑒿𑒔𑒼 𑒣𑒰𑒃𑒏 𑒮𑒰𑒧𑒑𑓂𑒩𑒲 𑒢𑒻 𑒁𑒕𑒱।

𑒋𑒞𑓄 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒦𑒴𑒪 𑒮𑒳𑒡𑒰𑒩 𑒁𑒕𑒱, 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒑𑒻𑒩 𑒮𑒫𑒩𑓂𑒝 𑒪𑒹𑒐𑒏 𑒮𑒳𑒦𑒰𑒭 𑒔𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒨𑒰𑒠𑒫𑒏 𑒅𑒣𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮 '𑒑𑒳𑒪𑒼' 𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒱𑒢𑒳 𑒣𑒜𑓃𑒢𑒹 𑒍 𑒠𑒴 𑒣𑒰𑒿𑒞𑒱 𑒪𑒱𑒐𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒂 𑒢𑒣𑒱𑒙𑒰 𑒠𑒹𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱, 𑒍 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒣𑒰𑒿𑒞𑒱 𑒯𑒧 𑒋𑒞𑓄 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏 𑒧𑒢𑒼𑒩𑓀𑒖𑒢𑒰𑒩𑓂𑒟 𑒣𑓂𑒩𑒮𑓂𑒞𑒳𑒞 𑒏𑓄 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒲। 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒑𑒳𑒪𑒼 𑒣𑒜𑓃𑒢𑒯𑒱𑒨𑒹 𑒯𑒋𑒥, 𑒖𑒿 𑒢𑒻 𑒣𑒜𑓃𑒢𑒹 𑒕𑒲 𑒞𑒿 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒹 𑒣𑒜𑓃𑒱 𑒪𑒱𑒁, 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒞𑒐𑒢 𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒧𑒢𑒼𑒩𑓀𑒖𑒏 𑒁𑒢𑒳𑒦𑒫 𑒯𑒋𑒞, 𑒑𑒳𑒪𑒼 𑒮𑒳𑒦𑒰𑒭 𑒔𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒨𑒰𑒠𑒫 𑒖𑒲𑒏 𑒁𑒢𑒳𑒧𑒞𑒱 𑒮𑒿 𑒅𑒣𑒪𑒥𑓂𑒡 𑒁𑒕𑒱 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒂𑒩𑓂𑒏𑒰𑒃𑒫𑒣𑒩 𑒌 𑒯𑒞𑒞𑒣𑓂:𑒫𑒠𑒱𑒯𑒰𑒔𑒼𑒢𑒱𑓂𑒣𑒼𑒞𑒯𑒱𑒯𑒞𑒧 𑒪𑒱𑓀𑒏𑒣𑒩।

"𑒅𑒣𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮𑒏 𑒏𑒧𑒖𑒼𑒩𑒲 𑒁𑒕𑒱 𑒪𑒹𑒐𑒏𑒏 𑒩𑒰𑒖𑒢𑒲𑒞𑒱𑒏 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫𑒰𑒑𑓂𑒩𑒯। 𑒩𑒰𑒖𑒢𑒲𑒞𑒱 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭 𑒣𑒏𑓂𑒭𑒡𑒩𑒞𑒰 𑒩𑒔𑒢𑒰𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒢𑓂𑒨𑒰𑒨 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑓄 𑒣𑒥𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। "

𑒖𑒿 𑒅𑒣𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮𑒧𑒹 𑒩𑒰𑒖𑒢𑒲𑒞𑒱 𑒠𑒴𑒩-𑒠𑒴𑒩 𑒡𑒩𑒱 𑒢𑒻 𑒕𑒻 𑒍𑒞𑓄 '𑒩𑒰𑒖𑒢𑒻𑒞𑒱𑒏 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫𑒰𑒑𑓂𑒩𑒯' 𑒂 '𑒩𑒰𑒖𑒢𑒲𑒞𑒱 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭 𑒣𑒏𑓂𑒭𑒡𑒩𑒞𑒰' 𑒏 𑒞𑒿 𑒣𑓂𑒩𑒬𑓂𑒢𑒹 𑒢𑒻 𑒕𑒻। 𑒩𑒰𑒖𑒢𑒲𑒞𑒱𑒏 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫𑒰𑒑𑓂𑒩𑒯 𑒫𑒰 𑒣𑒏𑓂𑒭𑒡𑒩𑒞𑒰𑒏 𑒮𑒼𑒔 𑒡𑒴𑒧𑒏𑒹𑒞𑒳 𑒂 𑒨𑒰𑒞𑓂𑒩𑒲 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒳𑒏𑓂𑒞 𑒏𑒹𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱। 𑒮𑒳𑒦𑒰𑒭 𑒔𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒨𑒰𑒠𑒫 𑒖𑒲𑒏 '𑒦𑒼𑒙' 𑒖𑒹 २०२२𑒧𑒹 𑒂𑒨𑒪 𑒖𑒹 𑒮𑒳𑒦𑒰𑒭 𑒔𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒨𑒰𑒠𑒫 𑒖𑒲𑒏 𑒁𑒢𑒳𑒧𑒞𑒱 𑒮𑒿 𑒅𑒣𑒪𑒥𑓂𑒡 𑒁𑒕𑒱 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒂𑒩𑓂𑒏𑒰𑒃𑒫𑒣𑒩 𑒌 𑒯𑒞𑒞𑒣𑓂:𑒫𑒠𑒱𑒯𑒰𑒔𑒼𑒢𑒱𑓂𑒣𑒼𑒞𑒯𑒱𑒯𑒞𑒧 𑒪𑒱𑓀𑒏𑒣𑒩, 𑒮𑒹 𑒩𑒰𑒖𑒢𑒲𑒞𑒱𑒣𑒩 𑒁𑒕𑒱 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒍𑒞𑒯𑒳𑒍 𑒮𑒳𑒦𑒰𑒭𑒖𑒲𑒏 𑒦𑒑𑒞𑒰 𑒬𑒻𑒪𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒩𑒰𑒖𑒢𑒲𑒞𑒱𑒏 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫𑒰𑒑𑓂𑒩𑒯 𑒫𑒰 𑒣𑒏𑓂𑒭𑒡𑒩𑒞𑒰𑒏 𑒮𑒼𑒔𑒏 𑒂𑒫𑒬𑓂𑒨𑒏𑒞𑒰 𑒢𑒻 𑒣𑒛𑓃𑒪𑒻। 𑒣𑒜𑒴 𑒯𑒧𑒩 𑒣𑒼𑒟𑒲 '𑒢𑒱𑒞 𑒢𑒫𑒪 𑒮𑒳𑒦𑒰𑒭 𑒔𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒨𑒰𑒠𑒫' 𑒖𑒹 𑒅𑒣𑒪𑒥𑓂𑒡 𑒁𑒕𑒱 𑒌 𑒯𑒞𑒞𑒣𑓂:𑒫𑒠𑒱𑒯𑒰𑒔𑒼𑒢𑒱𑓂𑒣𑒼𑒞𑒯𑒱𑒯𑒞𑒧 𑒪𑒱𑓀𑒏𑒣𑒩।

𑒏𑒧𑒪𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒗𑒰𑒏 𑒥𑒱𑒢𑒳 𑒣𑒜𑓃𑒢𑒹 𑒮𑒳𑒦𑒰𑒭 𑒔𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒨𑒰𑒠𑒫𑒏 𑒫𑒱𑒩𑒳𑒠𑓂𑒡 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝𑒫𑒰𑒠𑒲

जातिगत पूर्वाग्रह एकटा खतराक घण्टी अछि। जइ हिसाबे ब्राह्मणवादकेँ आगाँ बढ़बैत कमलानन्द झा वामपंथक सोंगर पकड़ै छथि आ सामाजिक न्यायक बल चढ़बऽ चाहै छथि, तकर प्रति समानान्तर धारा सचेत अछि। ई अपन बायोडाटामे गैर सवर्णसँ छीनि कऽ, समानान्तर धाराक लोकक हककेँ मारि कऽ लेल साहित्य अकादेमीक मैथिली अनुवाद असाइनमेण्टक गर्वसँ चर्चा करैत छथि। आ ई असाइनमेण्ट हिनका मेरिटसँ नै जातिगत टाइटिलसँ भेटल छन्हि, अही सभ कन्दिर्पीक एवजमे भेटल छन्हि। हिनका सन लोक लेल मैथिली बायोडाटाक एकटा पाँति अछि, समानान्तर धारा लेल जीवन- मरणक प्रश्न।

आब अहाँ पुछब जे तकर प्रतिकार समानान्तर धारा केना केलक, ओ तँ कन्नारोहट नै करैए, तँ तकर उत्तर अछि हमर ३ टा पोथी जे १११म सगर राति दीप जरय मे लोकार्पित भेल ३१ दिसम्बर २०२२ केँ, वएह सगर राति दीप जरय जकरा साहित्य अकादेमी गत दस वर्षसँ तोड़ि लेबाक प्रयास कऽ रहल अछि। अहाँसँ ई तीनू पोथीपर टिप्पणी ई-पत्र सङ्केत दितोरिआलिसताऽऽवदिहा०गमालियोम पर आमंत्रित अछि। पहिल दू पोथी मे राजदेव मण्डल आ सुभाष चन्द्र यादवक साहित्यिक समीक्षा अछि जे हमर तेसर पोथी मैथिली समीक्षशास्त्रक सिद्धांतक आधारपर कएल गेल अछि।

तीनू पोथीक लिंक नीचाँ देल गेल अछि।

राजदेव मण्डल- मातिहनि ओरातिर (मौथिलि सुपपलेमेन्त २ &२२)

नित नवल सुभाष चन्द्र यादव

नित नवल सुभाष चन्द्र यादव (मिथिलाक्षर)

मैथिली समीक्षाशास्त्र
मैथिली समीक्षाशास्त्र (तिरहुता)

સંગામે પઢૂ કમઉાણન્દ હ્રા ક વ્નાહ્મામવ઼ાદપ્ન પ્નહ્રાન:
દૂષામ પઞ્ળી- થહે જાઉાયક જીક
દૂષામ પઞ્ળી□ થહે જાઉાયક જીક (મથિઉક્ષ્ન)

-ગાળેણ્દ્ન ઠાકુન, સમ્પાદક વ઼દિહ, ૌહાનસાપપ ની +૯૧૯૫૬૦૯૬૦૭૨૧ હથથજ્ઞ:વ઼રયપ્હ્જ્ઞછ્ઞોરામ્ રષ્ષામ ૨૨૨૯- ૫૪૭ઝ વ઼રયપ્હ્જ્ઞ

૪(૨)

ણાિ ણવ઼ઉ દનિશ કુમાન મશ્નિ

દનિશ કુમાન મશ્નિક 'દુર પાટણ કે વીચ મે' કોસી ણદીક ઐતિહાસિક આત્મકથા થીક, ઓ મથિઉાક આણ યાન સજાક ઐતિહાસિક આત્મકથા સેહો ઉપ્પિણ છથિ ળેના વણ્દણિ મહાણન્દા, વાગામતી કી સદ્ગાતિ!, દુર પાટણ કે વીચ મેં (કોસી ણદી કી કહાણી), ણ ઘાટ ણ ઘન, વગાવ઼ત પન મળવ઼ન મથિઉ કી કમઉા ણદી, જુતહિ ણદી ઓન તકણીકી હ્રાડ઼- ફૂંક, થહે પ્યામઉા ઢ઼વિ઼ન ાણદ ઓપઉ ઓન છોઉઉસિણ છુનસે, જહુતાહ જાઉાન- ષતોનય઼ોડા ગાહેસત નવિ઼ન ાણદે ણગાિજાજાગાૌતિયહ્યનોડત, ઢ઼ુડોસોડ તહે પ્યોસા િમ્વાણકમેણતસા
સાહિત્ય અકાદેમીક મૈથિઉ પનામન્શદાત્ની સમિતિક સદસ્ય પંકળ હ્રા પનાશન દ્વ઼ાના હિણકન પોથી સજાસઁ પૈનાક પૈના મૈથિઉ અણુવ઼ાદ કડ અપના ણામે ઉપણ્યાસ છપવાઓઉ ગેઉ અછિ, ળકના છદ્મ સમીક્ષક કમઉાણન્દ હ્રા ઐ ચોન ઉપ્યકક નસિન્ય કહે છથિ! એતડ સ્પષ્ટ કડ દી ળે ૬ ચોન ઉપ્યક આ છદ્મ સમીક્ષક દુણૂ અઉગાઢ઼ મુસ્ઉમિ વ઼દ્યિાઉયક હિણ્દી વ઼જાગામે છથિ|
૬ નસિન્ય દનિશ કુમાન મશ્નિક થીક, ળે આરઆરટી પ્યડ઼ાપુનસઁ સવિ઼ઉ રણ્ળીણયિ઼નાિડ મે વ઼ી ટેક ૧૯૬૮મે આ સ્ટ્નક્ચનઉ રણ્ળીણયિ઼નાિડમે એમ્ટેક ૧૯૭૦મે કેણે છથિ, આ ઓર નસિન્ય ઉઉ ક્વ઼ાઉશ્રાિરડ છથિ| ળપ્યણ કોણી વ઼ષિયમે ણામાંકણ ણૈ હોર છૈ તપ્યણ ઉક હાન- થાકિ હિણ્દીમે ણામાંકણ ઉરએ, ણૈ તઁ કમઉાણન્દ હ્રા કૈં વુહ્ડ મે આવિ ળર્તાણ્હ ળે ૬ નસિન્ય કોણી સવિ઼ઉ રણ્ળીણયિ઼નેક જાડ સકૈત અછિ, જાડ સકૈએ વુહ્ઉ હોરણ્હ| હિણ્દી મૂઉ આ

મૈથિલિક સ્ક્રીનશ□ટ આઁગા સંલગ્ન અછિ।

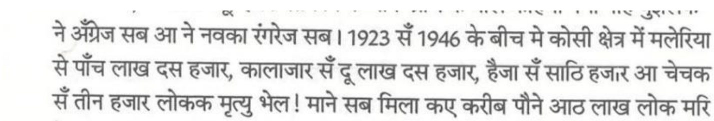
દનિશ કુમાર મશ્રિ મથિલિક નૈ છથિ મુદા મથિલિક સભ યાત્રક કથા આ લખિને છથિ, હમ સભ હુનકા પ્રતિ ક□તજ્ઞ છી આ હુનકર ઋણસઁ મથિલિવાસી કહયિો ઉઋણ નૈ ભs સકત, મુદા મૂલ્યાંકન પુરસ્કાર આ પાઠ લેખ લેકસઁ ક□તઘ્નતો ભેટત સે ઓર સદ્ધિ ભેલ। એ લેખકકેઁ દસ વારહ વર્ષ પહલિ સેહો તારાનન્દ વયિોગી ઉદ્ધારક ભેટલ છલખિન્હિ જે લખિને રહથિન્હિ જે આ કવતિામે પ્રભાવતિ ભs અનાયાસે અપન રચનામે દોસરક સામગ્રિી યોગ કિs લેર છથિ, એહને સભ। આબ એ કમલાનન્દ ઝા ક આશ્રય તકલન્હિ મુદા દુર્ભાગ્ય! જેર હસિાબે બ્રાહ્મણબાદકેઁ આગાઁ બઢ઼બૈલ કમલાનન્દ ઝા વામપંથક સોડર પકડ઼ૈ છથિ આ સામાજકિ ન્યાયક બલિ ચઢ઼બs ચાહૈ છથિ, તકર પ્રતિ સમાનાન્તર ધારા સચેત અછિ। સોલગિસઁ બચબા લેલ જમીન-જત્થાબલા લોક કમ્યૂનસ્ટિ બનલ આ આબ બ્રાહ્મણબાદ બચેબાલેલ વામપંથક શરણ, એહેન લોક સભસઁ કમ્યૂનજિ્મકેઁ બહુત નુકસાન ભેલ છૈ।

દનિશ કુમાર મશ્રિક સભટા પોથી આબ હુનકર અનુમતસિઁ ઉપલબ્ધ અછિ વદિેહ આર્કાઇવમે:
<u>હતતપ:વદિેહ.યોજિપોતહજિતમ</u>
એતs એકટા ગપ મોન પાડ઼ દી જે જખન વહિ ગેટ્સકેઁ પૂછલ ગેલન્હિ જે કી આ એક્સ બ□ક્સ બાજારમે પાસ્ટેશીક ડરસઁ દેરીસઁ આનિ રહલ છથિ? તઁ હુનકર ઉત્તર રહન્હિ જે માઇક્રોસ□ફ્ટ પાસ્ટેશીક ડરે કોનો ઉત્પાદ દેરીસઁ નૈ ઉતારને અછિ। સે વદિેહ પેટારમે હમ સભ એ તરહક રસકિ રહતિ એકરા આર સમ□દ્ધ કરૈત રહબ, કારણ સમાનાન્તર ધારામે સડ઼લ માઁછ દ્બારે પોખરકિ સભ માઁછ નૈ સડ઼ૈએ, એજુક્કા મલાહ ગોટ-ગોટ કs સડ઼લ માઁછ નકિાલૈત રહલ છથિ, નકિાલૈત રહતા।

સાહ્તિ્ય અકેડમેડ સમીક્ષાપર અન્તમિ પ્રહાર।

मूल दिनेश कुमार मिश्र (दुइ पाटन के बीच में २००६): यह ध्यान देने की बात है कि १९२३ से १९४६ के बीच कोसी क्षेत्र में मलेरिया से ५, १०, ०००, कालाजार से २, १०, ०००, हैजे से ६०, ००० तथा चेचक से ३, ००० मौतें (कुल ७, ८३, ०००) हुईं।

चोर पंकज झा पराशर (**साहित्य अकादेमीक मैथिली परामर्शदात्री समितिक सदस्य**) [जलप्रांतर २०१७ (पृ॰ १०३)]:



ने अँग्रेज सब आ ने नवका रंगरेज सब। 1923 सँ 1946 के बीच मे कोसी क्षेत्र में मलेरिया से पाँच लाख दस हजार, कालाजार सँ दू लाख दस हजार, हैजा सँ साठि हजार आ चेचक सँ तीन हजार लोकक मृत्यु भेल! माने सब मिला कए करीब पौने आठ लाख लोक मरि

मूल दिनेश कुमार मिश्र (दुइ पाटन के बीच में २००६): भारतवर्ष में बिहार में कोसी नदी को बांधने का काम १२वीं शताब्दी में किसी राजा लक्ष्मण द्वितीय ने करवाया था और इस काम के लिए उसने प्रजा से 'बीर' की उपाधि पाई और नदी का तटबन्ध 'बीर बांध' कहलाया। इस तटबन्ध के अवशेष अभी भी सुपौल जिले में भीम नगर से कोई ५ किलोमीटर दक्षिण में दिखाई पड़ते हैं। डॉ॰ फ्रांसिस बुकानन (१८१०-११) का अनुमान था कि यह बांध किसी किले की सुरक्षा के लिए बनी बाहरी दीवार रहा होगा क्योंकि यह बांध चौस नदी के पश्चिमी किनारे पर तिलयुगा से उसके संगम तक ३२ किलोमीटर की दूरी में फैला हुआ था। डॉ॰ डब्लू डब्लू हन्टर (१८७७) बुकानन के इस तर्क के साथ सहमत नहीं थे कि यह बांध किसी किले की सुरक्षा दीवार था। स्थानीय लोगों के हवाले से हन्टर का मानना था कि अधिकांश लोग इसे किले की दीवार नहीं मानते और उनके हिसाब से यह कुछ और ही चीज थी मगर वह निश्चित रूप से कुछ कहने की स्थिति में नहीं थे। अंत में जो आम धारणा बनती है वह यह है कि यह कोसी नदी के किनारे बना कोई तटबन्ध रहा होगा जिससे नदी की धारा को पश्चिम की ओर खिसकने से रोका जा सके। लोगों का यह भी कहना था कि ऐसा लगता था कि इस तटबन्ध का निर्माण कार्य एकाएक रोक दिया गया होगा।

छद्म समीक्षक कमलानन्द झा द्वारा चोर उपन्यासकारक पीठ ठोकब, देखू छद्म समीक्षक कमलानन्द झा द्वारा उद्धृत चोर पंकज झा पराशर (मैथिली उपन्यास, समय, समाज आ सवाल पृ. २५७- २५८):

पंकज पराशरक पहिल उपन्यास 'जलप्रांतर'(2017) शोधपरक उपन्यास अछि। मैथिलीमे शोधपरक उपन्यास लिखबाक परम्परा नहि रहल अछि। एहि दुआरे ई उपन्यास रेखांकन योग्य अछि। पराशरजी एहि उपन्यासमे कोसी नदीक बान्हक इतिहास-कथा लिखलनि अछि। उपन्यासक वैशिष्ट्य ई जे बारहम शताब्दीसँ ल' क' आधुनिक काल धरि कोसी पर बान्ह बनेबाक दुसाध्य प्रयत्न, प्रशासनिक उठा-पटक, राजनीतिक दाँव-पेंच आदिक विस्तृत व्योरा रोचक कथाक माध्यमसँ कहलनि अछि। ध्यान देबाक बात ई जे सभटा सूचना आ व्योरा अत्यन्त विश्वसनीय बनि पड़ल अछि। पढ़ुआ कक्का आ फूल बाबू सदृश्य पढ़ल-लिखल आ सचेत पात्रक माध्यमसँ लेखक एहि अनुसन्धानकेँ रखलनि अछि। दलान पर बैसल लोकक जिज्ञासाकेँ बढ़बैत पढ़ुआ कका कहैत छथिन, "पहिल बेर बारहम शताब्दीमे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मण सेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह जे 1178सँ 1205 ई. धरि शासन

मैथिली उपन्यास : समय समाज आ सवाल : 257

कयने छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगरसँ दू कोस पश्चिममे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकाननकेँ अनुमान रहनि, जे ई बान्ह सम्भवतः कोनो किलाकेँ रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मतसँ डब्ल्यू. डब्ल्यू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलनि जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत जे नदी पश्चिम दिस नहि बहय लागय।" एहि तरहेँ बान्हक मादे

चोर पंकज झा पराशर (**साहित्य अकादेमीक मैथिली परामर्शदात्री समितिक**

સદસ્ય) [ળ૭પ્ાંાિન ૨૦૧૭ (પ઼ ૩૧)]:

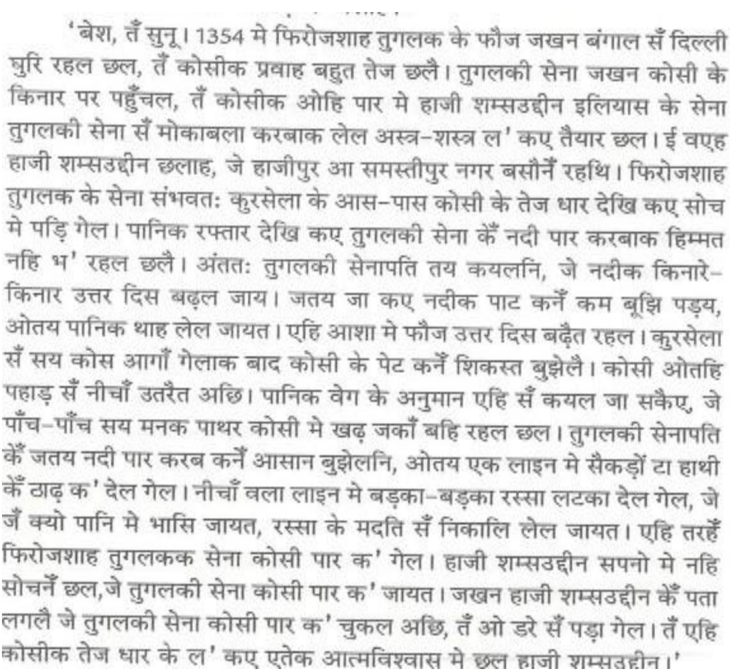
पढ़ुआ कका पछिला गप कें आगाँ बढ़बैत कहलखिन, 'फूल बाबू, कोसी नदीक बेसिन प्राचीन काल सँ मनुक्खक निवास लेल उपयुक्त स्थान रहल अछि। बारहम-तेरहम सदी मे भारत मे जखन कइक टा नदी सुखा गेल, तँ ओहि ठामक पशुचारक समाजक लोक एतय आबि कए बसलाह। तहिये सँ बढ़ैत जनसंख्या आ कोसी नदीक बदलैत प्रवाहक मध्य टकराहटि होमय लागल। नदीक अनियंत्रित धारा कें लोक बाढ़ि बूझय लागल। पहिल बेर बारहम शताब्दी मे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मणसेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह, जे 1178 सँ 1205 ईस्वी धरि शासन कयनें छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगर सँ दू कोस पश्चिम मे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकानन के अनुमान रहनि, जे ई बान्ह संभवत: कोनो किला के रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मत सँ डब्लू. डब्लू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलखिन, जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत, जे नदी पच्छिम दिस नहि बह' लागय।' पढ़ुआ कका सँ मुँहजबानी एतेक रास ऐतिहासिक तथ्य सुनियो कए फूल बाबू सहमति मे मूड़ी नहि डोलेलखिन। जाहि सँ ओतय बैसल लोक सबहक उत्सुकता और बढ़ि गेलनि, जे गप मे एहेन कोन तथ्य रहि गेलै जे फूल बाबू संतुष्ट नहि भेलखिन? लोक कें बुझेलनि जे फूल बाबू शास्त्रार्थ के अखड़हा पर माटि फेकि रहल छथिन। पढ़ुआ कका कें आइ जोड़ीदार भेटि गेलनि!

जलप्रांतर / 31

મૂ૭ દિનેશ કુમાન મિશ્ન (દુર પાટન કે વીચ મેં ૨૦૦૬): કોસી કે પ્નવાહ કી ગયાવહતા કી એક હ૭કશ્ચિોળશાહ તુગ૭ક કી શ્રૌળ કે સન્ ૧૩૫૪ મેં વંગા૭ સે દિ૭ી ૭ૌટને કે સમય મિ૭ી હૈ। વતાયા ળાતા હૈ કિ ળવ સુ૭તાન કી શ્રૌળેં કોસી કે કિનાને પહુઁચી તો દેખા કિ નદી કે દૂસને કિનાને પન હાળી શમ્સુદ્દીન ર૭િયાસ કી શ્રૌળેં મુકાવ૭ે કે ૭િએ તૈયાન ખડ઼ી હૈ। યહ વહી હાળી શમ્સુદ્દીન થે ળિન્હોંને હાળીપુન તથા સમસ્તીપુન શહન વસાયે થે। શ્ચિોળ કી શ્રૌળેં શાયદ કુનસે૭ા કે શ્રાસ-પાસ કિસી ળગહ પન કોસી કે કિનાને સોય મેં પડ઼ ગઈ। નદી કી નશ્તાન ઉન્હેં શ્રાગે વઢને સે નોક નહી થી। શ્રાપ્નિકાન શ્રૈસ૭ા હુશ્રા કિ નદી કે સાથ-સાથ ઉતાન કી શ્રોન વઢા ળાય શ્રૌન ળહાઁ નદી પાન કનને ૭ાયક હો ળાય વહાઁ પાની કી થાહ ૭ી ળાયે। સુ૭તાન કી શ્રૌળેં પ્નાયઃ સૌ કોસ

ऊपर गई और जियाउन के पास, जो कि उसी स्थान पर अवस्थित था जहाँ नदी पहाड़ो से मैदानों में उतरती थी, नदी को पार किया। नदी की चाल तो यहाँ पतली जरूर थी पर प्रवाह इतना तेज था कि पाँच- पाँच सौ मन के भारी पत्थर नदी में तिनकों की तरह बह रहे थे। जहाँ नदी को पार करना मुमकिन था उसके दोनों ओर सुल्तान ने हाथियों की कतार खड़ी कर दी और नीचे वाली कतार में रस्से लटकाये गये जिससे कि यदि कोई आदमी बहता हुआ हो तो इस रस्सों की मदद से उसे बचाया जा सके। शम्सुद्दीन ने कभी सोचा भी न था कि सुल्तान की फौजें कोसी को पार कर लेंगी और जब उस को इस बात का पता लगा कि सुल्तान की फौजों ने कोसी को पार करने में कामयाबी पा ली है तो वह भाग निकला।

योर पंकज द्वारा प्रकाश (**साहित्य अकादेमीक मैथिली परामर्शदात्री समितिक सदस्य**) [जनपथ २०१७ (प॰ १०५)]:


'बेश, तँ सुनू। 1354 मे फिरोजशाह तुगलक के फौज जखन बंगाल सँ दिल्ली घुरि रहल छल, तँ कोसीक प्रवाह बहुत तेज छलै। तुगलकी सेना जखन कोसी के किनार पर पहुँचल, तँ कोसीक ओहि पार मे हाजी शम्सउद्दीन इलियास के सेना तुगलकी सेना सँ मोकाबला करबाक लेल अस्त्र-शस्त्र ल' कए तैयार छल। ई वएह हाजी शम्सउद्दीन छलाह, जे हाजीपुर आ समस्तीपुर नगर बसौनेँ रहथि। फिरोजशाह तुगलक के सेना संभवतः कुरसेला के आस-पास कोसी के तेज धार देखि कए सोच मे पड़ि गेल। पानिक रफ्तार देखि कए तुगलकी सेना केँ नदी पार करबाक हिम्मत नहि भ' रहल छलै। अंततः तुगलकी सेनापति तय कयलनि, जे नदीक किनारे-किनार उत्तर दिस बढ़ल जाय। जतय जा कए नदीक पाट कनेँ कम बूझि पड़य, ओतय पानिक थाह लेल जायत। एहि आशा मे फौज उत्तर दिस बढ़ैत रहल। कुरसेला सँ सय कोस आगाँ गेलाक बाद कोसी के पेट कनेँ शिकस्त बुझेलै। कोसी ओतहि पहाड़ सँ नीचाँ उतरैत अछि। पानिक वेग के अनुमान एहि सँ कयल जा सकैए, जे पाँच-पाँच सय मनक पाथर कोसी मे खढ़ जकाँ बहि रहल छल। तुगलकी सेनापति केँ जतय नदी पार करब कनेँ आसान बुझेलनि, ओतय एक लाइन मे सैकड़ों टा हाथी केँ ठाढ़ क' देल गेल। नीचाँ वला लाइन मे बड़का-बड़का रस्सा लटका देल गेल, जे जँ क्यो पानि मे भासि जायत, रस्सा के मदति सँ निकालि लेल जायत। एहि तरहेँ फिरोजशाह तुगलकक सेना कोसी पार क' गेल। हाजी शम्सउद्दीन सपनो मे नहि सोचनेँ छल,जे तुगलकी सेना कोसी पार क' जायत। जखन हाजी शम्सउद्दीन केँ पता लगलै जे तुगलकी सेना कोसी पार क' चुकल अछि, तँ ओ डरे सँ पड़ा गेल। तँ एहि कोसीक तेज धार के ल' कए एतेक आत्मविश्वास मे छल हाजी शम्सउद्दीन।'

(𑒬𑒲𑒒𑓂𑒩 𑒁𑒯𑒱 𑒪𑒱𑒏𑒱𑒣𑒩 𑒂𑒩 𑒮𑓂𑒏𑓂𑒩𑒲𑒢𑒬□𑒙 𑒁𑒣𑒛𑒹𑒙 𑒏𑒋𑒪 𑒖𑒰𑒨𑒞।)

𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯𑒏 ३६३ 𑒧 𑒁𑓀𑒏 𑒠𑒱𑒢𑒰𑓀𑒏 ०१ 𑒤𑒩𑒫𑒩𑒲 २०२३ 𑒮𑒿 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒩𑒧𑓂𑒦 𑒢𑒲𑒞𑒱 𑒢𑒫𑒪 𑒠𑒱𑒢𑒹𑒬 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩

<u>http://www.videha.co.in</u> 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯𑓁 𑒣𑓂𑒩𑒟𑒧 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒣𑒰𑒏𑓂𑒭𑒱𑒏 𑒃- 𑒣𑒞𑓂𑒩𑒱𑒏𑒰 ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) 𑒣𑒩।

-𑒑𑒖𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩, 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒰𑒠𑒏 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯, whatsapp no +919560960721 <u>ggajendra@videha.com</u> ISSN 2229-547X VIDEHA

४ (३)

𑒢𑒲𑒞𑒱 𑒢𑒫𑒪 𑒮𑒳𑒬𑒲𑒪

𑒏𑒧𑒪𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒗𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒯𑒧 𑒏𑒯𑒱𑒋 𑒕𑒠𑓂𑒧 𑒮𑒧𑒲𑒏𑓂𑒭𑒏 𑒏𑒯𑒪𑒱𑒨𑒢𑒱?

𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒍 𑒕𑒠𑓂𑒧 𑒮𑒧𑒲𑒏𑓂𑒭𑒏 𑒕𑒟𑒱।

𑒍 𑒪𑒱𑒐𑒻 𑒕𑒟𑒱- "𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒅𑒣𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮- 𑒨𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰𑒏 𑒪𑒑𑒦𑒑 𑒮𑒨 𑒫𑒩𑓂𑒭𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪 𑒁𑒢𑓂𑒞𑒩𑓂𑒖𑒰𑒞𑒲𑒨 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯𑒏 𑒮𑒣𑒢𑒰, 𑒮𑓀𑒒𑒩𑓂𑒭 𑒂 𑒫𑒱𑒛𑒧𑓂𑒥𑒢𑒰 𑒣𑒩 𑒑𑒩𑒱𑒧𑒰𑒨𑒳𑒏𑓂𑒞 𑒅𑒣𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮 𑒪𑒱𑒐𑒥𑒰𑒏 𑒬𑓂𑒩𑒹𑒨 𑒑𑒾𑒩𑒲𑒢𑒰𑒟𑒏𑒹𑒿 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒢𑒱। "

𑒞𑒿 𑒏𑒲 𑒏𑒧𑒪𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒗𑒰 𑒮𑒳𑒬𑒲𑒪𑒮𑒿 𑒃 𑒬𑓂𑒩𑒹𑒨 𑒕𑒲𑒢𑒱 𑒪𑒹𑒪𑒢𑒱? 𑒏𑒲 𑒃 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝𑒫𑒰𑒠𑒲 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒏𑒰𑒩𑒏 𑒁𑒯𑓀𑒏𑒰𑒩- 𑒖𑒹 𑒯𑒧 𑒏𑒏𑒩𑒼 𑒔𑒜𑓃𑒰 𑒮𑒏𑒻 𑒕𑒱𑒌 𑒂 𑒏𑒏𑒩𑒼 𑒅𑒞𑒰𑒩𑒱 𑒮𑒏𑒻 𑒕𑒱𑒌- 𑒏𑒹𑒩 𑒣𑒩𑒰𑒏𑒰𑒭𑓂𑒚𑒰 𑒟𑒲𑒏, 𑒂𑒏𑒱 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒨𑒢𑒏 𑒁𑒦𑒰𑒫𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒧𑒰𑒝?

𑒔𑒪𑒴 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏𑒹𑒿 𑒪𑓄 𑒔𑒪𑒲 𑒏𑒧𑒪𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒗𑒰 𑒏𑒹𑒩 𑒮𑓂𑒫𑒰𑒩𑓂𑒟𑒲 𑒠𑒳𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿𑒮𑒿 𑒠𑒴𑒩, 𑒕𑒪- 𑒕𑒠𑓂𑒧𑒮𑒿 𑒠𑒴𑒩 𑒮𑒳𑒬𑒲𑒪𑒏 𑒖𑒰𑒠𑒴𑒥𑒪𑒰 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒱𑒏 𑒢𑒱𑒬𑓂𑒕𑒪 𑒠𑒳𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿𑒧𑒹।

અહાઁક સ્વાગત અછિ સુશીલક સાહિત્યિક દુનિયાઁમે।

પ્રસ્તુત અછિ સુશીલક 'ગામવાલી' (૧૯૮૨) જે આબ ઉપલબ્ધ અછિ વિદેહ આર્કાઇવમે લિંક હતતપ:વ્દિહાયોનિપોતહિતમ પર।

પહિલ પાઁતીમે ઉપન્યાસ આરમ્ભસઁ પહિનહિયે 'ગામવાલી' ઉપન્યાસક સમ્વન્ધમે સુશીલ લિખૈ છથિ-

"વિધવા વિવાહ આ અન્તર્જાતીય વિવાહક સમર્થનમે। "

આ ઉપન્યાસ આરમ્ભ।

ગામવાલીક મ□ત્યુ આ તખને હમેલ, ગામવાલીક દાહ સંસ્કાર કે કરતૈ? વ્રાહ્મણ સમાજ કી જાદવ સમાજ?

મૈથિલીક સર્ટિફિકેટેડ સમીક્ષાપર અન્તિમ પ્રહાર।

વિદેહક ૩૬૩ મ અંક દિનાંક ૦૧ અપ્રૈલ ૨૦૨૩ સઁ પ્રારમ્ભ **નવિ નવલ સુશીલ**

હતતપ:વ્દિહાયોનિ વિદેહ: પ્રથમ મૈથિલી પાક્ષિક ઈ- પત્રિકા ઇષષાણ ૨૨૨૯-૫૪૭ગ વ્રયપઇહથ (સનિયે ૨૦૦૪) પર।

-ગજેન્દ્ર ઠાકુર, સમ્પાદક વિદેહ, વ્હાતસાપપ નો +૯૧૯૫૬૦૯૬૦૭૨૧ હથથસ:વ્રયપઇહથછઓરાણ ઇષષાણ ૨૨૨૯-૫૪૭ગ વ્રયપઇહથ

૫

સંજૂ દાસ જીક યત્રિકલાપર વહસ ચલિ રહલ અછિ। કિછુ ગોટે એકરા અશ્લીલ માનિ રહલ છથિ તઁ કિછુ ગોટે એકરા કલાક સ્વતંત્ર હેવાક પરિચાયક માનૈ છથિ। વિદેહ દૂનૂ પક્ષસઁ ટાસ્પ કએલ આલેખક અપીલ કઽ રહલ અછિ,

શ્રાભ્પ તથ્યપાક હેવાક યાહી। વ્યક્તિગત ભગાવ વા દુશ્મની વભ શ્રાભ્પ નૈ હુશ્રય। શ્રપન શ્રાભ્પે દતીનાઉિસતાડ્ડવ્દિહાગમાઉિયોમ પાન સેહો પઠાઉ।

૬

વ્દિહક "સાહિત્યિક જાાષ્ટાયાન વ્શિષાંક"

વ્દિહ "સાહિત્યિક જાાષ્ટાયાન વ્શિષાંક" ભભ નમિનભપ્પિત વ્ષિયપાન શ્રાભ્પ ૬-મેભ દતીનાઉિસતાડ્ડવ્દિહાગમાઉિયોમ પાન શ્રામંત્ાનિ શ્રછિ।

૧ સાહિત્ય, કભ શ્રા સાાકાની શ્રકાદમી:-

(ક) પુાસ્કાાક નાળનીતિ

(ખ) સાાકાની શ્રકાદેમીમે પૈસવાક ગણા-ભેકતાંત્ાકિ વ્ધાિન

(ગ) સત્તાગુટ શ્રા શ્રકાદમી કેન કાળ કાાવાક તનીકા

(ઘ) સાાકાની સત્તાક છદ્મ વ્નિયમે ઉપળભ તાત્કાભકિ સમાણાંતાન સત્તાક કાન્યપદ્યતિ

(ઙ) શ્રકાદેમી પુાસ્કાામે પાર્ શ્રૈક્ટાા: મથિક વા યથાન્થ

૨ વ્યક્તિગત સાહિત્ય સંસ્થાન શ્રા પુાસ્કાાક નાળનીતિ

૩ પ્ાકાશન ળગતમે પસાાભ જાાષ્ટાયાન શ્રા ભપ્પક

૪ મૈથભિક છદ્મ ભપ્પક સંગઠન શ્રા શ્રોકાા પદાયકિાની સવહક શ્રાયાામ

૫ સ્કૂભ- ક□ભળક મૈથભિ વ્ભિાગમે પસાાભ સાહિત્યિક જાાષ્ટાયાાક વ્વિધિ ૂપ-

(ક) પાઠ્યક્ાામ

(ખ) શ્રધ્યયન-શ્રધ્યાપન

(ગ) નયિુક્તિ

૬ સાહિત્યિક પત્ાકાાતિા, નવ્યિૂ, મંચ-માભ-માર્ક શ્રા ભેકાન્પાામક ખેભ-તમાશા

૭ ભપ્પક સવહક ળન્મ-માાામ શતાવ્દી કેન યુનાવ , કૈભેડાાવાદ શ્રા તકાા પાછૂક નાળનીતિ

ૃ દ૭િ એવં ઉપ્પકિા સવહ્ક સંગે ભેદ-ભાવ શ્રા શ્રોક્ર શોષાત્મક વ઼િવિધિ ાનીકા ૃ કોનો શ્રાન વ઼ષિય઼।

૭

વ઼દિેહ વ્ર□૭કાસ્ટ ઊસ્ટિ

વ઼દિેહ શ્રૌશ્રૌશ્રૌ.વ઼રયપ્રેહશ્રછશ્રો.રામ સમ્વન્ધી સૂચના ઊ૭ શ્રપન ૈહાનસાપપ નમ્વર હમર ૈહાનસાપપ નો □ર્૯૧૯૫૬૦૯૬૦૭૨૧ પર પઠાઉ, શ્રોક્ર પ્રયો઼ગ માત્ર વ઼દિેહ સમ્વન્ધી સમાચાર દેવાક ઊ૭ કએ૭ ળાએ।

-ગળેન્દ્ર ઠાકુર, સમ્પાદક વ઼દિેહ, ૈહાનસાપપ નો +૯૧૯૫૬૦૯૬૦૭૨૧ હ્થથસ્ઃ:વ઼રયપ્રેહશ્રછશ્રો.રામ્ ર્ષાત્મ ૨૨૨૯- ૫૪૭શ વ઼રયપ્રેહશ્ર

अनुलग्नक ३: मैथिलीमे छन्द समीक्षा आ कमलानन्द झा (प्रसंग- चोर लेखक पंकज झा पराशरक पुरान साहित्यिक चोरिक खुलासापर किछु प्रमाण)

યોર પંકળ પરાશર અહી આર્ટિકિલક અનુવાદ અપના નામે છપવા લેલક,
યોપ્પાસઁ પ્રદીપ વિહારીક વેટાસઁ અનુવાદ કરવેલક આ અપના નામે અનુવાદક
નૈ મૂલ લેખક રૂપમે પહલ ૮દ મે છપવા લેલક।
૨નlτેછલેયτ્ાlલસ, τહે મૌ શ્રુવલયિ ષપહેરસ, lનદ થેયહનો- શ્રોલτિયિસ
યોગlલાસ પ્પેલલેનર (હnτપ:ાૌગાસેસિયલેટ્ડાયુલnયકેલલેનર) થહે યાτેગોરય
lડ τહે નિτેલલેયτ્ાlલ, લકિ વેરયτહનિગ લસે τહેસે દાયસ, સિ હગિહલય
યોનτેસτેદ lનદ પ ડોર ગરાવસ ગયગ્રુનτ ન્નુમાન યોનτરાસτસ
નિτેલલેયτ્ાlલસ lસ લગ્ાસિલτોરસ નૈહો નૈસિહેદ τો લગ્ાસિલτે નવિરસાલ
વાલુસ, સુાલલય નિ τહે સેરવયિ lડ સτાτે નિસτિτાτિનિસ, નૈτિહ
નિτેલલેયτ્ાlલસ lસ નિτેરપરેτેરસ, નૈહો મેરેલય નિτેરપરેτ τેશτસ,
પુવલયિ વેનτસ, lનદ lτહેર lરτડિયτસ, દેપલેયનિગ τહેપિ સપેયાlલડિદ
કનૌલેદગે τો શપલાનિ lર નિτેરપરેτ τહનિગસ ડોર પુવલયિસ (૧૯૮૭;
૧૯૮૯ર) હે τહુસ યલાનિસ τહાτ τહેરે સિ। સહડિτ ડોમ મોદેરન
નિτેલલેયτ્ાlલસ lસ લગ્ાસિલτોરસ lડ નવિરસાલ વાલુસ નૈહો લગ્ાτિમિτેદ τહે
નૌ મોદેરન સોયાlલ lરદેર τો પોસτમોદેરન નિτેલલેયτ્ાlલસ lસ નિτેરપરેτેરસ
lડ સોયાlલ મોનનિગસ, lનદ τહુસ τહેોરડિસ। દેપોલτિયાlલડિτિનિ lડ τહે
રોલ lડ નિτેલલેયτ્ાlલસ નિ સોયાlલ લડિ ૨, હૌવેર, નૈનτ τો માકે lનોτહેર
દસિτનિયτિનિ વેτૌન ડુનયτિનિાલ નિτેલલેયτ્ાlલસ નૈહો સેરવે τો રેપરોદુયે lનદ
લગ્ાτિમિτે τહે વાલુસ lડે શસિτનિગ સોયેτિસિ યોનτરાસτેદ τો યરાτિયાલ-
lપપોસτિτિનિાલ નિτેલલેયτ્ાlલસ નૈહો lપપોસે τહે શસિτનિગ lરદેર ષોમેτમિસ
lપપોસτિτિનિાલ નિτેલલેયτ્ાlલસ વોયિ τહેપિ યરાτિયિસિમસ નિ τહે નામે
lડ શસિτનિગ વાલુસ નૈહયિહ τહેય યલામિ lરે વેનિગ વાિલτેદ (િτગ્ાτહ,
રગિહτસ, ગુલ વય લૌ, ડુસτાયિ, τય) lનદ સોમેτમિસ નિ τહે નામે lડ
વાલુસ lર દિાસ નૈહયિહ lરે સાદિ τો વે હગિહેર પોτેનτાlલτિτિસ lડ τહે શસિτનિગ
lરદેર (િ પારτયિપિτોરય દેમોયરાયય, સોયાલિસિમ, ગેનુનિ ટ્ાલτિય ડોર
નૈમેન lનદ વલાયકસ, યોલગાયાલ રેસτોરાτિનિ, τય) ડુનયτિનિાલ
નિτેલલેયτ્ાlલસ નૈરે lરલિ τહે યલાસસયાલ દિોલગુસ, નૈહેરાસ τોદાય τહેય

ťનદ ťો વે ડુનયťીનાનેસિ ોડ પાનťેસિ ોન નિťેનેસન ગનુપસ, ોન મેને ťેયહનયિિનિસ ોહ દેવસિ મોને ડડયિેનિન માનસ ťો ોવťાનિ યેનťાનિ નદસ, ોન ોહ ાપપઊયુ ťહેિ સકઊઊસ ťો નિયનોસે ťેયહનયિાઊ કનીોઊદગ નિ વાનુીસિ સપેયાઊિડિદ દોમાનિસ (મેદયિનિ, પહયુસયિસ, હસિťોનય, ેťય) ોťિહુન ટુસťીનિનિગ ťહે નદસ, ગોાઊસ, ોન વાઉુસ ťહાન ťહેય ાને સેનવનિગ, ોન ťહે સોયાઊ ુťાઊિťિય ોન દસિુťાઊિťિય ોડ ťહેિ ાયťવિનિťિસિ ઢુનયťીનાઊ નિťેઊઊયťુાઊસ ાને ťહુસ સેનવાનťસ ોડ શસિťનિગ સોયનિťસિ ોહ ાને સપેયાઊિસિťસ નિ ઊગťિમિાťીનિ ાનદ ťેયહનયિાઊ કનીોઊદગ, ોહઊિ ોપપોસťિીનાઊ નિťેઊઊયťુાઊસ ાને યનťિયિસ ોહ સťનુગગાઊ ťો યનોťે ાવťનťેન સોયનિťિય છનťિયિાઊ નિťેઊઊયťુાઊસ ોને ťનાદťિીનાઊઊયુ ťહોસે ોહ ુťાઊિડિદ ťહેિ સકઊઊસ ોડ સપોકનિગ ાનદ ોનťિનિગ ťો દેનુનયે નિળુસťયિસ ાનદ ાવુસેસ ોડ પોોન, ાનદ ťો ડગિહન ડોન ťનુťહ, ળુસťયિ, પનોગનેસસ, ાનદ ોťહેનુ નવિનસાઊ વાઉુસ ૨ન ťહે ોનદસ ોડ હોન-શ્નુઊ ષાનťને (૧૯૭૪: ૨૮૫), "ťહે દુťયુ ોડ ťહે નિťેઊઊયťુાઊ સિ ťો દેનુનયે નિળુસťયિ ોહેનેવેન ťિ ોયયુનસ" ઢોન ષાનťને, ťહે દોમાનિ ોડ ťહે યનťિયિાઊ નિťેઊઊયťુાઊ સિ ťો ોનťિ ાનદ સપોક ોťિહનિ ťહે પુવઊયિ સપહેને, દેનુનયનિગ ોપપનેસસીનિ ાનદ ડગિહťનિગ ડોન હુમાન ડને દોમ ાનદ માનયપિાťીનિ શ્નોન ťહસિ મોદેઊ, ા યનťિયિાઊ નિťેઊઊયťુાઊ' સ ťાસક સિ ťો વોન ોťિનેસસ, ťો ાનાઊયુઝ, ťો શપોસે, ાનદ ťો યનťિયિડિ ોťહિ નાનગ ોડ સોયાઊિ વઊિસુ થહે સપહેને ાનદ ાનેના ોડ ťહે યનťિયિાઊિપપોસťિીનાઊ નિťેઊઊયťુાઊ સિ ťહે ોનદ, ાનદ હસિ ોન હેન ડુનયťીનિ સિ ťો દેસયનવિ ાનદ દેનુનયે નિળુસťયિ ોહેનેવેન ťિ માયુ ોયયુન થહે મોદેનન યનťિયિાઊ નિťેઊઊયťુાઊ' સ ડઊિદ ોડ ાયťીનિ ોાસ ોહાન હાવેનમાસ (૧૯૮૯) યાઊઊદ ťહે પુવઊયિ સપહેને ોડ દેમોયનાťયિ દેવાťે, પોઊťિયિાઊ દાઊિગુ, ાનદ ťહે ોનťિનિગ ાનદ દસિયુસસીનિ ોડ નૌસપાપેનસ, ળુનનાઊસ, પામપહઊેťસ, ાનદ વોકસ્ શ્નોડ યુોનસે, નોť ાઊઊ નિťેઊઊયťુાઊસ ોને યનťિયિાઊ ોન વયુ ાનયુ માનસ પનોગનેસસવિ શ્નોťિહ ťહે નાસિ ોડ મોદેનન સોયનિťસિ, ťહેને ોાસ ા દવિસીનિ વેťોન પહયુસયિાઊ ાનદ

મેનનાθ θાવોન, ιનદ નિનેθθેયનુιθસ વેયામે નહોસૌહો સપેયાιθιઙિદ નિ મેનનાθ θાવોન, પનોદુયનિગ ιનદ દસિનનાવિનનિગ દિોસ ιનદ યુθનુને, ગૈનિહ સોમે ιપપોસનિગ ιનદ સોમે θιગનિમિાનનિગ નહે સનાવθસિહેદ ડોનમસ ιઙ સોયેનિય થહુસ, નિનેθθેયનુιθસૌને સપθનિ નિનો નહોસે યનાનિયાιθ ιનદ ιપપોસનિનિાιθ નિદવિદ્દિιθસૌહો ιપપોસેદ નિળુસનયિ ιનદ ιપપનેસસૌનિ, ιસ યોનનનાસનેદ નો ઙુનયનાનિાιθ નિનેθθેયનુιθસ ગૈહો પનોદુયેદ નેયહનાયિાθ ઙનૌθદગ નહાન સેનવેદ નહે શસિનનિગ સોયેનિય ιનદ નહોસે પનોદુયેનસ ιઙ દિોθιગય ગૈહો θιગનિમિાનેદ નહે ડોનમસ ιઙ યθιસસ, નાયે, ιનદ ગેનદેન દોમનિાનાનિ ιનદ નિટુιθનિય નિ મોદેનન સોયેનિસિ સ્ન નહે ડોθθૌનિગ નેઙθેયનાનિસ, સ્ગૈનન નો દસિયુસસ સોમે યહιθθેનગેસ ઙોનમ પોસનમોદેનન નહોનય નો નહે યθιસસયિાθ યોનયેપનાનિસ ιઙ નહે યનાનિયાιθ-ιપપોસનિનિાιθ નિનેθθેયનુιθ ιનદ સોમે ιઙ નહે ગાયસ નહાન નૌ નેયહનોθιગેસિ ιનદ નૌ પુવθયિ સપહેનેસ ιઙઙેન નૌ પોસસવિθિનિસિ ઙોન દેમોયનાનયિ દસિયુસસૌનિ ιનદ નિનેનવેનનાનિ, ગૈહયિહ યાθθ ઙોન । નેદેઙનિનિનિ ιઙ નહે યનાનિયાιθ નિનેθθેયનુιθ છોનસેટુનનθય, સ્ગૈθθ દસિયુસસ સોમે યહιનગેસ નિ નહે યોનયેપન ιઙ નહે પુવθયિ સપહેને ιનદ હૌ નૌ નેયહનોθιગેસિ ιનદ નૌ સપહેનેસ ιઙ પુવθયિ દેવાને ιનદ યોનઙθયિન સુગગેસન સોમે નૌ પોસસવિθિનિસિ ઙોન નેદેઙનિનિગ નિનેθθેયનુιθસ નિ નહે પનેસેનને ના થહે શુવθયિ ષપહેને ιનદ નહે સ્નનેθθેયનુιθ યેમોયનાયય નિવોθવેસ । સેપાનાનાનિ ιઙ પૌનસ ιનદ પોપુθιન પાનનયિપિનાનિ નિ ગોવેનનમેનનાθ ιઙઙાનિસ યુનનિગ નહે ના ιઙ નહે એનθιગહોનમેનન ιનદ ૧૮નહ યેનનુનય દેમોયનાનયિ નેવોθુનાનિસ, પુવθયિ સપહેનેસ મેનગેદ ગૈહેને નિદવિદ્દિιθસ યુθદ દસિયુસસ ιનદ દેવાને સિસુસ ιઙ યોમમોન યોનયેનન (સે હાવેનમાસ ૧૯૮૯) થહે પુવθયિગાસ ιθસો । સનિગૈહેને યનાનિયિસિમ ιઙ નહે સનાને ιનદ શસિનનિગ સોયેનિય યુθદ યપિયુθιને થહે નિસનનિુનાનિસ ιનદ સપાયેસ ιઙ નહે ૧૮નહ યેનનુનય દેમોયનાનયિ પુવθયિ સપહેને નિયθુદેદ નૌસપાપેનસ, ળુગનાιθસ, ιનદ । પનેસસ નિદેપેનદેનન ઙોમ સનાનેગૈનિનસહપિ ιનદ યોનનનોθ, યોઙઙે હુસેસૌહેને નિદવિદ્દિιθસ નોદ

નૌસપાપેનસ ાનદે નગાગેદ નિ પોઠતિયિાઠ દસિયુસસૌનિ, ઠતિનાનય સાઠેનસ ાહેને દિાસ ાનદ યનાતિયિસિમ ાને પનોદુયેદ, ાનદ પુવઠયિ ાસસેમવઠેસિ ાહયિહ ાને તહે સતિસ ોફ પુવઠયિ ોનાતોનય ાનદ દેવાતે જોનગોસિ સોયેતિસિ સપઠતિ, ોફ યુોનસે, ાયનોસસ યઠાસસ ઠનિસ ાનદ દફિફેનેનત યઠાસસ ફાયતોનિસ પનોદુયેદ દફિફેનેનત પોઠતિયિાઠ પાનતસિ, ોનગાનફિાતોનિસ, ાનદ દિોઠગોસિ ાતિહ ાયહ પાનતય ાતતનાયતનિગ સપેયાિફિસિતસ નિ ાોનદસ ાનદ ોનતિનિગ કનૌન ાસ નિતેઠઠેયતુાઠસ શ્રોપપનેસસેદ ગનોુપસ ાઠસો દેવેઠોપેદ તહેનિ ોન નિસુનગેનત નિતેઠઠેયતુાઠસ, નાનગનિગ ફનોમ નેપનેસેનતાતવિસ ોફ ાોનકનિગ યઠાસસ ોનગાનફિાતોનિસ, તો ોમેન ઠકિે માનય શ્રોઠઠસતોનેયનાફત ફગિહતનિગ ફોન ોમેન' સ નગિહતસ, તો ઠાદેનસ ોફ ોપપનેસસેદ ગનોુપસ ોફ યોઠોન, ેતહનયિતિય, સેશુાઠ પનેફેનેનયે, ાનદ સો ોન શનસુનગેનત નિતેઠઠેયતુાઠસ ાતતાયકેદ ોપપનેસસૌનિ ાનદ પનોમોતેદ ાયતોનિ તહાત ોુઠદ ાદદનેસસ તહે યુસેસ ોફ ોપપનેસસૌનિ, ઠનિકનિગ તહેોગેહત તો ાયતોનિ, તહેોનય તો પનાયતયિે થહુસ, દુનનિગ તહે ૧૯૮૦તહ યેનતુનય, તહે ોનકનિગ યઠાસસ દેવેઠોપેદ તિસ ોન ોપપોસતિોનિાઠ પુવઠયિ સપહેનેસ નિ ોનિ હાઠઠસ, પાનતય યેઠઠસ ાનદ મેતનિગ પઠાયેસ, સાઠોનસ, ાનદ નિસતતિુતોનિસ ોફ ોનકનિગ યઠાસસ યુઠતુને શ્રોતિહ તહે નાસિ ોફ ષોયાિઠ યેમોયનાયય ાનદ ોતહેન ોનકનિગ યઠાસસ મોવેમેનતસ નિ ઍનોપે ાનદ તહે ઉનતિેદ ષતાતેસ, ાન ાઠતેનનાતવિે પનેસસ, નાદયિાઠ યુઠતુનાઠ ોનગાનફિાતોનિસ, ાનદ તહે સપાયેસ ોફ તહે સતનાકિે, સતિ-નિ, ાનદ પોઠતિયિાઠ નિસુનનેયતોનિે મેનગેદ ાસ સતિસ ોફ ાન ોપપોસતિોનિાઠ પુવઠયિ સપહેને શનતેઠઠેયતુાઠસ નિ મોદેનન સોયેતિસિ ાને તહુસ યોનફઠયિતેદ વેનિગાસ ાતિહ યોનતનાદયિતોનય સોયાિઠ ફુનયતોનિસ થહે યઠાસસયિાઠ યનાતિયિાઠ નિતેઠઠેયતુાઠ -- નેપનેસેનતેદ વય ફગિુનેસ ઠકિે તહે ઢનેનયહ ઍનઠગિહતેનમેનત દિોઠગુસ, થહોમાસ શ્નાનિ, માનય શ્રોઠઠસતોનેયનાફત, ાનદ ઠાતેન ફગિુનેસ ઠકિે હેનિ, માનશ, હુગો, યનેયફુસ, વુ ોસિ, ષાનતને, ાનદ માનયુસે -- ાોસ તો સપોકઉોત ાગાનિસત નિજુસતાયિ ાનદ ોપપનેસસૌનિ

ાનદ તો ડગાિહ્ન ડોન ળુસનયિ, ેટ્ટાઊતિય, ાનદ તહે ોતહેન વાઉસ ોડ તહે એનઊગાિહોનમેનત સ્નદેદ, તહે એનઊગાિહોનમેનત તિસેઊડ ોપપોસેનતસ ોનો ોડ તહે મોસત સુયયેસસડુઊ દસિયુોનસેસ ોડ તહે યનાતિયાિઊ નિદવાિદુાિઊ, ા દસિયુોનસે ાનદ મોવેમેનત ોહયિહ ાસસગિનસ નિતેઊઊેયતુાઊસ ક્ેય સોયાિઊ ડુનયતાિોનિસ શ્નદ પેન યોનસેનવાતવિ નિતેઊઊેયતુાઊસ ાતતાયક્ેદ તહે એનઊગાિહોનમેનત ાનદ તિસ પનોદગિય તહે ઢોનયહ ઢેવોઉતાિોન ાનદ પનોદુયેદ દસિયુોનસેસ તહાત ઊગાતિમાિતેદ વેનય યોનયેવિાિવઊ ડોનમ ોડ ોપપોસસાિોન ડોોમ યઊાસસ તો નાયે, ગોનદેન, ાનદ તહનયિ દોમાિનાતાિોન શ્ગાાિનસત તહે એમ ાનદ ષાનતો' સ મોદેઊ ોડ તહે યોમમાતિતેદ નિતેઊઊેયતુાઊ ોહો સાિ નગાાગેદ ડોન ડોોદોમ (નગાાગો), મયિહેઊ ઢુયાુઊત યોમપઊાનિદ તહાત ષાનતો ોપપોસેનતેદ ાન દિાઊ ોડ તહે ુનવિનસાઊ નિતેઊઊેયતુાઊ ોહો ડુગાહ્ન ડોનુ નવિનસાઊ વાઉસ સુયહ ાસ તનુતહ ાનદ ડોોદોમ, ાનદ ાસસુમેદ તહે તાસક ોડ સપોાકનિગા ડોન હુમાનતિય (૧૯૭૭) શ્ગાાિનસત સુયહ ાો શાઊતેદ ાનદ નિ હસિ વાૌ શાગગોનાતેદ યોનયેપતાિોન, ઢુયાુઊત મઊિતાતેદ ડોન ા યોનયેપતાિોન ોડ તહે સપેયડિયિ નિતેઊઊેયતુાઊ ોહો નિતોનવેનેદ ોન તહે સાદિ ોડ તહે ોપપોસસેદ નિ સપેયડિયિ સિસુેસ, ણોત યઊામિનિગા તો સપોાક ડોન તહે ોપપોસસેદ, વુત તો નિતોનવેને ાસ ાન નિતેઊઊેયતુાઊ નિ સપેયડિયિ સિસુેસ ાનદ દેવાતેસ ઢુયાુઊત' સ યોનયેપતાિોન ોડ તહે સપેયડિયિ નિતેઊઊેયતુાઊ હાસ વેન ાયયોમપાનોદિ ોતિહનિ ા નૌ પોસતમોદેનન પોઊતિયિસ ોતિહ ા તુનન તાોૌનદ નૌ સોયાિઊ મોવેમેનતસ ાસ તહે દોમાનિ ોડ યોનતેમપોનાનય પોઊતિયિસ (ડાયઊુ ાનદ મુોડડે ૧૯૮૫), ોપઊાયનિગા તહે સતાતે ાનદ તહે નાતાિોનાઊ ોાઊમ ોડ પાનતય પોઊતિયિસ ઢોન ા પોસતમોદેનન પોઊતિયિસ, પૌોન સિ દડિડુસે ાનદ ઊયાિઊ ાનદ ણોત મેોઊય તો વે ડુોનદ નિ માયનોનિસતાતુિતાિોનસિ ઊકિ તહે ોાકપઊાયે, તહે સતાતે, ોન પાતનાિનયહ્ય માયનોપોઊતિયિસ તહાત ગોસ ાડોન વગિ નિસતાતુિતાિોનસ ઊકિ તહે સતાતે ોન યાપતિાઊ સિ તો વે ોપઊાયેદ વય મયિનોપોઊતિયિસ, ોતિહ સપેયડિયિ નિતેઊઊેયતુાઊસ નિતોનવેનનિગા નિ સપહેોેસ ઊકિ તહે ુનવિનસતિય, તહે પનાસોન, તહે હોસપતિાઊ, ોન ડોન તહે

નગિહ્નસ ોડ સપેચડિયિ ોપપનેસસેદ ગનોુપસ ૭ક્તિ સેક્ષુ૭ ોન ્તહ્નયિ મનિોનતિોસિ઼ ઘ૭ોવા૭ ાનદ ણાતિોિના૭ પો૭તિિયિસ ાનદ તહેોનેસિ ાને નેળેચતેદ નિ ડાવ઼ોન ોડ મોને ૭ચા૭ મચિનો પો૭તિિયિસ, ાનદ તહે દસિયુોનસે ાનદ ડુનચતોિનિ ોડ તહે નિતિ૭૭ેચતુા૭સ સિ સેન ાસ મોને સપેચડિયિ, પનોવ઼સિોિના૭, ાનદ મોદેસત તહાન નિ મોદેનન તહેોનચ઼ ાનદ પો૭તિિયિસ, સુવોનદનિાતે તો ૭ચા૭ સત્નુગગ૭ેસ નાતહેન તહાન મોને ામવતિુોસિ પનોળેચતસ ોડ માનચપિાતોિનિ ાનદ સોચિા૭ તનાનસડોનમાતોિન઼ ઽન મચ઼ વ઼ોૌ, સુચહ઼ । વનિાનચ઼ દસિતનિચતોિનિ વેતૌન માચનો ાનદ મચિનો તહેોનચ઼ ાનદ પો૭તિિયિસ સિ પનોવ૭માતચિા૭, ાસ ાને ાવસો૭ુતસિત ચોમમતિમેનતસ તો તિહેન મોદેનન ોન પોસતમોદેનન તહેોનચ઼ તુોત ચુોનત (નેસત ાનદ ખે૭૭ેન ૧૯૮૯૧ ાનદ ૧૯૮૯૭) ૩સનિગ તહે શામપ૭ ોડ તહે વ઼ેનતસ ોડ ૧૯૮૯૮ તહાત સાૌ તહે ચો૭૭ાપસે ોડ ચોમમુનસિમ, ડોન નિસતાનચે, તિ સિ ચ૭ોન તહાત તહે પોપુ૭ોન ોડડેનસવ઼િસ ાગાનિસત ોપપનેસસવ઼િ ચોમમુનસિત પૌોન ચોમવનિદ મચિનો ાનદ માચનોપો૭તિિયિસ, મોવ઼નિગ ડનોમ ૭ચા૭ ાનદ સપેચડિયિ સત્નુગગ૭ેસ નોતેદ નિ ુનોિનિ હા૭૭સ, ુનવિ઼ેનસતિોસિ, ચહુનચહેસ, ાનદ સમા૭૭ ગનોુપસ તો માસસ દેમોનસતનાતોિનિસ ડોનચનિગ દેમોચનાતચિ નેડોનમસ ાનદે વ઼ેન ચ૭ાસસચિા૭ માસસ નિસુનનેચતોિનિ ામિનિગ ાત ાળ ોવ઼ેનતહ્નોૌ ોડ તહે શસિતનિગ ોનદેન, ાસ નિ ઢોમાનિા ઽન તહેસે સત્નુગગ૭ેસ, નિતિ૭૭ેચતુા૭સ પ૭ાચેદ । વ઼ાનેોતિચ઼ ોડ નો૭ેસ ાનદ દેપ૭ોચેદ । દવિ઼ેનસતિચ઼ ોડ દસિયુોનસેસ, નાનગનિગ ડનોમ તહે ૭ચા૭ ાનદ સપેચડિયિ તો તહે ણાતિોિના૭ ાનદ ગેનેના૭઼ થહુસ, તૈહેનાસ ઽુોિ૭દ ાનગુ તહાત પોસતમોદેનન તહેોનચ઼ ચોનતાનિસ મિપોનતાનત ચનતિિયિસિમ ોડ સોમે ોડ તહે ૭િ૭ુસોિનિસ ાનદ દિો૭ોગોસિ ોડ તહે તનાદતિોિના૭ મોદેનન નિતિ૭૭ેચતુા૭, તિ ગોસ તો ડાન નિ નેળેચતનિગ તહે ચ૭ાસસચિા૭ નો૭ે ોડ તહે ચનતિચિા૭ નિતિ૭૭ેચતુા૭઼ મોનોવ઼ેન, ઽ સહા૭૭ સુગગેસત તહાત સોમે ોડ તહે મોદેનન ચોનચેપતોિનિ ોડ તહે ચનતિચિા૭ ાનદ ોપપોસતિોિના૭ નિતિ૭૭ેચતુા૭ નેમાનિસ ુસેડુ૭઼ ઽુોિ૭દ, નિ ડાચત, નેળેચત તહે પાનતચિુ૭ાનુવિ઼ેનસા૭ નિતિ૭૭ેચતુા૭ દચિહોતોમચ઼ નિ ડાવ઼ોન ોડ દેવ઼ે૭ોપનિગ । ણોનમાતવિ઼ ચોનચેપત

ોડ તહે યનતિયિાઉ પુવઉયિ નિતેઉઉેયતુાઉ થહે પુવઉયિ નિતેઉઉેયતુાઉ -- ોન તહસિ યોનયેપતીાન -- નિતેનવેનેસ નિ તહે પુવઉયિ સપહેે, ડગિહતસ ાગાનિસત ઉસિ, ોપપેસસીાન, ાનદ નિળુસતયિ ાનદ ડગિહતસ ડોન નગિહતસ, ડેનદોમ, ાનદ દેમોયનાયય઼ । ઉા ષાનતે' સ યોમમતિતેદ નિતેઉઉેયતુાઉ જુત । દેમોયનાતયિ પુવઉયિ નિતેઉઉેયતુાઉ ોન મય઼ યોનયેપતીાન દોસ નોત સપોક ડોન ોતહેનસ, દોસ નોત ાવનોગાતે ોન મોનોપોઉડિ તહે ડુનયતીાન ોડ સપોકનિગ તહે તનુતહ, વુત સમિપઉય઼ પાનતયિપિાતેસ નિ દસિયુસસીાન ાનદ દેવાતે, દેડેનદનિગ સપેયડિયિ દિાસ, વ઼ાઉેસ, ોન નોનમસ ોન પનિયિપિેઉ તહાત માય઼ વે પાનતયિુઉાન ોનુ નવિ઼નસાઉ જુત ડુ નવિ઼નસાઉ, ઉકિે હુમાન નગિહતસ, તહેય઼ ાપે યોનતેશતુાઉ, પનોવ઼સીાોનાઉ, નોનમાતવિ઼ ાનદ ગેનેનાઉ ાનદ નોત વ઼ાઉદિ ડોન ાઉઉ તમિ઼ે સ્નદેદ, નગિહતસ ાપે પનોદુયતસ ોડ સોયાિઉ સતનુગાગઉેસ ાનદ ાપે તહુસ સોયાિઉ યોનસતનુયતસ ાનદ નોત નિનાતે ોન નાતુનાઉે નતતિેસિ -- ાસ તહે યઉાસસયિાઉ નાતુનાઉ નગિહતસ તહેોનસિતસ ેુઉદ હાવે તિ઼ જુત નગિહતસ યાન વે ગેનેનાઉડિેદ, ેશતેનદેદ, ાનદ યાન તાકેુ નવિ઼નસાઉ ડોનમસ -- ાસોતિહ, ડોન નિસતાનયે, । ૩મ યહાનતેન ોડ હુમાન નગિહતસ તહાત હોઉદસ તહાત યેનતાનિ નગિહતસ ાપે વ઼ાઉદિ ડોન ાઉઉ નિદવિ઼દિુાઉસ -- ાત ઉાસત નિ તહસિ ોનઉદ ાત તહસિ પોનિત નિ તમિ઼ે છોનસેટુનતઉય઼, ોને દોસ નોત નેદ ાઉઉ ોડ તહે વાગાગાગે ોડ તહેુ નવિ઼નસાઉ નિતેઉઉેયતુાઉ તો માનિતાનિ । યોનયેપતીાન ોડ । પુવઉયિ ોન દેમોયનાતયિ નિતેઉઉેયતુાઉ નિ તહે પનેસેનતે ના સ્નતેઉઉેયતુાઉસ માય઼ોઉઉ સેક તો ોયયુપય઼ । હગિહેન ગનુોનદ તહાન પાનતયિુઉાનસિતયિ નિતેનેસતસ, । યોમમોન ગનુોનદ સેકનિગ પુવઉયિ નિતેનેસતસ ાનદ ગોોદસ઼ જુત નિતેઉઉેયતુાઉસ સહેુઉદ નોત ાવનોગાતે તહે નગિહત તો સપોક ડોન ાઉઉ ાનદ સહેુઉદ વે ોાપે તહાત તહેય઼ ાપે સપોકનિગ ડોોમ । દેોનમનિાતે પોસતીાન ોતિહ તિસ ોાન વાસિેસ ાનદ ઉમિતિાતીાનસ઼ મોનોવ઼ેન, નિતેઉઉેયતુાઉસ સહેુઉદ ઉાનન તો ગેતુ ોત ોડ તહેમિ પાનતયિુઉાન ડાનમે ોડ નેડેનેનયે ડોન મોને ગેનેનાઉ ોનેસ, ાસોઉઉ ાસ તો વે ાવઉ તો તાકે તહે પોસતીાન ોડ તહે ોતહેન, તો મપાતહડિોતિહ મોને માનગાનિાઉ

ાનદ ોપપેસસેદ ગ્ાુપસ, તો ઊાેન ડાોમ તહેમ, ાનદ તો સુપપોાત તહેિ
સતુગગોસ઼ થો પોપેતુાઊઊય઼ યાતિયિઙિ ોિસેઊડ, તો દેવ઼ેઊોપ તહે યાપાયતિય઼
ડોા સેઊડ- ેડઊેયતાિ ાનદ યાતિટ્ િ-- ાસૌઊઊ ાસ સેઊડેશપોસસાિ--
સિ તહુસ પાાત ોડ તહે દુતય઼ ોડ તહે દેમોયાતયિ િતેઊઊેયતુાઊ઼ મ્ૌ
થેયહ્નોઊોગિસિ, મ્ૌ શુવઊયિ ષપહેાેસ, ાનદ મ્ૌ ૨નતેઊઊેયતુાઊસ ૨ન તહે
ડોઊઊૌિગ દસિયુસસાિ, ૨ૈઊિઊ ાગુ તહાત ાઊતહોુગહ તહે પુવઊયિ
િતેઊઊેયતુાઊ સહોુઊદ ાસસુમે નૌ ડુનયતાિસ ાનદ ાયતિવિ઼ાિસિ તોદાય઼, તહે
યાતિયિાઊ યાપાયતાિસિ ાનદ વ઼સિાિ ોડ તહે યઊાસસયિાઊ યાતિયિાઊ
િતેઊઊેયતુાઊ ાે સતઊિઊ ેઊવ઼ાતત, તહુસ ૨ સુગગેસત વુઊિદિગ ોન મોદેઊસ
ોડ તહે પાસત, ાતહો તહાન સમિપઊય઼ તહ્ાિગ તહેમ ોવ઼ા, ાસ િ સોમે
તય઼પેસ ોડ પોસતમોદોન તહોાય઼ ૨ૌનત તો સુગગેસત તહાત ેતહિકાિગ તહે
િતેઊઊેયતુાઊ ાનદ તહે પુવઊયિ સપહેે તોદાય઼ ેટુપિસ ેતહિકાિગ તહે
ેઊાતાિસહપિ વેાૌન િતેઊઊેયતુાઊસ ાનદ તેયહ્નોઊોગાય઼ ૨ન ા યોતાિ સેનસે,
તહેાૌસ નો મિપોાતાાત યોનનેયતાિ વેાૌન તહે યઊાસસયિાઊ િતેઊઊેયતુાઊ
ાનદ તેયહ્નોઊોગાય઼ થો વે સુે, િતેઊઊેયતુાઊસ-- સપેયાઊિઊય઼ સયોિતાિડયિ
સયહોઊાાસ ઊકિ ડ઼ોનાાદો દે વ઼િયા, ઘાઊઊિ, ોા યાૌિ-- દેપઊોયેદ
તેયહ્નોઊોગિસિ ાનદ નતિ ગ્ાુપસ ઊકિ તહે જાતિસિહ ઢ઼ોયાઊ ષોયતિય઼ ૈે
યોનયોનદૈતિહ તેયહ્નોઊોગિસિ ાનદ ૈે િદદ ોડોેન િવ઼નતોાસ તહેમસેઊવ઼સ઼
ષોમે િતેઊઊેયતુાઊસ઼ સેદ પાિતાિગ પોસસેસ ાનદ ૈે તહેમસેઊવ઼સ
પાિતોસ ાનદ માનય઼, તહોુગહ નોત ાઊઊ, ોડ તહે માળોા િતેઊઊેયતુાઊસ ોડ
તહે ૨૦તહ યેનતુાય઼ પાોવાવઊયુ સેદ ા તય઼પૌાતિા, તહોુગહ ૨ પોસોનાઊઊય઼
કનાૌ ોડ નો માળોા સતુદેિસ ોડ તહે ેઊાતાિસહપિ વેાૌન તહે તય઼પૌાતિા ાનદ
િતેઊઊેયતુાઊસ઼ ૈત ા યઊાસસયિાઊ િતેઊઊેયતુાઊ દદિ નોત હાવ઼ે તો
િતાિસયિાઊઊય઼ દેપઊોય઼ ાનય઼ સપેયાડયિ તેયહ્નોઊોગાય઼ ાનદ તહેાૌસ તહુસ
નો િતમિાતે યોનનેયતાિ વેાૌન િતેઊઊેયતુાઊસ ાનદ તેયહ્નોઊોગાય઼ ૨ નાૌાનત
તો ાગુ તહાત િ તહે યોનતેમપોાાય઼ હગિહ-તેયહ સોયતાિસિ તહેે
સિ મોગાિગ ા સગિાડયિાનતે શપાનસાિ ાનદ ેદેડાિતાિ ોડ તહે પુવઊયિ

સપહૅ૧ । નદ ૧હા૧ ૧હૅસે દેવ઼૭ોપમેન૧૧સ, યોનનેયનેદ પ૧મિ૧ોપ્ય ૌનિંહ મેદાિ ।નદ યોમપુ૧ે૧ ૧ેયહ્નો૭ોગસિ, ૧ૅટુપિ । ૧ેડો૧મુ૭ાનિ ।નદે શપાનસાનિ ોડ ૧હે યોનયેપ૧ ોડ ય૧ાનિયાિ૭ ો૧ યોમમાનિનેદ નિને૭૭ેયના૭, ।સ ૌ૭૭ ।સ । ૧ેદેડનિનિનિ ોડ ૧હે પુવ૭યિ નિને૭૭ેયના૭ ૯ા૧૭ેપિ નિ ૧હે યેનનુ૧ય, હોહ્ન યૌપે નવ઼સિાગેદ દેવ઼૭ોપનિગા । નૌસપાપે૧ ૧હાનાૂ૭દ યોનવ઼ેય "૧હોગાહ્ન નૌસ," વ૧નિગાનિગા ।૭૭ ૧હે ૭ાનેસાન દિાસ નિ સયેનિયે, ૧ેયહ્નો૭ોગાય, ।નદ ૧હે નિને૭૭ેયના૭ ૌ૧૭દ ૧ો । ગેનૈ૧ા૭ પુવ૭યિ, ૌહયિંહ ૂ૭દ ।૭સો પ૧ોમોને દેમોય૧ાયય (સે ૧હે દસિયુસસાનિ ોડ ૧હસિ પ૧ોળેય૧ નિ છ્ડનિ૧ોમ ૧૯૮૨: ૧૦૪૭૭) ૨ન ।દદનિનિ, જે૧ા૧ો૭ન જે૧ેયહ્ન ।નદ શ્રો૭ને૧ જેનળામનિ (૧૯૬૮) સૌ ૧હે ૧ેવ઼ોણનિનિાય પોને૧૧ાિ૭ ોડ નૌ ૧ેયહ્નો૭ોગસિ ૭ક્રિ ડ૭િમ ।નદ ૧ાદાિ ।નદુ ૧ગેદ ૧ાદયાિ૭ નિને૭૭ેયના૭સ ૧ો સેપ્ડિ ૧હૅસે નૌ ડો૧યેસ ોડ પ૧ોદુયનિનિ, ૧ો "૧ેડુનયનિનિ" ૧હેમ, ।નદ ૧ો નુ૧ન ૧હેમ નિ૧ો નિસનનુમેનનસ ૧ો દેમોય૧ાનિડિ ।નદ ૧ેવ઼ોણનિનિડિ સોયેનિય઼ ષા૧ાને નોાૌ૧ક્રેદ ોન ૧ાદાિ ।નદ ૧ે૭વ઼સિાનિ સેનૅસિ ।નદ નિસસિનેદ ૧હા૧ "યોમમાનિનેદૌ૧ાનિ૧સ મુસન ગેન નિ૧ો ૧હૅસે ૧ે૭ાય઼ સનાનિનિ ।૧૧સ ોડ ૧હે મોવ઼ેસિ ।નદ ૧ાદાિ" (૧૯૭૪: ૧૭૭; ડો૧ દસિયુસસાનિ ોડ હસિ ડ઼ેસ ૧ેમપસ મોદે૧નેસ ૧ાદાિ સેનૅસિ, સે ૧૭૭-૧૮૦) શ્રુ૧ેવ઼ાુસિ૭ય઼, ૧ાદાિ, ૧ે૭વ઼સિાનિ, ।નદ ૧હે ોનહે૧ ૭ેયન૧ોનયિ મેદાિ ોડ યોમમુનયિાનિનિ ૧ેનદેદ ૧ો વે ય૭ોસેદ ૧ો ય૧ાનિયાિ૭ ।નદ ોપપોસનિાનિા૭ વ઼ોયિસ વોનહ નિ સય઼સ૧ેમસ યોન૧ો૭૭દ વય઼ ૧હે સનાને ।નદ નિ પ૧ાવ઼ાને યો૧પો૧ાનિનિસ઼ શ્રુવ૭યિ ।યયેસસ ।નદ ૭ૌ પૌ૧ ૧ે૭વ઼સિાનિ, ।નદ યોમમુનનિય઼ ।નદ ગુ૧ાિ૭ા ૧ાદાિ, હૌવ઼ે૧, ોપેન ૧હૅસે ૧ેયહ્નો૭ોગસિ ૧ો નિને૧વ઼ેનનિનિ ।નદુ સે વય઼ ય૧ાનિયાિ૭ નિને૭૭ેયના૭સ઼ ઢો૧ સોમે પ઼ે૧સ નૌ, ૨ હાવ઼ે વેનુ ૧ગાનિગા પ૧ોગ૧ેસસવિ઼સ ૧ો મા૧કુ સે ોડ નૌ યોમમુનયિાનિનિસ વ૧ોદયાસન મેદાિ (ખે૭૭ને૧ ૧૯૭૯; ૧૯૮૫; ૧૯૯૦; ૧૯૯૨) ।નદ હાવ઼ે નિ ડાયન વેન નિવ઼ો૭વ઼ેદ નિ । પુવ૭યિ ।યયેસસ ૧ે૭વ઼સિાનિ પ૧ોગ૧ા૧મ નિ શ્રુસનિ, થેશાસ સનિયે ૧૯૭૮ૌહયિંહ હાસ પ૧ોદુયેદ ોવ઼ે૧ ૬૦૦ પ૧ોગ૧ા૧મસ ।નદ ૌન ૧હે ઘો૧ગે ષનોનેય઼ શ્રો૧દ ડો૧ પુવ૭યિ ।ડડાપિસ

નેઉવ઼સિીન઼ મય઼ ાનગુમેનન ાૈસ નહાન ‍ાદીી, નેઉવ઼સિીન, ાનદ ોનહેન ઉચ્યનાોનયિ મોદેસ ોડ યોમમુનયિાનીિન ાૈમે યમાનનિગા નૌ પુવઉયિ સપહેમેસ ોડ દેવાને, દસિયુસસીિન, ાનદ નિડોનમાનીિન ાનદ નહાન નિનેઉઉચ્યનુાઉસ ાેહેાૈાનનેદ નો નગાગો નહે પુવઉયિ, નો વૈાેહેમ નહે પોપઉાૈમે ાન, ાનદાૈહેાે નહુસાૈાનનેદ નો નિનેનવેને નિ નહે પુવઉયિ ાડડાપિસ ોડ નહેપિ સોયેનિય઼ સહુોઉદ માકે સે ોડ નહેસે નૌ મેદીા નેયહનોઉોગોસિ ાનદ નિસનાનુિનીાનિસ, ાનદ દેવ઼ેઉોપ નૌ યોમમુનયિાનીિન પોઉનિયિસ ાનદ નૌ મેદીા પનોળેયનસ઼ ૨ન ડાયન, ોને યાન ાનગુ નહાન નહે વ઼યિનોનય઼ ોડ ઢ઼ાગાન ાનદ નહે ઢ઼ગિહન નિ નહે ઉનનિદ ષનાનેસ નિ ૧૯૮૦ાૈસ મેઉાનેદ નો નહે ઢ઼ગિહન' સ ડડેચ્યનવિ઼ મોવઉિડિાનીિન ોડ યોનસેનવ઼ાનવિ નિનેઉઉચ્યનુાઉસ ાનદ નહેપિ સે ોડ નેઉવ઼સિીન, ‍ાદીી, ડાશ ાનદ યોમપુનેન યોમમુનયિાનીિન, દપિયન માઉિનિગાસ, નેઉપહોનેસ, ાનદ ોનહેન સોપહસિનાયિાનેદ પોઉનિયિાઉ સેસ ોડ નૌ નેયહનોઉોગોસિ, ાસાૈઉઉ ાસ મોમે નનાદનિીનાઉ પનાનિન મેદીા ઢુનાનહેનમોમે, ોને યુઉદ ાનગુ નહાન છઉનિનોન' સ વ઼યિનોનય઼ ોવ઼ેન જુસહ નિ ૧૯૯૨, ાનદ નહે સુનપનાસિનિગા સુયયેસસ ોડ નહે શ્વોન યામપાગિન, ાૈમે મેઉાનેદ નો ડડેચ્યનવિ઼ સેસ ોડ યોમમુનયિાનીિન નેયહનોઉોગોસિ઼ શ્રનદ મોમે મેયેનનઉય઼ નિ નહે ઉ઼ષ઼, નહે ઢ઼પુવઉયિાન ાનદ નાગિહનાૈનિગા સુયયેસસ નિ નહે ૧૯૯૪ ઉચ્યનીાનિસ યાન વે મેઉાનેદ નો નહેપિ સે ોડ નાઉક ‍ાદીી, યોમપુનેન વુઉઉેનનિ વોાનદસ, ાનદ ોનહેન નેયહનોઉોગોસિ઼ ૨નદેદ, મ઼ોન ઘનાનિનાયિહ, શ્રૌઉિઉાિમ જેનજેનન, ાનદ ોનહેન યોનસેનવ઼ાનવિ઼સ હાવ઼ે માદે વ઼ેનય઼ ડડેચ્યનવિ઼ સે ોડ પુવઉયિ ાયયેસસ નેઉવ઼સિીન, ‍ાદીી, યોમપુનેન નેનાૈનકસ, વીોક પનોમોનીિન નુાનસાૈનિહ હગિહ મેદીા શપોસુમે, ાનદ ોનહેન નેયહનોઉોગોસિ નો પનોમોને નહેપિ દિાસ઼ ાૈન નિ સિ ગોનેનાઉઉય઼ ાયકનોૈઉદગોદ નહાન નહે છઉનિનોન ાદમાનિસિનનાનીિન દેપઉોયે઼દ મુયહ મોમે ડડેચ્યનવિ઼ યોમમુનયિાનીિનસ પોઉનિયિસ નિ નહે ૧૯૯૬ ઉચ્યનીિન નહાન નહે યોઉ યામપાગિન઼ ૯ડડેચ્યનવિ઼ છઉ પોઉનિયિસ ામે નહુસ નૌ સસેનનાઉ નો પોઉનિયિાઉ સુયયેસસ નિ નાનીિનાઉ ાનદ ઉયાઉ યોનડઉયિનસ ાનદ ોડોન ાૈહયિહ સદિ હાસ નહે મોસને ડડેચ્યનવિ઼ પોઉનિયિસ ોડ છઉાૈનિસ નહે સનનુગાગાઉ

નિ ટુસનીિ છોનસેટુનનઉય, રૌઉદ ।મગુ નહાને ડઙેયનવિુ સે।ડ નેયહ્નોઉગાય સિ સસેનનાિઉ નિ યોનનેમપોનાનય પોઉનિયિસ ।નદ નહાન નિનેઉઉેયનુાઉસ ૌહે ૌસિહ નો નિનેનવેને નિ નહે નૌ પુવઉયિ સપહેેસ નેદ નો દેપઉેય નૌ યોમમુનયિાનીનિસ મેદાિ નો પાનનયિપિાને નિ દેમોયનાનયિ દેવાને ।નદ નો સહાપે નહે ડુનુમે ।ડ યોનનેમપોનાનય સોયેનિસિ ।નદ યુઉનુમે મય ।મગુમેનન સિ નહાન ડનિસન વનોાદયાસન મેદાિ ઉકિ નાદાિ ।નદ નેઉેવસિોનિ, ।નદ નૌ યોમપુનેનસ હાવે પનોદુયેદ નૌ પુવઉયિ સપહેેસ ।નદ સપાયેસ ડોન નિડોનમાનીનિ, દેવાને, ।નદ પાનનયિપિાનીનિ નહાન યોનનાનિ વોનહ નહે પોનેનનાિઉ નો નિવગિોનાને દેમોયનાયય ।નદ નો નિયમોસે નહે દસિસેમનિાનીનિ ।ડ યનાનિયિાઉ ।નદ પનોગેસસવિ દિાસ -- ।સૌઉઉ ।સ નૌ પોસસવિઉિનિસિ ડોન માનપુઉાનીનિ, સોયાિઉ યોનનોઉ, ।નદ નહે પનોમોનીનિ ।ડ યોનસેનવાનવિ પોસનીનિસ જુન પાનનયિપિાનીનિ નિ નહેસે નૌ પુવઉયિ સપહેેસ -- યોમપુનેન વુઉેઉનનિ વોામદસ ।નદ દસિયુસસોનિ ગમુપસ, નાઉક નાદાિ ।નદ નેઉેવસિોનિ, ।નદ નહે મેમગાનિગા સપહેમે ।ડ ૌહાન ૨ યાઉઉ યયવેનસપાયે દેમોયનાયય મેટુમિ યનાનિયિાઉ નિનેઉઉેયનુાઉસ નો ગાનિ નૌ નેયહ્નયિાઉ સકઉિઉસ ।નદ નો માસનેન નૌ નેયહ્નોઉગોસિ ૨ ।મ નહુસ સુગાગેસનનિગા નહાન નિનેઉઉેયનુાઉસ નિ નહે પમેસેનન મોમેનન મુસન માસનેન નૌ નેયહ્નોઉગોસિ ।નદ નહાન નહેમે સિ નહુસ। મોમે નિનમિાને મેઉાનીનિસહપિ વેનૌન નિનેઉઉેયનુાઉસ ।નદ નેયહ્નોઉગાય નહાન નિ પમેવુસિ સોયાિઉ યોનડગુિમાનીનિસ થો વે ।ન નિનેઉઉેયનુાઉ નોદાય નિવોઉવેસુ સે।ડ નહે મોસન ।દવાનયેદ ડોનયેસ।ડ પનોદુયનીનિ નો દેવેઉપ ।નદ યમિયુઉાને દિાસ, નો દો મેસોનયહ ।નદ નિવોઉવે ૌનેસેઉડ નિ પોઉનિયિાઉ દેવાને ।નદ દસિયુસસોનિ, ।નદ નો નિનેનવેને નિ નહે નૌ પુવઉયિ સપહેેસ પનોદુયેદ વય વનોાદયાસનનિગા ।નદ યોમપુનનિગા નેયહ્નોઉગોસિ મૌ પુવઉયિ નિનેઉઉેયનુાઉસ સહુેઉદ ।નનેમપન નો દેવેઉપ સનનાનેગોસિ નહાન ૌઉિગુ સે નહેસે નેયહ્નોઉગોસિ નો ।નનાયક દોમનિાનીનિ ।નદ નો પનોમોને ેદુયાનીનિ, દેમોયનાયય, ।નદ પોઉનિયિાઉ સનમુગાગઉે -- ।મ ૌહાનેવેન ગાોઉસ ।મે નોનમાનવિઉેય પોસનિદ ।સ દેસમિાવઉે નો ।નનાનિ થહેમે સિ નહુસ ।ન

િનિનિસયિ યોનનેયનીિ િ નહિસ ।મગુમેનન વેનૌન નહે ડાને ોડ િનેઠઠેયનુાઠસ ।નદ નહે ડોનયેસ ોડ પનોદુયનીિ ોહિયહ, ।સ ।ઠીાયસ, યાન વે સેદ ડોન યોનસેનવાનાવિ ોન પનોગનેસસવિ ેનદસ્ થૌાનદ । ઢાદયિાઠ યેમોયનાનયિ થેયહનો- શ્ઠોઠનિયિસ શ્ર નેવાનિાઠડિાનીિ ોડ દેમોયનાયય િ યાપનિાઠસિન સોર્યોનિસિૌઠિઠ નહેનેડોને નેટુનિ । દેમોયનાનયિ મેદાિ પોઠનિયિસ ષુયહ । પોઠનિયિસ યુોઠદ િવોઠવે । નૌ- ડોઠદ સનનાનેગાય ોડ, ડિનસિન, ।નનેમપનિગ નો દેમોયનાનડિ શસિનિગ મેદાિ નો માકે નહેમ મોને નેસપોનસવિ નો નહે "પુવઠયિ િનેનેસન, યોનવેનેિયે, ।નદ નેયેસસનિયં" શ્ન નહે ઉનીનદ ષનાનેસ, નહે મેદાિૌાનયહદોગ ગનુપ ઢશ્રશ્ઢ (ઢાિનેસસ ।નદ શ્રયયુનાયય િ મેદાિ) હાસ દેવેઠપેદ નહસિ ।ઠોનનાનાવિ, યનાનિયિડિનિગ માનિસનનોમ મેદાિ ડોન ડાઠિનિગ નો ।સસુમે નહેિ દેમોયનાનયિ ।નદ ફુોનનાઠસિનયિ નેસપોનસવિઠિનિસિ ।નદ યાઠઠનિગ ડોન ।ને શપાનસોિ ોડ વોયિસ ।નદ િદાસ ૌનિહિ નહે મેદાિ સયસનેમ શ્રનોનહેન સનનાનેગાય િવોઠવેસ નહે દેવેઠપમેનન ોડ ોપપોસનિોનાઠ મેદાિ, ।ઠોનનાનાવિસ નો નહે માનિસનનોમ, દેવેઠપેદ ુનસદિ ોડ નહે સનાવઠસિહેદ મેદાિ સયસનેમ શ્રોન મય વોિ, વોનહ સનનાનેગોસિ ।ન નેયેસસાનય ડોન નહે દેવેઠપમેનન ોડ । દેમોયનાનયિ મેદાિ પોઠનિયિસ ।નદ િન સિ । મસિનાકે નો પુનસુ ોન ।ન નહે નેગાઠેયન ોડ નહે ોનહેન યેવેઠપનિગ । નાદયિાઠ દેમોયનાનયિ મેદાિ પોઠનિયિસ નહસ િવોઠવેસ યોનનિુદ નેઠનનઠેસસ યનાનિયિસિમ ોડ નહે શસિનિગ મેદાિ સયસનેમ, ।નનેમપનસ નો દેમોયનાનડિ ।નદ નેડોનમ િન, ।નદ નહે પનોદુયનીિ ોડ ।ઠોનનાનાવિ પનોગનેસસવિ મેદાિ શ્રોન મય ।યયુોનન, દેમોયનાનડિનિગુન મેદાિ સયસનેમ ૌઠિઠ નેટુનિ શપાનસોિ ોડ નહે ।ઠોનનાનાવિ પનેસસ, । નેવાનિાઠડિાનીિ ોડ પુવઠયિ નેઠેવાસીિ, ।ન િયિનોસેદ નોઠ ડોન પુવઠયિ ।યયેસસ નેઠેવાસીિ, નહે વેનનુાઠ દેવેઠપમેનન ોડ । પુવઠયિ સાનેઠઠીનિ સયસનેમ, દેમોયનાનડિદ યોમપુનેન નેનૌનકસ, ।નદ ોપપોસનિોનાઠ યુઠનુનાઠ પોઠનિયિસૌનિહિન વેનય સપહેને ોડ યુઠનુને, નાનગાનિગ ડોમ મુસયિ નો વાસિુાઠ નો પનિન યુઠનુને છોમમુનનિય ।નદ ડાૌ- શ્ઠૌન ઢાદાિ છોમમુનનિય નાદાિ હાસ ઠેનગ પનોવાદિેદ ।ન

।ઊળેનાળાવિ સેળ ો૭ વૉયિસ ળ ળહે હગિહ૭ય ચેમમેનચાિઊછિદ માનિસળૅામ નાદાૈ છળિછિન- વાળદ (છઞ) ।ળદ સહોનળ-ૈાવે નાદાૈ ।ઊઊૈસ નિદવિદ્ધિાઊસ ળ દમિયળ૭ય ચેમમુળયિાળે ૈાળિહ ૅાયહ ૅાળહેન માળય ચુળળૅાસિ હાવે ।ઊસૅા શપેનમિળળેદ ૈાળિહ ઊૈ- પૌન ચેમમુળળિય નાદાૈ, ૈહયિહ ળાવઊસ ગ઼ાનાપસ ળ ।ચળા૭૭ય વનાળિગ઼ા નિદવિદ્ધિાઊસ ુાળ ો૭ ળહેમિ હેમેસ ળ પુવઊયિ પઊાયેસ ળ ળગ઼ાગ઼ે નિ દસિયુસસાૈનિ ોન ચેમમુળાઊ ।ચળાવિળિય ડૌ- પૌન નાદાૈ ળાવઊસ નિદવિદ્ધિાઊસ ળ દમિયળ૭ય ચેમમુળયિાળે ૈાળિહ ળહેમિ ળેગ઼િહવોનસ ળહ્નાગ઼ાહ ચાઊઊ- નિ ળેઊપહોળે ચેળળેચળાૈનિસ, ોન ળહ્નાગ઼ાહ દસિયુસસાૈનિસ નિ ળાનવય સળુદાૈસ, ।ળદ ળહુસ પનાવિદિ દેમોયનાળયિ ।ળદ પાનળયિપિાળોનય નિસળળુિાૈનિસ (સે ઞોશ ૩) ડૌ- પૌન નાદાૈ, હાૈવેન, સિ સુવળેચળ ળ ટુયિક સુપપેસસાૈનિ વય ળહે સળાળે, ।સ હાપપેળદ નિ હાપાળ ૈહયિહ હાદ ।ળે શળેનસવિ ઊૈ- પૌન નાદાૈ ચુઊળુે નિ પઊાય ળહાળાૈસ સહુળ- દાૈન ।ઊમોસળ ૅાવેનળગ઼િહળ ૈહેન ળહે સળાળે ુાળઊૈદ ઊૈ- પૌન વનાદયાસળળિગ઼ા ૨ન ળહે ૩૫, ળહેમે હાવે વેન સોમે ઊૈ- પૌન નાદાૈ શપેનમિળળસ, વુળ ળહે ગ઼ાવેનળમેળળ ળા હાસ ચનાચક્દ દાૈન ોન ળહેસે ઊયાઊ ।ળળેમપળસ ળ દેમોયનાળછિ નાદાૈ શ્ર દેમોયનાળયિ મેદાૈ પોઊળિયિસ સહોઊદ ળહુસ સળ્નાગ઼ાગ઼ે ડોન ઊૈ- પૌન નાદાૈ ।ળદ ળ નિયમાસે ળહે પોસસવિઊિળિસિ ો૭ દમિયળ ચેમમુળયિાળાૈનિ ળહ્નાગ઼ાહ નાદાૈ ળેચહ્નોઊગ઼ાય ૨ાેનયિા૭૭ય, દેસપાિળ ળહે હગિહેન ચોસળસ ો૭ ળેઊવસાૈનિ ળેચહ્નોઊગ઼ાય, ળહેમે ।મે પનાવાવ૭ય મોમે મિમેદાૈળિ પોસસવિઊિળિસિ ડોન દેમોયનાળયિ ।ઊળેનાળાવિ ળેઊવસાૈનિ ળહાળ નિ નાદાૈ શ્રસ મેળળાૈનિદ, ૈહઊિ ઊૈ- પૌન નાદાૈ ળેચહ્નોઊગ઼ાૅસિ ।મે મેઊાળવિ૭ય નિશપેનસવિ, ળહેય ।મે ।સઊિય સુપપેસસેદ વય । સળાળે ૈહયિહ ોપપોસેસ દેમોયનાળયિ ।ળદ ડ્મે-ૈહેઊનિગ઼ા ચેમમુળયિાળાૈનિ છોમમુળળિય નાદાૈ હાસ વેન ચુનાાઊિદ વય સાળુનાળાૈનિ ો૭ ઢમ ।ળદ શ્રમ ડ્મેટુનયેસિ ।ળદ નિ મોસળ પઊાયેસ ળહેમે સિ સમિપ૭ય નાળ ગ઼ામ ડોન ઊગ઼ાઊ ચેમમુળળિય નાદાૈ સળાળાૈનિસ વુનાળિગ઼ા ળહે ૅામ૭ય ૧૯૮૦સ નિ શ્રુસળનિ, થેશાસ, ડોન નિસળાળચે, ।વયિાૈસિ વાળળઊ ળાૈક પઊાયે વેળાૈન ળહે ૩નવિનસળિય ો૭ થેશાસ

ાનદ । ભેયાભ યોમમુનતિય઼- વાસેદ યો-ોપ નાદી ગનુપ ડોન તહે ેમાનિનિગા ઢમ ડ઼ેટ્નયય઼ વાનદ઼ હેનયે, તિ હાસ વેન દિડિડયુિભત તો દેવ઼ેભપ નૌ નાદીાુનિભતસ ડોન પુવભયિ યોમમુનયિાતીનિ ીતિહ તહે પનેવ઼ાુસિ ભમિતિદ સપેયનતુમ ાભભોતમેનત, ાભતહોુગાહ ડવિન-ોપતયિ યોમમુનતિય઼ યાવભ સયસતોમ ાનદ તહે રનતેનેત ાભસો માકે પોસસવિભ । દનામાતયિ શપાનસીનિ ોડ યોમમુનતિય઼ ાનદ ાભોનનાતવિ઼ નોદ ીહયિહ યુભદ માકે પોસસવિભ જનેયહ઼ત' સ વ઼સીનિ ોડ । નાદી સયસતોમીતિહે વ઼ેનય઼ નિદવિ઼દુાભ । સેનદેન઼ શુવભયિ શ્રયયેસસ થેભવ઼સીનિ શુવભયિ ાયયેસસ તેભવ઼સીનિ હાસ વેન ડોન સોમે દેયાદેસ નૌ ાને સતાવભસિહેદ વ઼ેનુ ડોન ાભોનનાતવિ઼ દેમોયનાતયિ યોમમુનયિાતીનિ઼ થહે નાપદિ શપાનસીનિ ોડ પુવભયિ ાયયેસસ તેભવ઼સીનિ નિ તહે ૧૯૭૦સ નિ તહે ૩ષ઼ પનોવ઼દિદ નૌ પોસસવિભિતિસિ ડોન પનોગાપેસસવિ઼ નિદવિ઼દુાભસ ાનદ ગનુપસ તો પનોદુયે વ઼દી પનોગાનામમનિગા તહાત યુતસ ાગાનિસત તહે યોનસેનવ઼ાતવિ઼ પનોગાનામમનિગા ીહયિહ દોમનિાતેસ માનિસતનોમ તેભવ઼સીનિ નિ તહે ૩નતિદ ષતાતેસ઼ શ્ટનોગાપેસસવિ઼ ાયયેસસ પનોગાનામમનિગા સિ નૌ વેનિગા યાવભયાસત નેગુભનભય઼ નિ સુયહ પભાયેસ ાસ મૌીનક, ડ઼ોસ શ્રનગોભસ, નોસતોન, છહયિાગો, શ્રતભાનતા, માદસિોન, ૩નવાના, મૌ શ્રોનભાનસ, શ્રુસતનિ, ાનદ પેનહાપસ ાસ માનય઼ ાસ ૨, ૦૦૦ ોતહેન તોીનસ ોન નેગાનિસ ોડ તહે યુનતનય઼ શુવભયિ ાયયેસસ તેભવ઼સીનિ, નિ મોસત યાસેસ, પનોવ઼દિસ ડ઼ને ટ્પિમેનત ાનદ ાનિતમિ તો નિદવિ઼દુાભસ ાનદ ગનુપસ ીહે ીાનત તો માકે તહેનિ ીન પનોગાનામમનિગ઼ ૩સુાભભય઼, ોને મુસત તાકે । યુનસે તો ાયતુાભભયુ સે સતુદી ાનદે દતિનિગો ટ્પિમેનત ાનદ । ડૌ સયસતોમસ ભાસે તહે ટ્પિમેનત ાનદ ાનિતમિ, વુત, ડોન તહે મોસત પાનત, ીહેને તહેને ાને પુવભયિ ાયયેસસ યહાનનેભસ, તહે યાવભ સયસતોમસ માકે તહેમ ાવ઼ાભિવભ ડોન પુવભયુિ સે ાનદ તહેય઼ ાનુ સુાભભય઼ માનાગેદ વય઼ ાન નિદેપેનદેનત વોદય઼, ાનસીનાવભ તો તહે યોમમુનતિય઼, ાનદ ોડતેન ડનિાનયેદ વય઼ તહે યાવભ સયસતોમ઼ શ્રીહેન યાવભ તેભવ઼સીનિ વેગાાન તો વેીદિભય઼ નિતનોદુયેદ નિ તહે ાનભય઼ ૧૯૭૦સ, તહે ઢેદનાભ છોમમુનયિાતીનિસ છોમમસિસીનિ માનદાતેદ નિ ૧૯૭૨ તહાત "વેગાનિનનિગા નિ ૧૯૭૨, નૌ યાવભ

સયસટેમસ {ાનદ ાડોન ૧૯૭૭, ાઉઉ યાવઉ સયસટેમસ} નિ ટહે ૧૦૦ ઉાનગેસટ ટેઉવ઼સીનિ માનકેટસ વે પેટુપિદ ટો પનોવ઼િદે યહાનનેઉસ ડોન ગોવ઼ેનનમેનટ, ડોન દુયાટીનાઉ પુનપોસેસ, ાનદ મોસટ મિપોનટાનટઉય઼, ડોન પુવઉયિ ાયયેસસ઼" થહસિ માનદાટે સુગગેસટેદ ટહાટ યાવઉ સયસટેમસ સહોુઉદ માકે ાવ઼ાઉાવઉ ટહને પુવઉયિ ાયયેસસ યહાનનેઉસ ટો વે ુસેદ ડોન સટાટે ાનદ ઉયાઉ ગોવ઼ેનનમેનટ, ેદુયાટીનિ, ાનદ યોમમુનટિય઼ પુવઉયિ ાયયેસસ્ ુસે "શ્રુવઉયિ ાયયેસસ" ૌાસ યોનસટનુેદ ટો મોન ટહાટ ટહે યાવઉ યોમપાનય઼ સહોુઉદ માકે ાવ઼ાઉાવઉે ટુપિમેનટ ાનદ ાનિ ટમિ સો ટહાટ ઉટિનાઉઉય઼ ાનય઼વોદય઼ યુઉદ માકે ણેનયોમમેનયાઉિ ુસે ોડ ટહે ાયયેસસ યહાનનેઉ, ાનદ સાય઼ ાનદ દો ાનય઼ટહનિગ ટહાટ ટહેય઼ ૌસિહેદ ોન ા ડનિસટ- યોમે, ડનિસટ- સેનવેદ વાસસિ, સુવઝેયટ ોનઉય઼ ટો ોવિસયેનટિય઼ ાનદ ઉવિઉ ઉૌસ ાનદ પનોહવિટિીનિસ ાગાનિસટ ાદવ઼ેનટસિનિગ ાનદ પટિયહેસ ડોન મોનેય઼ છ્ઞોટનિગ ાન ાયયેસસ સયસટેમ પેટુપિદ, નિ માનય઼ યાસેસ, સેટટનિગ ુપ ા ઉયાઉ ોમગાનઝિાટીનિ ટો માનાગે ટહે ાયયેસસ યહાનનેઉસ, ટહોુગહ નિ ોટહેન સયસટેમસ ટહે યાવઉ યોમપાનય઼ ટિસેઉડ માનાગેદ ટહે ાયયેસસ યેનટેન્ ૨ન ટહે વેગાનિનનિગ, હૌવ઼ેન, ડૌ, ડિ ાનય઼, યાવઉ સયસટેમસ માદે ાસ માનય઼ ાસ ટહને યહાનનેઉસ ાવ઼ાઉાવઉ, વુટ સોમે સયસટેમસ વેગાન ોડડેનનિગ ોનેોન ટૌ ાયયેસસ યહાનનેઉસ નિ ટહે ોનઉય઼ ટો મદિ ૧૯૭૦સ઼ થહે ાવ઼ાઉાવઉિટિય઼ ોડ ાયયેસસ યહાનનેઉસ દેપેનદેદ, ડોન ટહે મોસટ પાનટ, ોન ટહે પોઉટિયિાઉ યઉુટ ોડ ઉયાઉ ગોવ઼ેનનમેનટસ ાનદ યોમમટિટેદ, ાનદ ોડટેનુ નપાદિ, ઉયાઉ ગનુોપસ ટો યોનવ઼નિયે ટહે યાવઉ યોમપાનેસિ, ાઉમોસટ ાઉઉ પનવિ઼ાટેઉય઼ ૌનેદ, ટો માકે ાવ઼ાઉાવઉ ાન ાયયેસસ યહાનનેઉ હેને નિ શ્રુસટનિ, ડોન ેશામપઉ, ા સમાઉઉ ગનુોપ ોડ વ઼દિૌ ાયટવિ઼સિટસ ડોનમેદ શ્રુસટનિ છ્ઞોમમુનટિય઼ થેઉવ઼સીનિ નિ ૧૯૭૩ ાનદ વેગાન વનોાદયાસટનિગ ૌટિહ ટહેનિ ૌને ટુપિમેનટ ટહનોુગહ ટહે યાવઉ સયસટેમ ટહાટ યોન્ એવ઼ેનટુાઉઉય઼, ટહેય઼ પેયેવ઼િદ ડુનદાટીનિ ાનદ છ્ઞેનટેનટાનિમેનટશ્ર ગોવ઼ેનનમેનટ ગનાનટસ ટો સુપપોનટ ટહેનિ ાયટવિ઼ટિસિ, વુય઼ે ટુપિમેનટ, ાનદ પાય઼ પેગુઉાને મપઉોય઼ેસ

સાભાનેસિ્ શ્ર નૌ યાવભ યોનનાયન સગિનેદ નિ નહે ામભય ૧૯૮૦સ યાભભદ ડોન નહે યાવભ યોમપાનય નો પનોવૃદિ $૫૦૦, ૦૦૦ । યોન ડોન ાયયેસસ ાનદ ાડોન । દિવિડયુિભન પોભનિયાિભ સનાુગાગાભ, નેહયિહ ૨ સહાભભ મેનનાનિ ભાનેન, નૈને ાવભ નો ગેન ાન ભાસન $૩૦૦, ૦૦૦- $૪૦૦, ૦૦૦ । યોન નો સુપપોનન શ્રુસનાનિ છોમમુનનિય થેભવૃસિોનિ ાયનાવિૃનિસિ્ શ્ર ૧૯૭૯ ષુપનેમે છોુનન દેયસિોનિ, હોૌવેન, સનાુયક દોૌન નહે ૧૯૭૨ ઙછછ ાુભનિગાોન નહે ગાનાુનદસ નહાન નહે ઙછછ દદિ નોન હાવે નહે ાુનહોનાનિય નો માનદાને ાયયેસસ, ાન ાુનહોનાનિય નેહયિહ સુપપોસેદભય વેભોનગાસ નો નહે ઙ્ય છોનગાનેસસ્ મ્મોનેનહેભસસ, યાવભ ાોસે શપાનદનિગા સો નાપદિભય ાનદ વેયોમનિગા સુયહ । હગિહ- ગાનાૌનહ યોમપેનનિવિ નિદુસનાનય નહાન યનિય ગોવેનનમેનનસ યોનસદિનાનિગા યાવભ સયસનેમસ નૈને વેસોગિદ વય યોમપાનેસિ માક્નિગા ભયનાનાવિ ાોડડોનસ (૨૦ નો ૮૦ યહાનનેભ યાવભ સયસનેમસ) ાનદ ાૈને ાવભ નો નેગોનાિનિ ાયયેસસ યહાનનેભસ ાનદ ડનિાનયાિભ સુપપોનન ડોન । પુવભયિ ાયયેસસ સયસનેમ્ છોનસેટુનનભય, પુવભયિ ાયયેસસ ગાનૌ સગિનડિયિાનનભય દુનાનિગા નહે ામભય ૧૯૮૦સ્ શ્રોહેને નહેને ામે ાેપેનાનવિ પુવભયિ ાયયેસસ સયસનેમસ, નિદવિદિુાભસ હાવે પનોમસિનિગા, નહોુગહ નોન સુડડયિેનિનભયે શપભોનેદ, પોસસવિભિનિસિ નો પનોદુયે ાનદ વનોાદયાસન નહેનિ ાોન નેભવૃસિોનિ પનોગાનામસ્ ૨ન શ્રુસનાનિ, થેશાસ, ડોને શામપભ, નહેને હાવે વેનનૈકભય ાનનિ- ગુયભોન પનોગાનામસ, વભાયક ાનદ યહયિાનો સેનેસિ, ગાાય પનોગાનામસ, યુનનેનયુભનુનાભ ાનદ ાનાનયહસિન પનોગાનામસ, ાન ાનહેસિન પનોગાનામ, ડેમનિસિન ાનદ ાેમેન' સ પનોગાનામસ, ભાવોન પનોગાનામમનિગા, ાનદ ાૈકભય પનોગાનેસસવિ નૌસ માગાાડનિ, શ્રભોનનાનવિ વોૌસ, ાોનિહ નેહયિહ ૨ ામ નિવોભવેદ, નહાન હાસ પનોદુયેદ ાોવેન ૪૭૦ હોુન- ભાનગા પનોગાનામસ ડનોમ ૧૯૭૮ નો નહે પનેસેનન ાેન । નૈદિ વાનેનિય ાોડ નોપયિસ્ શ્રૌ યોમવનિ નૌસ નેપોનનસ ડનોમ ાભોનનાનવિ સોાનયેસ નૈનિહ દસિયુસસોનિ, દોયુમેનનાનેસિ, ાનદ વદિો- ડોનાગે ડનોમ ાભોનનાનવિ સોાનયેસ્ શ્રાપેન થગિોન થેભવૃસિોનિ નિ મ્મોૌનૈનક યોમવનિસ યનાનિદિ ાોડ

યોનપોનાતે મેદાિ વય઼ મેદાિ યનાતિયિસ ગૌતિહ મિાગનિાતવિ઼ સેતસ, વ઼સિુાિઉસ, ેદાતિનિગા, ાનદ સો ોન઼ શ્ર ઉાવોન-ોનેનિોદ પનોગાનામ, થહે મઉિઉ હુનક મોિસ, નિ શ્ચતિાસવુનાગાહુ સેદ તો યોમવનિ નૌસ ોપોનાતસ ોડ ઉાવોન સિસુેસગૌતિહ દોયુમેનતાનાય઼ નિતોનવૌિસગૌતિહગૌનકોસ, મુસયિ- વ઼દિોસ, ાનદ ોતિહેન યનોાતવિ઼ વ઼સિુાિઉસ, ોહિઉ ડ઼ાવોન ોાત નિ છહિયાગો ાઉસો ુસેસ દોયુમેનતાનાય઼ ડોાતાગે, મુસયિ, દનામા, ાનદ યોઉઉાગોસ ોડ મિાગોસ, ાસૌઉઉ ાસ નિતોનવ઼ૌ ાનદ તાઉકનિગા હોદ ડોનમાતસ, તો પનોસેનત ાઉોનનાતવિ઼ નિડોનમાતિોન (સે ોાશ ૪) થહેને હાવ઼ે વેન સોમે શપેનમિનતસગૌતિહ નાતિાનાઉ પનોગાનેસસવિ઼ સાતેઉઉતિ ોતૌિનકસ, ાઉતહુોગાહ તહેય઼ હાવ઼ે સુડડોનેદ ડનોમ નિાદટોતે ડુનદનિગા ાનદ તહે ડાિુનિ ોડ ોડોેન યોનસેનવ઼ાતવિ઼-ગૌનિદ યાવઉે સય઼સતેમસ તો યાનનાય઼ પનોગાનેસસવિ઼ પનોગાનામમનિગ઼ શ્રોહિઉ પુવઉયિ ાયયેસસ તેઉવ઼સિોનિ સિ સતાઉઉ નિ । નેઉાતવિ઼ઉય઼ ોાનઉય઼ સતાગે ોડ દેવ઼ેઉપમેનત નિ તહે ડ઼ુષ઼ ાનદ ોુનોપે, તિ યોનતાનિસ તહે પનોમસિ ોડ પનોવ઼દિનિગા । દડિડોનેત તય઼પે ોડ ાઉોનનાતવિ઼ તેઉવ઼સિોનિ઼ યેસપતિ ોવસતાયઉેસ તો તિસુ સે, પુવઉયિ ાયયેસસ પનોવ઼દિસ તહેોને નિસતાતિુતિોનિ નિ તહે યોમમેનયાિઉ ાનદ સતાતે વનોાદયાસતનિગા સય઼સતેમસ તહાત સિ ાત ઉાસત પોતેનતાિઉઉય઼ ોપેન તો પનોગાનેસસવિ઼ નિતોનવેનતાિોનિ઼ શ્ન સિ સેઉડ- દેડોાતનિગા સમિપઉય઼ તો દસિમસિસ વનોાદયાસત મેદાિ ાસ તોિઉસ ોડ માનપિુઉાતિોનિ ાનદ તો તહનિક તહાત પનાનિત મેદાિ ાને તહે ોનઉય઼ તોિઉસ ોડ યોમમુનયિાતિોનિ ાનદ પોઉતિયિાિઉ ેદુયાતિોનિ ોપેન તો પનોગાનેસસવિ઼સ઼ ષુનાવ઼ેય઼સ હાવ઼ે સહોિન તહાત પોપઉે તાકે મોને સેનાિુસિઉય઼ નિદવિ઼દિુાિઉસ, ગનોુપસ, ાનદ પોઉતિયિસ તહાત ાપપોાન ોન થવ઼; તહુસ તહે ુસે ોડ તેઉવ઼સિોનિ યુાઉદ હેઉપ પનોગાનેસસવિ઼ મોવ઼ેમેનતસ ાનદ સતનુગગાઉેસ ગાનિ ઉગાતિમિાયય઼ ાનદ ડોનયે નિ તહે સહડિતનિગા ાનદ યોનતનાદયિતિોનાય઼ ડોઉિદ ોડ ડ઼ુષ઼ પોઉતિયિસ઼ થહે ઢ઼ગિાહતા હાસ વેન માકનિગા ેડડેયતાવિ઼ુ સે ોડ નૌ તેયહનોાઉોગસિ ાનદ મેદાિ ોડ યોમમુનયિાતિોનિ, ાનદ ડોન પનોગાનેસસવિ઼સ તો ોનમાનિ ાઉોડ સિ । ઉશુનાય઼ તહાત તહેય઼ યાન નો ઉોનગોન ાડડોનદ઼ શ્રોડ યુોનસે, માનય઼ગૌિઉઉ યઉાનિ તહાત

દેમોયનાતિયિ પોઉતિયિસ નિવોઉવેસ ડાયે-તી-ડાયે યોનવેનસાતીનિ, દસિયુસસીનિ, ાનદ પનોદુયનિગ યોનસેનસુસ જુત ડોન નિતેઉઉગિનત દેવાતે ાનદ યોનસેનસુસ તો વે નાયહેદ, નિદવિદુાઉસ મુસત વે નિડોનમેદ ાનદ નાદી, તેઉવસીનિ, ાનદ યોમપુતેનસ ાને મિપોનતાનત સુોનયેસ ોડ નિડોનમાતીનિ નિ તહે પનેસેનત ાગે થહુસ ૨ ાન નોત પનોપોસનિગ તહાત મેદી પોઉતિયિસ સુપપઉેમેનત ાઉઉ પોઉતિયિાઉ ાયતિવિતિય ાનદ ોનગાનિડિનિગ, વુત ાન સુગગેસતનિગ તહાત । મેદી પોઉતિયિસ સહોુઉદ વે દેવેઉોપેદ તો હેઉપ ાયતિવિસિત ગનોુપસ ાનદ નિદવિદુાઉસ ોવતાનિ ાનદ દસિસેમનિાતે નિડોનમાતીનિ ૨ન શ્રુસતનિ, થેશાસ, ડોન નિસતાનયે, । ગનોુપ, છુોનયાઉ ડોન શ્રુવઉયિ મેદી, હાસ વેન ોૈનકનિગ તો નિડોનમ ાયતિવિસિત ગનોુપસ હોૈ તહેય યાન ગેત નિડોનમાતીનિ તહનોુગહ તહે નોૈ યોમપુતેન તેયહનોઉેગોસિ ાનદ હોૈ તહેય યાનુ સે તહે પનેસસ, વનોાદયાસત મેદી, ાનદ ોતહેન મેતહોદસ ોડ યોમમુનિયાતીનિ તો ગેત તહેનિ મેસસાગેસુોત શ્રયતિવિસિત ગનોુપસ ાને યોમનિગ તો સે તહાત મેદી પોઉતિયિસ સિ । કેયે ઉેમેનત ોડ પોઉતિયિાઉ ોનગાનિડાતીનિ ાનદ સતનોુગગાઉ ાનદ તહુસ મોને ોૈનક ોન દેવેઉોપનિગ નિસતિુતીનિસ ાનદ સતનાતેગોસિ ડોન મેદી પોઉતિયિસ સિ નેયેસસાનય ૨નદેદ, ડિ પનોગનેસસવિ ગનોુપસ ાનદ મોવેમેનતસ ાને તો પનોદુયે । ગેનુનિ ાઉતેનનાતિવિ તો તહે ઢગિહત, તહેય મુસત નિયનોસે તહેનિ માસસ વાસે ાનદ યનિયુઉાતે તહેનિ સતનોુગગાઉસ તો મોને સેગમેનતસ ોડ તહે પોપુઉાતીનિ શ્રડતેન ાઉઉ, મોસત પોપઉે ગેત તહેનિ નોૈસ ાનદ નિડોનમાતીનિ ડનોમ તેઉવસીનિ, ાનદ તહે વનોાદયાસત મેદી ાનગુાવઉય પઉાય । દેયસિવિ નોઉે નિ દેડનિનિગ પોઉતિયિાઉ નાઉતિસિ, સહાપનિગ પુવઉયિ ોપનિીનિ, ાનદ દેતેનમનિનિગ ોહાત સિ ોન ોહાત સિ નોત તો વે તાકેન સેનોુસિઉય ૨ડ પનોગનેસસવિસ ોાનત તો પઉાય । નોઉે નિ ઉેયાઉ ાનદ નાતીનિાઉ પોઉતિયિાઉ ઉડિ, તહેય મુસત યોમે તો તેનમસ ોતિહ તહે નાઉતિસિ ોડ ઉેયતનોનિય યોમમુનિયાતીનિ ાનદ યોમપુતેન તેયહનોઉેગોસિ નિ ોનદેન તો દેવેઉોપ સતનાતેગોસિ તો માકેુ સે ોડ નોૈ તેયહનોઉેગોસિ ાનદ પોસસવિઉિતિસિ ડોન નિતેનવેનતીનિ થહે યેમોયનાતડિાતીનિ ોડ છોમપુતેનસ ાનદ ૨નડોનમાતીનિ

શ્રોતહેન પોસસવિવિર્ણિતોસિ ડોન ેશપાનદનિગ । સયસતેમ ોડ દેમોયનાતયિ તેયહનો- પોર્ણતિયિસ ેસદિ નિ નૌ યોમપુતેન ।નદ નિડોનમાતીનિ તેયહનોર્ણગોસિ શત ।પપોનસ તહાત તહેે ૌર્ણર્ણ વે । મેનગોન ોડ ેનતેનતાનિમેનત ।નદ નિડોનમાતીનિ યેનતેનસ નિ તહે હોમેસ ોડ તહે ડુતુે ૌતિહ ।ર્ણર્ણ પોસસવિર્ણ પનાનિત મેદાિ નિડોનમાતીનિ ।યયેસસવિર્ણ વય યોમપુતેન ।નદ ।ર્ણર્ણ વસ્રિાર્ણ મેદાિ ેનતેનતાનિમેનત ।નદ નિડોનમાતીનિ ેસ્રોનયેસ ।વાર્ણિવર્ણ ડોન હોમે યોમપુતેેનતેનતાનિમેનત યેનતેન ।યયેસસ જુત તહે તહોન- - ।નદ ર્ણકિર્ણહીદ ડિ ।ર્ણતેનનાતવિ યોનયેપતસ ।ે નોત દેવેર્ણપેદ ।નદ દસિસેમનિાતેદ- - સિ તહાત તહસિ નિડોનમાતીનિ ।નદ ેનતેનતાનિમેનત માતેનાર્ણ ૌર્ણર્ણ વે તહોેનુગહર્ણય યોમમોદર્ડિદિ, ।વાર્ણિવર્ણ ોનર્ણય તો તહોસે ૌહો યાન ।ડડોનદ તો પાય છોનસેટુંનતર્ણય, તિ સિ નેયેસસાનય તો વેગનિ દેવસિનિગ પુવર્ણયિ ।ર્ણતેનનાતવિસ તો તહેસે પનાવિાતેયોનપોનાતે નિડોનમાતીનિ ।નદે નતેનતાનિમેનત સયસતેમસ ોડ તહે ડુતુે ઘવિન તહે ગનૌનિગ મિપોનતાનયે ોડ યોમપુતેનસ ।નદ નિડોનમાતીનિ નિ તહે નૌ તેયહનો- યાપતિાર્ણસિત સોયેતિય, પનોદુયનિગ નૌ નિડોનમાતીનિ નેતૌનકસ ।નદ સયસતેમસ મુસત તહેેડોે વે ।ને સસેનતાર્ણ નિગેમેદનિત ોડ । પનોગનેસસવિ મેદાિ ।નદ નિડોનમાતીનિ પોર્ણતિયિસ થહે યોમપુતેનાડાિતીનિ ોડ તહે ૌનર્ણદ સિ ૌર્ણર્ણુનદેનૌય ।નદ પોસસવિર્ણિતોસિ ।ે ગનૌનિગ ડોન નૌ નિડોનમાતીનિ નેતૌનકસ ।નદ યોમપુતેન યોમમુનયિાતીનિ સયસતેમસ થો ।વોદિ યોનપોનાતે ।નદ ગોવેનનમેનત મોનોપોર્ણડાિતીનિ ।નદ યોનતનોર્ણ ોડ નિડોનમાતીનિ, નૌ પુવર્ણયિ નિડોનમાતીનિ નેતૌનકસ ।નદ યેનતેનસ ।ે ।ર્ણસો નેયેસસાનય સો તહાત યતિડિનસ ોડ તહે ડુતુે યાન હાવે ।યયેસસ તો તહે નિડોનમાતીનિ નેદેદ તો નિતેર્ણર્ણગિનતર્ણય પાનતયિપિાતે નિ । દેમોયનાતયિ સોયેતિય ઢોન યોમપુતેનસ, ર્ણકિ વનાદયાસતનિગ, યાન વુ સેદ ડોન ોન ।ગાનિસત દેમોયનાયય શનદેદ, યોમપુતેનસ ।ે । પોતેનતાર્ણર્ણય દેમોયનાતયિ તેયહનોર્ણગાય શ્રોહર્ણિ વનાદયાસત યોમમુનયિાતીનિ તેનદસ તો વે ોને-ોય ।નદુ નદિમિયતીનાર્ણ, યોમપુતેન યોમમુનયિાતીનિ સિ પોતેનતાર્ણર્ણય વિ-, ોને વેન ોમનિ-, દમિયતીનાર્ણ શનદવિદ્રાર્ણસ યાનુ સે યોમપુતેનસ તો દો

ૌાનદ- પનોયેસસસનિગ ળો યોમમુનયિાળે ૌાિહ ોળહેન નિદવિ઼દ્િાઉસ, ોન યાન દનિયનઉય઼ યોમમુનયિાળે ૌાિહ ોળહેનસ વ઼ાિ મોદેમસ ૌહયિહ સે ળહે ળેઉપહોને ળો ઉનિક નિદવિ઼દ્િાઉસ ૌાિહે ાયહ ોળહેન઼ મોદેમસ યાન નાપ નિળો યોમમુનળિય઼ વુઉઉેળનિ વોાનદસ, ૌવ સળિસ, ોન યોમપુળેન યોનડેમેનયે પનોગાનામસ, નહાળ માકે પોસસવિઉ । નૌ નય઼પે ોડ પુવઉયિ યોમમુનયિાળાનિ ાનદ પનોગપેસસસવિ઼સ સહ્ોઉદ નિળેનવ઼ેને નિ નહેસે નિડોનમાનાનિ મોદેસ ાસૌઉઉ ાસ પાનનયિપિાનિગ નિ પુવઉયિ દેવાળે ાનદ દસિયુસસોિન઼ ઢોન નિસનાનયે, માનય઼ યોમપુળેન વુઉઉેળનિ વોાનદસ ાનદ ૌવ સળિસ હાવ઼ે । પોઉળિયિાઉ દેવાળે યોનડેમેનયે ૌહેમ નિદવિ઼દ્િાઉસ યાન નય઼પે નિ નહેમિ ોપનિિનિસ ાનદ ોળહેન નિદવિ઼દ્િાઉસ યાન મોદ નહેમ ાનદ ડિ નહેય઼ ૌસિહ મેસપોનદ઼ થહસિ યોનસનાિુળેસ । નૌ ડોનમ ોડ પુવઉયિ દાિઉેગુ ાનદ નિળેનાયનાિન઼ છોમપુળેન દાના વાસેસ ાનદ ૌવ સળિસ પનોવ઼િદે સસેનનાિઉ સુોનયેસ ોડ નિડોનમાનાિનિ ાનદ નૌ નેયહનોઉેગેસિ નહાળ નમેમેનદ્ોસઉય઼ ડાયઉિળિાળેસ નિડોનમાનાિનિ- સોનયહનિગ ાનદ મેસોનયહ઼ માનિસનમોમ દાના વાસેસ નિયઉદે ડ઼શસિ઼મેશસિ ાનદ યાિઉેગુ ૌહયિહ યોનનાનિ । નમેમેનદ્ોસ ાનનાય઼ ોડ નૌસપાપેનસ, માગાડનિસ, ળુોનનાઉસ, નનાનસયનપિનસ ોડ થવ઼ પનોગાનામસ, નૌસ યોનડેમેનયેસ, યોનગપેસસોિનાઉ હોનાનિગાસ, ાનદ નૌસઉનળેનસ, મેપનોદુયેદ નિ ડુઉઉ઼ શ્રઉેનનાનાવિ઼ દાના વાસેસ નિયઉદે શ્ચાયેનેન ૌહયિહ હાસ ોવ઼ેન દ૦૦ યોનડેમેનયેસ ોન નોપયિસ ોડ યોઉેગાય઼, ૌાન ાનદ પોાયે, ડેમનિસિમ, ાનદ હુનદ્મેદસ ોડ ોળહેન નોપયિસ઼ હેમ પનોગપેસસસવિ઼સ પુન નિ ાઉેનનાનાવિ઼ નિડોનમાનાિનિ ાનદ સોમે ોડ નહે યોનડેમેનયેસ હાવ઼ે ઉવિ઼ઉય઼ દેવાળેસ઼ મેળૌન નહે માનિસનમોમ ાનદ ાઉેનનાનાવિ઼ યોમપુળેન દાના વાસેસ, નિદવિ઼દ્િાઉસ ાનદ ગનુોપસ યાન ાયયેસસ । નમેમેનદ્ોસ ામુોનન ોડ નિડોનમાનાિનિ નિ । મેઉાનવિ઼ઉય઼ સહોનન નમિ઼ ૨ૌાસ ાવઉ ળો મેસોનયહ મય઼ વોિક ોન નહે મેદાિ ાનદ નહે ઘુઉડ ૌાન, ડોન નિસનાનયે, વેયુાસે ૨ૌાસ ાવઉ ળો ાયયેસસ નિડોનમાનાિનો ોન વ઼ાનુોસિ નોપયિસ ડનોમ । વ઼ાનોિય઼ ોડ સુોનયેસ સમિપઉય઼ વય઼ પુનયહનિગ નિ યોદે ૌાનદસ ૌહયિહે નાવઉદ મે ળો દસિયેનન નહે યોનડઉયિનિગ મેદાિ વ઼ેનસોિનસ

ોડ તહે ઘુઊડૌાન ાનદ તો પુત નિ ટુસતીનિ તહે વ઼ોનસીનિ વેનિગા પનોમોતેદ વય઼ તહે જુસહ ાદમનિનિસિતનાતીનિ ાનદ શ્ઙેનતાગોન઼ એ્ઙેન઼તુાઊઊય઼, તહે ઊેસિ ાનદ દસિનિડોનમાતીનિ પનોમોતેદ વય઼ તહે ઙ્ષ઼ ગોવ઼ેનનમેનત નિ તહે ૌાન ૈમે તહેોનુગહઊય઼ે શપોસેદ વય઼ । વ઼ાર્ોતિય઼ ોડ સુોનયેસ, ાયયેસસવિઊ તો યોમપુતેન દાતા વાસે સોનયહેસ઼ છોનપોનાતીનિસ, ગોવ઼ેનનમેનત નિસતતુિતીનિસ, તહે માળોન પોઊતિયિાઊ પાનતોસિ, ાનદ ોતહેન ગાનુપસ ામે તાક્નિગા ાદવ઼ાનતાગો ોડ તહેસે યોમપુતેન દાતા વાસેસ ાનદ પનોગામેસસવ઼િ મુસત ઊાનન તો ાયયેસસ ાનદ્ સે તહેમ તો પનોદુયે તહે નિડોનમાતીનિ નેયેસસાનય઼ તો પમેવ઼ાિઊ નિ તહે પુવઊિયિ દેવાતેસ ોડ તહે ડુતુમે઼ જુત તહે પોઊતિયિસ ોડ નિડોનમાતીનિ નિ તહે ડુતુમે મુસત સતનુગાગાઊ તો સે તહાત ાઊોનનાતવિ઼ નિડોનમાતીનિ સિ ાયયેસસવિઊ નિ માનિસતનોમ યોમપુતેન દાતા વાસેસ, ાસૌઊઊ ાસ ાઊોનનાતવિ઼ ોનેસ઼ માનય઼ દાતા વાસેસ ાનદ નિડોનમાતીનિ સેનવ઼યિસ ોમતિ ઊડતાસિત, ડમેનિસિત, ેનવ઼ાિોનમેનતાઊસિત, ાનદ ોતહેન ાઊોનનાતવિ઼ નિડોનમાતીનિ સુોનયેસ ડનોમ તહેમિ ઊસિતનિગાસ, તહુસ નિ ડડેયત સહુતતનિગાુત નાદયિાઊ ાઊોનનાતવિ઼સ નિ નિડોનમાતીનિ સુોનયેસ, મુયહ ાસ તહે વનોાદયાસતનિગા નેતાૌનક્સ શયઊદે દસિસદિનત વ઼ોયિસ ડનોમ વનોાદયાસત યોમમુનયિાતીનિ઼ શ્નોગામેસસવિ઼ ગાનુપસ ાનદ ાઊોનનાતવિ઼ પુવઊયિાતીનિસ સહુોઊદ સતનુગાગાઊ તો માકે સુમે તહાત તહેમિ નિડોનમાતીનિ સુોનયેસ ાનદ સેનવ઼યિસ ામે ઊસિતેદ નિ દાતા વાસે વવિઊીગાનાપહેસિ ાનદ સુોનયે માતેનાિ઼ઊૈ ત તહે પનોઊડિનાતીનિ ોડ તહે શ્ઙૌનઊદ શ્ઙૌદિ શ્ઙૌવે નાવઊેસ નિદેપેનદેનત ાનદ ાઊોનનાતવિ઼ ગાનુપસ ાનદ નિદવિ઼દિુાઊસ તો યનોત તહેમિ ૌન ૈવ સતિસ, તો માકે તહેમિ નિડોનમાતીનિ ાવ઼ાિઊાવઊ તો પોપઊ તહનુોગહ તહે ગાઊેવ, ોડતેન ડનો ોડ યહાનગે઼ ફન તહે નેશત સેયતીનિ, ફૌઊઊ ગાવિ઼ સોમે શામપઊેસ ોડ હૌ યોમપુતેન તેયહનો- પોઊતિયિસ હાવ઼ે દેપઊોયે઼દ ૈવ સતિસ, વુઊઊેતનિ વોનદસ, માઊિનિગા ઊસિતસ, ાનદ માઊ યામપાગિનસ તો પનોમોતે । વ઼ાર્ોતિય઼ ોડ પોઊતિયિાઊ સતનુગાગાઊેસ઼ ઢમિસત, હૌવ઼ેન, ફૌાતત તો યોનયઊદે તહસિ સેયતીનિ વય઼ નોતનિગા તહાત । સયનેનગાય઼ સિ મેનગાનિગા વ઼તૌન તહે નૌ સુોનયેસ ોડ નિડોનમાતીનિ, નૌ મેદાિ ાનદ

તેયહ્નોઊગોસિ, ાનદ પોઊતિયિાઊ ામગાનડિાતીનિ ાનદ સત્નુગાગઊે શ્વાનિત ાનદ વનોાદયાસત મેદીા ામગાનસ યાન ાવતાનિ નિડોામાતીનિ ડાોમ યોમ્પુતોસ ાનદ દસિસેમનિાતે તિ તો તહે પુવઊયિ શ્વોઊતિયિાઊ ગાનુપસ યાન ાવતાનિ નિડોામાતીનિ ડાોમ તહેસે સુોાયેસ ાનદ દસિસેમનિાતે તિ વાયક તહ્નુોગાહ પાનિત, વનોાદયાસત, ાનદ યોમ્પુતો તેયહ્નોઊગોસિ ફ્નડોામાતીનિ યાતિયિાઊ ાડ, સાય, તાાનસનાતીનાઊ યોાપોાાતે પોઊયિોસિ યાન વે દસિસેમનિાતેદ તહ્નુોગાહ ા મુઊતપિઊયિતિય ાડ સતિસ, સો પોઊતિયિાઊ ગાનુપસ નેદ તો વે ગ્રામે ાડ તહે પોતેનતાઊ ડાો તહે તાાનસમસિસોનિ ાડ નિડોામાતીનિ તહ્નુોગાહ ા વાનોતિય ાડ મેદીા નિ તહે યોનતેમપોાામય ેના મોમોવો, તહે ફ્નતોનેત માય વે ા વેહયિઊ ડાો નૌ ડાોમસ ાડ ાઊોાનાતાવિ ાાદીા, તેઊવસિોનિ, ડઊમિ, ામત, ાનદ ેવોય ડાોામ ાડ યુઊતુમે ાસ ોઊઊ ાસ નિડોામાતીનિ ાનદ પાનિત માતોઊિ ામૌ મુઊતમિદીા તેયહ્નોઊગોસિ ામે ાઊાોદય વસિવિઊ ાનૌવ સતિસ ાનદ ફ્નતોનેત ાાદીા ાનદ તેઊવસિોનિ સિ નૌ નિ તિસ નિડાનયય થહસિ ગુાઊદ તનુઊય માકે પોસસવિઊ મેયેહત' સ દોામ ાડ ા યોમમુનયિાતીનિસ સયસતેમ ોહમે વોયોનોાસ ા સેનદો ાનદ મેયેવિા ાનદ ગુાઊદ ગાોતઊય પાોઊડિાતે તહે ાાનગો ાનદ દવિાસતિય ાડ વોયિસ ાનદ તેશતસ ાનદ ગુાઊદ ાઊસો નો દ્ગુવત ગવિ ા નૌ દમિનસોનિ ાડ તહે યોનયેપત ાડ નિડોામાતીનિયુઊતુાાઊ ાવોઊોદ ફ્નદેદ, ા મુસત ાવવ્રુસિઊય ગાનિ ા ોહોઊ સેત ાડ નૌ ઊતિાોયોસિ તો સે ાનદ દેપઊય તહે નૌ તેયહ્નોઊગોસિ (સે પ્મેઊઊનો, ડોાતહ્યોમનિગા) મુત નિ યોનયઉસોનિ, શ્રાનત તો ઊમિતિ મય ડોયુસ ાન નૌ તેયહ્નોઊગોસિ ાનદ તેયહ્નો- પોઊતિયિસ ાડ તહે પમેસેનત દાય થેયહ્નો- શ્વોઊતિયિસ ાનદ શ્વોઊતિયિાઊ ષતુનુગાગઊ ષનિયે નૌ તેયહ્નોઊગોસિ ામે નિ ાનય યાસે દાામાતયિાઊઊય તાાનસડોામનિગ ેવોય સપહેમે ાડ ઊડિ, તહે કેય યહાઊઊેનગ સિ હોૌ તો તહોડિ તહસિ ગાોત તાાનસડોામાતીનિ ાનદ હોૌ તો દેવસિ સતાાતેગોસિ તો માકે પાોદ્દુયતાવિ ેસે ાડ તહે નૌ તેયહ્નોઊગોસિ શ્વોવવ્રુસિઊય, ાાદયિાઊ યાતિદ્વિ ાડ દેહુમાનડિનિગ, ેશપઊતિાતાવિ, ાનદ ાપપમેસસવિ ેસેસ ાડ નૌ તેયહ્નોઊગોસિ નિ તહે ગામકપઊાયે, સયહોઊનિગ,

પુવલયિ સપહેને, ાનદ વેનયદાય લડિ ાને મોને નેયેસસાનય તહાને વેન, વુત સો ાને સતનાતેગોસિ તહાત ુસે નૌ તેયહનોલોગોસિ તો નેવુલિદ ુન યતિેસિ, સયહોોલસ, `યોનોમય, ાનદ સોયેતિય઼ ૨ોાનત તો ડોયુસ, તહેનેડોને, નિ તહે નેમાનિદેન ોડ તહસિ સેયતોોનિ ોન હોૌ નૌ તેયહનોલોગોસિ યાન વે ુસેદ ડોન નિયનોાસનિગ઼ દેમોયનાતડિાતોોનિ ાનદ `મપોૌનાનિગ઼ નિદવિ઼દુોલસ઼ ઘવિ઼ન તહે શતેનન તો ોહયિહ યાપતિાલ ાનદ તિસ લોગાયિ ોડ યોમમોદડિયિાતોોનિ હાવે઼ યોલેનડિદ વેન મોને ાોાસ ોડ વેનયદાય લડિ નિ નેયેનત યોનસ, તિ સિ સોમોેહાત ાસતોનસિહનિગ઼ તહાત યય઼વેનસપાયે સિ વય઼ ાનદ લાનગે દેયોમમોદડિદિ ડોન લાનગે નુમવેનસ ોડ પોપલે -- ાત લોસત નિ તહે ોવિ઼નદેવે઼લોપેદ યોુનતનેસિ લકિ તહે ઉનતિેદ ષતાતેસ઼ ૨ન તહે ઉ઼ષ, ગોવે઼નનમેનત ાનદ દુયાતોોનાલ નિસતતિુતોોનિસ, ાનદ સોમે વુસનિસસેસ, પનોવદિે ડને ૨નતેનનેત ાયયેસસ ાનદ નિ સોમે યાસેસ ડને યોમપુતેનસ, ોન ાત લોસત ોૌનકપલાયે ાયયેસસ઼ શ્રોતિહ ડલાત- નાતે મોનતહલય પહોને વલિલસ (ોહયિહ ૨ કનૌ દો નોતે શસિત નિ મુયહ ોડ તહેોૌનલદ), ોને યાન તહુસ હાવે઼ ાયયેસસ તો ા યોનપુયોપાિ ોડ નિડોનમાતોોનિ ાનદ નતેનતાનિમેનત ોન તહે ૨નતેનનેત ડોન ડને, ોનોડ તહે ડૌ દેયોમમોદડિદિ સપાયેસ નિ તહુ લતનાયોમમોદડિદિોૌનલદ ોડ તેયહનોયાપતિાલસિમ઼ શ્રોવવ઼ુસિલય઼, મુયહ ોડ તહેોૌનલદ દોસ નોતે વે઼ન હાવે઼ તેલપહોને સેનવ઼યિ, મુયહ લેસસ યોમપુતેનસ, ાનદ તહેને ાને વ઼ાસત નિટુાલતિોસિ નિ તેનમસ ોડોહો હાસ ાયયેસસ તો યોમપુતેનસ ાનદોહો પાનતયિપિાતેસ નિ તહે તેયહનોલોગાયિાલ નેવ઼ોલુતોોનિ ાનદ યય઼વેનદેમોયનાયય઼ તોદાય઼ છનાતિયિસ ોડ નૌ તેયહનોલોગોસિ ાનદ યય઼વેનસપાયે નેપોાત નિયેસસાનતલય઼ તહાત તિ સિ વય઼ ાનદ લાનગે યોુનગ઼, ોહતિ, મદિદલે ોનુ પપેન યલાસસ માલેસોહો ાને તહે દોમનિાનત પલાય઼ેનસ નિ તહે યય઼વેનસપાયેસ ોડ તહે પનેસેનત, ાનદોહલિ તહસિ સિ તનુ, સતાતસિતિયિસ ાનદ સુનવે઼યસ નિદયિાતે તહાત માનય઼ મોનેોૌમેન, પોપલે ોડ યોલોન, સેનોોનસ, ાનદ ોતહેન મનિોનાતિય઼ યાતેગોનેસિ ાને વેયોમનિગ઼ નિયનોાસનિગઃલય઼ ાયતવિ઼ે મોનોવે઼ન, તિ ાપપોાનસ તહાત યોમપુતેનસ ાને વેયોમનિગ઼ પાનત ોડ તહે સતાનદાનદ હુોસેહોલદ યોનસુમેન પાયકાગે ાનદોહલિલ

પેરહાપસ વે ાસ યોમમોન ાસ તેલેવ઼િસિોન સેતસ વય઼ તહે વેગિનનિનગ ોફ તહે નેક્ષત યેનતુરય઼, ાનદ યેરતાિનલય઼ મોરે િમપોરતાનત ફોર ૌોરક, સોયિાલ લિફે, ાનદ ેદુયાતિોન તહાન તહે થવ઼ સેત઼ મોરેોવ઼ેર, તહેરે ારે પલાનસ ાફોોત તો ૌિરે તહે ેનતિરે ૌોરલદ ૌિતહ સાતેલલિતેસ તહાત ૌોુલદ માકે તહે ઇનતેરનેત ાનદ યોમમુનિયાતિોન રેવ઼ોલુતિોન ાયયેસસિવલે તો પેોપલે ૌહો દો નોત નોૌ હાવ઼ે તેલેપહોનેસ, તેલેવ઼િસિોનસ, ોર ેવ઼ેન ેલેયતરિયિતય઼ હોૌેવ઼ેર ૌિદેસપરોદ ાનદ યોમમોન -- ોર નોત -- યોમપુતેરસ ાનદ નેૌ તેયહનોલોગિેસ વેયોમે, િત િસ યલોર તહાત તહેય઼ ારે ોફ ેસસેનતિાલ િમપોરતાનયે ફોર લાવોર, પોલિતિયિસ, ેદુયાતિોન, ાનદ સોયિાલ લિફે, ાનદ તહાત પેોપલે ૌહો ૌાનત તો પારતિયિપાતે િન તહે પુવલિય ાનદ યુલતુરાલ લિફે ોફ તહે ફુતુરે ૌિલલ નેેદ તો હાવ઼ે યોમપુતેર ાયયેસસ ાનદ લિતેરાયય઼ મોરેોવ઼ેર, ાલતહોુગહ તહેરે િસ તહે તહરોત ાનદ રોલ દાનગેર તહાત તહે યોમપુતેરિઝાતિોન ોફ સોયિેતય઼ ૌિલલ િનયરોસે તહે યુરરેનત િનેટુાલિતિેસ ાનદ િનેટુિતિેસ િન તહે યોનદિતિોનસ ોફ યલાસસેસ, રાયે, ાનદ ગેનદેર પોૌેર, તહેરે િસ તહે પોસસિવિલિતય઼ તહાત ા દેમોયરાતિઝેદ ાનદ યોમપુતેરિઝેદ પુવલિય સપહેરે મિગહત પરોવ઼િદે ોપપોરતુનિતિેસ તો ોવ઼ેરયોમે તહેસે િનેટુિતિેસ઼ ઇ ૌિલલ ાયયોરદિનગલય઼ ાદદરેસસ વેલોૌ સોમે ોફ તહે ૌાય઼સ તહાત ોપપરેસસેદ ાનદ દિસેમપોૌેરેદ ગરોુપસ ારે ુસિનગ તહે નેૌ તેયહનોલોગિેસ તો ાદવ઼ાનયે તહેિર િનતેરેસતસ ાનદ પરોગરેસસિવ઼ે પોલિતિયાલ ાગેનદાસ઼ ભુત ફિરસત ઇ ૌાનત તો દિસપોસે ોફ ાનોતહેર ફોરતુનાતે યરિતિયિસમ ોફ તહે ઇનતેરનેત ાનદ યોમપુતેર ાયતિવ઼િસમ઼ છરિતિયિસ ોફ તહે ઇનતેરનેત ાનદ યય઼વેરદેમોયરાયય઼ ફરેટુેનતલય઼ પોિનત તો તહે મિલિતારય઼ ોરિગિનસ ોફ તહે તેયહનોલોગય઼ ાનદ િતસ યેનતરાલ રોલે િન તહે પરોયેસસેસ ોફ દોમિનાતિોન યોરપોરાતે ાનદ સતાતે પોૌેરસ઼ ઇત િસ ારગુેદ તહાત તહે ઇનતેરનેત ફોર લારગે નુમવેરસ િસ દેયોમમોદિફિેદ ાનદ િસ વેયોમિનગ મોરે ાનદ મોરે દેયેનતરાલિઝેદ, વેયોમિનગ ોપેન તો મોરે ાનદ મોરે વ઼ોિયેસ ાનદ ગરોુપસ઼ થહુસ, યય઼વેરદેમોયરાયય઼ ાનદ તહે ઇનતેરનેત સહોુલદ વે સેેન ાસ ા સિતે ોફ સતરુગગલે, ાસ ા યોનતેસતેદ તેરરાિન, ાનદ પરોગરેસસિવ઼ેસ સહોુલદ

ઊીક તો િતસ પોસસવિવિઊિતિસ ઙોમ ેસસિતાનયે ાનદ યનિયુઊાતીિન ોઙ સત્ુગાગાઊ ઘોમનિાનત યોમપોમાતે ાનદ સતાતે પૌમસ, ાસ ૌઊઊ ાસ યોનસેમવાતાવિ ાનદ મગિહાસિત ગત્ુપસ, હાવે વેન માકનિગ સેમ્ાુસિ્ુ સેોઙ નૌ તેયહનોઊિગેસિ તો ાદવાનયે તહેિમ ાગેનદાસ ાનદ ઙિ પમોગમેસસસવિસ ૌાનત તો વેયોમે પઊાયેમસ નિ તહે પોઊિતિયાિઊ વાતતઊસ ોઙ તહે ઙતુમે તહેય મુસત દેવાસિ ૌાયસ તો્ુ સે નૌ તેયહનોઊિગેસિ તો ાદવાનયે ા પમોગમેસસવિ ાગેનદા ાનદ તહે નિતેમેસતસ ોઙ તહે ોપપમેસસેદ ાનદ ઙોમયેસ ોઙ મેસિસતાનયે ાનદ સત્ુગાગાઊ થહેમે ામે વય નૌ યોપ્ાુસિ ેશામપઊેસ ોઙ હૌ તહે સ્નતેમનેત ાનદ યયવેમદેમોયમાયય હાવે વેન્ુ સેદ નિ પમોગમેસસવિ પોઊિતિયાિઊ સત્ુગાગાઊેસ શ્ર ઊામગે ગુમવેમ ોઙ નિસુમગેનત નિતેઊઊેયત્ાઊસ ામે ાઊમોદય માકનિગ્ુ સે ોઙ તહેસે નૌ તેયહનોઊિગેસિ ાનદ પુવઊયિ સપહેમેસ નિ તહેિમ પોઊિતિયાિઊ પમોળેયતસ થહે પોસાનતસ ાનદ ગુમઊિઊા ામમેસિ સત્ુગાગાઊનિગ નિ છહાિપાસ, મેશયિો ઙોમ તહે વેગાનિનનિગ્ુ સેદ યોમપુતેમ દાતા વાસેસ, ગુમમઊિઊા માદાિ, ાનદ ોતહેમ ઙોમમસ ોઙ મેદાિ તો યનિયુઊાતે તહેિમ સત્ુગાગાઊેસ ાનદ દાિસ એવેમય માનઙિસતો, તેશત, ાનદ વુઊઊેતાિ પમોદુયેદ વય તહે ઞાપાતસિતા શ્રમમય ોઙ ાાતાિનાિઊ ઙ્વિમાતાિન ોહો ોયયુપેદિ ઊાનદ નિ તહે સોતહેમન મેશયિાન સતાતે ોઙ છહાિપાસ નિ ૧૯૮૪ ૌાસ મિમેદાિતેઊય યનિયુઊાતેદ તહ્નોગાહ તહે ૌમઊદ વાિ યોમપુતેમ નેતૌમકસ સ્ન હાનુમય ૧૯૮૫, તહે મેશયિાન ગોવેમનમેનત મોવેદ ાગાનિસત તહે મોવેમેનત ાનદ યોમપુતેમ નેતૌમકસ ૌમે્ુ સેદ તો નિઙોમમ ાનદ મોવઊિઙિ નિદવિદિાુઊસ ાનદ ગત્ુપસ તહ્નોગાહોત તહે ૌમઊદ તો સુપપોમત તહે ઞાપાતસિતાસ સત્ુગાગાઊેસ ાગાનિસત મેપમેસસવિ મેશયિાન ગોવેમનમેનત ાયતાિન્ થહેમ ૌમે માનય દેમોનસતમાતાિનસ નિ સુપપોમત ોઙ તહે મેવેઊસ તહ્નોગાહોત તહે ૌમઊદ, પમોમનિેનત ળુમનાઊસિતસ, હુમાન મગિહાસ ોવસેમવેમસ, ાનદ દેઊેગાાતાિનસ તમાવેઊઊેદ તો છહાિપાસ નિ સોઊદિામતિય ાનદ તો મેપોમત ોન તહ્ુ પમાસિનિગ, ાનદ તહે મેશયિાન ાનદ ઙ્ષ ગોવેમનમેનતસ ૌમે વોમવામદેદ ૌતિહ મેસસાગેસ ામગ્ુનિગ ઙોમ નેગોતાિતાિનસ મતહેમ તહાન મેપમેસસાિન; તહે મેશયિાન ગોવેમનમેનત

ાયયોાદનિગાઓય વાયકેદ ોઙ ાહેનિ ોપોસસીનિ ોઙ ાહે નિસુાગોનાસ ાનદ ાસ ોઙ ાહસિ ૈાાનિગા નિ શ્રુગુસા ૧૯૮૭, ાહેય હાવે યોનાનુદ ાો ોગોાીાે ૈાાિહ ાહેમ ઘાઓનિ, ુદીાપેસ ૈો ુ સેદ ાો પાોમોાે ાહે ોવોઙાીનિ નિ શ્ાન ાનદ ાો પાોમોાે ાઓાોાનાાવિ નિઙોામાાીનિ વય પોઓાિયિાઓ મોવેમેનાાસ ાહાોગાહોાા ાહે ૈાાઓદ (સે યૌનાનિગા ૧૯૮૪) થહે થાનિનામાાન ષટાો દેમોયાાયય મોવેમેનાા નિ છહનિ ાનદ વાાોસિ ગાોપસ સાાોગાગાઓનિગા ાગાનિસાા ાહે ોમાોનાાસ ોઙ ષાાઓનિસિમ નિ ાહે ઙોામોા યોમમુનાસિા વઓાય ાનદ ષોવેાિ ઉનીાુ સેદ યોમપુાેા વુઓઓાનિ વોાાદસ ાનદ ોાૌાકસ, ાસ ૈાઓઓ ાસ । વાોાિય ોઙ ઙોામસ ોઙ યોમમુનાયિાીનિસ, ાો યાિયુઓાે ાહેનિ સાાોગાગાઓસ શ્રોપપોોનાાસ નિવોઓવેદ નિ ાનાા-નાઙાા સાાોગાગાઓસ માદે શાોનસિવુ સે ોઙ ાહે નૌ યોમમુનાયિાીનિ ાેયહનોાઓગાય (સે જોોનાોા ૧૯૮૯૪ ાનદ ઢોદેાાયિકસ ૧૯૮૯૪) ષુયહ મુઓાનાાીનાઓ ોાૌાકનિગા ાનદ યાિયુઓાીનિ ોઙ નિઙોામાાીનિ ઙાઓદ ાો સાોપ નાઙાા, વુા યોાેદ ાઓઓાનિયેસ ુ સેઙુઓ ઙોા ાહે સાાોગાગાઓસ ોઙ ાહે ઙુાુ શ્રસ શ્રૌાિહેઙોાદ (ઙોાાહયોમનિગા) નોાેસઃ "થહે ાનાા-નાઙાા યોાઓાીનિસ, ૈાહિઓ મોવાઓઙનિગા । દેપાહ ોઙ ાપોસાીનિ નાાોઓય ુ ોશપેયોદ વય યાપાાઓ, ઙાઓદ નિ ાહેનિ મિમેદીાે ાવળેયાવિસ જુા ાહે ાાાનસયોનાાનિનાાઓ દીાઓગુસ ૈાહિયિહે મોાગોદ યહેયકેદ -- ાહોગાહ વય નો મોાનસ ઓમિનિાેદ--ાહે યહાુવાનિસિાે ઓમેનાા નિ મોાાહ શ્રમોાયિાન ાપપોસાીનિ ાો ઙો ાાાદે થહે મોવેમેનાા યોાેદ । પૌાઙુઓ પેદાગોગાયિાઓ યાોયવિઓ ઙોા યોોસસ-સેયાોાાઓ ાનદ યાોસસ-વોાદો ાાગાાનઙનિગા શ્રનદ ાિ ાપેોદ પાાહૌાયસ ઙોા ઙુાુ યોનોયાીનિસ, નિયઓદનિગા ોઓયાાોનાયિ ોનિસ, ૈાહિયિહ ૈો ઓાોા ોઙોયાાવિઓય મોવાઓઙદ વય ાહે ઝાપાાસિાા ુ પાાસિનિગા ાનદ નિ યોનાાનુનિગા નિાિાાવિસ ાગાનિસાા માટુઓઓાદોાા ોશપઓાિાીનિ" થહુસ, ુ સનિગા નૌ ાેયહનોાઓગોસિ ાો ઓનિક નિઙોામાાીનિ ાનદ પાાયાયિ, ાો યાિયુઓાે સાાોગાગાઓસ, સિ ોાિહેો શાાાોસ ાો પોઓાિયિાઓ વાાાઓસ નોા મોોઓય ુ ાોપાાિ એવેન ઙિ માોાાઓ ગાનિસ ાો નોા ૈાન, ાઙોાન ાહે

નિડોનમાનીનિ યનિયુઉાનેદ ોન ાઉઉાનિયેસ ડોનમેદ યાન વે ોડુ સે ઢોને શામપઉ, નૌ જનાનિસિહ ાયનવિસિનસ ૈને સુેદ વય નહે ડાસનડીદ યહાનિ મયયોનાઉદ' સ ડોન દસિનાવિનિગ ઉાડઉનસ દેનુેનયનિગ નહે યોનપોનાનીનિ' સ ઉી ાગેસ, ાદવેનાસિનિગ પનાયનયિસ, નિવોઉવેમેનન નિ દેડોમેસનડિાનીનિ, હાનવેસનનિગ ોડ ાનમિાઉસ, ાનદ પનોમોનીનિ ોડ ળુનક ડીદ ાનદ ાનુ નહોઉનહ્ય દીને થહે ાયનવિસિનસ યુોનનોનનાયક્દ, ોનગાનડિદ ા મયડ્વિઉ યામપાગિન, ાસસેમવઉદ ોવિસાનિ ોનિહ ા નમેમેનદ્ોસ ામુોનન ોડ નિડોનમાનીનિ યનાનિયિડિનિગ નહે યોનપોનાનીનિ, ાનદ ાસસેમવઉદ શપેનાસ નો નેસનડિય ાનદ યોનડમિ નહેમિ યનાનિયિસિમસ થહે ડવિ-યાન યવિઉિ નનાઉ, ેનદનિગ ામવગ્ોસઉય નિ હુઉય ૧૯૮૯૭, યમોનેદ્ નપમેયેદેનનેદ વાદ પુવઉયિનિય ડોન મયયોનાઉદ' સ ાનદોાસ યનિયુઉાનેદ નહનુોગહુોન નહે ોનઉદ વાા ૨નનેનનેન ૈવસાનિસ, માઉિનિગ ઉસિનસ, ાનદ દસિયુસસીનિ ગનુોપસ થહે મયડ્વિઉ ગનુોપ યઉામિસ નહાન નહેમિ ૈવસાનિ ોાસ ાયયેસસેદ ોવેન નોઉવે મઉિઉીનિ નમિસ ાનદ નહે ઘુનદાનિ મેપોનેદ નહાન નહે સનિ "યઉામિદ નો વે નહે મોસન યોમપમેહેનસવિ સુોનયે ોડ નિડોનમાનીનિ ોન ા મુઉનિાનીનાઉ યોનપોનાનીનિ વેન ાસસેમવઉદ" ાનદોાસ નિદેદ ોને ોડ નહે મોને સુયયેસસડુઉ ાનનિયોનપોનાને યામપાગિનસ (ઢવનુાનય ૨૨, ૧૯૯૬; વસિોનિ હાનપ્ી ેનવામોઉનિક્ોનગ્મયસપોનઉગાહ્હોમેહનમઉ) માનય ઉાવોન ોનગાનડિાનીનિસ ાને ાઉસો વેગાનિનનિગ નો માકુ સે ોડ નહે નૌ નેયહનોઉગોસિ મકિ છોઉય (૧૯૮૭) હાસ ૈનાનિનેન ોડ હૌ યોમપુનેન સયસનેમસ યાન મેસકઉિઉ નાનહેન નહાન દેસકઉિઉ ૈનક્ેનસ, ોહઉિ ષહોસાના ઝુવોડડ (૧૯૮૮) હાસ દસિયુસસેદ નહે ાયસ નિ ોહયિહ હગિહ-નેયહ યાન વે સેદ નો "નિડોનમાને" ૈનકપઉાયેસ નાનહેન નહાન ાનોમાને નહેમ, ેશપાનદનિગ ૈનક્ેનસ કનોઉદગ ાનદ યોનનનાઉ ોવેન ોપેનાનીનિસ નાનહેન નહાન મેદુયનિગ ાનદે ઉમિનિાનનિગ ાનિ થહે છઉાન છઉાનહેસ છામપાગિન, ા મોવેમેનન સનાનનેદ વય યુનયહોમેન નિ ૧૯૯૦ નિ સુપપોનાન ોડ ઢઉિપિનિ ગાનમેનન ૈનક્ેનસ હાસ સુપપોનનેદ સનાક્િસ નહનુોગહુોન નહે ોનઉદ, ેશપોસનિગ ેશપઉાનિાનવિ

ગૌનકનિગા યોનદનિિનિસ (સે નહેનિ વૈસનિ ાન હ્નનપ઼ીૌ યઊાનયઊાનહેસોનગ્િનિદેશ઼હ્નમઊ) ૨ન ૧૯૯૭, ાયનવિ઼સિનસ નિવ઼ોઊવ઼ેદ નિ ખ્યોમાન ગૌનકેનસ સનનકિસ ાનદ મેનસેયસદિ દોયક સનનકિ નિ એનગાઊાનદ્ સેદ વૈસનિસ નો ગાનિ નિનેનનાનિનિાઊ સોઊદિાનનિય઼ (ડોન નહે ઊાનનેન સે હ્નનપ઼ીૌગાનાપયોનગ્ઊવુોનેનદોયકસ્) મોસન ઊાવોન નેનગાનડિાનિનિસ, સુયહ ાસ નહે મ્મોનનહ ષુનહ યગિનનિય઼ નેડ ડ઼ાવોન ગાનુપ, નોને નહ્નન યોમપુનેન નેનૌનકસ ામે્ સેડુઊ ડોન યોનદનિાનનિગા ાનદ દસિનનવિુનનિગા નિડોનમાનનિ, વુન યાનનોન નેપઊાયે પનનિન મેદાિ નહ્નન સિ મોને ાયયેસસવિઊ નો મોને નેડ નિસ મેમવેનસ, ડાયે- નો- ડાયે મેનનિગાસ, ાનદ નનાદનિાનાઊ ડોનમસ નેડ પોઊનિયિાઊ સનન્ગાગાઊ થહુસ, નહે નનાયિક સિ નો ામનયુિઊાને નેન' સ યોમમુનયાિનિનિસ પોઊનિયિસ ગૌનિહ ાયનુાઊ પોઊનિયિાઊ મોવ઼ેમેનનસ ાનદ સનનુગાગાઊસ સો નહ્નન યય઼વેનસનનુગાગાઊ સિ ાન ામમ નેડ પોઊનિયિાઊ વાનનઊ નાનહેન નહ્નન નિસ નેપઊાયેમેનન નેન સુવસનનુિને થહે મોસને ડડયાિયુોિસિ ૨નનેનનેન સનન્ગાગાઊસ હ્નવ઼ે નિદેદ નિનેનસેયનેદ ગૌનિહ નાઊ સનન્ગાગાઊસ નાનગાનિગા ડોમ યામપાગિનસ નો ડને પોઊનિયિાઊ પનસિોનેનસ, નો વોય઼યોનનસ નેડ યોનપોનાને પનોળેયનસ, નો ાયનુાઊ પોઊનિયિાઊ સનન્ગાગાઊસ, ાસ નોનેદ ાવોવ઼ે હેનયે, નો યાપનિાઊ' સ ગાઊવાઊડિાનિનિ ડોમ ાવોવ઼ે, યય઼વેનાયનવિ઼સિનસ હ્નવ઼ે વેન ાનનેમપનનિગા નો યાનનય઼ ુન ગાઊવાઊડિાનિનિ ડોમ વેઊ઼ી, દેવ઼ેઊપનિગા નેનૌનકસ નેડ સોઊદિાનનિય઼ ાનદ યનિયુઊાનનિગા સનન્ગાગાઊ નહ્નુગાહુન નહે ગાઊવ઼ે થો નહે યાપનિાઊસિન નિનેનનાનિનિાઊ નેડ નનાનસનાનિનિાઊ યોનપોનાને ગાઊવાઊડિાનિનિ, ા ઢડિનહ ૨નનેનનાનિનિાઊ નેડ યોમપુનેન- મેદાિનેદ ાયનવિ઼સિમ સિ મેનગાનિગા, નો્ સે શ્રીનેનમાન' સ પહ્નાસે (૧૯૯૨), નહ્નન સિ ટ્ઊનિાનવિ઼ઊય઼ દડિડેનેન ડોમ નહે પાનનય઼- વાસેદ સોયાિઊસિન ાનદ યોમમુનસિન ૨નનેનનાનિનિાઊસ્ ષુયહ નેનૌનકનિગા ઊનિકસ ઊાવોન, ડેમનિસિન, ેયોઊગાયિાઊ, પોયે, ાનદ નેનહેન પનોગામેસસવિ઼ ગાનુપસ પનોવ઼દિનિગા નહે વાસસિ ડોન ા ની પોઊનિયિસ નેડ ાઊઊનિયે ાનદ સોઊદિાનનિય઼

ળો ોિ઼ાયોમે ળહે ઊમિળિાળીનિસ ોડ પોસળમોદોન દિણળિય઼ પોઊળિયિસ (ોન ળહે ઊાળોા, સે જેસળ ાણદ પ્ેઊઊણો ૧૯૮૯, ૧૯૯૭, ાણદ ડોાળહ્યોમનિગા) મોમોિ઼ા, ા સેમેસિ ોડ સળ્ુગાગાઊેસ ાુણદ ગેણદો ાણદ ાાયે ામે ાઊસો મેદાિળિદ વય઼ ણૌ યોમમુણયિાળીનિસ ળેયહ્ણોઊોગેસિ઼ શ્રડળોા ળહે ૧૯૯૧ છઊામેણયે થહેમાસ હોનિગાસ નિ ળહે ૩ણળિદ ષળાળેસ ોણ હસિ ડળિમેસસ ળો વે ષુપમેમે છ્ોાળ હુસળયિ, થહેમાસ' સ ાસસુાઊળ ોણ યઊમિસ ોડ સેશ્રાઊ હાાસસમેણળ વય઼ શ્રણળિા હઊિઊ ાણદ ોળહોસ, ાણદ ળહે ડાિુમે ોડ ળહે ાઊમોસળ ાઊઊ માઊ ૩ષ ષેણાળે ળો દસિટ્ઠાઊડિય઼ ળહે ોવ઼ુાસિઊયુ ણટ્ઠાઊડિદિ થહેમાસ, પાોમપળેદ ામેણ ળો્ સે યોમપુળોા ાણદ ોળહો ળેયહ્ણોઊોગેસિ ળો ાળળાયક માઊ પાવિ઼ઊિગો નિ ળહે પોઊળિયિાઊ સયસળેમ નિ ળહે ૩ણળિદ ષળાળેસ ાણદ ળો ાાઊઊય઼ ામેણ ળો સુપપોાળ ામેણ યાણદદિાળેસ઼ થહે મેસુઊળ નિ ળહે ૧૯૯૨ ઊેયળાિનિ ાસ ળહે ઊેયળાિનિ ોડ મોમે ામેણ યાણદદિાળેસ ળહાણ નિ ાણય઼ પામેવ઼ુાસિ ઊેયળાિનિ ાણદ ા ગેમોઊ મેળેયળાિનિ ોડ યોણસોવ઼ાળવિ઼ ્ુઊ઼ માણય઼ ડેમનિસિળસ હાવ઼ે ણૌ સળાવઊસિહેદ ાવસળિસ, માઊિનિગા ઊસિળસ, ાણદ ોળહો ડોામસ ોડ યય઼વોયોમમુણયિાળીનિ ળો યમિયુઊાળે ળહેમિ સળ્ુગાગાઊેસ઼ ડ઼કીસિ, શ્રડાયિાણ- શ્રમોયિાણ નિસુાગેણળ નિળેઊઊેયળ્ાઊસ હાવ઼ે માદે્ સે ોડ વાોાદયાસળ ાણદ યોમપુળોા ળેયહ્ણોઊોગેસિ ળો ાદવ઼ાણયે ળહેમિ સળ્ુગાગાઊેસ઼ હ્ોહ્ણ ઢસિકે (૧૯૯૪) હાસ દેસયાાવિદ સોમે શ્રડાયિાણ- શ્રમોયિાણ ાાદાિ પાોળેયળાસ નિ ળહે "ળેયહેસળ્ુગાગાઊેસ" ોડ ળહે પામેસેણળ ાગો ાણદ ળહે યેણળાાઊ ાોઊ ોડ ળહે મેદાિ નિ મેયેણળ સળ્ુગાગાઊેસ ાુણદ ાાયે ાણદ ગેણદો઼ શ્રડાયિાણ- શ્રમોયિાણ "કણૌઊદગોાાાાનિસ" ામ્ સનિગા ાાદાિ, યોમપુળોા ણેળૌાકસ, ાણદ ોળહો મેદાિ ળો યમિયુઊાળે ળહેમિ દિાસ ાણદ યુણળોા- કણૌઊદગો ોણ ા વ઼ામેળિય઼ ોડ સિસુેસ, યોણળેસળાનિગા ળહે માનિસળમોમ ાણદ ોડડોનિગા ાઊોાણાળવિ઼ વૌસિ ાણદ પોઊળિયિસ઼ ડ઼કીસિ, ાયળવિ઼સિળસ નિ યોમમુણિળસિ ોડ યોઊોા -- ઊકિ શ્રાોકઊાણદ, હાાઊેમ, ાણદ ડ઼ોસ શ્રણગોઊેસ -- ામે સેળળાનિગ્ુ પ યોમમુણળિય઼ યોમપુળોા ાણદ મેદાિ યેણળોસ ળો ળાયહ ળહે સકઊિઊસ ણેયેસસાાય઼ ળો સુાવ઼વિ઼ ળહે ોણસઊુગાહળ ોડ ળહે મેદાિડાળાિનિ ોડ

યુઊતુમે ાનદ યોમપુતેનાડિાતીિન ોઙ સોર્યોતિયુ તો પોપઊ નિ તહેિમ યોમમુનતિસિ શ્રોવવ્રુસિઊયુ, નગિહ્ણૈનિગ ાનદ મોયતાિનાનયુ ગનુોપસ યાન ાનદ હાવુ સેદ તહે રનતેનનેત તો પનોમોતે તહેિમ પોઊતિયિાઊ ાિગેનદાસ્ રન । સહોનત તમિ, ોને યાનો ાસઊિયુ ાયયેસસ ાને શોતયિ ૈાિયહ' સ વનૌ ોઙ ુ ઊતનાનગિહ્ણ ૈાિવસતિસ માિનતાિનિદ વયુ તહે પુ પ્રઉશ પ્રઊાન, મયનાદિ નૌ- માાઙ ગિનુોપસ નિયુઊદનિગ શ્રનયાન માાતાિનિસ ાનદ વ્રાનુસિ શ્રાતનાિત મઊિતિ ગિનુોપસ્ રનતેનનેત દસિયુસસિાિન ઊસિતસ ાઊસો પનોમોતે તહેસે વૌસિ ાનદ તહે ુ ઊતનાનગિહ્ણ સિ શતમેમઊયુ ાયતાિવિ ોન માનયુ યોમપુતેન ઙોનુમસ, ાસ ૈાઊઊ ાસ તહેિમ નાદાિ પનોગનામસ ાનદ સતાિતાિનિસ, પુવઊયિ ાયયેસસ તેઊવ્રસિાિન પનોગનામસ, ઙાશ યામપાગિનસ, વ્રદાિ ાનદ વેન નોયક મુસયિ પનોદુયતાિન્ થહેસે ગિનુોપસ ામ હાનદઊયુ હાનમઊસસ, હાવ્રનિગ પનોમોતેદ તેનનોનસિમ ોઙ વ્રાનુસિ સોનતસ નાનગાિનિગ ઙનોમ યહ્નયહ વુનનિગાસ તો તહે વોમવનિગાસ ોઙ પુવઊયિ વુઊિદનિગાસ્ શ્રદોપતનિગ ટાસ- ઙેનિનસિત દસિયુનસે ાનદ તાયતયિસ ઙોન ુ ઊતનાનગિહ્ણ યુાસેસ, તહેસે ગિનુોપસ હાવે વેન સુયયેસસઙુઊ નિ મેયુનતાિનિગ ાિનકનિગ યઊાસસ મેમવેનસ દેવ્રાસતાતેદ વયુ તહે દેવેઊપમેનતસ ોઙ ગઊેવાઊ યાપતાિઊસિમ ૈાિયહ હાવે મેસુઊતેદ નિ ાિદસિપનોદુ નેમપઊયુમેનત ઙોન તનાદતાિનાિઊ ઙોનમસ ોઙ નિદુસતનાિઊ, ાિગનાયિુઊતુનાઊ, ાનદુ નસકઊિદ ઊાવોન્ થહે રનતેનનેત સિ તહુસ । યોનતેસતેદ તેનનાનિ, ુ સેદ વયુ ઙેઙત, ઢગિહ્ણ, ાનદ છેનતેન તો પનોમોતે તહેિમ ાિન ાિગેનદાસ ાનદ નિતેમેસતસ્ થહે પોઊતિયિાઊ વાતતઊેસ ોઙ તહે ઙુતુમે માયુ ૈાઊઊ વે ઙોગહ્ણ નિ તહે સતમેતસ, ઙાયતોનેસિ, પાનઊમિનેતસ, ાનદ ોતહેન સતિસ ોઙ પાસત સતનુગાગાઊ, વુત ાઊઊ પોઊતિયિાઊ સતનુગાગાઊ સિ ાઊનાદયુ મેદાિતેદ વયુ મેદાિ, યોમપુતેન, ાનદ નિઙોનમાતાિન તેયહનોઊાગેસિ ાનદ ૈાઊિઊ નિયમાસનિગાઊયુ વે સો નિ તહે ઙુતુમે થહોસે નિતેમેસતેદ નિ તહે પોઊતિયિસ ાનદ યુઊતુમે ોઙ તહે ઙુતુમે સહોુઊદ તહેમેઙોમે વે યઊાન ોન તહે મિપોનતાનત નોઊ ોઙ તહે નૌ પુવઊયિ સપહેમેસ ાનદ નિતેનવ્રેને ાયયોનદનિગાઊયુ

अनुलग्नक ३: मैथिलीमे छद्म समीक्षा आ कमलानन्द झा (प्रसंग- चोर लेखक पंकज झा पराशरक पुरान साहित्यिक चोरिक खुलासापर किछु प्रमाण)

Read the original Article by Douglas Kellner and then blatant copying in hindi version in his own name by Pankaj Parashar published in Pahal-86

After that read blatant intellectual theft/ copying of Maithili Poem by Pankaj Parashar Published in Aarambh-23 (March 2000) and then Shri Arun Kamal's original Hindi Poem "Naye Ilake Me" Ist published by Vani Prakashan in 1996.

Thanks Readers for coming out with so much information.

Intellectuals, the New Public Spheres, and Techno-Politics

By

Douglas Kellner

The category of the intellectual, like everything else these days, is highly contested and up for grabs. Zygmunt Bauman contrasts intellectuals as legislators who wished to legislate universal values, usually in the service of state institutions, with intellectuals as interpreters, who merely interpret texts, public events, and other artifacts, deploying their specialized knowledge to explain or interpret things for publics (1987; 1992). He thus claims that there is a shift from modern intellectuals as legislators of universal values who legitimated the new modern social order to postmodern intellectuals as interpreters of social meanings, and thus theorizes a depoliticalization of the role of intellectuals in social life.

I, however, want to make another distinction between functional intellectuals who serve to reproduce and legitimate the values of existing societies contrasted to critical-oppositional intellectuals who oppose the existing order. Sometimes oppositional intellectuals voice their criticisms in the name of existing values which they claim are being violated (i.e. truth, rights, rule by law, justice, etc.) and sometimes in the name of values or ideas which are said to be higher potentialities of the existing order (i.e. participatory democracy, socialism, genuine equality for women and blacks, ecological restoration, etc.). Functional intellectuals were earlier the classical ideologues, whereas today they tend to be functionaries of parties or interest groups, or mere technicians who devise more efficient means to obtain certain ends, or who apply their skills to increase technical knowledge in various specialized domains (medicine, physics, history, etc.) without questioning the ends, goals, or values that they are serving, or the social utility or disutility of their activities.

Functional intellectuals are thus servants of existing societies who are specialists in legitimation and technical knowledge, while oppositional intellectuals are critics who struggle to create a better society. Critical intellectuals were traditionally those who utilized their skills of speaking and writing to denounce injustices and abuses of power, and to fight for truth, justice, progress, and other universal values. In the words of Jean-Paul Sartre (1974: 285), "the duty of the intellectual is to denounce injustice wherever it occurs." For Sartre, the domain of the critical intellectual is to write and speak within the public sphere, denouncing oppression and fighting for human freedom and emancipation. On this model, a critical intellectual's task is to bear witness, to analyze, to expose, and to criticize a wide range of social evils. The sphere and arena of the critical/oppositional intellectual is the word, and his or her function is to describe and denounce injustice wherever it may occur.

The modern critical intellectual's field of action was what Habermas (1989) called the public sphere of democratic debate, political dialogue, and the writing and discussion of newspapers, journals, pamphlets, and books. Of course, not all intellectuals were critical or by any means progressive. With the rise of modern societies, there was a division between physical and mental labor, and intellectuals became those who specialized in mental labor, producing and distributing ideas and culture, with some opposing and some legitimating the established forms of society.

Thus, intellectuals were split into those critical and oppositional individuals who opposed injustice and oppression, as contrasted to functional intellectuals who produced technical knowledge that served the existing society and those producers of ideology who legitimated the forms of class, race, and gender domination and inequality in modern societies. In the following reflections, I want to discuss some challenges from postmodern theory to the classical conceptions of the critical-oppositional intellectual and some of the ways that new technologies and new public spheres offer new possibilities for democratic discussion and intervention, which call for a redefinition of the critical intellectual. Consequently, I will discuss some changes in the concept of the public sphere and how new technologies and new spheres of public debate and conflict suggest some new possibilities for redefining intellectuals in the present era.

The Public Sphere and the Intellectual

Democracy involves a separation of powers and popular participation in governmental affairs. During the era of the Enlightenment and 18th century democratic revolutions, public spheres emerged where individuals could discuss and debate issues of common concern (see Habermas 1989). The public was also a site where criticism of the state and existing society could circulate. The institutions and spaces of the 18th century democratic public sphere included newspapers, journals,

and a press independent from state ownership and control, coffee houses where individuals read newspapers and engaged in political discussion, literary salons where ideas and criticism were produced, and public assemblies which were the sites of public oratory and debate.

Bourgeois societies split, of course, across class lines and different class factions produced different political parties, organizations, and ideologies with each party attracting specialists in words and writing known as intellectuals. Oppressed groups also developed their own insurgent intellectuals, ranging from representatives of working class organizations, to women like Mary Wollstonecraft fighting for women's rights, to leaders of oppressed groups of color, ethnicity, sexual preference, and so on. Insurgent intellectuals attacked oppression and promoted action that would address the causes of oppression, linking thought to action, theory to practice. Thus, during the 19th century, the working class developed its own oppositional public spheres in union halls, party cells and meeting places, saloons, and institutions of working class culture. With the rise of Social Democracy and other working class movements in Europe and the United States, an alternative press, radical cultural organizations, and the spaces of the strike, sit-in, and political insurrection emerged as sites of an oppositional public sphere.

Intellectuals in modern societies were thus conflicted beings with contradictory social functions. The classical critical intellectual -- represented by figures like the French Enlightenment ideologues, Thomas Paine, Mary Wollstonecraft, and later figures like Heine, Marx, Hugo, Dreyfus, Du Bois, Sartre, and Marcuse -- was to speak out against injustice and oppression and to fight for justice, equality, and the other values of the Enlightenment. Indeed, the Enlightenment itself represents one of the most successful discourses of the critical individual, a discourse and movement which assigns intellectuals key social functions. And yet conservative intellectuals attacked the Enlightenment and its prodigy the French Revolution and produced discourses that legitimated every conceivable form of oppression from class to race, gender, and ethnic domination.

Against the EN and Sartre's model of the committed intellectual who is engaged for freedom (engagé), Michel Foucault complained that Sartre represented an ideal of the universal intellectual who fought for universal values such as truth and freedom, and assumed the task of speaking for humanity (1977). Against such an exalted and in his view exaggerated conception, Foucault militated for a conception of the specific intellectual who intervened on the side of the oppressed in specific issues, not claiming to speak for the oppressed, but to intervene as an intellectual in specific issues and debates.

Foucault's conception of the specific intellectual has been accompanied within a new postmodern politics with a turn toward new social movements as the domain of contemporary politics (Laclau and Mouffe 1985), replacing the state and the national realm of party politics. For a postmodern politics, power is diffuse and local and not merely to be found in macroinstitutions like the workplace, the state, or patriarchy. Macropolitics that goes after big institutions like the state or capital is to be replaced by micropolitics, with specific intellectuals intervening in spheres like the university, the prison, the hospital, or for the rights of specific oppressed groups like sexual or ethnic minorities. Global and national politics and theories are rejected in favor of more local micro politics, and the discourse and function of the intellectuals is seen as more specific, provisional, and modest than in modern theory and politics, subordinate to local struggles rather than more ambitious projects of emancipation and social transformation.

In my view, such a binary distinction between macro and micro theory and politics is problematical, as are absolutist commitments to either modern or postmodern theory tout court (Best and Kellner 1991 and 1997). Using the example of the events of 1989 that saw the collapse of communism, for instance, it is clear that the popular offensives against oppressive communist power combined micro and macropolitics, moving from local and specific struggles rooted in union halls, universities, churches, and small groups to mass demonstrations forcing democratic reforms and even classical mass insurrection aiming at an overthrow of the existing order, as in Romania. In these struggles, intellectuals played a variety of roles and deployed a diversity of discourses, ranging from the local and specific to the national and general.

Thus, whereas I would argue that postmodern theory contains important criticism of some of the illusions and ideologies of the traditional modern intellectual, it goes too far in rejecting the classical role of the critical intellectual. Moreover, I shall suggest that some of the modern conception of the critical and oppositional intellectual remains useful. I would, in fact, reject the particular/universal intellectual dichotomy in favor of developing a normative concept of the critical public intellectual. The public intellectual -- on this conception -- intervenes in the public sphere, fights against lies, oppression, and injustice and fights for rights, freedom, and democracy à la Sartre's committed intellectual. But a democratic public intellectual on my conception does not speak for others, does not abrogate or monopolize the function of speaking the truth, but simply participates in discussion and debate, defending specific ideas, values, or norms or principle that may be particular or universal. But if universal, like human rights, they are contextual, provisional, normative and general and not valid for all time. Indeed, rights are products of social struggles and are thus social constructs and not innate or natural

entities -- as the classical natural rights theorists would have it. But rights can be generalized, extended, and can take universal forms -- as with, for instance, a UN charter of human rights that holds that certain rights are valid for all individuals -- at least in this world at this point in time.

Consequently, one does not need all of the baggage of the universal intellectual to maintain a conception of a public or democratic intellectual in the present era. Intellectuals may well seek to occupy a higher ground than particularistic interests, a common ground seeking public interests and goods. But intellectuals should not abrogate the right to speak for all and should be aware that they are speaking from a determinate position with its own biases and limitations. Moreover, intellectuals should learn to get out of their particular frame of reference for more general ones, as well as to be able to take the position of the other, to empathize with more marginal and oppressed groups, to learn from them, and to support their struggles. To perpetually criticize oneself, to develop the capacity for self-reflection and critique -- as well as self-expression -- is thus part of the duty of the democratic intellectual.

New Technologies, New Public Spheres, and New Intellectuals

In the following discussion, I will argue that although the public intellectual should assume new functions and activities today, the critical capacities and vision of the classical critical intellectual are still relevant, thus I suggest building on models of the past, rather than simply throwing them over, as in some types of postmodern theory. I want to suggest that rethinking the intellectual and the public sphere today requires rethinking the relationship between intellectuals and technology.

In a certain sense, there was no important connection between the classical intellectual and technology. To be sure, intellectuals -- especially scientific scholars like Leonardo de Vinci, Galileo, or Darwin -- deployed technologies and entire groups like the British Royal Society were concerned with technologies and were indeed often inventors themselves. Some intellectuals used printing presses and were themselves printers and many, though not all, of the major intellectuals of the 20th century probably used a typewriter, though I personally know of no major studies of the relationship between the typewriter and intellectuals. Yet a classical intellectual did not have to intrinsically deploy any specific technology and there was thus no intimate connection between intellectuals and technology.

I now want to argue that in the contemporary high-tech societies there is emerging a significant expansion and redefinition of the public sphere and that these developments, connected primarily with media and computer technologies, require a reformulation and expansion of the concept of critical or committed intellectual,

as well as a redefinition of the public intellectual. Earlier in the century, John Dewey envisaged developing a newspaper that would convey "thought news," bringing all the latest ideas in science, technology, and the intellectual world to a general public, which would also promote democracy (see the discussion of this project in Czitrom 1982: 104ff). In addition, Bertolt Brecht and Walter Benjamin (1969) saw the revolutionary potential of new technologies like film and radio and urged radical intellectuals to seize these new forces of production, to "refunction" them, and to turn them into instruments to democratize and revolutionize society. Sartre too worked on radio and television series and insisted that "committed writers must get into these relay station arts of the movies and radio" (1974: 177; for discussion of his Les temps modernes radio series, see 177-180).

Previously, radio, television, and the other electronic media of communication tended to be closed to critical and oppositional voices both in systems controlled by the state and in private corporations. Public access and low power television, and community and guerilla radio, however, open these technologies to intervention and use by critical intellectuals. For some years now, I have been urging progressives to make use of new communications broadcast media (Kellner 1979; 1985; 1990; 1992) and have in fact been involved in a public access television program in Austin, Texas since 1978 which has produced over 600 programs and won the George Stoney Award for public affairs television. My argument was that radio, television, and other electronic modes of communication were creating new public spheres of debate, discussion, and information and that intellectuals who wanted to engage the public, to be where the people were at, and who thus wanted to intervene in the public affairs of their society should make use of these new media technologies and institutions, and develop new communication politics and new media projects.

In fact, one can argue that the victory of Reagan and the Right in the United States in 1980 was related to the Right's effective mobilization of conservative intellectuals and their use of television, radio, fax and computer communication, direct mailings, telephones, and other sophisticated political uses of new technologies, as well as more traditional print media. Furthermore, one could argue that Clinton's victory over Bush in 1992, and the surprising success of the Perot campaign, were related to effective uses of communication technologies. And more recently in the U.S., the Republican and rightwing success in the 1994 elections can be related to their use of talk radio, computer bulletin boards, and other technologies. Indeed, Newt Grinrich, William Bennett, and other conservatives have made very effective use of public access television, radio, computer networks, book promotion tours with high media exposure, and other technologies to promote their ideas. Yet it is generally acknowledged that the Clinton administration deployed much more effective communications politics in the 1996 election than the Dole

campaign. Effective CU politics are thus now essential to political success in national and local conflicts and often which side has the most effective politics of CU wins the struggle in question.

Consequently, I would argue that effective use of technology is essential in contemporary politics and that intellectuals who wish to intervene in the new public spheres need to deploy new communications media to participate in democratic debate and to shape the future of contemporary societies and culture. My argument is that first broadcast media like radio and television, and now computers have produced new public spheres and spaces for information, debate, and participation that contain both the potential to invigorate democracy and to increase the dissemination of critical and progressive ideas -- as well as new possibilities for manipulation, social control, and the promotion of conservative positions. But participation in these new public spheres -- computer bulletin boards and discussion groups, talk radio and television, and the emerging sphere of what I call cyberspace democracy require critical intellectuals to gain new technical skills and to master new technologies.

I am thus suggesting that intellectuals in the present moment must master new technologies and that there is thus a more intimate relationship between intellectuals and technology than in previous social configurations. To be an intellectual today involves use of the most advanced forces of production to develop and circulate ideas, to do research and involve oneself in political debate and discussion, and to intervene in the new public spheres produced by broadcasting and computing technologies. New public intellectuals should attempt to develop strategies that will use these technologies to attack domination and to promote education, democracy, and political struggle -- or whatever goals are normatively posited as desirable to attain. There is thus an intrinsic connection in this argument between the fate of intellectuals and the forces of production which, as always, can be used for conservative or progressive ends.

Toward a Radical Democratic Techno-Politics

A revitalization of democracy in capitalist societies will therefore require a democratic media politics. Such a politics could involve a two-fold strategy of, first, attempting to democratize existing media to make them more responsive to the "public interest, convenience, and necessity." In the United States, the media watchdog group FAIR (Fairness and Accuracy in Media) has developed this alternative, criticizing mainstream media for failing to assume their democratic and journalistic responsibilities and calling for an expansion of voices and ideas within the media system. Another strategy involves the development of oppositional media, alternatives to the mainstream, developed outside of the established media

system. On my view, both strategies are necessary for the development of a democratic media politics and it is a mistake to pursue one at the neglect of the other.

Developing a radical democratic media politics thus involves continued relentless criticism of the existing media system, attempts to democratize and reform it, and the production of alternative progressive media. On my account, democratizing our media system will require expansion of the alternative press, a revitalization of public television, an increased role for public access television, the eventual development of a public satellite system, democratized computer networks, and oppositional cultural politics within every sphere of culture, ranging from music to visual to print culture.

Community and Low-Power Radio

Community radio has long provided an alternative set of voices to the highly commercialized mainstream radio. Citizen-band (CB) and short-wave radio allows individuals to directly communicate with each other. Many countries have also experimented with low-power community radio, which enables groups to actually bring individuals out of their homes to public places to engage in discussion or communal activity. Low-power radio enables individuals to directly communicate with their neighbors through call-in telephone connections, or through discussions in nearby studios, and thus provide democratic and participatory institutions (see Box 3).

Low-power radio, however, is subject to quick suppression by the state, as happened in Japan which had an extensive low-power radio culture in play that was shut-down almost overnight when the state outlawed low-power broadcasting. In the U.S., there have been some low-power radio experiments, but the government too has cracked down on these local attempts to democratize radio. A democratic media politics should thus struggle for low-power radio and to increase the possibilities of direct communication through radio technology.

Ironically, despite the higher costs of television technology, there are probably more immediate possibilities for democratic alternative television than in radio. As mentioned, while low-power radio technologies are relatively inexpensive, they are easily suppressed by a state which opposes democratic and free-wheeling communication. Community radio has been curtailed by saturation of FM and AM frequencies and in most places there is simply not room for legal community radio stations. During the early 1990s in Austin, Texas, for instance, a vicious battle took place between the University of Texas and a local community-based co-op radio group for the remaining FM frequency band. Hence, it has been difficult to develop

new radio outlets for public communication with the previous limited spectrum allotment, although fiber-optic community cable system and the Internet also make possible a dramatic expansion of community and alternative road which could make possible Brecht's vision of a radio system with every individual a sender.

Public Access Television

Public access television has been for some decades now an established venue for alternative democratic communication. The rapid expansion of public access television in the 1970s in the U.S. provided new possibilities for progressive individuals and groups to produce video programming that cuts against the conservative programming which dominates mainstream television in the United States. Progressive access programming is now being cablecast regularly in such places as New York, Los Angeles, Boston, Chicago, Atlanta, Madison, Urbana, New Orleans, Austin, and perhaps as many as 2,000 other towns or regions of the country. Public access television, in most cases, provides free equipment and airtime to individuals and groups who want to make their own programming. Usually, one must take a course to actually use studio and editing equipment and a few systems lease the equipment and airtime, but, for the most part, where there are public access channels, the cable systems make them available for public use and they are usually managed by an independent body, answerable to the community, and often financed by the cable system.

When cable television began to be widely introduced in the early 1970s, the Federal Communications Commission mandated in 1972 that "beginning in 1972, new cable systems {and after 1977, all cable systems} in the 100 largest television markets be required to provide channels for government, for educational purposes, and most importantly, for public access." This mandate suggested that cable systems should make available three public access channels to be used for state and local government, education, and community public access use. "Public access" was construed to mean that the cable company should make available equipment and air time so that literally anybody could make noncommercial use of the access channel, and say and do anything that they wished on a first-come, first-served basis, subject only to obscenity and libel laws and prohibitions against advertising and pitches for money. Creating an access system required, in many cases, setting up a local organization to manage the access channels, though in other systems the cable company itself managed the access center.

In the beginning, however, few, if any, cable systems made as many as three channels available, but some systems began offering one or two access channels in the early to mid 1970s. The availability of access channels depended, for the most part, on the political clout of local governments and committed, and often unpaid,

local groups to convince the cable companies, almost all privately owned, to make available an access channel. Here in Austin, for example, a small group of video activists formed Austin Community Television in 1973 and began broadcasting with their own equipment through the cable system that year. Eventually, they received foundation and CentertainmentA government grants to support their activities, buy equipment, and pay regular employees salaries. A new cable contract signed in the early 1980s called for the cable company to provide $500,000 a year for access and after a difficult political struggle, which I shall mention later, were able to get at least $300,000-$400,000 a year to support Austin Community Television activities.

A 1979 Supreme Court decision, however, struck down the 1972 FCC ruling on the grounds that the FCC did not have the authority to mandate access, an authority which supposedly belongs to the U.S. Congress. Nonetheless, cable was expanding so rapidly and becoming such a high-growth competitive industry that city governments considering cable systems were besieged by companies making lucrative offers (20 to 80 channel cable systems) and were able to negotiate access channels and financial support for a public access system. Consequently, public access grew significantly during the early 1980s.

Where there are operative public access systems, individuals have promising, though not sufficiently explored, possibilities to produce and broadcast their own television programs. In Austin, Texas, for example, there have been weekly anti-nuclear programs, black and chicano series, gay programs, countercultural and anarchist programs, an atheist program, feminist and women's programs, labor programming, and a weekly progressive news magazine, Alternative Views, with which I am involved, that has produced over 470 hour-long programs from 1978 to the present on a wide variety of topics. We combine news reports from alternative sources with discussion, documentaries, and video-footage from alternative sources. Paper Tiger Television in New York combines critique of corporate media by media critics with imaginative sets, visuals, editing, and so on. A labor-oriented program, The Mill Hunk News, in Pittsburgh used to combine news reports of labor issues with documentary interviews with workers, music-videos, and other creative visuals, while Labor Beat in Chicago also uses documentary footage, music, drama, and collages of images, as well as interview and talking head formats, to present alternative information (see Box 4).

There have been some experiments with national progressive satellite networks, although they have suffered from inadequate funding and the failure of often conservative-owned cable systems to carry progressive programming. While public access television is still in a relatively early stage of development in the U.S. and Europe, it contains the promise of providing a different type of alternative television.

Despite obstacles to its use, public access provides the one institution in the commercial and state broadcasting systems that is at least potentially open to progressive intervention. It is self-defeating simply to dismiss broadcast media as tools of manipulation and to think that print media are the only tools of communication and political education open to progressives. Surveys have shown that people take more seriously individuals, groups, and politics that appear on TV; thus the use of television could help progressive movements and struggles gain legitimacy and force in the shifting and contradictory field of U.S. politics. The Right has been making effective use of new technologies and media of communication, and for progressives to remain aloof is a luxury that they can no longer afford.

Of course, many will claim that democratic politics involves face-to-face conversation, discussion, and producing consensus. But for intelligent debate and consensus to be reached, individuals must be informed and radio, television, and computers are important sources of information in the present age. Thus I am not proposing that media politics supplement all political activity and organizing, but am suggesting that a media politics should be developed to help activist groups and individuals obtain and disseminate information. In Austin, Texas, for instance, a group, Council for Public Media, has been working to inform activist groups how they can get information through the new computer technologies and how they can use the press, broadcast media, and other methods of communication to get their messages out. Activist groups are coming to see that media politics is a key element of political organization and struggle and thus more work on developing institutions and strategies for media politics is necessary.

Indeed, if progressive groups and movements are to produce a genuine alternative to the Right, they must increase their mass base and circulate their struggles to more segments of the population. After all, most people get their news and information from television, and the broadcast media arguably play a decisive role in defining political realities, shaping public opinion, and determining what is or what is not to be taken seriously. If progressives want to play a role in local and national political life, they must come to terms with the realities of electronic communication and computer technologies in order to develop strategies to make use of new technologies and possibilities for intervention.

The Democratization of Computers and Information

Other possibilities for expanding a system of democratic techno-politics reside in new computer and information technologies. It appears that there will be a merger of entertainment and information centers in the homes of the future with all possible print media information accessible by computer and all visual media entertainment and information resources available for home

computer/entertainment center access. But the threat--and likelihood if alternative concepts are not developed and disseminated--is that this information and entertainment material will be thoroughly commodified, available only to those who can afford to pay. Consequently, it is necessary to begin devising public alternatives to these private/corporate information and entertainment systems of the future.

Given the growing importance of computers and information in the new techno-capitalist society, producing new information networks and systems must therefore be an essential ingredient of a progressive media and information politics. The computerization of the world is well underway and possibilities are growing for new information networks and computer communication systems. To avoid corporate and government monopolization and control of information, new public information networks and centers are also necessary so that citizens of the future can have access to the information needed to intelligently participate in a democratic society. For computers, like broadcasting, can be used for or against democracy.

Indeed, computers are a potentially democratic technology. While broadcast communication tends to be one-way and unidirectional, computer communication is potentially bi-, or even omni-, directional. Individuals can use computers to do word-processing to communicate with other individuals, or can directly communicate with others via modems which use the telephone to link individuals with each other. Modems can tap into community bulletin boards, web sites, or computer conference programs, that make possible a new type of public communication and progressives should intervene in these information modes as well as participating in public debate and discussion. For instance, many computer bulletin boards and web sites have a political debate conference where individuals can type in their opinions and other individuals can read them and if they wish respond. This constitutes a new form of public dialogue and interaction.

Computer data bases and web sites provide essential sources of information and new technologies that tremendously facilitates information-searching and research. Mainstream data bases include Lexis/Nexis and Dialogue which contain a tremendous array of newspapers, magazines, journals, transcripts of TV programs, news conferences, congressional hearings, and newsletters, reproduced in full. Alternative data bases include Peacenet which has over 600 conferences on topics of ecology, war and peace, feminism, and hundreds of other topics. Here progressives put in alternative information and some of the conferences have lively debates. Between the mainstream and alternative computer data bases, individuals and groups can access a tremendous amount of information in a relatively short time.

I was able to research my book on the media and the Gulf war, for instance, because I was able to access information on various topics from a variety of sources

simply by punching in code words which enabled me to discern the conflicting media versions of the Gulf war and to put in question the version being promoted by the Bush administration and Pentagon. Eventually, the lies and disinformation promoted by the U.S. government in the war were thoroughly exposed by a variety of sources, accessible to computer data base searches. Corporations, government institutions, the major political parties, and other groups are taking advantage of these computer data bases and progressive must learn to access and use them to produce the information necessary to prevail in the public debates of the future.

But the politics of information in the future must struggle to see that alternative information is accessible in mainstream computer data bases, as well as alternative ones. Many data bases and information services omit leftist, feminist, environmentalist, and other alternative information sources from their listings, thus in effect shutting out radical alternatives in information sources, much as the broadcasting networks exclude dissident voices from broadcast communication. Progressive groups and alternative publications should struggle to make sure that their information sources and services are listed in data base bibliographies and source material.

Yet the proliferation of the World Wide Web enables independent and alternative groups and individuals to creat their own web sites, to make their information available to people through the globe, often free of charge. In the next section, I will give some examples of how computer techno-politics have deployed web sites, bulletin-boards, mailing lists, and email campaigns to promote a variety of political struggles. First, however, I want to conclude this section by noting that a synergy is emerging between the new sources of information, new media and technologies, and political organization and struggle. Print and broadcast media organs can obtain information from computers and disseminate it to the public. Political groups can obtain information from these sources and disseminate it back through print, broadcast, and computer technologies. Information critical of, say, transnational corporate policies can be disseminated through a multiplicity of sites, so political groups need to be aware of the potential for the transmission of information through a variety of media in the contemporary era.

Moreover, the Internet may be a vehicle for new forms of alternative radio, television, film, art, and every form of culture as well as information and print material. New multimedia technologies are already visible on web sites and Internet radio and television is now in its infancy. This would truly make possible Brecht's dream of a communications system where everyone was a sender and receiver and would greatly proliferate the range and diversity of voices and texts and would also no doubt give a new dimension of the concept of information/cultural overload.

Indeed, we must obviously gain a whole set of new literacies to use and deploy the new technologies (see Kellner, forthcoming). But in conclusion, I want to limit my focus on new technologies and techno-politics of the present day.

Techno-Politics and Political Struggle

Since new technologies are in any case dramatically transforming every sphere of life, the key challenge is how to theorize this great transformation and how to devise strategies to make productive use of the new technologies. Obviously, radical critique of dehumanizing, exploitative, and oppressive uses of new technologies in the workplace, schooling, public sphere, and everyday life are more necessary than ever, but so are strategies that use new technologies to rebuild our cities, schools, economy, and society. I want to focus, therefore, in the remainder of this section on how new technologies can be used for increasing democratization and empowering individuals.

Given the extent to which capital and its logic of commodification have colonized ever more areas of everyday life in recent years, it is somewhat astonishing that cyberspace is by and large decommodified for large numbers of people -- at least in the overdeveloped countries like the United States. In the U.S., government and educational institutions, and some businesses, provide free Internet access and in some cases free computers, or at least workplace access. With flat-rate monthly phone bills (which I know do not exist in much of the world), one can thus have access to a cornucopia of information and entertainment on the Internet for free, one of the few decommodified spaces in the ultracommodified world of technocapitalism.

Obviously, much of the world does not even have telephone service, much less computers, and there are vast inequalities in terms of who has access to computers and who participates in the technological revolution and cyberdemocracy today. Critics of new technologies and cyberspace repeat incessantly that it is by and large young, white, middle or upper class males who are the dominant players in the cyberspaces of the present, and while this is true, statistics and surveys indicate that many more women, people of color, seniors, and other minority categories are becoming increasingly active. Moreover, it appears that computers are becoming part of the standard household consumer package and will perhaps be as common as television sets by the beginning of the next century, and certainly more important for work, social life, and education than the TV set. Moreover, there are plans afoot to wire the entire world with satellites that would make the Internet and communication revolution accessible to people who do not now even have telephones, televisions, or even electricity.

However widespread and common -- or not -- computers and new technologies become, it is clear that they are of essential importance for labor, politics, education, and social life, and that people who want to participate in the public and cultural life of the future will need to have computer access and literacy. Moreover, although there is the threat and real danger that the computerization of society will increase the current inequalities and inequities in the configurations of class, race, and gender power, there is the possibility that a democratized and computerized public sphere might provide opportunities to overcome these inequities. I will accordingly address below some of the ways that oppressed and disempowered groups are using the new technologies to advance their interests and progressive political agendas. But first I want to dispose of another frequent criticism of the Internet and computer activism.

Critics of the Internet and cyberdemocracy frequently point to the military origins of the technology and its central role in the processes of dominant corporate and state powers. Yet it is amazing that the Internet for large numbers is decommodified and is becoming more and more decentralized, becoming open to more and more voices and groups. Thus, cyberdemocracy and the Internet should be seen as a site of struggle, as a contested terrain, and progressives should look to its possibilities for resistance and circulation of struggle. Dominant corporate and state powers, as well as conservative and rightist groups, have been making serious use of new technologies to advance their agendas and if progressives want to become players in the political battles of the future they must devise ways to use new technologies to advance a progressive agenda and the interests of the oppressed and forces of resistance and struggle.

There are by now copious examples of how the Internet and cyberdemocracy have been used in progressive political struggles. A large number of insurgent intellectuals are already making use of these new technologies and public spheres in their political projects. The peasants and guerilla armies struggling in Chiapas, Mexico from the beginning used computer data bases, guerrilla radio, and other forms of media to circulate their struggles and ideas. Every manifesto, text, and bulletin produced by the Zapatista Army of National Liberation who occupied land in the southern Mexican state of Chiapas in 1994 was immediately circulated through the world via computer networks. In January 1995, the Mexican government moved against the movement and computer networks were used to inform and mobilize individuals and groups throughout the world to support the Zapatistas struggles against repressive Mexican government action. There were many demonstrations in support of the rebels throughout the world, prominent journalists, human rights observers, and delegations travelled to Chiapas in solidarity and to report on the uprising, and the Mexican and U.S. governments were bombarded with messages

arguing for negotiations rather than repression; the Mexican government accordingly backed off their repression of the insurgents and as of this writing in August 1997, they have continued to negotiate with them.

Earlier, audiotapes were used to promote the revolution in Iran and to promote alternative information by political movements throughout the world (see Downing 1984). The Tianenaman Square democracy movement in China and various groups struggling against the remanents of Stalinism in the former communist bloc and Soviet Union used computer bulletin boards and networks, as well as a variety of forms of communications, to circulate their struggles. Opponents involved in anti-nafta struggles made extensive use of the new communication technology (see Brenner 1994 and Fredericks 1994). Such multinational networking and circulation of information failed to stop nafta, but created alliances useful for the struggles of the future. As Witheford (forthcoming) notes: "The anti-nafta coalitions, while mobilizing a depth of opposition entirely unexpected by capital, failed in their immediate objectives. But the transcontinental dialogues which emerged checked --though by no means eliminated--the chauvinist element in North American opposition to free trade. The movement created a powerful pedagogical crucible for cross-sectoral and cross-border organizing. And it opened pathways for future connections, including electronic ones, which were later effectively mobilized by the Zapatista uprising and in continuing initiatives against maquilladora exploitation."

Thus, using new technologies to link information and practice, to circulate struggles, is neither extraneous to political battles nor merely utopian. Even if material gains are not won, often the information circulated or alliances formed can be of use. For example, two British activists were sued by the fastfood chain McDonald's for distributing leaflets denouncing the corporation's low wages, advertising practices, involvement in deforestization, harvesting of animals, and promotion of junk food and an unhealthy diet. The activists counterattacked, organized a McLibel campaign, assembled a website with a tremendous amount of information criticizing the corporation, and assembled experts to testify and confirm their criticisms. The five-year civil trial, ending ambiguously in July 1997, created unprecedented bad publicity for McDonald's and was circulated throughout the world via Internet websites, mailing lists, and discussion groups. The McLibel group claims that their website was accessed over twelve million times and the Guardian reported that the site "claimed to be the most comprehensive source of information on a multinational corporation ever assembled" and was indeed one of the more successful anticorporate campaigns (February 22, 1996; visit http://www. envirolink.org/mcspotlight/home.html).

Many labor organizations are also beginning to make use of the new technologies. Mike Cooley (1987) has written of how computer systems can reskill rather than deskill workers, while Shosana Zuboff (1988) has discussed the ways in which high-tech can be used to "informate" workplaces rather than automate them, expanding workers knowledge and control over operations rather than reducing and eliminating it. The Clean Clothes Campaign, a movement started by Dutch women in 1990 in support of Filipino garment workers has supported strikes throughout the world, exposing exploitative working conditions (see their website at http://www.cleanclothes.org/1/index.html). In 1997, activists involved in Korean workers strikes and Merseyside dock strike in England used websites to gain international solidarity (for the latter see http://www.gn.apc.org/lbournet/docks/).

Most labor organizations, such as the North South Dignity of Labor group, note that computer networks are useful for coordinating and distributing information, but cannot replace print media that is more accessible to more of its members, face-to-face meetings, and traditional forms of political struggle. Thus, the trick is to articulate one's communications politics with actual political movements and struggles so that cyberstruggle is an arm of political battle rather than its replacement or substitute. The most efficacious Internet struggles have indeed intersected with real struggles ranging from campaigns to free political prisoners, to boycotts of corporate projects, to actual political struggles, as noted above.

Hence, to capital's globalization from above, cyberactivists have been attempting to carry out globalization from below, developing networks of solidarity and circulating struggle throughout the globe. To the capitalist international of transnational corporate globalization, a Fifth International of computer-mediated activism is emerging, to use Waterman's phrase (1992), that is qualitatively different from the party-based socialist and communist Internationals. Such networking links labor, feminist, ecological, peace, and other progressive groups providing the basis for a new politics of alliance and solidarity to overcome the limitations of postmodern identity politics (on the latter, see Best and Kellner 1991, 1997, and forthcoming).

Moreover, a series of struggles around gender and race are also mediated by new communications technologies. After the 1991 Clarence Thomas Hearings in the United States on his fitness to be Supreme Court Justice, Thomas's assault on claims of sexual harassment by Anita Hill and others, and the failure of the almost all male US Senate to disqualify the obviously unqualified Thomas, prompted women to use computer and other technologies to attack male privilege in the political system in the United States and to rally women to support women candidates. The result in

the 1992 election was the election of more women candidates than in any previous election and a general rejection of conservative rule.

Many feminists have now established websites, mailing lists, and other forms of cybercommunication to circulate their struggles. Likewise, African-American insurgent intellectuals have made use of broadcast and computer technologies to advance their struggles. John Fiske (1994) has described some African-American radio projects in the "techostruggles" of the present age and the central role of the media in recent struggles around race and gender. African-American "knowledge warriors" are using radio, computer networks, and other media to circulate their ideas and counter-knowledge on a variety of issues, contesting the mainstream and offering alternative views and politics. Likewise, activists in communities of color -- like Oakland, Harlem, and Los Angeles -- are setting up community computer and media centers to teach the skills necessary to survive the onslaught of the mediazation of culture and computerization of society to people in their communities.

Obviously, rightwing and reactionary groups can and have used the Internet to promote their political agendas. In a short time, one can easily access an exotic witch's brew of ultraright websites maintained by the Ku Klux Klan, myriad neo-Nazi groups including Aryan Nations and various Patriot militia groups. Internet discussion lists also promote these views and the ultraright is extremely active on many computer forums, as well as their radio programs and stations, public access television programs, fax campaigns, video and even rock music production. These groups are hardly harmless, having promoted terrorism of various sorts ranging from church burnings to the bombings of public buildings. Adopting quasi-Leninist discourse and tactics for ultraright causes, these groups have been successful in recruiting working class members devastated by the developments of global capitalism which have resulted in widespread unemployment for traditional forms of industrial, agricultural, and unskilled labor.

The Internet is thus a contested terrain, used by Left, Right, and Center to promote their own agendas and interests. The political battles of the future may well be fought in the streets, factories, parliaments, and other sites of past struggle, but all political struggle is already mediated by media, computer, and information technologies and will increasingly be so in the future. Those interested in the politics and culture of the future should therefore be clear on the important role of the new public spheres and intervene accordingly.

पंकज पराशर

बुद्धिजीवी, लोक वृत्त और टेक्नो पॉलिटिक्स



बौद्धिक जगत में इन दिनों बुद्धिजीवियों का वर्गीकरण भी विवाद का विषय बनता जा रहा है। जिगमेंट बोमन बुद्धिजीवियों को समाज की एक ऐसी इकाई के रूप में देखते हैं जो सामाजिक संस्थाओं की सेवा करने के लिए वैश्विक मूल्यों का विधेयन करते हैं। इस वर्ग के बुद्धिजीवियों के बारे में ऐसा माना जाता है कि ये बुद्धिजीवी अपनी योग्यता के आधार पर आम जनमानस के लिए मानवाकृतियों, लोक में घटित घटनाओं आदि की बेहतर व्याख्या प्रस्तुत करते हैं। अमेरिकी बौद्धिक जगत में इन दिनों बुद्धिजीवियों की भूमिका को लेकर जो गरमा-गरम बहस छिड़ी हुई है उनमें से एक धड़े का मानना है कि फिलवक्त जो सामाजिक और वैश्विक हालात हैं उसमें बुद्धिजीवियों की स्थिति में आधुनिक बुद्धिजीवियों से लेकर उत्तर आधुनिक बुद्धिजीवियों तक में बदलाव आया है। दिलचस्प यह है कि पश्चिम के बुद्धिजीवियों में जैसे ही यह बदलाव आया उसका त्वरित असर हिंदी के उन उत्तर-आधुनिक बुद्धिजीवियों पर भी पड़ा, जो कुछ साल पहले तक उत्तर-आधुनिकता के भारतीय प्रवक्ता होने का दावा करते नहीं अघाते थे। जहाँ एक ओर आधुनिक बुद्धिजीवी वैश्विक मूल्यों के कार्यकारी इकाई के तौर पर नई आधुनिक समाज-व्यवस्था का विधेयन करते हैं वहीं दूसरी ओर इस प्रकार सामाजिक जीवन में बुद्धिजीवियों की भूमिका के राजनीतिक विकेन्द्रीकरण के सिद्धांत का भी प्रतिपादन करते हैं।

नोम चोम्स्की के बाद की पीढ़ी में वामपंथी रुझान के कवियों/विचारकों और बुद्धिजीवियों की संख्या में निरंतर बढ़ोत्तरी जारी है। बुश प्रशासन अपनी तमाम नीतियों को लेकर पनप रहे असंतोष और मुखर होते प्रतिरोधी स्वर को लेकर भी हैरान-परेशान है। गौरतलब है कि 2003 में इराक हमले की पीठिका बनते समय भी वहां के बुद्धिजीवियों ने बुश प्रशासन की आलोचना की थी और आज आम जनता वहाँ से अमेरिकी सैनिकों की अविलंब वापसी की मांग कर रही है। मगर राष्ट्रपति जार्ज डब्ल्यू. बुश के सिपहसालारों ने इन विरोधों की न तब परवाह की और न अब ऐसा लगता है कि उन पर कोई खास असर पड़ा है। अमेरिका स्थित कोलंबिया यूनिवर्सिटी में दर्शनशास्त्र के प्रोफेसर डगलस कैलनर ने कुछ वर्ष पूर्व, 2005 के आखिर में छपी अपनी किताब 'मीडिया स्पेक्टैकल्स एंड द क्राइसिस ऑफ डेमोक्रेसी' में इन मुद्दे पर जोरदार बहस की है कि इन दिनों मीडिया में जिन मुद्दों को जनहित के नाम पर उठाया जा रहा है वह असल में जनहित के वास्तविक मुद्दों से लोगों का ध्यान हटाने की एक शातिर चाल है। 9/11 के बाद मीडिया ने जिस तरह से अपना चेहरा और चाल दोनों को बदला है – कैलनर खास तौर पर इससे चिंतित होते हैं और बुद्धिजीवियों के बीच खास-

खास बिन्दुओं पर चिंतन का आह्वान करते हैं। इसी तरह 'द वार फॉर द व्हाइट हाउस' किताब में वे अमेरिकी विदेश, रक्षा और आर्थिक नीतियों की गंभीरता से नये-नये तथ्यों की रोशनी में न सिर्फ आलोचना करते हैं बल्कि खासी मज़म्मत भी करते हैं।

अभी हाल ही में छपी वाशिंगटन डी.सी. के बाशिंदे मिखाइल मैकडोनाल्ड की 'द अमेरिकन इंटरेस्ट' नामक छपी किताब में खास तौर पर अमरीकी हितों और वैश्विक परिदृश्य की पड़ताल की गई है। उन्होंने एक और बेहद दिलचस्प किताब 'द स्ट्रेंजर इन क्राउफोर्ड' में जार्ज बुश और कालजयी फ्रेंच उपन्यासकार अल्बेयर कामू के बीच तुलना करते हुए एक किताब ही लिख मारी है। बहरहाल, असली मुद्दा यह है कि मीडिया की बदली प्राथमिकता और चाल की बेहतर समीक्षा प्रस्तुत करते हुए डगलस कैलनर ने 'टेक्नो पॉलिटिक्स' जैसी शब्दावली के सहारे बुद्धिजीवियों की भूमिका और नई-नई आने वाली चुनौतियों को रेखांकित किया है। बुद्धिजीवियों को दो वर्गों में वर्गीकृत करते हुए कैलनर कार्यकारी बुद्धिजीवी (फंक्शनल इंटेलेक्चुअल) के बारे में कहते हैं, ये स्थापित सामाजिक मूल्यों का उत्पादन और विधेयन करते हैं। जबकि इसके ठीक विपरीत विरोधी खेमे के बुद्धिजीवी (क्रिटिकल-अपोजीशनल इंटेलेक्चुअल) स्थापित सामाजिक व्यवस्था का विरोध करते हैं। कभी-कभी विरोधी खेमे के बुद्धिजीवी समाज में मौजूद मूल्यों के खिलाफ ही अपनी आवाज बुलंद करते हैं और ऐसा मानकर चलते हैं कि इन मूल्यों का समाज में दबदबा बढ़ रहा है। मसलन कानून, न्याय, सत्य और अधिकार आदि। ऐसे बुद्धिजीवी कई बार और भी गंभीर मुद्दों का विरोध करते हैं - जैसे लोकतंत्र, समाजवाद, अश्वेत लोग और स्त्रियों की समानता आदि।

कार्यकारी बुद्धिजीवी पहले रूढ़ और काफी हद तक आदर्शवादी थे, जबकि आज उन वर्गों और तकनीकविदों के हितों के संरक्षक बने हुए हैं जो परिणामों तक पहुँचने के लिए समर्थ साधनों का इस्तेमाल करते हैं। ये बुद्धिजीवी अपनी क्षमताओं को विभिन्न क्षेत्रों, जैसे दवा, भौतिक विज्ञान और अतीत में मौजूद तकनीकी ज्ञान को बढ़ाने के लिए करते हैं। बिना नतीजे की ओर उँगली उठाये और किसी चीज की परवाह किये बगैर वे जिन मूल्यों की स्थापना और वापसी के लिए प्रयत्नशील रहते हैं - उसकी उपयोगिता और अनुपयोगिता पर आज विमर्श करना बहुत आवश्यक है।

कार्यकारी बुद्धिजीवी समाज को बेहतर बनाने (अपने तरीके से) के लिए तकनीकी जानकारियों में दक्षता हासिल करते हैं, वहीं विरोधी खेमे के बुद्धिजीवी आलोचक सामाजिक बेहतरी के लिए संघर्षरत हैं। देश-विदेश में ऐसे बुद्धिजीवियों की एक लंबी फेहरिस्त है जिन्होंने आंदोलनों में न सिर्फ शिरकत की, बल्कि ता-उम्र के लिए उससे जुड़ ही गए। तेलुगू में वरवर राव, अंग्रेजी में अरुंधति राय, बांग्ला में महाश्वेता देवी आदि लेखकों-बुद्धिजीवियों को भारतीय परिप्रेक्ष्य में देखा जा सकता है। विरोधी खेमे के बुद्धिजीवी परंपरागत तौर पर अपने ज्ञान और लेखन का प्रयोग अन्याय, शक्ति के दुरुपयोग, सत्य के लिए संघर्ष और अन्य वैश्विक मूल्यों के खिलाफ आवाज उठाने के लिए करते हैं। ज्याँ पॉल सार्त्र के शब्दों में कहें तो, ''विरोधी खेमे के बुद्धिजीवी का कार्यक्षेत्र आम जनता तक सीमित है।'' सार्त्र के इस कथन के आधार पर एक विरोधी खेमे के बुद्धिजीवी का काम समाज की विभिन्न कुरीतियों का विश्लेषण करना तथा उनको और अधिक मुखरता प्रदान करना है। यह बुद्धिजीवी के शाब्दिक हथियार हैं जिनके जरिये उन्हें समाज में कहीं भी हो रहे अन्याय का विरोध करना है। हेबरमास (1989) के कथन की रोशनी में अगर देखें तो ''आधुनिक समय में विरोधी खेमे के बुद्धिजीवी का कार्यक्षेत्र आम जनता से जुड़े मुद्दे, राजनीतिक वाद-विवाद और विभिन्न किताबों, पत्र-पत्रिकाओं में छपी चीजों पर लिखना और विमर्श करना है।'' हालांकि सभी विरोधी खेमे के बुद्धिजीवी वैचारिक रूप से प्रगतिशील नहीं हैं, बावजूद इसके समाज के आधुनिक होने से बुद्धिजीवियों की भौतिक और मानसिक दशाऔं में तब्दीलियाँ आई हैं। इन दिनों बुद्धिजीवी वे लोग हैं जो नये विचारों और नये

संस्कारों को पैदा करने में माहिर होते हैं। इनमें से भी कुछ बुद्धिजीवी वर्तमान समाज का समर्थन करते हैं तो कुछ उसका विरोध करते हैं। शायद इन वजहों से भी बुद्धिजीवी, कार्यकारी और विरोधी खेमे के बुद्धिजीवी के रूप में बँट गए। कार्यकारी बुद्धिजीवी जहाँ एक तरफ समाज की सेवा तकनीकी जानकारियों से करते हैं वहीं नये आदर्श पैदा करके वर्ग, रंग और लिंग को वैधता प्रदान करते हैं। कहना न होगा कि अपने देश में भी सांप्रदायिक शक्तियों के सत्तासीन होते ही ऐसे-ऐसे तुर्रम खाँ, 'बुद्धिजीवी' का बिल्ला लगाये हुए कभी 'वाजपेयी क्लब' बना रहे थे, तो कभी उनकी कविताओं को नये-नये 'रागों' में गाकर सत्ता की आराधना में तन्मयता दिखा रहे थे – अभूतपूर्व समाजवादियों के समर्थन पर टिकी भाजपा राज के समय।

विरोधी खेमे के बुद्धिजीवी अन्यायी और शोषकों के खिलाफ आवाज बुलंद करते हैं। जबकि विरोधी खेमे के परंपरागत बुद्धिजीवी उत्तर आधुनिक सिद्धांतों द्वारा पैदा की गई चुनौतियों के साथ-साथ नई तकनीकों द्वारा तलाशी गई लोकतांत्रिक बहसों की संभावनाओं पर चर्चा करना मुफीद समझते हैं। यह सारी बातें विरोधी खेमे के बुद्धिजीवी और उनकी भूमिका को ठीक से पुनर्परिभाषित करने की माँग करता है।

लोकक्षेत्र (पब्लिक स्फीयर) और बुद्धिजीवी

अगर मूल परिभाषा पर नजर दौड़ाएं तो लोकतंत्र मूलतः सत्ता के विकेन्द्रीकरण के साथ-साथ सरकारी मामलों में जनता की भागीदारी का नाम है। पुनर्जागरण और 18 वीं शताब्दी की राजनीतिक क्रांति के काल में एक ऐसा लोकक्षेत्र उभरकर सामने आया जहाँ आम आदमी अपने से जुड़े मुद्दों पर बहसें कर सकता था। दिलचस्प यह है कि उस काल में सरकार की आलोचना खास तौर पर आम जनता तक पहुँचाई जाती थी। खुद को अभिव्यक्त करने का साधन बना अखबार और पत्र-पत्रिकाएं। उस वक्त तत्कालीन प्रेस की आजादी आम जन को काफी कुछ सही रूप से चीजों को जानने-समझने का रास्ता फराहम कराती थी। वैचारिक आदान-प्रदान के लिए लोग कॉफी हाउस, पान की दुकान, नाई की दुकान आदि जगहों पर बैठा करते थे और वहीं विभिन्न मुद्दों पर चर्चाएं छिड़ जाती थीं। दुखद यह है कि बूर्ज्वा समाज के टूटने के बाद तमाम लोगों ने अपनी-अपनी पार्टियाँ बना लीं, संस्थाएं बना लीं और विचारधाराएं विकसित कर लीं। बकौल डगलस कैलनर, "आम जनता को रिझाने के लिए विभिन्न पार्टी और संस्था के लोग लिखने लगे और खुद को खुद के ही द्वारा बुद्धिजीवी का दर्जा दे दिया। देखते-देखते शोषित वर्गों ने भी अपने बुद्धिजीवी पैदा कर लिए। हालांकि ये बुद्धिजीवी विद्रोही विचारधारा के थे और शोषकों के मुकाबले शोषितों के बुद्धिजीवियों में खास बात यह थी, वे समाज के सारे तबके का प्रतिनिधित्व करते थे।" ध्यान रहे कि मेरी वोलेस्टोनक्राफ्ट जैसी महिलाओं ने महिला अधिकारों के लिए आवाज बुलंद की थी। शोषित वर्ग के विद्रोही विचारधारा वाले इन बुद्धिजीवियों ने दमन और उनके कारणों के खिलाफ तो आवाज बुलंद की ही साथ ही इसके हल के लिए इनके समाधानों को सिद्धांत से उठाकर वास्तविकता के धरातल पर प्रयोग करने की बात कही। इसलिए 19 वीं शताब्दी में कर्मचारी वर्ग के लोगों ने शोषकों के खिलाफ अपना एक अलग ही लोकक्षेत्र विकसित किया। यूनियन हॉलों, दफ्तरों, सार्वजनिक स्थानों में इनकी सभाएं, चर्चाएं होने लगीं। इसी दौर में बकौल जुरगेन हेबरमास, "अमेरिका और यूरोप में पनप रहे लोकतंत्र और श्रमिक आंदोलनों ने एक वैकल्पिक प्रेस को जन्म दिया। इसके साथ ही हड़ताल और बैठकों जैसी चीज ने शोषक-विरोधी लोकक्षेत्र को एक नया मंच प्रदान किया।"

आधुनिक समाज के बुद्धिजीवियों में विरोधाभासी रूप से सामाजिक कार्यों को लेकर हमेशा एक मतभेद बना रहा। पारंपरिक रूप से विरोधी खेमे के बुद्धिजीवियों जैसे टॉमस पेन, मेरी वोलेस्टोनक्राफ्ट और बाद में मार्क्स, ह्यूगो, सार्त्र और मार्क्वेज जैसे लोगों ने पुनर्जागरण के दरम्यान अन्याय और शोषण के खिलाफ अपनी आवाज बुलंद की। इसके बावजूद संकीर्ण विचारों के बुद्धिजीवियों ने पुनर्जागरण और

फ्रांसीसी क्रांति की कामयाबियों पर हमला करते हुए कुछ इस तरह का इजहार-ए-खयाल किया जिसके तहत वर्ग, लिंग और रंग के नाम पर दमन और उत्पीड़न को जायज ठहराया गया।

इन बुद्धिजीवियों के विरोध में मिशेल फूको ने शिकायत की थी, ''सार्त्र ने एक आदर्शवादी नमूना प्रस्तुत किया है, जो बुद्धिजीवियों को वैश्विक मूल्यों, मसलन, सत्य, अहिंसा, आजादी और मानवता आदि के लिए लड़ने की सलाह देता है।'' फूको ने इसके विरोध में विशेष बुद्धिजीवी का प्रस्ताव किया जो बिलकुल तटस्थ होकर शोषितों-उत्पीड़ितों के सवालों से जुड़े खास मुद्दों के लिए अपनी आवाज बुलंद करे। फूको का यह विचार उत्तर-आधुनिक राजनीति में प्रासंगिक हो गया और राजनीति को पार्टी की राजनीति से हटाकर सामाजिक आंदोलनों की तरफ मोड़ दिया गया। उत्तर-आधुनिक राजनीति के लिए शक्ति का विकेन्द्रीकरण जरूरी है।

डगलस कैलनर कहते हैं, ''मैं यह मानता हूँ कि आलोचक बुद्धिजीवी या कहें विरोधी खेमे के बुद्धिजीवियों के कुछ विचार उपयोगी हैं। आम बुद्धिजीवी वैश्विक मूल्यों के हनन के खिलाफ आवाज उठाते हैं, जबकि आम लोकतांत्रिक बुद्धिजीवी दूसरों के लिए आवाज उठाने के बदले व्यक्तिगत या वैश्विक मुद्दों से जुड़े खास मुद्दों पर ही अपनी राय जाहिर करते हैं।'' नतीजा यह होता है कि वर्तमान परिवेश में लोकतांत्रिक बुद्धिजीवी कहलाने के लिए वैश्विक बुद्धिजीवी के पूरे गुण होने की आवश्यकता नहीं है। कहना न होगा कि बुद्धिजीवियों को व्यक्तिगत इच्छाओं/अनिच्छाओं से ऊपर उठकर सोचना चाहिए। बिना किसी पक्षपात के अपनी बात कहनी चाहिए - तमाम पूर्वग्रहों को छोड़कर। इसके साथ-साथ अपनी सीमाएं जानते हुए खुद को दूसरे की जगह रखकर सोचना चाहिए।

नई तकनीक, लोकक्षेत्र और नये बुद्धिजीवी

कुछ मामलों में बुद्धिजीवियों और तकनीक में कोई खास संबंध नहीं होता। आज के उच्च तकनीक से संपन्न समाज में कंप्यूटर और त्वरित मीडिया युग में प्रतिबद्ध आम बुद्धिजीवियों को परिभाषित करने की जरूरत है। बीसवीं सदी की शुरुआत में जॉन डिवे ने 'थॉट न्यूज' नामक एक ऐसे अख़बार की परिकल्पना की थी जिसमें विज्ञान की नवीनतम खोजों और विचारों को जगह दी जाए। इसके अलावा बर्टोल्ट ब्रेख़्त और वाल्टर बेंजामिन ने सिनेमा और रेडियो के क्रांतिकारी परिणामों को देखा था और दूसरे बुद्धिजीवियों से यह अपील की, कि वे इन साधनों का इस्तेमाल समाज को और अधिक लोकतांत्रिक बनाने और उसे बदलने में करें। ज्यॉ पॉल सार्त्र ने भी रेडियो धारावाहिकों का अध्ययन किया और इस बात पर बल दिया कि प्रतिबद्ध लेखकों को भी रेडियो और सिनेमा का इस्तेमाल करना चाहिए। इससे भागना ठीक नहीं है।

पहले रेडियो, टेलीविजन और दूसरी इलैक्ट्रानिक मीडिया पर तमाम तरह की बंदिशें आयद थीं। रेडियो और टेलीविजन का विवाद, बहसें, जानकारियां आदि एक नये लोक वृत्त का निर्माण करते दिखाई दे रहे हैं। डगलस कैलनर जोर देकर कहते हैं कि, ''बुद्धिजीवियों को चाहिए कि वे इन माध्यमों का उपयोग करके जन मामलों में सीधे जनता की भागीदारियों को सुनिश्चित करें और एक नयी संचार राजनीति और मीडिया-परियोजनाओं का निर्माण करें।''

यह तथ्य अब धीरे-धीरे असलियत को काफी हद तक स्पष्ट करता जा रहा है कि आज की राजनीति में यदि कोई बुद्धिजीवी लोकवृत्त (पब्लिक स्फीयर) में अपनी पैठ बनाना चाहता है, समाज को नई दिशा देना चाहता है - तो नई तकनीकों का उन्हें अधिक से अधिक इस्तेमाल करना चाहिए। पहले रेडियो और टेलीविजन ने एक लोकक्षेत्र का या कहें लोकवृत्त का निर्माण किया था लेकिन अब कंप्यूटर और इंटरनेट ने अपने अलग लोकवृत्त बनाये हैं। जानकारियां, बहसें, लोकतांत्रिक सहभागिता और विचारों को पहुँचाने के

लिए नई संभावनाओं को भी पैदा किया है। ...और यह कहना शायद गैर-जरूरी है कि इस्तेमाल में लाने से पूर्व इन तकनीकों का बारीकी से अध्ययन जरूरी है।

आज के समय में बुद्धिजीवी होने का मतलब है नई तकनीकों का उपयोग करके विचारों के क्षेत्र में नई और ऊर्जस्वी विचारों की खोज, उसका संपूर्ण वितरण और इससे तैयार हुए लोकवृत्त में अपनी पूरी भागीदारी। डगलस कैलनर इस मुद्दे पर अपनी राय साफ-साफ जाहिर करते हैं, कुछ इस तरह, ''आज के नये बुद्धिजीवियों को चाहिए कि वह अपनी नीतियां इस तरह से बनाएं कि शिक्षा, लोकतांत्रिक विकास के साथ ही अपनी नीतियों को बेहतर ढंग से प्रसारित करने के लिए नई तकनीक का बेहतर इस्तेमाल करें। भविष्य में जो वक्त आएगा उसमें बुद्धिजीवियों और नई तकनीक के बीच नाभिनालबद्ध रिश्ता बनाना अनिवार्य हो जाएगा।'' इसके बगैर नई तकनीक से भागने वाले लोग अपनी मेधा का सही इस्तेमाल कर ही नहीं पाएँगे और तब वे कैसा लोकवृत्त बनाएँगे और किस तरह के बुद्धिजीवी रह जाएंगे, यह मुद्दा बहसतलब है।

नव पूँजीवादी समाज में लोकतंत्र की मजबूती के लिए यह और भी आवश्यक है कि लोकतांत्रिक मीडिया राजनीति (डेमोक्रेटिक मीडिया पॉलिटिक्स) नई रणनीति के तहत की जाए। मीडिया की लोकतांत्रिक राजनीति में दो तरह की नीतियां होती हैं - पहली कार्यरत मीडिया को लोकतांत्रिक बनाना और दूसरी आम जनता की सुविधाओं, इच्छाओं और जरूरतों के प्रति मीडिया को जिम्मेवार बनाना।

मुख्य धारा की मीडिया के विकल्प के तौर पर एक विपक्षी मीडिया को तैयार करना भी आने वाली 'टैक्नो पॉलिटिक्स' का मुकाबला करने के लिए आवश्यक है। लोकतांत्रिक मीडिया राजनीति के लिए मुख्य धारा की पूँजीवादी मीडिया समर्थित नीतियों की तीखी आलोचना, उसमें सुधार और वैकल्पिक मीडिया का विकास, इसकी जरूरी शर्तें हैं। मीडिया को लोकतांत्रिक बनाने का प्रयास तभी संभव है जब एक वैकल्पिक प्रेस का निर्माण हो। आम जनता की पहुँच में टेलीविजन हो और एक सकारात्मक विपक्षी राजनीति के साथ-साथ ऐसी वैचारिक दृढ़ता से सम्पन्न नीतियां हों जो मुख्यधारा की मीडिया को प्रभावित करें। उसकी नीतियों की परत-दर-परत पड़ताल करके उपयुक्त भाषा-शैली और अंदाज में बेनकाब करने का बेहतर एजेंडा हो।

पिछले कुछ दशकों में टेलीविजन संचार माध्यम के एक बेहतर विकल्प के रूप में देखा जाने लगा है। 1970 में अमेरिका में हुए टेलीविजन के विकास में प्रगतिशील बुद्धिजीवियों के लिए नई संभावनाएं पैदा की थीं। उसने इस तरह के कार्यक्रमों को बढ़ावा दिया जो तत्कालीन संकीर्ण समाज की कठोर आलोचनाएं करता था - उन दिनों मुख्यधारा की मीडिया में इसकी भरमार थी। 1970 में जब टेलीविजनों की संख्या में इजाफा होने लगा तब वहाँ 'फेडरल कम्युनिकेशन कमीशन' का एक आदेश आया जिसके अंतर्गत 1972 के बाद के नए 'केबल सिस्टम' को कम-अज़-कम एक चैनल सरकार को शिक्षा और आम आदमी को नई जानकारियां मुहैया कराने के लिए देने होंगे। शुरुआती दौर में कुछ कंपनियों ने एक चैनल मुहैया कराई तो कुछेक ने दो या तीन।

कई लोग ऐसा मानते हैं कि लोकतांत्रिक राजनीति में आम सहमति बनाने के लिए आमने-सामने बैठकर बातचीत करना जरूरी है लेकिन एक चतुराई पूर्ण सहमति के लिए जनता का जागरूक और जानकार दोनों होना बेहद आवश्यक है। कहना न होगा कि वर्तमान संदर्भ में यह रेडियो और टेलीविजन के द्वारा ही मुमकिन है। यह जरूरी नहीं है कि मीडिया वर्तमान राजनीति की पूरक बने लेकिन मीडिया राजनीति को बढ़ावा अवश्य दिया जाना चाहिए ताकि इसके माध्यम से जागरूक और जानकार लोग सूचनाओं को

अधिक-से-अधिक लोगों तक प्रसारित कर सकें। अमेरिका के टेक्सास राज्य में 'काउंसिल फॉर पब्लिक मीडिया' अपने कार्यकर्ताओं और आमजनों को यह बताता है कि नई तकनीक और कम्प्यूटर वगैरह का इस्तेमाल अपने विचारों को ज्यादा-से-ज्यादा लोगों तक पहुंचाने के लिए कैसे करें? मीडिया राजनीति में ज़्यादा लोगों की भागीदारी, राजनैतिक संरचना की इसकी आवश्यकताओं को दर्शाती है। इसलिए आज नव पूँजीवाद और भूमंडलीकृत शोषण के हथियारों को मात देने के लिए मीडिया राजनीति को और अधिक विकसित करने की जरूरत है - साथ ही इसके लिए और अधिक मेहनत करने की जरूरत भी है।

अगर कोई विकासशील समूह या आंदोलन से जुड़े आंदोलनकर्मी वर्तमान राजनीतिक माहौल में 'अधिकारों' का कोई विकल्प तलाश करना चाहते हैं तो हर हाल में उन्हें अपनी बात अधिक-से-अधिक लोगों तक पहुँचानी होगी और खुद से ज़्यादा-से-ज़्यादा लोगों को जोड़ना होगा। आखिर ज्यादातर लोग समाचार और अन्य अनेक सूचनाएं टेलीविजन से ही प्राप्त करते हैं। प्रसार माध्यम ही आम जनता के विचारों को बनाने में एक अहम भूमिका निभाता है और यह तय करता है कि किस चीज को गंभीरता से लें और किसको गंभीरता से नहीं लें। अगर वैकल्पिक विकास के यूटोपिया से लैस लोग राष्ट्रीय राजनीति में अपनी पैठ बनाना चाहते हैं तो उन्हें नई तकनीकों को ध्यान में रखकर ही अपनी नीतियों का निर्माण करना पड़ेगा।

लोकतांत्रिक समाज के निर्माण और विकास में 'टैक्नो पॉलिटिक्स' को बढ़ावा देने के लिए कंप्यूटर और सूचना प्रौद्योगिकी नई-नई संभावनाएं पैदा करता जा रहा है। ऐसा लगता है कि आने वाले समय में घर-घर में मनोरंजन और जानकारियों का भंडार होगा - मगर वे भारतीय नागरिक हर चीज की तरह इससे भी अंततः वंचित रह जाएंगे जो आज भी दो वक़्त की रोटी के लिए संघर्षरत हैं और कल भी संघर्ष से शायद नहीं उबर पाएंगे। यह सारा ताम-झाम अंततः इन मध्यवर्गीय नागरिकों को फायदा पहुँचाएगा जिन्हें मूलभूत आवश्यकताओं के लिए कुछ करने की जरूरत नहीं है। दूसरी चिंता इसके साथ यह जुड़ी हुई है कि अगर वैकल्पिक विचारों वाले मीडिया का विकास नहीं हुआ तो इसका उपयोग वही कर पाएंगे जो आर्थिक रूप से बेहद मजबूत स्थितियों में होंगे। नतीजा यह होगा कि गरीब मुल्कों के लोग किसी भी तरह इसका लाभ नहीं उठा पाएंगे। नाइजीरिया, कांगो गणराज्य और दक्षिण अफ्रीकी मूल के लोगों की इस तक पहुंच हो ही नहीं सकेगी। भारत के 'हिंदी पट्टी' के लोग तो आज भी छोटी-से-छोटी जानकारियां नहीं पा सकते हैं। फलस्वरूप, इन निजी मनोरंजन माध्यमों का विकल्प ढूँढ़ना जरूरी होता जा रहा है।

आज के इस टैक्नो पूँजीवादी समाज में कंप्यूटर और प्रौद्योगिकी की बढ़ती महत्ता विकासशील मीडिया की जरूरत के रूप में उभरा है। पूरी दुनिया कंप्यूटरीकृत होने जा रही है और आने वाले वक्त में जिस देश के नागरिक की इस दुनिया तक पहुँच और दखल नहीं होगी वे हर तरीके से दुनिया में रहकर भी किसी और दुनिया के वासी में तब्दील होते चले जाएंगे। गरीब मुल्कों की सरकारें जिस तरीके से बहुराष्ट्रीय पूँजी के आकाओं और पूंजीवादी मीडिया के सेठों को अपने यहाँ बुलाकर मनचाहे तरीके से काम करने के लिए सारी सुविधाएं उपलब्ध करवा रही हैं उसके कारण भी जनता अपनी मूलभूत जरूरत की चिंताओं में ही गर्क है। उन्हें यह सोचने और जानने का मौका ही उपलब्ध नहीं करवाया जा रहा है कि हमारा आनेवाला वक्त कैसा होगा और हमारी सरकारें किस तरह की दुनिया बनाने वालों के साथ हैं, सहयोगी हैं? इसलिए निजी कंपनियों और सरकारों के एकाधिकार से बचने के लिए यह जरूरी हो जाता है कि नये-नये जानकारी केन्द्रों की स्थापना की जाए ताकि लोकतांत्रिक समाज में अपनी सहभागिता को सुनिश्चित किया जा सके।

कंप्यूटर अपनी क्षमताओं के कारण अंततः एक लोकतांत्रिक तकनीक है, जहां प्रसारण के माध्यम मात्र 'वन वे ट्रैफिक' हैं वहीं कंप्यूटर और इंटरनेट द्विपक्षीय माध्यम है। कंप्यूटर, इंटरनेट, चैटिंग आदि का उपयोग आम जनता एक दूसरे से बातचीत करने के लिए कर सकती है। मोडेम और टेलीफोन लाइनों की

सहायता से तमाम लोग – जो इससे जुड़े हैं, जुड़ सकते हैं – वे लोग तमाम मुद्दों पर विमर्श कर सकते हैं। इस तरह यह एक नये संसार और प्रतिक्रियाओं को जन्म देता है। वर्तमान समय में जन सरोकारों से जुड़े लोगों के लिए यह और भी जरूरी हो जाता है कि वे ऐसे कार्यक्रमों से जुड़कर, इस दुनिया में प्रवेश करके गरीब मुल्कों की व्याख्या प्रस्तुत करें, जिससे उन दमित और शोषित तबकों तक भी इसका लाभ पहुंच सके – जो आज तक तो वंचित हैं ही और सरकार की जैसी नीतियाँ हैं, राजनीतिज्ञों की जो कार्य शैली और प्रतिबद्धताएं हैं उससे आगे भी दुनिया में हो रही हलचलों से वे वंचित रहेंगे। 'टेक्नो पॉलिटिक्स' में शामिल विरोधी खेमे के बुद्धिजीवियों पर ही अंतत: यह जिम्मेदारी आयद होती है कि वे एक वास्तविक लोकवृत्त के निर्माण के लिए जन-जन तक सूचनाएं अपने-अपने तरीके से पहुँचाएं।

सहायक ग्रंथ

1. फ्रेडरिक जेमसन : ए क्रिटिकल रीडर, सं. डगलस कैलनर एंड सीन होमर, 2004
2. मीडिया स्पेक्टेकल्स एंड द क्राइसिस ऑफ डेमोक्रेसी : डगलस कैलनर, 2005
3. मीडिया कल्चर : कल्चरल स्टडीज, आइडेंटिटी एंड पॉलिटिक्स बिटवीन द मॉडर्न एंड द पोस्ट मॉडर्न : डगलस कैलनर (1995)
4. द रोल ऑफ पब्लिक इंटेलेक्चुअल : एलन लाइटमैन।
5. द स्ट्रक्चरल ट्रांसफॉरमेशन ऑफ द पब्लिक स्फीयर : एन इनइक्विटी इंटू ए कैटेगरी ऑफ बूर्ज्वाजी सोसाइटी, जुरगेन हेबरमास, 1991, अनुवाद : थॉमस बर्जर, एम.आई.टी. प्रेस।
6. मासेज, क्लासेज, एंड द पब्लिक स्फीयर : माइक हिल, वारेन मोन्टाग, वर्सो, 2001
7. पावर एंड पॉलिटिक्स इन ग्लोबलाइजेशन : द इंडिस्पेंसबल स्टेट : होवार्ड एच. लैन्टर, 2004
8. रूल ऑफ एक्सपर्ट्स : इजिप्ट, टैक्नो पॉलिटिक्स, मॉडर्निटी : टिमोथी मिथेल, यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस, 2002

पंकज पराशर प्राय:, महत्वपूर्ण किताबों को लेकर 'पहल' में लिख रहे हैं। नोम चोम्स्की के बाद पूंजीवादी दुनिया में वामपंथी रूझान बढ़ने के दृश्य पर वे विस्तृत काम कर रहे हैं। नोम चोम्स्की की ताज़ा किताब 'फेल्ड स्टेट्स' पर अगले अंक में संपादकीय टिप्पणी पाठक पढ़ सकेंगे।

सांझ होइत गाममे

भारतक नक्शापर
जकर कोनो टा जिक्र
कतहु देखार नहि होइत अछि
से एकटा कोनो गाम
आ ओहि गामक एकटा सांझमे हम
ठाढ़ छी चुपचाप
बहुत दिनपर घुरल
कोनो बटोही जकाँ

जे तकैत अछि अपन घर
घरक आगूमे रोपल सिंगरहार
आ सिंगरहारकें नहि देखि

घुरि अबैए बेर-बेर
हिया हारिकें
भ' जाइए ठाढ़
चुपचाप

चुपचाप ठाढ़ ओ बटोही
तकैत रहैए
ठकनबैत रहैए
सोचैत रहैए
किनसाइत ...
किनसाइत ...
किनसाइत ...

चिन्हबाक प्रक्रियामे
बेर-बेर असफल होइत ओ
बेर-बेर तकैए किछु परिचित निशान
बेर-बेर तकैए किछु पहिचान
अपन स्मृतिक दरिद्रतापर कानि
बैसि जाइत अछि थसथसाक'
चुपचाप कोनो ठाम

ओ तकैत अछि
अपन हृदयमे बसल गाम
गाममे अपन घर
घरक आगूमे रोपल सिंगरहार
ओ तकैत अछि बेर-बेर

मोन पड़ैत छैक
बेर-बेर पड़ैत छैक मोन
'ने ओ नगरी, ने ओ ठाम ...
फकड़ा सुनबैत ओ बुढ़िया

बुढ़ियाक तमाकुल माँगब
मोन पड़ैत छैक
एक-एक क' सबटा

मोन नहि पड़ैत छैक घर ?

घर नहि मोन पड़ैत अछि
वा घरे नहि मोन पाड़ैत अछि
घर ओ नहि चिन्हि पबैए
वा घरे ओकरा नहि चिन्हैए
घरसँ ओ गेल छल
कि घरे ओत'सँ गेल छल
ई एकटा भयंकर समस्या अछि उपस्थित

एहि मुन्हारि साँझमे
जे निरन्तर गाढ़ भेल जा रहल-ए
तेज आँचपर खौलैत दूध जकाँ
ओ ठाढ़ अछि
निरन्तर अस्पष्ट होइत जा रहल
साँझक गाछ तर
ओ ठाढ़ अछि
ठकमकाएल
साँझ क' घुरल सुग्गा जकाँ
घर कें तकैत

साँझक गाछमे
गाछक झाँखुड़ सबहक दोगमे
निरन्तर अस्पष्ट होइत गाम

आ गाममे ठाढ़ ओ
निरन्तर अस्पष्ट भेल जा रहल-ए
निरन्तर
बाढ़िमे आस्ते-आस्ते डुबैत
आ अंततः चक्कडुम होइत
घर जकाँ
ओ अस्पष्ट भेल जा रहल-ए
साँझ खन गाममे
गाममे साँझे खन
ओ विलीन भेल जा रहल-ए
आस्ते -आस्ते --
आस्ते -आस्ते --
आस्ते आस्ते--

□

नये इलाके में

इन नये बसते इलाकों में
जहाँ रोज बन रहे हैं नये नये मकान
मैं अक्सर रास्ता भूल जाता हूँ

धोखा दे जाते हैं पुराने निशान
खोजता हूँ ताकता पीपल का पेड़
खोजता हूँ ढहा हुआ घर
और ज़मीन का खाली टुकड़ा जहाँ से बायें
मुड़ना था मुझे
फिर दो मकान बाद बिना रंग वाले लोहे के फाटक का
घर था इकमंजिला

और मैं हर बार एक घर पीछे
चल देता हूँ
या दो घर आगे ठकमकाता

यहाँ रोज कुछ बन रहा है
रोज कुछ घट रहा है
यहाँ स्मृति का भरोसा नहीं
एक ही दिन में पुरानी पड़ जाती है दुनिया
जैसे वसन्त का गया पतझड़ को लौटा हूँ

जैसे बैशाख का गया भादों को लौटा हूँ

अब यही है उपाय कि हर दरवाजा खटखटाओ
और पूछो–
क्या यही है वो घर ?

समय बहुत कम है तुम्हारे पास
आ चला पानी ढहा आ रहा अकास
शायद पुकार ले कोई पहचाना ऊपर से देख कर

घरबाली आ बगिया। संगहि सड़क नाटक अछि : चिन्हियौ नेपाल, लेहुआयल आँचर, नै आब नै, ककर लाल, कोंटा सिंगार आदि।

द्वितीय : रूपम श्री (सहरसा)

सुश्री रूपम श्रीक जन्म सहरसामेँ भेलन्हि। अहाँ स्नातकमे पढ़ैत छी संगहि संगीतसँ सेहो प्रभाकर कऽ रहल छी। रंगमंचसँ लगाव अहाँकेँ सुजीक प्रयाससँ १९९५ सँ भेल। रूपम श्री विभिन्न संस्था संग रंगमंच कऽ रहल छथि। जाहिमे प्रमुख अछि इप्टा, पंच कोसी। हिनका द्वारा कएल गेल महत्वपूर्ण नाट्य प्रस्तुति अछि : मधुश्रावणी, कनियाँ पुतरा, पाँच पत्र। रूपम श्रीक प्रिय नाटककार छथि महेन्द्र मलंगिया आ प्रिय निर्देशक छथिन उत्पल झा। मैथिली रंगमंचमेँ काज क'र' मे नीक लगैत अछि। २००३ मे खगौल, पटनामे अहाँकेँ सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्रीसँ सम्मानित कएल गेल, तरंग महोत्सवमे उत्कृष्ठ नृत्यक लेल द्वितीय पुरस्कार राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा सिंहदेवी पाटीलसँ अहाँ ग्रहण केलहुँ।

तृतीय : कल्पना मिश्रा (दिल्ली)

सुश्री कल्पना मिश्राक जन्म मिथिलाक नागदह गाममे भेलन्हि। बच्चेसँ कल्पना जीक लगाव संगीतसँ भऽ गेलन्हि। अहाँ शास्त्रीय संगीतक प्रशिक्षण प्रयाग विद्यापीठ संगीत समिति, इलाहाबादसँ प्राप्त केलहुँ। अहाँक शिक्षा दिक्षा बेगूसरायमे भेल। पहिने हिनक झुकाव मैथिली संगीत दिस भेल, तत्पचात ई अभिनय दिस सेहो आकर्षित भेलीह। अहाँ दिल्ली स्थित मिथिलांगन संस्थासँ रंगकर्म कऽ रहल छी। मैथिलीक संग भोजपुरी, हिन्दीमे सेहो अहाँ लगातार अपन पहचान बनेबामे सफल भेलहुँ अछि। रंगमंचक संग अहाँ लगातार फिल्म, टेलीविजनक लेल काज कऽ रहल छी। कल्पना जी कतेको मैथिली नाट्य प्रस्तुतिमे अपन अभिनय प्रतिभा देखा चुकल छथि। जाहिमे प्रमुख अछि : जट जटिन, उगना हॉल्ट, सामा चकेबा आदि। हिनक इच्छा छनि जे महिला कलाकारक प्रति मिथिला समाजक नजरियामे बदलाव अएबाक चाही। कल्पना जीक प्रिय निर्देशक छथि संजय चौधरी आ प्रिय नाटककार महेन्द्र मलंगिया।

सूचना: पंकज पराशरकेँ डगलस केलनर आ अरुण कमलक रचनाक चोरिक पुष्टिक बाद (http://www.box.net/shared/७५xgdy३७dr)बैन कए विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलनसँ निकालि देल गेल अछि।

पंकज पराशर उर्फ अरुण कमल उर्फ डगलस केलनर उर्फ उदयकान्त उर्फ ISP २२०.२२७.१६३.१०५, १६४.१००.८.३, २२०.२२७.१७४.२४३ उर्फ.....**पंकज पराशरकेँ बैन कए विदेह साहित्य आन्दोलनसँ। निकालल जा रहल अछि।**

सम्पूर्ण दस्तावेज मूल आ पंकज पराशर उर्फ अरुण कमल उर्फ डगलस केलनर उर्फ उदयकान्त उर्फ ISP २२०.२२७.१६३.१०५ , १६४.१००.८.३ , २२०.२२७.१७४.२४३ उर्फ.....क चोरुक्का *नीचाँक लिंकपर सेहो अछि।*

http://www.box.net/shared/७५xgdy३७dr

विदेहमे किछु अनोनिमस ई-मेल अएलाक बाद ओकर इन्क्वायरीक बाद चेतना समिति द्वारा पंकज पराशरकँ देल सम्मानकँ वापस लेबा लेल आ एहि लेखककँ बैन करबा लेल ई हमर (चेतना समितिक आजीवन मेम्बरक हैसियतसँ) आधिकारिक अनुरोध अछि आ इन्क्वायरीक विस्तृत विविचन नीचा देल जा रहल अछि। कृपया चेतना समिति एहि विषयपर अपन आपात बैसकी करए आ उचित निर्णय लए से अनुरोध।- गजेन्द्र ठाकुर

इन्क्वायरीक विवरण:

पाठकक सूचनाक बाद ई पता चलल अछि (आ ओकर सत्यापन कएल गेल) जे एहि लेखकक ई एहि तरहक पहिल कृत्य नहि अछि। ई लेखक पहिने सेहो Douglas Kellner क Technopolitics क पंक्तिशः अनुवाद मूल लेखकक रूपमे नामसँ ज्ञानरंजनक हिन्दी पत्रिका "पहल"मे धोखासँ छपबओलक। तकर पता चललाक बाद "पहल"मे एहि लेखकक रचनाक प्रकाशन बन्द भऽ गेल। एहि सम्बन्धमे विस्तृत आलेख विदेहक अगला अंकक सम्पादकीयमे देल जाएत।

२. एहि सभ घटनाक बाद पंकज पराशरकँ विदेहसँ बैन कएल जा रहल अछि। विदेह आर्काइवसँ "विलम्बित कइक युगमे निबद्ध" पोथीकँ हटाओल जा रहल अछि। प्रकाशककँ सेहो उचित पुलिसिया कार्यवाही (यदि आवश्यक हुअए तँ) आ आन कार्रवाही लेल एहि समस्त घटनाक्रमक सूचना दऽ देल गेल अछि। ३.पाठक डगलस केलनरसँ ई-मेल kellner@gseis.ucla.edu पर "पहल" पत्रिका वा तकर सम्पादक श्री ज्ञानरंजनसँ editor.pahal@gmail.com, edpahaljbp@yahoo.co.in वा info@deshkaal.com पर आ दैनिक जागरणसँ nishikant@jagran.com, sanjay@jagran.com पर सम्पर्क कए विस्तृत जानकारी लऽ सकैत छथि। डगलस केलनरक आर्टिकल गूगल सर्चपर technopolitics टाइप कए ताकि सकै छी आ पढ़ि सकै छी। पहल पत्रिकाक वेबसाइट www.deshkaal.com पर सेहो पहल पत्रिकाक पुरान अंक सभ आस्ते-आस्ते देबाक प्रारम्भ भेल अछि।

विस्तृत जानकारीक लेल सुधी पाठकगण अहाँक धन्यवाद। भविष्यमे सेहो एहि घटनाक पुनरावृत्ति नहि हुअए ताहि लेल अहाँक पारखी नजरिक आस आगाँ सेहो रहत। एहि तरहक कोनो घटनाक जानकारी हमर ई-पत्र ggajendra@gmail.com पर अवश्य पठाबी।

पंकज पराशर उर्फ अरुण कमल उर्फ डगलस केलनर उर्फ उदयकान्त उर्फ ISP 220.227.163.105 , 164.100.8.3 , 220.227.174.243 उर्फ.....

डगलस केलनरक नीचाँक आलेखकक पंकज पराशर द्वारा चोरि सिद्ध कएलक जे एक दशक पहिने एहि लेखक द्वारा अरुण कमलक चोरि सँ आइ

धरि हुनकामे कोनो तरहक परिवर्तन नहि आएल छन्हि। हँ, आब ओ पटना विश्वविद्यालयक प्रोफेसरक रचना चोरेबासँ आगाँ बढ़ि गेल छथि आ कैलिफोर्निया वि.वि.क प्रोफेसरक रचना चोराबए लागल छथि। एहि सन्दर्भमे हमरा एकटा खिस्सा मोन पड़ैत अछि। २०-२२ बरख पुरान सत्य कथा। दरभंगामे रहैत रही, छतपर हम आ हमर एकटा पिसियौत भाइ साँझमे ठाढ़ रही। सोझाँमे सरवनजीक घरक बाअड़ीमे खूब लताम फड़ल छलन्हि। हमर पिसियौत भाइ हुनका इशारा दऽ कहलखिन्ह जे दस टा लताम आनू। ओ बेचारे दसटा लताम तोड़लन्हि आ आबि रहल छलाह आकि रस्तामे हमसभ देखलहुँ जे एकटा छोट बच्चा संग हुनका किछु गप भेलन्हि आ ओ पाँचटा लताम ओहि बच्चाकेँ दऽ देलखिन्ह। जखन सरवन जी अएलाह तँ कहलन्हि जे ओ बच्चा हुनका भैया कहि सम्बोधित कएलकन्हि आ पाँचटा लताम मँगलकन्हि- से कोना नञि दितियैक- सरवनजीक कहब छलन्हि। आब पंकज पराशर प्रसंगमे की भेल से देखी। प्रदीप बिहारीजीक बेटा प्रणवकेँ पंकज पराशर नोम चोम्स्की आ डगलस केलनरक रचना दैत छथिन्ह आ तकर अनुवाद करबा लेल कहै छथिन्ह। बेचारा जान लगा कऽ अनुवाद कऽ दैत छन्हि, ई सोचि जे जिनका ओ चच्चा कहै छथि- जे क्रान्तिकारी विचारक छथि (मार्क्सवादी!!!) से कोनो नीक पत्रिकामे ई अनुवाद छपबा देथिन्ह। मुदा छह मासक बाद चच्चाजी कहै छथिन्ह जे नोम चोम्स्की बला रचना हेरा गेल आ डगलस केलनर बला रचनाक अनुवाद नञि नीक रहए से रिजेक्ट भऽ गेल। मुदा क्रान्तिकारी कवि (चोरुक्का सेहो विवरण नीचाँमे अछि) दुनू रचना पहल पत्रिकामे पठा दै छथि- पहल-८६ मे डगलस केलनर बला रचना छपितो छन्हि (आ से अनुवादक रूपमे नहि वरन् मूल लेखकक रूपमे) आ ओ बैन सेहो कऽ देल जाइ छथि। हमर सरवन जी एकटा बच्चा द्वारा भैया कहलापर पाँचटा लताम ओकरा दऽ दै छथिन्ह मुदा हमर पराशरजी भातिजोक पाँचटा लताम निर्लज्जतासँ छीनि लैत छथि।

आ हम हुनकर खोजबीन तखन करै छी जखन ओ विदेहंमे आइडेन्टिटी बदलि हमरा गारि पढ़ैत छथि- हुनकर रियल आइडेन्टीटी नाङट करै छी। फेर सभसँ गप करै छी आ पाठकक सहयोगसँ *आरम्भ*, *पहल* क पुरान अंक भेटि जाइत अछि जतए हिनकर कुकृत्य छन्हि।

डॉ. जेकील आ मिस्टर हाइडक कथा अंग्रेजी विषएमे स्कूलमे पढ़ने रही। एकटा वैज्ञानिक रहथि डॉ. जेकील हृदएसँ कलुषित। मोन करन्हि जे चोरि-उच्चक्कागिरी करी। से एकटा द्रवक खोज कएलन्हि जकरा पीबि कऽ ओ मिस्टर हाइड बनि जाथि आ रातिमे चोरि-उच्चक्कागिरी करथि। एक रातुक गप अछि जे मिस्टर हाइड ककरो हत्या कऽ भागि रहल रहथि मुदा भोर भऽ गेल रहै से लोक सभ हुनका खेहारए लगलन्हि। ओ डॉ.जेकीलक घरमे पैसि गेलाह (कारण डॉ.जेकील तँ ओ स्वयं छलाह) आ केबार भीतरसँ लगा लेलन्हि। लोक सभ चिन्तित जे डॉ. जेकीलकेँ ई बदमाश मारि देतन्हि से ओ सभ केबार पीटए लगलाह। मिस्टर हाइड द्रव पीअब शुरु केलन्हि मुदा ओहि दिन दवाइमे रिएक्शन

नहि भेलैक आ हुनकर रूप डॉ. जेकीलमे नहि बदलि सकलन्हि। आब एहि कथाक अन्तमे मिस्टर हाइड माथ नोचि रहल छथि जे हुनका अपन समस्त पापक प्रायश्चित मिस्टर हाइड बनि करए पड़तन्हि।

पंकज पराशर उर्फ अरुण कमल उर्फ डगलस केलनर उर्फ उदयकान्त उर्फ ISP 220.227.163.105 , 164.100.8.3 , 220.227.174.243 उर्फ..... हिनकर रियल आइडेन्टिटी हम नाङट करै छी आ ई आब अभिशप्त छथि अपन शेष जीवन मिस्टर हाइड रहि अपन कुकृत्यक सजा भुगतबाक लेल।

मैथिलमे ई एकटा तथ्य छै जे चुपचाप जे गारि सुनै अछि तकरा कहल जाइ छै जे ओ बड़ड नीक लोक छथि। मुदा समए आबि गेल अछि मिस्टर हाइड सभकेँ देखार करबाक आ ओकरा कठोर सजा देबाक। मुदा ई तँ मात्र प्रारम्भ अछि। मैथिलीमे बहुत गोटे छथि जे हिन्दीमे बैन भेल लेखककेँ पोसै छथि (मैथिली सेवाक लेल) जे जखन ककरो गारि पढ़बाक होए तँ ओ तकर प्रयोग कऽ सकथि।

एहि ब्लैकमेलरक डॉ. जेकील आ मिस्टर हाइड बला चरित्र मैथिल सर्जनाक विरोधमे मैथिल-जन पत्रिकामे एक दशक पहिने उजागर भऽ गेल छल मुदा लोक हिनका पोसैत रहल।

आरम्भमे सेहो ई एकटा चिट्ठी मैथिलीक सम्पादकक विरोधमे देलन्हि जे छपि गेल आ ओकर घृणित भाषाक कारण भाइ साहेब राजमोहन झाकेँ माफी माँगए पड़लन्हि आ फेर ई मिस्टर हाइड सेहो ओहि सम्पादकसँ लिखितमे माफी मँगलन्हि।

एकटा आग्रह आ आह्वान: सुभेश कर्ण आ समस्त मैथिली-प्रेमी-गण- एहि मिस्टर हाइडक ब्लैकमेलिंग आ एब्युजक द्वारे अहाँ सभकेँ मैथिली छोड़ि कऽ जएबाक आवश्यकता नहि अछि, कारण पापक घैला भरि गेलाक बाद ई आब अभिशप्त छथि अपन शेष जीवन मिस्टर हाइड रहि अपन कुकृत्यक सजा भुगतबाक लेल।

जे.एन.यू.मे छात्र-छात्रा सभसँ पोस्टकार्ड पर साइन लऽ ओहिपर अपन रचना लेल प्रशंसा-पत्र पठबैत घुमैत अपस्याँत कथित गोल्ड मेडेलिस्ट(!!!) मिस्टर हाइडकेँ चिड़ैक खोता तोड़बाक सख शुरुहेसँ छन्हि। पहिल कथा गोष्ठीमे जखन ई सहरसामे सभसँ पुछने फिरै छथि जे साहित्यकार बनबासँ की-की सभ फाएदा छै तखन ई एकटा पाइ आ पुरस्कारक लेल अपस्याँत मैथिल युवा-पीढ़ीक प्रतिनिधित्व करै छथि, जे राजमोहन झा जीक शब्दमे मैथिलीसँ प्रेम नञि करैत अछि। ई मिस्टर हाइड सेहो ओहि सम्पादकसँ लिखितमे माफी मँगलन्हि आ जखन ओ माफ कऽ देलखिन्ह तखन फेर हुनका गारि पढ़ब शुरु कऽ देलन्हि। हमरासँ लिखित मेल-माफी अस्वीकार भेलाक बाद मिस्टर हाइडक माथ नोचब स्वाभाविके। मिस्टर हाइड ककरो इनकम टैक्स, कस्टम वा सरकारी नोकरीमे देखै छथि, सुनै छथि तँ पाइक मारल जेकाँ हिनका मोनमे ब्लैकमेलिंग कुलुबुलाए लगै छन्हि, प्रायः आनन्द फिल्मक एक गोट कलाकार जेकाँ- जे एहने मिस्टर

हाइड लेल कहै अछि- जे ई डॉक्टर रहितए तँ किडनी बेचितए, से ओ जतए छथि ओतहु ब्लैकमेलिंगक धन्धा शुरू कैये देने छथि। मुदा चिड़ैक खोता उजाड़ैत-उजाड़ैत मधुमाखीक छत्ता उजाड़बाक गल्ती एहेन ब्लैकमेलर कैये दैत अछि। जे सरकारी नोकरी वा इन्कम-टैक्स, कस्टममे ई ब्लैकमेलर रहितए तँ देश जरूर बेचि दैतए।

जे कियो सूचनाक स्वतंत्रताक नाम पर, अन्तर्जालपर स्वतंत्रताक नामपर वा साहित्यिक समालोचनाक नामपर गारि पढ़ैत अछि तँ सर्वदा मोन राखू जे ई सभ स्वतंत्रता अहूँकेँ प्राप्त अछि। एहि घटनाक विषएमे अहाँसँ पत्रकार, न्यूजपेपर, पत्रिका आ हिन्दीक गणमान्य लेखकगण/ प्रोफेसर/ विश्वविद्यालय आदिकेँ एहि घटनासँ सूचित करेबाक अनुरोध अछि। विशेष जानकारी लेबाक आ देबाक लेल ggajendra@gmail.com पर सूचित करू।

कोना पकड़ाएल ई चोर:-स्टेप बाइ स्टेप:-

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...
But this time he has not used his name as maithil, mithila aa subodhkant but as Pankaj Parashar pparasharjnu@gmail.com
Reply ०१/२५/२०१० at ०९:४८ PM

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...
The same blackmail letter has been sent by the blackmailer to my email address which has been spammed through ISP address २२०.२२७.१६३.१०५ , १६४.१००.८.३ aa २२०.२२७.१७४.२४३.
Reply ०१/२५/२०१० at ०९:४५ PM

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...
pahal=- ८६, aarambh -२३ aa arunkamalak naye ilake me ka sambandhit prishtha pathebak lel dhanyavad pathakgan.
Reply ०१/२५/२०१० at ०८:१६ PM

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...
http://www.gseis.ucla.edu/courses/ed२५३a/newDK/intell.htm ehi link par douglas kellner ke lekhak anuvad pahal-८६ ke page १२५-१३१ par achhi- soochnak lel dhanyad pathakgan.
Reply ०१/२४/२०१० at ०८:१६ PM

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...
ehi ghatnakram me kono pathak lag je Arun Kamal jik kavita "Naye Ilake

Me" hoinh aa Aarambh (ank २३, maithili magazine editor Sh. Rajmohan Jha (March २०००) me prakashist maithili kavita "Sanjh Hoit Gam Me" te kripya ggajendra@gmail.com par soochit karathi- Dhanyavad.
Reply ०१/२४/२०१० at ०८:०२ PM

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...
ehi ghatnakram me bahut ras aar jankari aa dher ras samarthan debak lel dhanyavad pathakgan.
Reply ०१/२३/२०१० at ११:४० PM

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...
out of these three addresses of the spammer i.e. pkjpp@yahoo.co.in, pparasharjnu@gmail.com and pkjppster@gmail.com the address pkjpp@yahoo.co.in, is fails verification test and addresses parasharjnu@gmail.com and pkjppster@gmail.com stands verified and confirmed.
Reply ०१/२१/२०१० at १०:०० PM

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...
the htpps host matches reliance communications and the corresponding email gamghar at gmail dot com and maithilaurmithila at gmail dot com is fake ids related with the actual spammers id i.e.pkjpp@yahoo.co.in, pparasharjnu@gmail.com and pkjppster@gmail.com
Reply ०१/२१/२०१० at ०८:५० PM

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...
The office premise has been located, the blackmailer works in Dainik Jagran, the organisation being taken into confidence.
Reply ०१/२१/२०१० at ०६:१३ PM
१४

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...
maithil, mithila aa subodhkant nam se abhadra aa blackmail karay bala blackmailer ke cheenhi lel gel achhi,ISP address २२०.२२७.१६३.१०५ , १६४.१००.८.३ aa २२०.२२७.१७४.२४३ aa ban kayal ja rahal achhi, agan ohi organisation se seho sampark kayal jaayat jatay se ee email aayal achhi.
Reply ०१/१८/२०१० at ११:१९ PM

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...
comment moderation lagoo kayal ja rahal achhi
Reply ०१/१८/२०१० at ०९:२७ PM
from ISP २२०.२२७.१७४.२४३ of Dainik Jagran he abused many times earlier too to others. अविनाशकेँ सेहो २२०.२२७.१७४.२४३ आइ.एस.पी.सँ एहि प्रकारक ई-पत्र अबैत रहै मुदा ओ मामिला खतम कs देने रहथिन। ओ टिप्पणी सभ एतेक घृणित छैक जे एतए नहि देल जा रहल अछि।

पाठकक संदेश: एहि घटनाक्रमपर

kellner@ucla.edu" <kellner@ucla.edu
Dear Gajendra
thanks for the detective work. was there a response?
best regards,

Douglas Kellner
Philosophy of Education Chair
Social Sciences and Comparative Education
University of California-Los Angeles
Box 951521, 3022B Moore Hall
Los Angeles, CA 90095-1521

Fax 310 206 6293
Phone 310 825 0977
http://www.gseis.ucla.edu/faculty/kellner/kellner.html

dear Gajendraji,
apnek mail milal. Pankajjik kritya janike bar dukh bhel. Ahi se maithilik nam kharab hoyat achhi. Apnek kadam ekdum uchit achhi.
Rajiv K Verma

dhanyvad. muda ehne lok sabjagah aadar pabait achi
shridharam

ओकरा सार्वजनिक नहि करबै।अहां कें सूचनार्थ पठेने छी जे पंकज पहिनेहो इ सब काज करैत रहय छलैए।
avinash

ठीक छै--_-सम्पादक।

Dear Gajendra g

You are doing very well in the field of collecting all the documents related to the Maithili. Videha. Com realy a adventureous collection. I will also find some time to learm the article published through the videha.

Now your detective style theft the sleeping of many of the so called literary personnel. Go a head jai Maithili jai Mithila

Sunil Mallick

President

MINAP, Janakpur

your efforts are commendable. Anysuch ghost writer or fake identity holder must be boycotted from literature at once Thanks.

shyamanand choudhary

Namaskar.

Chetna samitik sachiv ken mailak copy hastgat kara del achi.

Dr. Ramanand Jha' Raman'

गजेन्द्र जी ,

चेतना समिति हिनका सम्मानित कएलक अछि सेहो हमरा ज्ञात नहिं | यद्यपि हमहू चेतना क स्थाई सदस्य | जे हो. मुदा निंदास्पद घटना तं ई थिके तें दुखी कयलक | कतिपय नव मैथिल-प्रतिभाक आकलन-मूल्यानकनक हमर अपन स्नेग्रही स्वभाव, एहि दुर्घटनाक बाद तं आब चिंता मे ध' देलकय|

देखी,

हम अपने विस्मित भेलहुँ| बहुत दु:खद दृश्य | सृजन विरूद्ध साहित्यिक सन्दर्भ मे ई घटना आधुनिक मैथिलीक बहुत कुरूप प्रसंग क' क' स्मरण कैल जायत

सस्नेह,

गंगेश गुंजन.

PRIYA MAITHILJAN

APPAN BHASHA- SANSKAR-SANSKRITI KE ASMARAN KARU AA EHAN VIVADAASAPAD LEKANI B KARANI KE VIRAM DIYA. DHANYABAD. SAPREM,

PK CHOUDHARY

Gajendra babu

pankaj puran chor achhi. Ham sab okar likhit ninda das sal pahine aarambh me kene rahi. Okra ban k kay ahan nik kayal. Chetna samiti ke

seho samman wapas lebak chahi aa okar ninda karbak chahi.
subhash Chandra yadav

प्रिय ठाकुरजी!
(माननीय संपादक)
''विदेह ई-पत्रिका'' [मैथिली]
एखन धरिक उपलब्ध साक्ष्यक आधार पर हम अपनहिक संग जाएब पसिन्न करब।
शंभु कुमार सिंह
Sir I have sent the link of Parashar's duplicacy to several people along with Pranabh Bihari who had traslated that article. I had telephonic conversation with him also and he was quite upset over Parashar;s duplicay
Pranav is my junior and a good friend of mine. since you have referred Pranav who had traslated that article it is unfortunate that he was misused by Parashar. But i must congratulate you for exposing scam run by Parashar and his team. Parashar, though must not be blamed if he lifted the article of Nom Chomskey . Now i must doubt the artistic sensibility of Parashar who is now a pseudo-- intellectuals. I am amazed that how did he dare to publish the article of Nom Chomskey as his own. God bless him no more
In the past Pankaj Parasar was accused for lifting the senses and emotions from poems of doyens of Hindi and Maithili poets. What Pankaj did should be condemned. I regret for him.

These People are hellbent to bring down the literary discourse down to the gutter. Now you have been receiving mails like one. We are with you and i have forwarded your mails to Maithili speaking people all across the country .–

VIJAY DEO JHA
Dear Gajendraji,
I fully agree with you that we must fight against blatant cases of wrongful appropriation.
हां अपन मेल में लिखने छी जे विदेह आर्काइव से संबंधित लेखक'क सबटा रचना हटा लेल जायत। अहि से आर्काइव सं ई प्रसंग सेहो, एकर साक्ष्य सेहो मेटा जायत। हमर मत ई जा साक्ष्यब रहबाक चाही निक आ अधलाह दुनु तरहक काज'क। अहां अप्पसन कामेंट आ र्निणय सेहो आर्काइव मे जा के संबंधित रचना के पोस्टा-स्क्रिाप्टर के रुप मे भविष्या'क पाठक'क लेल सुरक्षित राखि सकैत छियन्हि।

ई दोहरेबाक बहुत औचित्यक नहि जे विदेह निक लागि रहल अछि आ अहांक परिश्रम एकदम देखा रहल अछि।
ईति,
सदन।

Thanx Gajendraji, for your immediate response. I must congratulate you for the work you have done to save the sanctity of the literature world as a whole.
I feel proud for the person like you who shows the courrage to bell the cat. If the so called writers like Parasharji are there to spoil the sea, on the other side it is very hopeful sight to have a person like you who is alert enough to take care of such filth & keep the sea clean.

Thanx for enlightening me on the subject.

Regards,
Bhalchandra Jha.

पंकज पराशरकेर एहन कार्य पर स्मरण अबैत अछि करीब बीस-पचीस साल पहिलुक घटना, जहिया आकाशवाणी दरभंगासँ म,म,डॉ, सर गंगानाथ झाक एकमात्र मैथिलीक कारुणिक पदकेँ एक गोट कवि द्वारा अपन कहि प्रसारित कए देल गेल छल, जे बादमे (सजग श्रोता द्वारा सूचना देलाक बाद) आजन्म बैन कए देल गेलाह । कहबाक तात्पर्य जे जँ हम मैथिल दरभैगा- मधुबनीमे गंगानाथ बाबूक पदकेँ अपन कहि सकैत छी तँ ई कोन बड़का गप । निश्चये एहन रचनाकारकेर सङ्ग कड़गर डेग उठाएब आवश्यक ।
ajit mishra

Dear Gajendrajee,
We should take strong step to prevent such intellectual cheats.
My support is always with you.
K N Jha
This seems to be a dangerous trend and we should also try and refrain from publishing anything from such authors. Regards,
Prof. Udaya Narayana Singh
प्रियवर ठाकुर जी,
मैथिल साहित्यकार आब साइबर क्राइम सेहो क रहल छथि, ई जानि अपार प्रसन्नता भेल |
पंकज पराशर के नकारात्मक बुद्धिक पूर्ण उपयोग करबाक लेल हम नोबेल प्राइज सा सम्मानित कराय चाहैत छी |
बुद्धिनाथ मिश्र

Sampadak Mahoday
Apne ehi prakarak durachar rokwak lel je prayash ka rahal chhee
ohi lel dhanyabad.Ehen blackmailer sa maithili ken bachayab aawashyak achhi
Sadar
SHIV KUMAR JHA

गजेन्द्र भाई,
नमस्कार ! मैथिली मे एहि तरहक काज लगातार भ' रहल अछि । किछु व्यक्ति एहि धंधा मे अग्रसर छथि । मैथिलीक सम्पादक लोकनिक अनभिज्ञताक फायदा कतेको अंग्रेजी पढ़निहार तथाकथित साहित्यकार लोकनि उठा रहल छथि। पंकज जीक पहल मे छपल लेख के हम सेहो पढ्ने हीं आ किछुए दिनक बाद हम नेट पर मूल लेखकक आलेख के सेहो पढ़लहु । हमरा त' आश्चर्य लागल छल जे पंकज जी आलेखक कम स कम शीर्षक त' बदलि लैतथि मुदा हुनका एतेक ज्ञान रहितनि तखन की छल।

एतबे नहि , हिनक बहुत रास कवितो अंग्रेजी साहित्य स' हेर-फेर कयल गेल अछि । खैर ! जे करथि ... । मुदा एहि बेर कहाबत ठीक होबाक चाही " सौ सोनार के त' एक लोहार के "। प्रकाशन मे जे भी कियो व्यक्ति गलती क' रहल छथि हुनका गंभीर क्रिमिनल बुझबाक चाही। धन्यवाद एहि लेल अहाँ के जे एतेक जोरदार तरीका स' एहि गप्प के उठैलहु।
अहाँक
प्रकाश चन्द्र ।
pankaj parashar vala prasang bar dukhad laagal
kamini

Gajendr jee,
maamailaa ke tool jatabe debainhi, sabhak oorjaa otabe svaahaa hetai.
हमर मनतब एतबे, जे एक बेर अहां देखार क देलहुं, आब छोडि देल जाओ. हिन्दीयो मे एहिना भ रहल छै. बेर बेर आ खराब भाषा मे लिखल मोन के दुखी करैत अछि. फेर लागैत अछि जे अहि मे समय कियैक नष्ट करी?
हिन्दुस्तान मे जाति आ सेहो मैथिली से जाति नयि जाएत. हम एकरा नयि मानैत छलहुं मुदा आब 30 बरख से मैथिली मे लिखनाक बाद आब देखल जे एक ओर
1 मैथिली साहित्य मे लिली जी, उषा जी आ शेफलिका जी के बाद यदि किओ नाम लैत अछि त हमर.
2 एखनो कोनो पत्रिका बै छै त हमरा लेल रचनाक आग्रह होइते छै.
3 एखनो हम ओतबे सक्रिय छी आ निरंतर लिखि रहल छी.
4 दुखद जे हमरा बाद (सुस्मिता पाठक आ ज्योत्स्ना मिलन के हम अपने तुरिया बुझैत छी) के बाद एहेन कोनो सशक्त कोन, महिला लेखने नयि आएलए.

5 ई स्थिति रहलाक बादो, आब जहन हम देखै छी, त पाबै छी जे हमरा पर, हमर रचना यात्रा अथव हमर रचना पर किछु नयि लिखल गेलए, चाहे ओ मोहन भारद्वाज रहथु अथवा आन किओ. जहन हमर दशक केर चर्च होइत छै, तीन चारिटा नाम पर सविस्तार चर्चा होइत छै, जाहि मे हमर नाम नयि रहैत छै. हमर नाम मात्र सन्दर्भ लेल जोडि देल जाइत छै.

6 एतेक दिन मे मात्र रमण जी हमरा पर एक गोट लेख लिखलन्हि. हम ओकरा पुन: टाइप करबा के अहां लग पठायब.

7 जाति पाति धर्म आ द्वेष पर कहियो ध्यान नयि देलाक कारणे त कही हमर ई स्थिति नयि छै, आब हमरा ई सोचबा मे आबि रहल अछि.

8 हमर शिक्षक, जे स्वयं हिन्दी के ख्यातिलब्ध कथाकार छथि, हमरा बुझेने रहलाह जे हम मैथिली मे लिखब बन्न क; दी, कियैक त हम गैर मैथिल (जाति विशेष) से नयि छी, तैं हमर लेखन के कहियो मैथिल सभ नयि नोटिस करताह, कहियो किछु नयि करता.. अपन भाषाक प्रति प्रेम के आगरह कारणे हम हुनकर बात नयि माननलियै, लिखैत गेलहुं, मुदा आब लागि रहलअए जे हुनकर कहबी सही छलन्हि की?

9 एखनो की हाल छै मैथिली मे, देखियो. ओकरा विरुद्ध किछु करियु. मैथिली मे जे पैघ पैघ संस्था चाइ, चेतना समिति सनक, सभ बेर विद्यापति पर्व मनबैत छथि. लाखो खर्च करै छथि, मुदा नीक लेखक केर पोथी सभ बेर 5-7 टा निकालैथु, से नयि होबैत छन्हि.

10 हमरा भेटल जानकारी के मोताबिक विद्यापति हॉल किराया पर चढै छै. तकरा मे कोनो आपत्ति नयि, यदो ओकरा से किछु आय होबै. मुदा ओकरा मैथिलीक काज अथवा नाटक आदि लेल मांगल जाएत, त; नयि भेटै छै. यदि ओकर शुल्क चुका दी, तहन त किरायाके रूप मे किऊ ल' सकि छै. एकरा सभ के उजागर करी.

11 व्यक्ति से संस्था पैघ होइत छै. जतेक संस्था सभ छै, तकरा पर लिखी, साहित्य अकादमीक मैथिली विभाग सहित.

12 लिली रेक सभटा रचनाक अनुवाद अधिकार हमरा देने छथि. हुनक साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त पोथी 'मरीचिका' केर हिन्दी अनुवाद लेल पिछला 2-3 साल से हम लिखि रहल छी. साहित्य अकादमीक पत्रिका 'समकालीन भारतीय साहित्य" मे हम पिछला 25 साल से अनुवाद सहित छपि रहल छी. मुदा हमरा से अनुवादक नमूना मांगल गेल. ओहि कुर्सी पर जे स्वनाम धन्य बैसल छथि, हुनका हमरा मादे नयि बूझल त कोनो मैथिल साहित्यकार से पूछि सकैत छलाह. ई तहिने भेलै, जेना एक बेर एक गोट चैनल ऋषिकेश मुखर्जी से हुनकर बायोडाटा मंगने छल आ एखनि पढल समाचारक अनुसारे आ. जानकी वल्लभ श्हस्त्री से हुनकर बायोडाटा पद्मश्री लेल मांअगल गेलैय.

13 अपन विनम्रता दर्शाबैत हम लिली जीक दू तीन टा कथाक हिन्दी अनुवाद हम पठा देलियन्हि. तैयो अई पर कोनो विचार नयि. लिखला के बाद हमरा कहल गेल जे हम लिली जी से साहित्य अकादमी के अनुवादक अधिकार दियाबे मे मददि करी. आरे भाई, अहां के अनुवाद से मतलब अछि ने, आ जहन हम अनुवाद क; के देब' लेल तैयार छी तहन अकादमी के किअयैक अधिकार चाही? अई लेल जे अकादमी अपन पसीनक आदमी के अनुवाद लेल द; सकय. एखनि धरि ओकरा पर निपटारा नयि भेलैये. अकादमी से फेर कोनो पत्र नयि आएल अछे. अनुवाद तैयार राखल छै. लिली जी आब बहुत बुजुर्ग भ; गेल छथि. हुनक मात्र इयैह इच्छा छै (आ बहुत स्वाभाविक) जे हुनकर पोथी सभ हुनका सोझा मे प्रकाशित भ; जाए.

14 लिली जी के पोथी हिन्दी मे आनबाक श्रेय हमरे अछि, ई मनितहुं ओकरा रेकॉर्ड केनाए मैथिल

समीक्षक आवश्यक नयि बुझैत छथि. एकरा पर लडू.
15 मैथिली के भारतीय ज्ञानपीठ से पुस्तक प्रकाशन लेल हमही आगां एलहुं आ प्रभास जी आ लिली जी के पोथी बहार भेलै.भारतीय ज्ञानपीठ से मैथिली पुस्तक प्रकाशन के श्रेय हमरे छन्हि, ईहो मनैत ओकरा रेकॉर्ड केनाए मैथिल समीक्षक आवश्यक नयि बुझैत छथि. एकरा पर लडू.
गजेन्द्र जी, मैथिलीक ई सभ मानसिकता पर आन्दोलन करी जाहि से रचनाकार आ वरिष्ठ रचनाकार सभ के अपमानित नयि होब' पडै. अहां चाही त' एकरा विदेह पर द' सकै छी.
हम दोसर बात सेहो लिखि के पठायब. मुदा हम फेर कहब, जे हम व्यक्ति के नयि संस्था आ व्यक्ति के मानसिकता के दोष देबन्हि. लोक पढथु आ पूचाथु ई स्वनामधन्य सभ से जे जकरा से अहां के गोलौंसी अछे, तकरा पर अहां लिखब आ जकरा से नयि अछे, जे मौन भावे लिखि रहलए कोनो विविआद मे पडल बगैर, हुनका लेल ई व्यवहार?
-विभा रानी.
Shri gajendraji
good work.
Anha sa ehina neer khshir vivekakak ummeed lagatar banal rahat.
chor ke ehina dekhar kelak baad dandit seho karbak prayas karbaak chahi. anha bahut raas neek pahal ka rahal chhi.
Saadhuvaad.
manoj pathak.

संगहि "विदेह" केँ एखन धरि (१ जनवरी २००८ सँ १४ जनबरी २०१०) ९३ देशक १,०४२ ठामसँ ३६,७१७ गोटे द्वारा विभिन्न आइ.एस.पी.सँ २,११,८९१ बेर देखल गेल अछि (गूगल एनेलेटिक्स डाटा)- धन्यवाद पाठकगण।- गजेन्द्र ठाकुर

संदेश-

[विदेह ई-पत्रिका, विदेह:सदेह मिथिलाक्षर आ देवनागरी आ गजेन्द्र ठाकुरक सात खण्डक- निबन्ध-प्रबन्ध-समीक्षा, उपन्यास (सहस्रबाढ़नि) , पद्य-संग्रह (सहस्राब्दीक चौपड़पर), कथा-गल्प (गल्प गुच्छ), नाटक (संकर्षण), महाकाव्य (त्वञ्चाहञ्च आ असञ्जाति मन) आ बाल-मंडली-किशोर जगत- संग्रह कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक मादेँ।]

१. श्री गोविन्द झा- विदेहकेँ तरंगजालपर उतारि विश्वभरिमे मातृभाषा मैथिलीक लहरि जगाओल, खेद जे अपनेक एहि महाभियानमे हम एखन धरि संग नहि दए सकलहुँ। सुनैत छी अपनेकेँ सुझाओ आ रचनात्मक आलोचना प्रिय लगैत अछि तेँ किछु लिखक मोन भेल। हमर सहायता आ सहयोग अपनेकेँ सदा उपलब्ध रहत।

२. श्री रमानन्द रेणु- मैथिलीमे ई-पत्रिका पाक्षिक रूपेँ चला कऽ जे अपन मातृभाषाक प्रचार कऽ रहल छी, से धन्यवाद। आगाँ अपनेक समस्त मैथिलीक कार्यक हेतु हम हृदयसँ शुभकामना दऽ रहल छी।



रमेश

बहस- पंकज पराशरक साहित्यिक चोरि मैथिली साहित्यक कारी अध्याय थिक

विदेह-सदेह २ (२००९-१०) सँ पंकज पराशरक साहित्यिक चोरि आ साइबर अपराधक पापक घैलक महा-विस्फोट भेल अछि। ई पैघ श्रेय पत्रिकाक सम्पादक श्री गजेन्द्र ठाकुरकेँ जाइत छनि। हुनकर अपराध पकड़बाक चेतना केर जतेक प्रशंसा कयल जाय, कम होयत। “विदेह”क मैथिली प्रबन्ध-समालोचना- अंक, अइ पोल-खोल लेल कएक युग धरि विलम्बित भऽ कऽ निबद्ध रहत, से “समय केँ अकानैत” कहब कठिन अछि।
साहित्योमे चौर्यकलाक उदाहरण पहिनहुँ अबैत रहल अछि गोटपगरा। मुदा एक बेरक चोरि पकड़ा गेलाक बाद प्रायः चोरिक आरोपी साहित्यकार मौन-व्रृत धारण करैत रहलाह अछि आ मामिला ठंढ़ाइत रहल अछि।
मुदा ताहि परम्पराक विपरीत अइ बेरक चोर ’सिन्हा चोर’ निकलल अछि आ विगत एक दशकसँ निरन्तर चोरि करैत जा रहल अछि- सेन्ह काटिकऽ। आ तेहेन महाचोरकेँ मैथिलीक साहित्यकार आ संस्था सभ तरहत्थीपर उठा-उठा कऽ पुरस्कृत केलक अछि आ समीक्षाक

चासनीमे चोरायल कविता सबकेँ बोरि देल गेल अछि।

विदेह-सदेह-२ प्रमाण-पुरस्सर अभियोगे टा नहि लगौलक, अपितु एहेन महत्वाकांक्षी असामाजिक तत्वक विरुद्ध साहित्यिक दण्ड आरोपित कऽ अपन ‘‘बोल्डनेस’’ सेहो प्रदर्शित केलक अछि। एक दशकमे तीन बेर पकड़ायल चोर प्रायः ‘‘डेयर डेभिल’’ होइत अछि आ अपन अनुचित। सीमाहीन महत्वाकांक्षाक पूर्ति लेल अपन वरीय संवर्गीय व्यक्तिकेँ सीढ़ीक रूपमे उपयोग करैत अछि आ स्वार्थ-सिद्धिक उपरान्त अपन पयर सँ ओही सीढ़ीकेँ निचाँ खसा दैत अछि। फेर ओकरा अपन ट्विटर-फेसबुक-नेट वा पत्रिकामे गारिक निकृष्टतम स्तरपर उतरऽ मे कनियों देरी नहि होइत छै। ओ नाम बदलि-बदलि कऽ गारि पढ़ैत अछि आ अपन प्रशंसामे जे.एन.यू.क छात्र-छात्राक पोस्टकार्ड लिखेबामे अपस्याँत भऽ जाइत अछि। ओ हिन्दीक कोनो बड़का साहित्यकारक बेटीक संग अपन नाम जोड़ि विवाहक वा प्रेम-प्रसंगक खिस्सा रस लऽ लऽ कऽ प्रचारित करैत अछि। एहेन प्रवृत्ति कएटा आओर तिकड़मबाजमे देखल गेल अछि जे हिन्दीक पैघ-पैघ नामक माला जपि कऽ मठोमाठ होअय चाहैत अछि। वस्तुतः ई चिन्ताजनक तथ्य थिक जे मैथिलीक नव-तूरकेँ हिन्दीक पैघ-पैघ नामक वैशाखीक एतेक जरुरति किऐक होइत छनि?

‘‘विदेहक’’ ‘‘इनक्वायरीक विवरण’’ पढ़ि कऽ रोइयाँ ठाढ़ भऽ जाइत अछि। पहल-८६ आ आरम्भ-२३ मे जे पोल खूजल छल, अइ तथाकथित साहित्यकारक, तकरा बादे मैथिली साहित्यसँ बारि देल जेवाक चाहैत छल। मुदा विडम्बना देखू जे चेतना समिति सम्मानित कऽ देलक। ‘‘मैथिल ब्राह्मण समाज’’, रहिका (मधुबनी) सन अँखिगर संस्थाकेँ चकचोन्ही लागि गेल, जखनकि संस्थामे विख्यात साहित्यकार उदयचन्द्र झा ‘‘विनोद’’ आ पढ़ाकू प्रोफेसरगण छथि। ई संशयविहीन

अछि जे पुरस्कृत करेबामे विनोदजीक महत्वपूर्ण भूमिका रहल हैत। “विदेह” द्वारा रहस्योद्घाटन केलाक बावजूद एखन धरि चेतना समिति अथवा मैथिल ब्राह्मण समाज, रहिकाकेँ अपन पुरस्कार आपस करेवाक वा आने कोनोटा कार्रवाई करवाक बेगरता नहि बुझा रहल छै आ सर्द गुम्मी लधने अछि। एहेन “जड़-संस्था” सभ मैथिली साहित्यक उपकार करैत अछि वा अपकार? ई केना मानल जाय जे पहल-८६ वा आरम्भ-२३ अइ दुनू संस्थाक कोनो अधिकारी वा साहित्यकारकेँ पढ़ल नहि छलनि?

ई आश्चर्यजनक सत्य थिक जे मैथिलीक कएटा पैघ साहित्यकार पंकज पराशरक कृत्रिम काव्य आ आयातित शब्दावलीमे फँसि गेलाह अछि। “विलम्बित कएक युग मे निबद्ध” क भूमिकामे अनेरो विदेशी साहित्यकारगणक तीस-चालिस टा नाम ओहिना नहि गनाओल गेल अछि, अपन कविता केँ विश्वस्तरीय प्रमाणित करबाक लेल अँखिगर चोरे एना कऽ सकैत अछि। सम्भावना बनैत अछि जे डगलस केलनर जकाँ ओहू सभ कविक रचनाक भावभूमिक वा शब्दावलीक चोरिक प्रमाण एही काव्य-पोथीमे भेटि जाय। अंततः मि. हाइडक कोन ठेकान? मैथिलीमे तँ लोक विश्व-साहित्य कम पढ़ैत अछि। तकर नाजायज फायदा कोनो ब्लैकमेलर किऐक नहि उठाओत? आखिर टेक्नो-पोलिटिक्स की थिक- टेकनिकल पोलिटिक्स थिक, सैह किने? एकरा बदौलत झाँसा दऽ कऽ पाकिस्तानोक यात्रा कयल जा सकैत अछि। “टेक्नो-पोलिटिक्सक” बदौलत किरण-यात्री पुरस्कार, वैदेही-माहेश्वरी सिंह “महेश” पुरस्कार, एतेक धरि जे विदितजीक अकादमीयोक पुरस्कार लेल जा सकैत अछि। प्रदीप बिहारीक सुपुत्रक भातिज-कका सम्बन्धक मर्यादाक अतिक्रमण कयल जा सकैत अछि। प्रो. अरुण कमलक “नये इलाके में” सेंधमारी कऽ कऽ “समय केँ

अकानल'' जा सकैत अछि। आर तँ आर, अइ टेकनिकल पॉलिटिक्सक बदौलत जीवकान्तजी सन महारथी साहित्यकारसँ ''विलम्बित कएक युग...'' पोथीक समीक्षा लिखबा कऽ ''मिथिला दर्शन'' (५) सन पत्रिकामे छपवा कऽ स्थापित आ अमर भेल जा सकैत चछि। मैथिली साहित्यक सभसँ पैघ सफल औजार थिक ''टेक्नो पोलिटिक्स''!

ई मानल जा सकैत अछि जे मिथिला दर्शनक सम्पादककेँ आरम्भ-२३ आ पहल-८६ कोलकातामे नहि भेटल होइन्हि। मुदा जीवकान्तजी नहि पढ़ने हेताह से मानबामे असौकर्य भऽ रहल अछि। जीवकान्त जी तँ प्रयाग शुक्लक ''चन्द्रभागा में सूर्योदय'' आ एही शीर्षकक नारायणजीक कविता (चन्द्रभागामे सूर्योदय) सेहो पढ़ने हेताह जे छपल अछि मैथिलीमे। तखन पंकज पराशरक समुद्रसँ असंख्य प्रश्न पूछऽवला कविताक भावार्थ किऐक नहि लगलनि जे समीक्षामे कलम तोड़ि प्रशंसा करऽ पड़लनि वा करा गेलनि? एकरा ''प्रायोजित समीक्षा'' किऐक नहि मानल जाय? की प्रयाग शुक्ल वा नारायणजीक समुद्र विषयक कवितासँ वेशी मौलिकता पंकज पराशरक कवितामे भेटलनि जीवकान्तजीकेँ? ओइ सभ कविताक कनियोँ ''छाया''क शंको नहि भेलनि समीक्षककेँ? ''सभ्यताक सभटा मर्मान्तक पुकार''क नोटिस लेबऽवला समीक्षककेँ साहित्यिक चोरि असभ्य आ मर्मान्तक पीड़ादायक नहि लगलनि? आब जीवकान्तजी सन समीक्षकक ''पोजीशन फॉल्स'' भऽ जेतनि से अन्दाज तँ मिथिला दर्शनक सम्पादककेँ नहियें रहनि, उदय चन्द्र झा ''विनोद'' केँ सेहो नहि रहनि। ई अभिज्ञान तँ पंकजे पराशर टाकेँ रहल हेतनि? बेचारे ''पराशर'' मुनिक आत्मा स्वर्गमे कनैत हेतनि आ पंकसँ जनमल जतेक कमल अछि सब अविश्वसनीय यथार्थक सामना करैत हेताह। पराशर गोत्री भऽ कऽ तीन बेर चोरि

केनाइ “पराशर” महाकाव्यक रचयिता स्व. किरणजीकेँ सेहो कनबैत हेतनि। आखिर जीवकान्तजी साहित्यिक चोरिक नोटिस किए ने लेलनि, जखनकि हुनका विचारेँ “मैथिलीक समीक्षक प्रायः मूर्खता पीबिकऽ विषवमन करैत अछि”(विदेह-सदेह-२-२००९-१०)/ विनीत उत्पल-साक्षात्कार आ जीवकान्तजी स्वयं पंकज पराशरक चोरिवला कविता-पोथीक समीक्षक छथि, अपितु चौर्यकला प्रवीण कविक घोर प्रशंसक छथि। तखन अइ समीक्षा-आलेखमे अन्तर्निहित असीम-प्रशंसा साकांक्ष-पाठककेँ “विष-वमन” कोना ने लगौक? हुनका सन “पढ़ाकू” समीक्षक-पाठककेँ “फॉल्स पोजीशन”मे अननिहार “एक्सपर्ट आ हैबिचुएटेड” साहित्य-चोरसँ प्रशंसा आ पुरस्कार दुनू पाबि जाय तँ मैथिली-काव्यक ई उत्कर्ष थिक वा दुर्भाग्य? अंततः विदेह-सदेह टा किऐक निन्दा केलक एहि घटनाक? आन कोनो पत्रिका किऐक नहि केलक? डॉ. रमानन्द झा “रमण” इन्टरनेटपर निन्दा करैत छथि तँ घर-बाहर पत्रिकामे किऐक नहि जकर ओ सम्पादक छथि? चेतना समिति, पटना सम्मानित करैत अछि एहने-एहने साहित्यकारकेँ तखन अपने पत्रिकामे कोना निन्दा करत, जखनकि पुरस्कार आपसो नहि लैत अछि, जानकारी भेलाक वा साकांक्ष साहित्यकारक अनुरोध प्राप्त भेलाक बादो? नचिकेताजी नेटपर निन्दा करताह आ “विदेह”मे छपत तँ “मिथिला दर्शन”मे किऐक नहि निन्दा वा सूचना छपल? कारण स्पष्ट अछि- जीवकान्तक समीक्षा पंकज पराशरक काव्य-पोथीपर छपत, तखन ओही पोथीक चोरि कयल कविताक निन्दा कोना छपत? चारु भाग साहित्यिक आदर्श, मर्यादा आ नैतिकताक धज्जी उड़ि रहल अछि- पितामह आ आचार्यगणक समक्ष आ (अनजाने मे सही) हुनको लोकनिक द्वारा। मैथिल ब्राह्मण समाज, रहिका; चेतना समिति, पटना आ साहित्य अकादेमी, नई दिल्लीमे अन्ततः कोन अन्तर अछि वा

रहल? एहेन नामी पुरस्कारक संचालन आ चयनकर्ता महारथी सभकेँ नव लोककेँ पढ़बाक बेगरता किऐक नहि बुझाइत छनि? बिना पढ़ने पुरस्कारक निर्णय वा समीक्षाक निर्णय कतेक उचित, जखन कि ई चोरि तेसर बेरक चोरि थिक आ से छपि-कऽ भण्डाफोड़ भेल अछि। एकरा वरेण्य आ वरीय साहित्यकारगण द्वारा काव्य-चोरि, आलेख-चोरिकेँ प्रश्रय देल जायब किऐक नहि मानल जाय, जखनकि आरम्भ, मैथिल-जन, पहल आ विदेह-सदेह पहिनहि छापि चुकल छल? की साहित्यिक चोरिकेँ प्रश्रय देब, दलाल वर्गकेँ प्रश्रय देब नहि थिक? एहेन सम्भावनायुक्त नव कविकेँ प्रश्रय देब मैथिली साहित्य लेल घातक अछि वा कल्याणकारी, जकरा मौलिकतापर तीन बेर प्रश्न चेन्ह लागल होइक? की पोथीक आकर्षक गत्ता देखि वा विदेशी कविगणक नामावली (भूमिकामे) पढ़ि कऽ समीक्षा लिखल जाइत अछि वा पुरस्कारक निर्णय लेल जाइत अछि? जँ से भेल हो तँ सब किछु ''ठिक्के छै भाइ''? अइ सबसँ तँ जीवकान्तजीक बात सत्य बुझाइत अछि जे समीक्षकगण दारू पीबि कऽ वा पैसा पीबि कऽ वा मूर्खता पीबि कऽ समीक्षा लिखैत छथि। डगलस केलनरक ''टेक्नोपोलिटिक्स'' तँ छपि गेल ''पहल''मे चोरा कऽ। आब जीवकान्तजी, ज्ञान रंजनजी अथवा हिन्दी जगतक आन साहित्यकार-सम्पादकसँ पूछथु जे नोम चोम्स्कीवला रचना कतय गेल, की भेल, कोन नामें छपल? पंकज पराशरक नामें कि पदीप बिहारीजीक सुपुत्रक नामेँ (अनुवाद रूपमे)। ई रिसर्च एखन नहि भेल तँ भविष्यमे पुनः एकटा साहित्यिक चोरिक पोल खूजत? अंततः एकटा माँछकेँ कएटा पोखरिकेँ प्रदूषित करए देल जाय आ से कए बेर? उदय-कान्त बनि कऽ गारि पढ़वाक आदति तँ पुरान छनि डॉ. महाचोर केँ। ककरो ''सरीसृप'' कहि सकैत छथि (मैथिल-जन) आ कोनो परिवारमे घोंसिया कऽ विष वमन कऽ सकैत छथि। ऑक्टोपसक

सभ गुणसँ परिपूर्ण डॉ. पॉल बाबाकेँ चोरिक भविष्यवाणी करवाक बड़का गुण छनि तेँ हिनका नामी फुटबॉल टीम द्वारा पोसल जाइत अछि, जाहिसँ ''विश्व-कप''केँ दौरान अइ ''अमोघ अस्त्रक'' उपयोग अपना हिसाबेँ कयल जा सकय।

सहरसा-कथागोष्ठीमे पठित हिनकर पहिल कथाक शीर्षक छल- हम पागल नहि छी। ई उद्घोषणा करवाक की बेगरता रहैक- से आइ लोककेँ बुझा रहल छैक। अविनाश आ पंकज पराशरक मामाजी तहिया हिनकर कथाकेँ ''टिप्पणीक''क्रममे मैथिली-कथाक ''टर्निंग प्वाइन्ट'' मानने छलाह। आइ ओ ''टर्निंग प्वाइन्ट'' ठीके एक हिसाबेँ ''टर्निंग प्वाइन्ट'' प्रमाणित भेल, कारण कथाक ओहि शीर्षकमे सँ ''नहि'' हटि गेल अछि, हिनकर तेबारा चोरिसँ। हिनकर पहिल चोरि (अरुण कमलक कविता- नए इलाके में) क निन्दा प्रस्तावमे ''मामाजी'' आ डॉ. महेन्द्रकेँ छोड़ि, सहरसाक शेष सभ साहित्यकार हस्ताक्षर कऽ ''आरम्भ''केँ पठौने छलाह। आइ ओ हस्ताक्षर नहि केनिहार सभ कन्छी काटि कऽ वाम-दहिन ताक-झाँक करवाक लेल बाध्य छथि। द्वैध-चरित्र आ दोहरा मानदण्डक परिणाम सैह होइत अछि। अविनाश तखन तँ देखार भऽ जाइत छथि जखन ओ विदेह-सदेह-२ मे लिखैत छथि जे ''एकरा सार्वजनिक नहि करबै''। नुका कऽ सूचना देवाक कोन बेगरता? पंकज पराशरसँ सम्बन्ध खराब हेवाक डर वा कोनो ''टेक्नोपोलिटिक्स''(?) केर चिन्ता?

विदेह-सदेह-२ क पाठकक संदेश तँ कएटा साहित्यकारकेँ देखार कऽ दैत अछि। जतय राजीव कुमार वर्मा, श्रीधरम, सुनील मल्लिक, श्यामानन्द चौधरी, गंगेश गुंजन, पी.के.चौधरी, सुभाष चन्द्र यादव, शम्भु कुमार सिंह, विजयदेव झा, भालचन्द झा, अजित मिश्र, के.एन.झा, प्रो.नचिकेता, बुद्धिनाथ मिश्र, शिव कुमार झा, प्रकाश चन्द्र

झा, कामिनी, मनोज पाठक आदि अपन मुखर भाषामे प्रखरतापूर्वक निन्दनीय घटनाक निन्दा केलनि अछि, ततहि अविनाश, डॉ. रमानन्द झा "रमण", विभारानीक झाँपल-तोपल शब्द आश्चर्य-भावक उद्रेक करैत अछि। मुदा संतोषक बात ई अछि जे पाठकक "प्रबल भाव-भंगिमा" साहित्यकारोक "मेंहायल आवाज"क कोनो चिन्ता नहि करैत अछि। विभारानी तँ कमाले कऽ देलनि। एहि ठाम मैथिली भाषा-साहित्यक एक सय समस्या गनेवाक उचित स्थान नहि छल। ई ओनाठ काल खोनाठ आ महादेवक विवाह कालक लगनी भऽ गेल। कोनो चोर बेर-बेर अपन कु-कृत्यक परिचय दऽ रहल अछि आ हुनका समय नष्ट करब बुझा रहल छनि आ चोरकेँ देखार केलासँ दुःख भऽ रहल छनि? ओ अपन प्रतिक्रियामे कतेक आत्म श्लाघा आ हीन-भावना व्यक्त केलनि अछि से अपने पत्र अपने ठंढ़ा भऽ कऽ पढ़ि कऽ बूझि सकैत छथि। हिन्दीयोमे एहिना भऽ रहल अछि, तँ मैथिलीमे माफ कऽ देल जाय? आब हिन्दीसँ पूछि-पूछि कऽ मैथिलीमे कोनो काज होयत? विभारानी ज्योत्सना चन्द्रमकेँ ज्योत्सना मिलन केना कहैत छथि? हुनकर उपेक्षा कोना मानल जाय? ओ सभ साहित्यिक कार्यक्रममे नोतल जाइत छथि, सम्मान आ पुरस्कार पबैत छथि, पाठक द्वारा पठित आ चर्चित होइत छथि। समीक्षाक शिकाइत की उच्चवर्णीय (?) साहित्यकारकेँ मैथिलीमे नहि छनि? समीक्षाक दुःस्थिति सभ जातिक मैथिली साहित्यकार लेल एके रंग विषम अछि। ओइ मे जातिगत विभेद एना भेलए जे ब्राह्मण-समीक्षक, आरक्षणक दृष्टिकोणेँ निम्न जाति (?)क साहित्यकारक किछु बेशीए समीक्षा (सेहो सकारात्मक रूपेँ) केलनि अछि। समीक्षा आ आलोचनाक विषम स्थितिक कारणें जँ नैराश्यक शिकार भऽ जाय लेखक, तँ लेखकीय प्रतिबद्धताक की अर्थ रहि जायत? विभाजीकेँ बुझले नहि छनि जे हुनका लोकनिक

बाद मैथिली महिला लेखनमे कामिनी, नूतन चन्द्र झा, वन्दना झा, माला झा आदि अपन तेवरक संग पदार्पण कऽ चुकल छथि। हुनका ने कामिनीक कविता संग्रह पढ़ल छनि आ ने ‘‘इजोड़ियाक अङैठी मोड़’’। हुनका अपन गुरुदेवक बात मानि हिन्दीमे जाइसँ के कहिया रोकलकनि? ओ गेलो छथि हिन्दीमे। मातृभाषाक प्रेरणा अद्वितीय होइत छै। मैथिलीक जड़ संस्था अथवा समीक्षक सभपर प्रहार करबामे हमरा कोनो आपत्ति नहि, मुदा अर्थालाभ तँ एतय नगण्य अछिए। सामाजिक सम्मान विभाजीकेँ अवश्य भेटलनि अछि। समाजमे ‘‘जड़’’लोक छै तँ ‘‘चेतन’’ लोक सेहो छैक। हुनकासँ मैथिली भाषा-साहित्य आ मिथिला-समाजकेँ पैघ आशा छै, हीनभाव वा आत्मश्लाघासँ ऊपर उठि काज करवाक बेगरता छैक। सक्षम छथि ओ। हुनका श्रेय लेवाक होड़सँ बँचवाक चाही। अन्यथा साहित्य अकादेमी प्रतिनिधि, दिवालियापन केर शिकार जूरीगण आ मैथिलीक सक्षम साहित्यकारमे की की अन्तर रहि जायत? विभारानीक विचलनक दिशा हमरा चिन्तित आ व्यथित करैत अछि। ओ दमगर लेखिका छथि, सशक्त रचना केलनि अछि, आइ ने काल्हि समीक्षकगण कलम उठेबापर बाध्य हेबे करताह। समीक्षकक कर्तव्यहीनतासँ कतौ लेखक निराश हो?

पंकज पराशरक श्रृंखलाबद्ध साहित्यिक चोरिपर सार्थक प्रतिक्रिया देब कोनो साहित्यकार लेल अनुचित नहि अछि कतहुसँ। साहित्यकार लेल साहित्यिक मूल्यक प्रति ओकर प्रतिबद्धता मुख्य कारक होइत अछि आ हेवाको चाही आ तकरा देखार करवाक ‘‘बोल्डनेसो’’ हेवाक चाही। ‘‘चाही’’वला पक्ष साहित्यमे बेशीए होइत अछि। एहेन-एहेन गम्भीर विषयपर साहित्य आ समाजक ‘‘चुप्पी’’ एहेन घटनाकेँ प्रोत्साहित करैत अछि आ जबदाह जड़ताकेँ बढ़बैत अछि, भाषा-साहित्यकेँ बदनाम

तँ करिते अछि। जाधरि पंकज पराशरक चोरि-काव्यक समीक्षा लिखल जाइत रहत, विभारानीक मूल-रचनाक समीक्षा के लिखत? ककरा जरूरी बुझेतैक? विभारानी अपने तँ समीक्षा प्रायोजित नहि करओती? सक्षम लेखकक व्यवहारोक अपन स्तर होइत छै। तँ संगठित भऽ चोरिक भर्त्सना हेवाक चाही।

